Bookwala

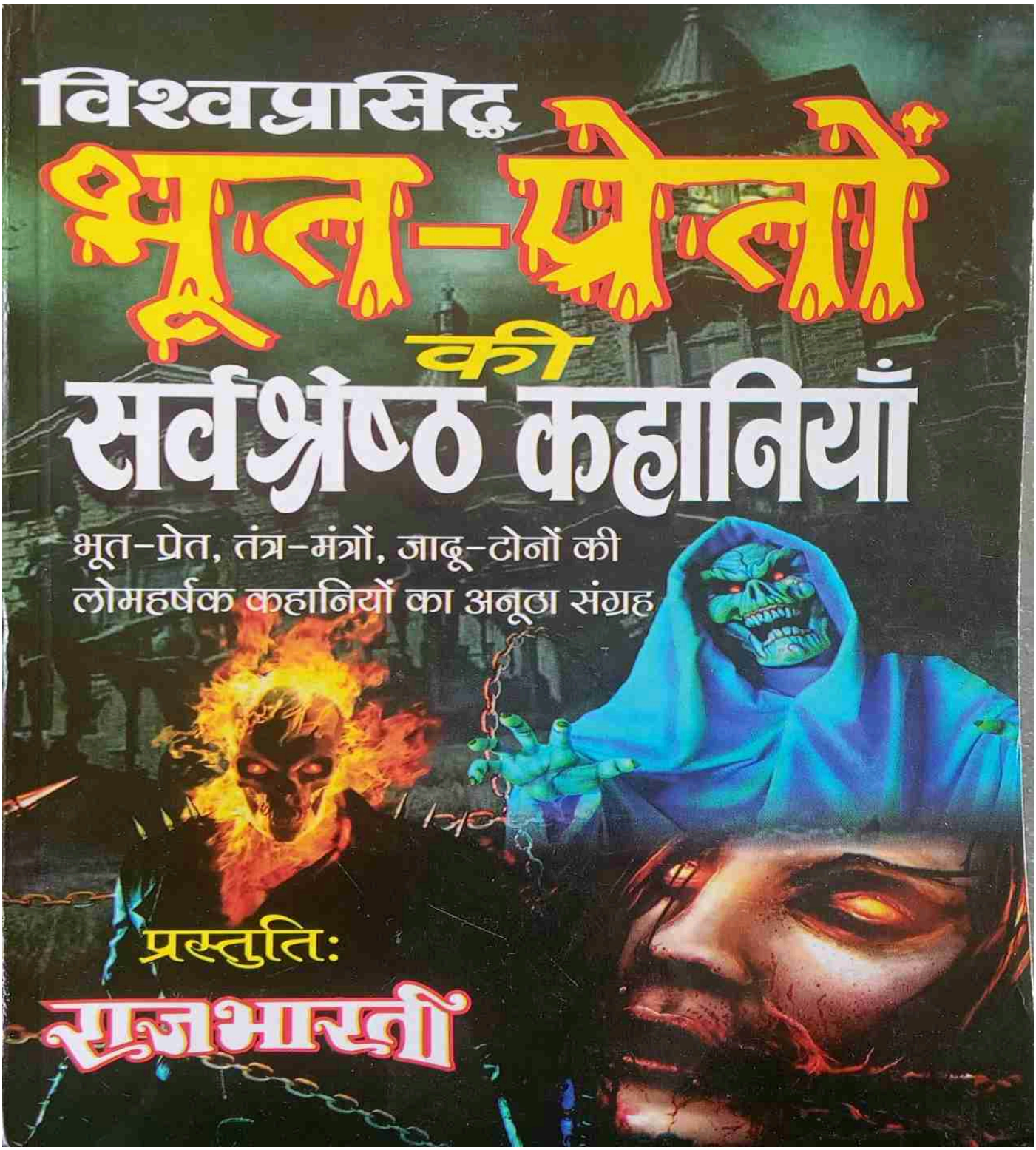

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

विश्व प्रसिद्ध भूत-प्रेतों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां

राज भारती

उत्सुकता तथा जिज्ञासा मानव समाज का अभिन्न अंग रहा है। इन्सान को हर चीज के बारे में देखने-जानने की जिज्ञासा तथा उत्सुकता रहती है।

अलौकिक या परालौकिक वस्तुओं, भूतों-प्रेतों, जिन्नों, राक्षसों के बारे में जानने-सुनने की जिज्ञासा इन्सानों में कुछ ज्यादा ही पायी जाती है। आपकी इसी जिज्ञासा को शांत करने की चेष्टा में प्रस्तुत है यह अनूठा कहानी संग्रह, विश्वप्रसिद्ध भूत-प्रेतों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां।

पुस्तक में आप ग्यारह-की-ग्यारह कहानियों को अलग-अलग परिवेश तथा कथानक की पाएंगे। विश्व के ग्यारह देशों की प्रेत कथाएं जो आपको भूत-प्रेतों के अनोखे संसार में तो ले जाएंगी ही, साथ ही प्रथम पंक्ति से अंतिम पृष्ठ तक आपके रोंगटे भी खड़े किए रखेंगी और आपकी सांसों की रफ्तार बढ़ाए रखेंगी।

संग्रह की कहानियों का संकलन, अनुवाद तथा सम्पादन किया है प्रसिद्ध पत्रकार प्रेम मोहन ने पूरी मेहनत तथा निष्ठा के साथ, और अपने अहम मार्गदर्शन से नोंक-पलक संवारी है हॉरर तथा फैंटेसी के जादूगर राज भारती ने।

हमें विश्वास है संग्रह की समस्त कथाएं आपका पूर्ण मनोरंजन करने में सफल रहेंगी, यही हमारा ध्येय है।

प्रसिद्ध पत्रकार प्रेम मोहन, जिन्होंने तीन वर्ष बंगाली तांत्रिक के साथ तंत्र-मंत्र की दुनिया में गुजारे। उन्होंने अपने अहसास और तंत्र-मंत्रों का पुस्तक में भरपूर प्रयोग किया है।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

चेतावनी : इस पुस्तक के तथा इसमें समाहित समस्त सामग्री (सर्व प्रकार के चित्रों सहित) के सर्वाधिकार **धीरज पॉकेट बुक्स** द्वारा सुरक्षित हैं। जो भी सज्जन इस पुस्तक का नाम, कवर डिज़ाइन, पुस्तक की सैटिंग, अन्दर का मैटर व चित्रादि आंशिक या पूर्ण रूप से काट-छांटकर अथवा किसी भी अन्य भाषा में छापने या प्रकाशित करने का साहस करेगा, तो वह कानूनी रूप से हर्जे-खर्चे व हानि का जिम्मेदार होगा।

पुस्तक : विश्वप्रसिद्ध भूत-प्रेतों की सर्वश्रेष्ठ कहानियां

अनुवादक, सम्पादक : प्रेम मोहन

प्रस्तुति : राज भारती

प्रकाशक :

धीरज पॉकेट बुक्स

अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला मैदान के सामने, दिल्ली रोड, मेरठ-2

दूरभाष–(0121) 2400092, 3257035

कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ-सज्जा :

यूनिक कम्प्यूटर सैन्टर, शारदा रोड, मेरठ।

मुद्रक :

न्यू ऋषभ ऑफसैट प्रिंटर्स, दिल्ली।

World Famous Best Ghosts Stories

By

RAJ BHARTI

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मेरी अपनी बातें....

पुरातन मान्यता है कि हमारी दुनिया के ऊपर एक दुनिया और भी है, अनदेखी, अनजानी। मान्यता यह भी है कि उसी अनदेखी-अनजानी दुनिया में ही भूत-प्रेत, पिशाच वगैरह विचरते हैं तथा समय-समय पर जीवित प्राणियों से उलझ जाते हैं या जीवित प्राणी ही उनके रास्ते में आ जाते हैं। उन्हीं घटनाओं से जन्म लेती हैं भूत-प्रेतों की खौफनाक कहानियां।

यह दूसरी दुनिया चूंकि 'मान्यता के अनुसार' पूरे संसार में ही है तो जाहिर है भूत-प्रेत सम्बंधित कहानियां भी सारे संसार में ही बिखरी पड़ी हैं, हजारों-लाखों की संख्या में, यह बात मेरे सामने तब आई जब मैंने 'धीरज पॉकेट बुक्स' के स्वामी श्री राकेश जैन जी के उकसाने पर सर्वश्रेष्ठ कहानियों की तलाश शुरू की। कई बार मैं अकेला, कई बार हम दोनों, यानि मैं और राजभारती जी दिल्ली के प्रसिद्ध किताबों के बाजारों, विश्व पुस्तक मेला से लेकर कबाड़ी की दुकानों तक हर जगह इन कहानियों को किसी प्रेमिका की तरह तलाश करते रहे!

और आखिरकार चार फरवरी से शुरू यह काम अठारह अगस्त को सम्पन्न हो पाया। इस दौरान हम दोनों ने जो टांग-तुड़ाई की, उसे हम दोनों का दिल ही जानता है।

तो उसी तमाम मेहनत का नतीजा है यह ग्यारह सर्वश्रेष्ठ कहानियां, ये कहानियां भूत-प्रेतों के अस्तित्व को न तो प्रमाणित करती हैं न उनके वजूद का खण्डन ही करती हैं, अलबत्ता, सभी कहानियां अपने आप में सम्पूर्ण मनोरंजन एवं वीभत्स रस जरूर समाये हुए हैं। खौफनाक, रोमांचक, लोमहर्षक और रहस्यपूर्ण माहौल में रची-बसी मनोरंजक कथाएं प्रस्तुत की गई हैं इस संग्रह में।

कहानियों की तलाश में तथा लेखन में हॉरर उपन्यासों के सम्राट उपन्यासकार श्री राजभारती ने जो सहायता और सहयोग दिया—और श्री राकेश जैन जी ने व्यक्तिगत रुचि लेकर शुरू से आखिर तक हर कार्य अपनी देख-रेख में करवाया, उसके लिए मैं इन दोनों सज्जनों का हृदय से आभारी हूं।

अंत में हमेशा की तरह पुस्तक पढ़ने के बाद अपनी बेलाग राय मुझे अवश्य लिख भेजें, आपके पत्र ही मेरी प्रेरणा का आधार हैं।

धन्यवाद !

विनीत :
प्रेम मोहन
(वरिष्ठ पत्रकार)

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	कहानी	पृष्ठ सं०
1.	रूह का बदला *(आस्ट्रेलियन कहानी)*	05
2.	कातिल मूर्ति *(स्वीडिश कहानी)*	18
3.	भुतहा कुल्हाड़ी *(ऑस्ट्रियन कहानी)*	35
4.	मक्कार तांत्रिक *(डच कहानी)*	44
5.	भूत बंगला *(इटालवी कहानी)*	64
6.	प्रेतों की हंगामा *(ब्रिटिश कहानी)*	72
7.	बूढ़ा भूत *(ऑस्कर वाईल्ड)*	107
8.	गद्दार *(अमेरिकन कहानी)*	120
9.	गोदने *(अफ्रीकन कहानी)*	133
10.	पैशाचिक मशीन *(कनैडियन कहानी)*	145
11.	नाजायज कब्जा *(पाकिस्तानी कहानी)*	167

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ऑस्ट्रेलियन कहानी

रूह का बदला

रूह के बदले की दिल दहला देने वाली कहानी

डॉली बिल्कुल नग्न थी और इस तरह हाथ-पैर मार रही थी जैसे अपने ऊपर से किसी को धकेलने की कोशिश कर रही हो। सबने मिलकर उसे उठाया, उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारे, थोड़ी-सी ब्राण्डी भी उसके मुंह पर टपकाई गई।

होश में आते ही डॉली ने एलान कर दिया–"मैं एक मिनट भी यहां नहीं रहूंगी...मैं वापस जाऊंगी।"

ग्रीनवेल के तमाम बाशिन्दे पहाड़ों के बीच वाले स्थान पर जमा हैं और उनकी नजरें उसी चबूतरे पर जमी हुई हैं जहां आज एक लड़की की बलि दी जा रही है।

चबूतरे पर ग्रीनवेल के बड़े भी बैठे हैं और वो जल्लाद भी मौजूद है जिसके हाथों उस लड़की को सजा दी जाने वाली है। सूरज की रोशनी में जल्लाद के हाथों में पकड़े खून सने कुल्हाड़े को देखकर सब दहशत में हैं।

इतने में चीखों की आवाज गूंजी तो सबका ध्यान उन्हीं चीखों की तरफ चला गया। ये चीखें मारग्रेट की थीं, जिसके पांवों और गले में जंजीरें पड़ी हुई थीं और दैत्याकार सिपाही उसे धीरे-धीरे खींचते हुए चले आ रहे थे, सिपाही बीच-बीच में उसे कोड़े से मार रहे थे, और दर्द से मारग्रेट चीख उठती थी।

मारग्रेट निहायत खूबसूरत लड़की थी, ग्रीनवेल में उस जैसी हसीन लड़की दूसरी कोई भी नहीं थी। उसे चबूतरे पर लाकर खड़ा कर दिया गया।

हर शख्स खामोश हो गया। बस्ती के मुखिया क्रामवेत ने खड़े होकर एलान किया–

"चूंकि मारग्रेट ने सैक्स अपराध किया है, जिसकी सजा मौत है, उसी वजह से आज हम यहां मौजूद हैं ताकि मारग्रेट को इसके किए की सजा दी जा सके।"

"मुझ पर झूठा इल्जाम लगाया गया है।" मारग्रेट ने तेज और तीखी आवाज में कहा–"मैं बेगुनाह हूं, और अगर मुझे सजा दी गई तो इसकी सजा तुम तमाम

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मूर्ख बस्ती वालों को भुगतनी पड़ेगी। सजा मेरे बजाये मुखिया क्रामवेत को मिलनी चाहिए जिसने अपने मुखिया होने की आड़ लेकर अपनी गंदी इच्छाएं पूरी करनी चाही हैं। यह एक नीच, कमीना और कुत्सित भावनाओं वाला झूठा आदमी है। जब मैंने इसकी हवस मिटाने से इंकार कर दिया तो इसने मेरे लिए यह सजा तय कर दी। जिस आदमी के साथ मेरा नाम जोड़ा गया है, वो भी बेगुनाह है। तुम्हारे हक में बेहतर यही होगा कि पंचायत अपना फैसला तब्दील कर ले...।" मारग्रेट चीख रही थी और उसकी आंखों से शोले निकल रहे थे, उनमें खौफ नाममात्र भी नहीं था।

अभी मारग्रेट ने इतना ही कहा था कि मुखिया क्रामवेत ने आगे बढ़कर उसके मुंह पर जोर से थप्पड़ मारा और चीखा–

"अब सज़ा में देर न की जाए।" उसने जल्लाद को मुखातिब किया था।

मारग्रेट को तख्ते पर लिटाया गया, और जल्लाद ने अपने भारी कुल्हाड़े के एक वार में मारग्रेट की गर्दन अलग कर दी। सूरज की एक तेज किरण कुल्हाड़े पर पड़कर कौंधी थी, और अगले ही पल मारग्रेट का सिर धड़ से अलग था, उसका धड़ तख्ते पर फड़कता रह गया।

तभी एक अनोखी घटना घटी, अचानक घोर अंधेरा छा गया। वातावरण में सैकड़ों रोने की आवाजें गूंजने लगीं।

करीब आधे घंटे तक यह नारकीय अंधेरा छाया रहा, फिर अंधेरा छंटना शुरू हो गया। फिर सूरज उसी तरह चमकने लगा। लेकिन यह देखकर सबके होश उड़ गए कि इस दौरान चबूतरे पर मारग्रेट की दो हिस्सों में बंटी लाश गायब हो चुकी थी। वहां खून का एक कतरा भी बाकी नहीं था।

भीड़ में खलबली मच गई और चारों तरफ भांति-भांति की आवाजें गूंजने लगीं–

"मारग्रेट वाकई बेगुनाह थी।"

"क्रामवेत झूठा है।"

"हे पवित्र मरियम! हे खुदा के बेटे! हम पर रहम करना।"

"हे खुदा! मारग्रेट को बेगुनाह कत्ल करने की सजा हम बस्ती वालों को न देना।"

❑❑❑

❑❑❑

मारग्रेट वाली घटना घटे अर्सा गुजर गया। अब तो बस्ती वालों को याद भी नहीं था कि वहां कभी मारग्रेट नामी एक निहायत खूबसूरत लड़की भी रहा करती थी, जिसे बलिवेदी पर कत्ल कर दिया गया था।

बस्ती के नए मुखिया और पंचायत ने बलि-स्थल को खत्म करके वहां एक गिरजाघर यानि चर्च बनवा दिया था, आज बस्ती के लोग उस नये चर्च में जमा थे।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

फादर एंड्रयूज ने अभी अपना उपदेश शुरू ही किया था कि आखिर में बैठी एक औरत की जोरदार चीख उभरी, साथ ही उसने मदद के लिए गुहार लगाई–

"बचाओ... प्लीज मुझे बचाओ!"

चीख से पूरे हॉल में खौफ और सनसनी की लहर दौड़ गई थी और हर शख्स सहम कर पिछली सीटों की तरफ देखने लगा था। फिर उनकी आंखों ने जो दृश्य देखा, उसने उनके होश उड़ाकर रख दिया। बच्चों ने रो-रोकर आसमान सिर पर उठा लिया, शोर बढ़ता जा रहा था।

इस स्थिति से बचने के लिए प्रार्थना के लिए आए हुए तमाम लोग बाहर निकलने के लिए बढ़े। हर शख्स की यह ख्वाहिश थी कि वो पहले बाहर निकले ताकि हॉल के अंदर के माहौल से बच सके। मां को बच्चों की फिक्र नहीं थी, बीवी को बच्चों का ख्याल नहीं था, पति को पत्नी की फिक्र नहीं थी।

इस अफरा-तफरी में फादर एंड्रयूज डायस से गिर गए और लोगों के पैरों तले आकर जख्मी हो गए। उसी दौरान उन लोगों को एक और खौफनाक स्थिति का सामना करना पड़ा।

हॉल में अब शैतानी कहकहे गूंज रहे थे जिनकी वजह से माहौल और भी वहशतनाक हो गया था। वो जगह जहां थोड़ी देर पहले लोग खुशी-खुशी प्रार्थना के लिए इकट्ठे हो रहे थे, आनन-फानन वीरान हो गई।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जब थोड़ी देर बाद फादर एंड्रयूज होश में आए तो उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे वो किसी वीराने में बैठे हुए हों। वो काफी देर तक सोचते रहे कि यह सब क्या हो रहा था? जब उनके होशो-हवास कुछ संभले तो वह उठकर उस सीट की तरफ गए जहां से वो चीखों की आवाजें उभरी थीं।

अचानक फादर एंड्रयूज का पांव किसी नर्म चीज पर पड़ा। वो पहले ही लड़खड़ा रहे थे, ठोकर लगते ही गिर पड़े–

"ओह... यह क्या?" उनके मुंह से निकला–"यह तो किसी बच्चे की लाश है जो लोगों के पांवों तले आकर रौंदा गया है।" बच्चा बहुत खूबसूरत था। उसकी खुली आंखों में जैसे एक सवाल जम कर रह गया कि मुझसे क्या कसूर हो गया था जो मुझे इतनी बड़ी सजा दी गई है?

लेकिन फादर एंड्रयूज के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था। आखिरी सीटों तक पहुंचते-पहुंचते उन्हें तीन और बच्चों की लाशें मिलीं। ये फूल भी खिलते ही मुर्झा गए थे, फिर जो उनकी निगाह उस औरत की लाश पर पड़ी तो वह एक बार फिर खौफ से बेहोश होते-होते बचे।

यह जेनी थी, बहुत ही शोख और खुशमिजाज लड़की, वो बस्ती की जान थी। उसकी आंखें खुली हुई थीं, सर से खून बहकर कपड़ों पर जम गया था। जेनी के हाथ अपनी गर्दन पर थे, जैसे वो अपनी गर्दन को किन्हीं अदृश्य पंजों से छुड़ाने की कोशिश कर रही हो।

फादर एंड्रयूज के लिए यह मंजर असहनीय साबित हुआ। वो एक बार लहराए और बेहोश होकर गिर पड़े।

इधर चर्च के बाहर अजीब मंजर था। प्रार्थना के लिए आने वाले अब बाहर मैदान में जमा थे। हर शख्स के चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और हर शख्स दूसरे से पूछ रहा था कि क्या हुआ? किसकी चीख थी?

एक औरत रो रही थी–"मेरी स्वीटी को ढूंढ लाओ रे कोई।"

एक नौजवान लड़की सबसे पूछती फिर रही थी कि किसी ने उनके भाई को तो नहीं देखा? अभी वो लोग इस खौफनाक स्थिति से ही नहीं उभरे थे कि उन्हें एक नई मुसीबत का सामना करना पड़ा। बड़े गेट से फादर एंड्रयूज प्रकट हुए। उनके कपड़े तार-तार थे, बाल बिखरे हुए थे, एक पैर से जूता गायब था।

अभी वो गेट पर पहुंचे ही थे कि एक रौबदार आवाज उभरी–गूंजती हुई, ठोस और कर्कश–

"यह हमारा घर है और अब इसमें किसी को दाखिल होने की इजाजत नहीं है। अगर किसी ने इस आज्ञा का उल्लंघन किया तो उसका हश्र जेनी से भी भयानक होगा।"

इसके साथ ही फादर एंड्रयूज कई फुट ऊंचे उछले और हवा में उड़ते हुए

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उन लोगों के सामने आ गिरे, जैसे किसी भारी शक्ति ने उन्हें उठाकर फेंका हो। जितनी देर में फादर एंड्रयूज जमीन से उठने की कोशिश करते, तेज हवा चलनी शुरू हो गई...और वही आवाज...अदृश्य शक्ति की आवाज फिर गूंजी–

"यह हमारा घर है और इसमें अब हमारे अलावा कोई नहीं रहेगा।"

इसके साथ ही शैतानी कहकहे गूंजने लगे, जो पल-पल बढ़ते गए और तेज होते गए। चारों तरफ गर्द-गुब्बार उड़ने लगे।

धूल-मिट्टी में अटे लोग जब अपने घरों में पहुंचे तो वहां उससे भी ज्यादा तबाही फैली हुई थी।

फिर उस दिन के बाद बस्ती के लोगों को चैन से रहना नसीब नहीं हुआ और बस्ती के बाशिन्दे एक-एक करके वहां से पलायन कर गए, लेकिन फादर एंड्रयूज उनकी बहन मदर एंड्रयूज और उनका नौकर डेविड वहां से जाने के लिए तैयार नहीं हुए। उनका कहना था कि अगर वो भी वहां से चले गए तो इस चर्च को शैतानी रूहों से कौन बचाएगा?

फादर एंड्रयूज गिरजाघर से लगे एक खुले बंगले में रहते थे। उनका ख्याल था कि गिरजे के करीब रहकर वो गिरजा की हिफाजत के मकसद में ज्यादा कामयाब रहेंगे।

JKV BOOKVALA

□□□

□□□

एक दिन सैमुअल को खत मिला, जिस पर ग्रीनवेल की मोहर थी।

ग्रीनवेल वही बस्ती थी जिसका जिक्र आने पर सैमुअल के परिवार के हर सदस्य का रंग उड़ जाता था। मैट्रिक तो ग्रीनवेल का नाम भी नहीं लेता था। सैमुअल को वो दिन अच्छी तरह याद था, जब उसके दादा का देहांत हुआ था। जॉनसन की चीखों से सारा मोहल्ला दहल रहा था, ऐसा लगता था जैसे कोई अदृश्य शक्ति उसका गला दबा रही हो और वो खुद को उसके हाथों से छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रहा हो। उसकी आंखें बाहर निकल आई थीं और मरने के बाद उसका चेहरा किसी पिशाच जैसा हो गया था। उसके गले और चेहरे पर नाखूनों से खरोंचें लगाई गई थीं जिनसे खून रिस रहा था। उसकी लाश हाइवे पर पड़ी हुई थी। किसी ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया था, बाजू और टांगें मुड़ी-तुड़ी थीं।

यह कत्ल का मामला लगता था, लेकिन खून की एक बूंद भी दिखाई नहीं दे रही थी। वो खत देखकर सैमुअल को वो सभी कुछ याद आ गया। अभिमानप्रिय मिजाज वाले सैमुअल ने ग्रीनवेल जाने का फैसला कर लिया। वो देखना चाहता था कि वो कौन है जिसने उसे ग्रीनवेल आने की दावत दी है?

मिस्टर लैम्ब थम्ब, मिस मेरी डोरोथी, मिस डॉली मारग्रेट और मिस्टर थामसन ईगल को इसी तरह के खत प्राप्त हुए। हर खत में किसी का हवाला दिया गया

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

था कि वो भी आ रहा है। इसलिए वो भी जरूर आएं। हालांकि सभी लोग एक-दूसरे से बहुत-बहुत दूर अलग-अलग शहरों में रहते थे और कोई भी किसी दूसरे को नहीं जानता था। अलबत्ता, उन सबमें एक बात साझी थी कि उनके पुरखों यानि दादा-दादी या नाना-नानी वगैरह में कोई-न-कोई जरूर ग्रीनवेल का पुराना बाशिन्दा रहा था।

वो सब ग्रीनवेल से पलायन करके ही इधर-उधर जा बसे थे और अब सभी हैरान थे कि उन्हें ग्रीनवेल बुलाने वाला आखिर है कौन?

ग्रीनवेल का गिरजाघर अपनी परम्परागत शान से खड़ा था, लेकिन उसमें दाखिल होकर पूजा-प्रार्थना करने की किसी को भी इजाजत नहीं थी, अनदेखी ताकतों द्वारा।

सैमुअल, लैम्ब, डोरोथी, चार्ल्स, डॉली और थामसन जब ग्रीनवेल पहुंचे तो उनका स्वागत एक झुकी कमर वाले बूढ़े ने किया था और उस बूढ़े ने अपना परिचय डेविड के नाम से करवाया था और उन सबको बताया था कि उसी ने उन सबको यहां आने की दावत दी थी।

जब उन्होंने डेविड से पूछा कि उनके नाम और पते कैसे मालूम हुए हैं, तो डेविड इस बात का कोई जवाब न दे सका। डेविड ने उन्हें बताया कि हरएक के लिए ग्रीनवेल में अलग-अलग घर मौजूद हैं, और अगर वो चाहें तो इकट्ठे भी रह सकते हैं। सैमुअल क्योंकि इकट्ठा रहने के हक में था, इसलिए यही तय पाया गया कि वो लोग इकट्ठे ही रहेंगे।

दरअसल सैमुअल ने यह सुझाव इसलिए पेश किया था, क्योंकि डॉली उसे अच्छी लगने लगी थी और वो डॉली के करीब ही रहना चाहता था। उसकी सोच यह थी कि अलग-अलग रहने से तो न जाने कैसे हालात पेश आएं, और वो दोनों एक-दूसरे को देख भी न सकें।

वो सब चर्च के करीब बने हुए उस खुले-से बंगले में जमा हो गए, जो फादर एंड्रयू की सरकारी रिहाइश हुआ करता था। सब थके हुए थे, नहाने और नाश्ता करने के बाद सब अपने-अपने घर में जाकर सो गए।

शाम के वक्त सभी एक बार फिर चाय पर इकट्ठे हुए तो डेविड भी मौजूद था। सब खामोशी से चाय पीते रहे और चाय के साथ पेश किए गए स्नेक्स का लुत्फ उठाते रहे। फिर सैमुअल ने इस मौन को तोड़ा। उसने डेविड से कहा-

"हमें यहां बुलाने का मकसद क्या है? और आपको हमारे मौजूदा ठिकानों की खबर कैसे हुई, क्योंकि जब हमारे मां-बाप और बुजुर्गों ने ही यहां से नाता तोड़ लिया था, तो हमें इस जगह से क्या दिलचस्पी हो सकती है?"

इस किस्म के सवाल कई दूसरे मेहमानों ने भी किए। डेविड पहले तो खामोशी से सब कुछ सुनता रहा, उसके बाद वो मुस्कुराकर बोला-

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"चर्च में फादर एंड्रयूज के भाषण के वक्त जो घटनाएं घटीं, उनका सबको ही दु:ख है। हालांकि आप लोगों के मां-बाप इस बस्ती को छोड़कर चले गए, और फादर एंड्रयूज और मैं ही यहां रह गए बाकी हम तीनों ने ही हर मुमकिन कोशिश की कि चर्च से शैतानी रूहों को निकाल दें और चर्च पर फिर से कब्जा कर लें। इन्हीं कोशिशों में फादर एंड्रयूज और मदर एड्रयूज अपनी जानों से हाथ धो बैठे। जब मैंने उनका अंजाम देखा तो मुझे ख्याल आया कि क्यों न किसी गुणी जादू-टोने और भूत-प्रेत के माहिर शख्स को बुलाया जाए। इसलिए मैंने बस्ती से निकलकर जगह-जगह की खाक छानी और रूहों को काबू करने के तरीके सीखता रहा। लेकिन जब भी अनुष्ठान शुरू करने का वक्त आता तो मुझे बताया जाता कि जब तक बस्ती के मूल बाशिंदों के उत्तराधिकारी और वंशज इसमें शामिल नहीं होंगे, मैं कामयाब नहीं हो सकता।"

"अब मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि उन वंशजों को मैं कहां ढूंढूं? मैंने इसके लिए एक खास अनुष्ठान शुरू किया... जिसके बारे में मुझे यकीन था कि मुझे उसमें कामयाबी होगी। अड़तालीस घंटों की समाधि के बाद मैं आप लोगों के चेहरे और दूसरी कई अहम बातों से वाकिफ हो गया। इसलिए मैंने आप लोगों को यहां आने का कष्ट दिया है। मुझे पूरा यकीन था कि मेरी कोशिश बेकार नहीं जाएगी, और अब आप लोग मेरे सामने मौजूद हैं और वो वक्त दूर नहीं है जब आप अपने पुरखों की इस खूबसूरत बस्ती को दोबारा आबाद कर सकेंगे।"

"लेकिन हमें क्या करना होगा?" डोरोथी बोल उठी।

"आज की रात अगर खैरियत से गुजर गई तो फिर दुनिया की कोई भी ताकत हमें कामयाबी से नहीं रोक सकेगी।"

डेविड ने कहा और इन्हीं बातों में चाय खत्म हो गई।

वो सब बंगले से बाहर निकल आए। शाम गहराने तक वो बस्ती के माहौल में खुद को ढ़ालने की कोशिश में व्यस्त रहे। हालांकि माहौल बहुत रहस्यमय था और वो सब पहली बार वहां आए थे, फिर उन्हें यहां आना अच्छा लग रहा था।

रात का खाना उन सबने इकट्ठा ही खाया और बंगले के बड़े हाल में अपने-अपने बिस्तर पर जा लेटे और सोने की तैयारियां करने में व्यस्त हो गए।

वो कुछ देर बातें करते रहे, हँसी-मजाक चलता रहा। उन्होंने अपने-अपने हालात के बारे में एक-दूसरे को बताया। फिर एक-एक करके सबकी निगाहें नींद से बोझिल होने लगीं और जो जिस हाल में था, उसी में सो गया।

रात का अभी दूसरा ही पहर गुजरा था कि अचानक जबरदस्त गड़गड़ाहट से पूरा बंगला हिल गया। जिस कमरे में सैमुअल वगैरह सोये थे उसमें सबसे ज्यादा अफरा-तफरी फैली, सामान और वहां सोने वाले, सब गडमड हो गए।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

हर शख्स चीख रहा था और दूसरे को मदद के लिए पुकार रहा था।

लेकिन अगर किसी को होश होता तो किसी की मदद करता। यह सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा, फिर अचानक एक तरफ शांति फैल गई, खामोशी, गहरी खामोशी।

ऐसा मालूम होता था जैसे कुछ हुआ ही न हो। रोशनी की गई। कमरे में रहने वालों को कुछ सुराग नहीं मिला कि यहां थोड़ी देर पहले इतनी भारी गड़बड़ हो गई थी, तो क्यों और कैसे हुई थी? वो सभी फिर से सो गए।

अचानक एक तेज और दिल दहला देने वाली चीख उभरी। इसी के साथ किसी लड़की के बड़बड़ाने की आवाज आई–"देखो... मुझे तंग मत करो। देखो मैं बहुत थक चुकी हूं, सफर में भी आराम नहीं मिला। थोड़ी देर आराम करने दो। मैं कहीं भागी तो नहीं जा रही।" यह बड़बड़ाहट भी कुछ देर बाद बंद हो गई।

थोड़ी देर बाद फिर एक चीख गूंजी, जिसने सबको हिलाकर रख दिया। हर शख्स अपने-अपने बिस्तर से निकल आया। फिर रोशनी की गई। रोशनी में मंजर बहुत खौफनाक दिखाई दिया। यह डॉली थी, जिसके गले से अब भी खरखराहट की आवाजें निकल रही थीं।

डॉली बिलकुल नंगी थी और ऐसे हाथ-पैर चला रही थी, जैसे किसी को धक्का दे रही हो। उसे सबने मिलकर उठाया... चादर से ढांपा। फिर उसके चेहरे पर पानी के छींटे मारे, ताकि उसे होश में लाया जा सके। थोड़ी-सी ब्राण्डी भी उसके गले में टपकाई गई। होश में आते ही उसने ऐलान कर दिया–

"मैं एक पल भी यहां नहीं रुक सकती। मैं वापिस जाऊंगी।"

सब हैरान थे कि इसे हुआ क्या है?

डॉली बोलते-बोलते अचानक रुक गई और उसने अपने गले की तरफ हाथ बढ़ाकर टटोला तो उसके गले में सलीब यानि क्रॉस नहीं था। यह क्रॉस डेविड ने सबको पहनने के लिए दिए थे और मंत्रपूरित थे। वो सोच रही थी।

'क्रॉस कहां गया? अगर किसी ने उतारा था तो उतारने वाला शख्स कौन हो सकता है? क्योंकि यह सब जो हुआ था, क्रॉस न होने की वजह से ही हुआ था।'

सैमुअल इस स्थिति से बहुत परेशान था, क्योंकि वो डॉली को पसंद करने लगा था और उसके बारे में फैसला भी कर चुका था। धीरे-धीरे डॉली की हालत नॉर्मल होती चली गई और बाकी रात उन्होंने बातें करते-करते गुजारी थी।

सुबह चाय-नाश्ते वगैरह के बाद उनमें चुस्ती आ गई। रात की घटना के बारे में डॉली ने अपने साथी को बताया–"पहले तो मुझे ऐसा लगा कि कोई मेरे साथ रेप करना चाहता है और उसी ने मेरे कपड़े उतार दिए हैं। लेकिन जब उस

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अदृश्य शक्ति ने मेरे गले पर हाथ डाला तो मुझे अपनी मौत सामने नजर आने लगी, मेरी चीख निकल गई। उस शक्ति ने कहना शुरू किया, उस वक्त तो तुम मेरे हाथ से बच गई थीं मेगी, लेकिन अब नहीं बच सकोगी, मैं अपनी सारी इच्छाएं पूरी करूंगा। फिर उसकी सांसें मेरी नाक से टकराईं तो मुझे ऐसा लगा जैसे कोई सड़ता हुआ मुर्दा हो, उसमें से सड़ांध उठ रही थी, अगर तुम लोग मेरी चीख पर जाग न जाते और मेरी मदद को न आते तो आज यकीनन मैं मारी जाती। लेकिन यह मेगी कौन थी...और मेरे साथ उसका क्या सम्बन्ध था?" डॉली ने कहा–"शायद डेविड को कुछ मालूम हो, उसी से पूछूंगी।"

नाश्ते के बाद उनकी डेविड से मुलाकात हुई तो सबने एक जुबान होकर पूछा कि चर्च की शैतानी ताकतों से निजात दिलाने के लिये उसने क्या सोचा है?

और फिर डेविड को रात की घटना का विवरण सुनाया गया। आखिर में डॉली ने पूछा–

"यह मेगी कौन थी, वो अदृश्य शक्ति मुझे मेगी क्यों कह रही थी?"

डेविड ने बड़े शांत ढंग से सारी बातें सुनीं और फिर उसने उन सबको बताया कि–जहां यह चर्च बना हुआ है यहां पहले बलि स्थल था। पंचायत या बड़े सरदार और मुखिया इसी जगह लोगों को सजाएं दिया करते थे। एक बार एक लड़की मारग्रेट को, जिसे लोग प्यार से मेगी कहा करते थे, को सैक्स अपराध में गिरफ्तार कर लिया गया था और मेगी के लिए पंचायत ने मौत की सजा सुनाई थी। दरअसल बस्ती का मुखिया क्रामवेत मारग्रेट को अपनाना चाहता था। जब वो अपने गंदे इरादों में कामयाब नहीं हुआ तो उसने पंचायत को अपने साथ मिलाकर मेगी पर वो घिनौना आरोप लगवा दिया था।

उस वक्त इस जुर्म की सजा मौत हुआ करती थी, इसलिए मेगी को मौत की सजा दी गई। हालांकि मेगी ने उस जुर्म से इंकार किया था और जिस शख्स जोजफ के साथ उसका नाम जोड़ा गया था, यानि जोजफ ने भी बाइबल हाथ में लेकर कसम खाई थी। लेकिन पंचायत फैसला सुना चुकी थी। उस मौके पर कुछ बुजुर्गों ने विरोध भी किया, लेकिन उनकी एक न सुनी थी। तय दिन को मेगी की गर्दन काट दी गई...।

उस वक्त एक बहुत अजीब घटना घटी थी, जैसे ही मारग्रेट यानि मेगी की गर्दन कटी तो जमीन पर गिरने के बजाय आसमान में उड़ गई और देखते-ही-देखते सबकी निगाहों से ओझल हो गई। फिर जब लोगों ने बलि वेदी की तरफ देखा तो मेगी का धड़ भी वहां से गायब हो चुका था...।

उस स्थिति ने सबके होश उड़ा दिए थे। उस मौके पर उस शख्स जोजफ ने, जिस पर मेगी से सम्बंधों का आरोप लगाया गया था, कहा कि न सिर्फ मेगी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

की आत्मा, बल्कि वो खुद यानि जोजफ भी बस्ती वालों को चैन की सांस नहीं लेने देगा। उसी रात जोजफ भी गायब हो गया था।

उस दिन के बाद सारी बस्ती शाम होते ही सुनसान हो जाती थी, यह स्थिति लगभग एक साल तक रही थी। उस दौरान कोई कुर्बानी नहीं दी गई थी और न ही किसी को सजा मिल सकी थी। अलबत्ता, जो कोई भी इस तरफ आता, दो-दो साये उसे डराते और वो आतंकित होकर भाग जाता।"

"फिर क्या हुआ?' डोरोथी ने सवाल किया था।

"पंचायत ने फैसला किया कि इस जगह चर्च बनाया जाए, ताकि पवित्र मरियम और खुदा के बेटे की दया से वो अपनी...इन मुसीबतों से छुटकारा पा सकें और उनकी बलाएं टल जाएं।" डेविड ने कहा-"लेकिन उन्हें क्या मालूम था कि किस्मत उन पर हँस रही है। चर्च के लिए बुनियादें खोद दी गईं, ज्यों ही दीवारें खड़ी करने का पड़ाव आया, बुनियादें उखड़नी शुरू हो गईं। फिर हर कोने में एक सलीव डालकर बुनियादें भरी गईं...।

दीवारें बन गईं, छत डालने का वक्त आया तो फिर वही समस्या शुरू हो गई, कभी एक कोने से कोई ईंट उड़ती हुई आती और किसी को घायल कर जाती, कभी किसी दीवार पर खड़ा कोई मजदूर नीचे गिर जाता। यह सिलसिला भी काफी दिन तक जारी रहा। एक दिन सबने मशविरा करके पवित्र मरियम की एक मूर्ति घास पर स्थापित कर दी और इस तरह छत पूरी हो सकी। चर्च का निर्माण पूरा हुआ।

इधर चर्च का निर्माण पूरा हुआ, उधर क्रामवेत मर गया। उसकी मौत का मंजर भी बहुत खौफनाक था, मरने के बाद उसकी शक्ल बिलकुल पिशाचों जैसी हो गई थी। जब लोग उसकी आखिरी रस्में पूरी करने के लिए उसकी लाश उठाने गए तो उसकी लाश ही वहां मौजूद नहीं थी...।

चर्च के अंदर तो हमेशा ही शांति रहती थी, बस्ती में भी देखने से कुछ परेशानी नजर नहीं आती थी। लेकिन चर्च की उस दीवार की तरफ, जिधर कि बलिवेदी हुआ करती थी, उधर जाने वाले कभी लौटकर नहीं आते थे...।

फिर...आज से पचास साल पहले बस्ती में एक भूचाल आया और बलिवेदी की तरफ वाली दीवार में दरार पड़ गई। उस दरार को भर तो दिया गया, लेकिन यह कोई न जान सका कि शैतानी रूहें उधर से चर्च में दाखिल हो चुकी हैं। फिर उस दिन जब फादर एंड्रयूज भाषण देने के लिए खड़े हुए थे तो पिछली कतार में बैठी हुई एक खूबसूरत लड़की जेनी की गला घोंटकर मार डाला गया था। जेनी उसी जगह बैठी थी जिधर दीवार में चौड़ी दरार पड़ गई थी। उसके बाद जो कुछ भी हुआ उसे बताने से...दुःखों में ही इजाफा होता है। वो दिन और आज का दिन, चर्च पर शैतानी ताकतों या दुष्टात्माओं का ही राज है और

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जो कोई भी चर्च के अंदर दाखिल होने की जुर्रत करता है, वापसी उसके मुकद्दर में नहीं होती। बस्ती उजड़ गई, सब लोग यहां से चले गए। लेकिन फादर एंड्रयूज, मदर एंड्रयूज और मैंने यहां से जाना गंवारा नहीं किया। फादर और मदर एक दिन गिरजाघर में दाखिल हुए, और वापस बाहर न निकल सके। दो दिन बाद उनकी वीभत्स लाशें पहाड़ी के दामन में मिली थीं।"

"लेकिन हमें क्यों बुलाया गया है?" सैमुअल और चार्ल्स एक साथ बोल उठे थे–"कहीं तुम हमारी बलि देकर चर्च वापस तो नहीं लेना...?"

"नहीं...नहीं ऐसा नहीं है।" डेविड जल्दी से बोल उठा–"अलबत्ता, इससे मिलती-जुलती एक तरकीब है जो आजमाई जाएगी। अपनी लम्बी तपस्या के बाद मुझे बताया गया था कि चर्च को दोबारा हासिल करने का तरीका यह है कि अगर इस बस्ती के बाशिन्दों के सात उत्तराधिकारियों का खून गिरजाघर की दीवारों और उसके अंदर छिड़का जाए तो शैतानी आत्माएं उसे हमेशा के लिए छोड़कर चली जाएंगी।"

"तो हमें इसीलिए बुलाया गया है?" डोरोथी ने कहा–"गिरजा अगर वापिस नहीं मिलता तो न मिले, हमें परवाह नहीं है। हम अपना खून नहीं निकलवाएंगे।"

"मेरी पूरी बात तो सुन लो।" डेविड ने कहा–"किसी की बलि वगैरहा नहीं देनी। मैंने अपनी विद्या से यह भी मालूम कर लिया है कि उनमें से आप सात लोग ही ऐसे हैं जो यह काम पूरा करने के पात्र हैं। मुझे बताया गया है कि आप सबसे थोड़ा-थोड़ा खून हासिल किया जाए जो सिर्फ इतना-सा हो कि हमारा उद्देश्य पूरा हो जाए। इसलिए किसी परेशानी की जरूरत नहीं है। यह काम आज रात कर लिया जाएगा।"

दिन का बाकी हिस्सा सबने एक साथ गुजारा, रात का खाना भी इकट्ठे ही खाया और रात का दूसरा पहर गुजरने के बाद डेविड भी उनमें शामिल हो गया। यही वो वक्त था जब सातों लोगों का खून लिया जाना था।

ज्योंही खून इकट्ठा करने की कार्रवाई शुरू हुई, कमरे के तमाम दरवाजे और खिड़कियां बंद कर दी गईं, पर्दे खींच दिए गए, हर खिड़की और दरवाजे पर सलीव लगा दी गई। कमरे के बीचो-बीच वो मेज रखी गई थी जिस पर खून निकालने के लिए इंजेक्शन-सीरिंज और दूसरा सामान रखा गया था, जिसमें रूई, स्प्रिट और एक-दो खाली शीशियां और एक बर्तन भी था।

एक-एक करके छः लोग भुगत चुके थे, अब डॉली की बारी थी। ज्योंही उसे मेज पर लिटाया गया, कमरा गहरे अंधेरे में डूब गया था, डरावनी आवाजें उभरने लगी थीं, कमरा हिलने लगा था। लेकिन डेविड ने फौरन डॉली के गिर्द चक्र खींच दिया, आवाजें आनी बंद हो गईं और हर चीज सामान्य हो गई। डॉली का खून भी हासिल कर लिया गया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मेज से उठकर डॉली ने अपने साथियों को बताया कि आज अगर डेविड वक्त पर उसके गिर्द घेरा न खींच देता तो वह अदृश्य शैतानी शक्ति उसकी जान ले चुकी होती। उसके हाथ डॉली के गले तक पहुंच चुके थे।

लेकिन वो शैतानी ताकत जाते-जाते डॉली से कह गई थी–"यह जो कुछ हो रहा है, बहरहाल होकर रहेगा। लेकिन तुम्हें मेरी बांहों में आने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। तुम मेरी हो और मेरी ही रहोगी।"

वो दिन भी गुजर गया। दूसरे दिन डेविड उन सबको साथ लेकर चर्च के बड़े गेट पर पहुंच गया। उसने उस जगह से खून के छींटें दीवारों पर देने शुरू किए और चर्च की इमारत का एक चक्कर पूरा करके वो लोग फिर बड़े दरवाजे पर पहुंच गए।

दरवाजे से थोड़ी दूर हटकर उसके बिलकुल सामने डेविड ने कोई मंत्र पढ़ने शुरू कर दिए। सब खामोश खड़े देख रहे थे। थोड़ी देर बाद सबने देखा कि दरवाजा आहिस्ता-आहिस्ता खुलना शुरू हुआ है...यहां तक कि दोनों पट पूरी तरह खुल गए। धुएं जैसी कोई चीज बाहर निकलनी शुरू हो गई।

इसके बाद ही मातमभरी भयानक आवाजें वातावरण में गूंजने लगीं।

धुआं खत्म होते ही बड़ी भयानक आवाज आई–

"हम...यानि मैं क्रामवेत और मेरे साथी जा रहे हैं। लेकिन जब तक यह गिरजा अपनी मौजूदा जगह पर कायम है...उस वक्त तक हम भी मौजूद रहेंगे और किसी वक्त भी इस पर दोबारा कब्जा कर लेंगे।"

उसके बाद आवाज आनी बंद हो गई और वातावरण में गहरी खामोशी छा गई। वो सब काफी देर तक बाहर खड़े रहे। फिर सबसे पहले डेविड ने ही बड़े दरवाजे के अंदर कदम रखा। उसने दहलीज पर खून के छींटे मारे। उसके बाद उसने बाकी लोगों को अंदर आने की दावत दी।

चर्च के पूरे हॉल में खून के छींटे मारे गए। फिर सबने मिलकर सफाई की और प्रार्थनाएं कीं और वापस आ गए। रात को सोने से पहले डेविड एक बार फिर उनके बीच मौजूद था, उसने कहा–

"जब तक चर्च अपनी मौजूदा जगह पर मौजूदा सूरत में मौजूद है, खतरे मंडराते रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि इस मौजूदा चर्च को गिरा दिया जाए और इबादत के लिए नई जगह तैयार की जाए।"

सबने उसकी बातों से सहमति जाहिर की और दूसरे ही दिन पूरी इमारत की सभी धार्मिक मूर्तियां और दूसरा सामान निकालकर जला दिया गया। उसकी बुनियादें खोद कर बहुत बड़ा गड्ढा तैयार किया गया और एक बहुत बड़ा अलाव जलाया गया...ताकि शैतानी ताकतों के रहे–सहे अवशेष और असर बाकी न रहें।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जब अलाव की लपटें कड़कीं तो वातावरण में बहुत-सी भयानक आवाजें गूंजने लगीं और क्रामवेत की स्वीकृति भी गूंजी कि "मेगी उर्फ मारग्रेट ने चूंकि उसकी शैतानी हवस का शिकार होने से इंकार कर दिया था इसलिए उसने मेगी को मौत के घाट उतारने की सजा का सुझाव दिया था, उसका विचार था कि शायद इस तरह मेगी मान जाए।

मगर वो नेक और पवित्र लड़की बिल्कुल न घबराई और उसने इज्जत लुटवाने के बजाय मौत को गले लगा दिया। डॉली मेगी का ही रूप है। उस रात अगर जोजफ ऊपर से न आ जाता तो मेरी प्यास बुझ जाती।"

इतना कहकर वो आवाज कराहने लगी और धीरे-धीरे खामोश होती चली गई।

❑❑❑
❑❑❑

डेविड, सैमुअल और उनके दूसरे साथियों की मदद से अमरीका के कोने-कोने में गए, चर्च के निर्माण की खातिर भारी-भारी चंदे वसूल हुए। कुछ महीनों की दिन-रात की कोशिश और मेहनत से चर्च की नई इमारत बड़ी शान और शौकत से तैयार कर दी गई। ग्रीनवेल में लोगों के आगमन का सिलसिला शुरू हो गया, करीब और दूर-दराज की जगहों से आकर लोग ग्रीनवेल में आबाद होने लगे।

देखते-ही-देखते ग्रीनवेल ने एक बहुत बड़े शहर की शक्ल अख्तियार कर ली। डेविड को उसकी कोशिशों के लिए पुरस्कार स्वरूप उसे ग्रीनवेल का मेयर बना दिया गया और उसे फादर डेविड की उपाधि भी दी गई।

फिर उस चर्च में जो पहली शादी हुई वो सैमुअल और डॉली की थी। डॉली की नानी मारग्रेट उर्फ मेगी की सगी बहन हुआ करती थी और सैमुअल उस जोजफ का वंशज था, जिसके साथ मेगी के सम्बन्ध होने का झूठा आरोप लगाया गया था। सैमुअल जोजफ का पोता था।

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

स्वीडिश कहानी

कातिल मूर्ति

एक खूनी मूर्ति की भयानक कहानी

"डोलन एक अच्छा ड्राईवर था, उससे किसी गलती की उम्मीद नहीं की जा सकती थी।" मैंने कहा–"फिर इतना खौफनाक एक्सीडेंट कैसे हो गया?"

"उसने वो मूर्ति अपनी कार पर लगा रखी थी, लेकिन कई दिन हुए उसने मूर्ति कार से उतारकर ट्रक पर फिट कर ली थी, नतीजा तुम देख ही रहे हो।"

मैं गहरी सांस लेकर रह गया था।

अगर मुझे पहले से अंदाजा होता कि एक्मे ऑटोपार्ट्स स्टोर जाने और वहां से सजावटी रेडियेटर कैप खरीदने से हम पर क्या बीतेगी, तो मैं कभी उधर का रुख भी न करता। मैं ही क्या, मेरे सब दोस्त भी वहां एक पल रुकना गंवारा न करते और सिर पर पैर रखकर भाग लेते।

इस वक्त हम दोस्तों की कुल तादाद चार थी। स्पेंसर, डोलन, बर्नी और मैं। हमने एक छोटा-सा ऑटो क्लब बनाया हुआ था। हमारी दोस्ती की बुनियाद हमारा साझा शौक ही था, हममें से हर-एक को पुर्जे जोड़-जोड़कर गाड़ियां बनाने का जुनून था।

वीक एंड पर हम अपनी गाड़ियां लेकर लम्बी ड्राइव पर निकल जाते। कभी किसी पिकनिक प्वॉइंट पर जा पहुंचते और कभी किसी झील के किनारे डेरा डाल लिया करते थे। हम लोग नित्य नए एडवेंचर्स की तलाश में रहते थे और अपनी गाड़ियों में दूर-दूर की जगहों पर घूमने निकल जाया करते थे।

हममें से हरएक के पास अपनी जाती कार मौजूद थी। स्पेंसर और डोलन के पास मॉडल ए रोडस्टार थी, मेरे पास ग्रे कलर की शेवरलेट कूपे थी। बर्नी हम सब दोस्तों में अमीर था, उसके पास अमरीकन ऑकलैंड कार थी।

स्पेंसर, डोलन और मैं छोटे-मोटे काम करके अपना गुजारा चलाते थे, लेकिन बर्नी कोई काम नहीं करता था, क्योंकि उसके मां-बाप बहुत अमीर थे।

वो मई की एक चमकीली सुबह थी, शनिचर का दिन था, हम चारों दोस्त

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

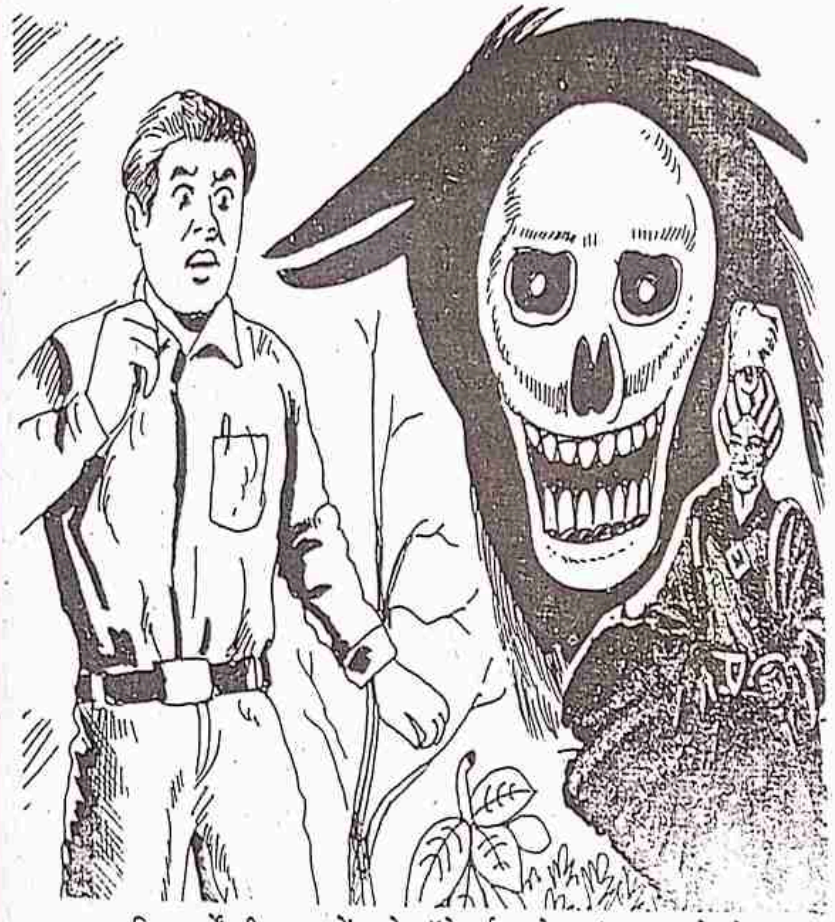

नए आधुनिक पुर्जों की तलाश में एक्मे ऑटोपार्ट्स स्टोर पहुंच गए। स्टोर में काफी नया माल आया हुआ था।

अचानक हम चारों दोस्तों की निगाह उस सजावटी रेडियेटर कैप पर पड़ी जो दुकान के एक कोने में तन्हा पड़ी जगमगा रही थी। वो कोई आम-सी रेडियेटर कैप नहीं थी। क्रोमियम की बनी हुई वो कैप दरअसल कैप नहीं एक छोटी-सी मूर्ति थी। खूबसूरत मूर्ति।

यह मूर्ति विजय और गर्व की मशहूर देवी डॉटर की मूर्ति की हू-ब-हू नकल थी। अलबत्ता इस मूर्ति का सिर गायब था। बाकी तमाम चीजें दुरूस्त और सही-सलामत थीं। देवी डॉटर की मूर्ति की तरह इस छोटी मूर्ति के बाजुओं पर भी पंख लगे हुए थे और पंखलगे वो बाजू इस तरह ऊपर उठकर फैले हुए थे जैसे वो अभी उड़ान भरने के लिए तैयार हो।

उस छोटी-सी क्रोमियम की मूर्ति में न जाने ऐसा क्या सम्मोहन था कि उसने हम चारों को मोह लिया था। हममें से हरएक उस रेडियेटर कैप को हासिल करना चाहता था लेकिन मुश्किल यह थी कि वो एक ही पीस था।

हमने क्लर्क से वैसे और पीस निकालने के लिए कहा, लेकिन उसने रेडियेटर कैप का जायजा लेने के बाद इंकार में सिर हिला दिया था-

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"नहीं, आजकल इस किस्म की रेडियटर कैप बननी बंद हो गई हैं। मुझे तो याद भी नहीं पड़ता कि आखिरी बार यह माल कब आया था? बहरहाल, यह एक ही पीस है।" कहकर वो दूसरे ग्राहकों की तरफ मुड़ गया था–"इसकी कीमत फ्लाइंग मर्करी से कम नहीं होगी, अगर तुम खरीदना ही चाहते हो तो।"

फ्लाइंग मर्करी की कीमत तीस डॉलर थी और हममें से हरएक वो कीमत आसानी से अदा कर सकता था, और अगर दोस्ती का मामला न होता तो उस रेडियेटर कैप को लेकर हम चारों ही उलझ भी गए होते। लेकिन हमने यही फैसला किया था कि आपस में टॉस कर लिया जाए।

टॉस किया गया तो स्पेंसर टॉस जीत गया, हमने वो मूर्ति स्पेंसर के हाथ में थमा दी। उसने कीमत अदा की और मूर्ति हाथ में लेकर अकड़ता हुआ अपनी कार की तरफ चल दिया था। उसने कार के रेडियटर पर लगी पुरानी कैप उतार कर उसी वक्त वो मूर्ति वाली कैप फिट कर दी थी।

नई रेडियेटर कैप से उसकी कार की शान दोगुनी हो गई थी और स्पेंसर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। हम तीनों मुंह लटकाए अपनी-अपनी कारों की तरफ चल पड़े थे।

❑❑❑

❑❑❑

इस घटना के कई दिन बाद एक शाम स्पेंसर मेरे घर आया था। हम उस वक्त घर के बाहर खड़े हुए थे, रात का अंधेरा तेजी से फैल रहा था–

"क्या तुम्हें वो सजावटी मूर्ति याद है जो मैंने पिछले दिनों एक्मे ऑटोपार्ट्स से खरीदी थी?" स्पेंसर ने बड़े उदास लहजे में बातचीत की शुरूआत की थी।

"हां-हां। अच्छी तरह याद है। क्यों, क्या बात है?"

"कल रात जब मैं अपनी कार गैरेज में बंद कर रहा था तो एक बहुत अजीब घटना घटी थी।" उसने कहा था और मेरा पूरा ध्यान उसकी तरफ लग गया था।

"सड़क से जब मैं गली में मुड़ रहा था तो मैंने एक उचटती-सी निगाह उस रेडियर कैप पर डाली थी।" स्पेंसर कह रहा था–"वो मूर्ति ऐसी जगह फिट है कि निगाह खुद-ब-खुद उस पर पड़ जाती है, जब मेरी निगाह मूर्ति पर पड़ी तो मैंने महसूस किया कि मूर्ति के पर हरकत कर रहे हैं।"

मैं उसे खामोशी से घूरने लगा था।

"यह तुम मुझे इस तरह क्यों घूर रहे हो?" स्पेंसर ने बुरा-सा मुंह बनाते हुए कहा–"मुझे अंदाजा था कि लोग मेरा मजाक उड़ाएंगे, इसलिए मैंने इस बारे में किसी से एक शब्द भी नहीं कहा, तुम पहले शख्स हो जिसे मैं एक यह बात बता रहा हूं कि मैंने न सिर्फ मूर्ति के परों को ऊपर-नीचे हिलते देखा था, बल्कि मूर्ति का धड़ भी घूमता दिखाई दिया था मुझे। उस वक्त मुझे यों लगा था जैसे

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

वो मूर्ति मुझे उड़ाए लिए जा रही हो। मैंने गाड़ी पर कंट्रोल लगभग खो बैठा था, कार केसन के गैरेज के कोने से टकराई थी हल्के से, मैं वक्त पर स्टेयरिंग संभालने में कामयाब हो गया था।"

स्पेंसर एक समझदार दोस्त था लेकिन फिर भी मुझे उसकी बातों का यकीन नहीं आया था। मैं उसकी कार की तरफ चल दिया था।

हुड के करीब पहुंचकर देवी की उस मूर्ति का जायजा लेने लगा था।

"तुम चाहो तो अच्छी तरह ठोंक-बजाकर देख लो।" स्पेंसर ने व्यंग्य से कहा था–"मैंने भी कार रोककर फौरन इसका मुआयना किया था, लेकिन यह हमेशा की तरह ठोस और मजबूती से अपनी जगह जमा हुआ था। लेकिन जो कुछ मैं कह रहा हूं वो भी गलत नहीं है। मैंने इस मूर्ति को साफ़तौर पर हिलते-डुलते देखा था।"

मैंने स्पेंसर से यही कहा था कि हो सकता है थकान की वजह से या किसी खास कोण से रोशनी मूर्ति पर पड़ने से उसकी आंखों को धोखा हुआ हो और उसे मूर्ति के पर हिलते हुए नजर आए हों।

लेकिन स्पेंसर ने मेरी एक नहीं सुनी थी। वो लगातार इंकार में गर्दन हिलाता रहा था।

फिर हम आने वाले वीक एंड में बातें करने लगे थे और पिकनिक का प्रोग्राम बनाने लगे थे। कुछ देर बाद स्पेंसर वापस चला गया था।

शनिवार को सुबह हम समोरस झील पहुंच गए थे, हमारी गर्ल फ्रेंड्स भी हमारे साथ थीं। लंच का इंतजाम लड़कियों ने किया था, हम सबने पिकनिक का पूरा-पूरा लुत्फ उठाया था।

साढ़े ग्यारह बजे के करीब हम झील से एक घर की तरफ रवाना हुए थे और हम सभी बहुत खुश थे।

कस्बे में दाखिल होने से पहले एक लम्बा मोड़ आता है जहां सड़क अंग्रेजी अक्षर 'एस' की तरह दो बार बल खाती है–जब हम उस मोड़ पर पहुंचे तो हमारे काफिले में स्पेंसर की कार सबसे आगे थी। वो अपनी गर्लफ्रेंड नोरमा के साथ था।

स्पेंसर की कार हाईवे पर कभी दायीं तरफ घूम जाती थी। कभी बायीं तरफ। फिर उसकी कार का रुख खाई की तरफ हो गया था। वातावरण में नोरमा की तेज चीख गूंजी और फिर स्पेंसर की कार एक धमाके के साथ खाई के किनारे उगे एक पेड़ से टकराकर रुक गई थी।

नोरमा उछल कर हाईवे के किनारे पर नर्म रेत पर जा गिरी थी, अलबत्ता स्पेंसर का जिस्म स्टीयरिंग व्हील के पीछे झूल गया था।

हम अपनी-अपनी गाड़ियां रोक कर उतरे थे और स्पेंसर की गाड़ी की तरफ

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

दौड़ पड़े थे। तो हमने देखा था कि स्पेंसर का चेहरा स्टीयरिंग व्हील के पीछे बुरी तरह फंसा हुआ था,और वो निश्चल पड़ा हुआ था।

हमने फौरन नोरमा को करीबी अस्पताल में रवाना किया था, वो ज्यादा जख्मी नहीं हुई थी, अलबत्ता, हादसे की वजह से बहुत आतंकित थी।

मैंने ही नोरमा को रेत पर से उठाकर कार में डाला था और मेरे कानों में उसके शब्द गूंजते रहे थे देर तक, उसने कहा था–"वो...वो स्पेंसर कह रहा था कि पर हिल रहे हैं...दोबारा हिल रहे हैं।"

मैं समझ गया था क्या मामला है! स्पेंसर ने यकीनन मूर्ति के परों को हरकत करते देखा था, तभी वो कार पर अपना कंट्रोल खो बैठा था। वो हादसा उसी मूर्ति की वजह से पेश आया था। कुछ देर बाद पुलिस भी वहां पहुंच गई थी, उसने स्पेंसर को बड़ी मुश्किल के साथ पिचकी हुई कार से बाहर निकाला था।

लेकिन उस वक्त तक स्पेंसर हर तरह की मदद से बहुत दूर जा चुका था।

❑❑❑
❑❑❑

उस हादसे के कई दिन बाद मुझे और डोलन को उस गैराज में जाना पड़ा जहां स्पेंसर की कार मरम्मत के लिए भेजी गई थी। स्पेंसर के बाप ने हमसे दरख्वास्त की थी कि हम वो कार अपनी निगरानी में ठीक करवाएं।

जब हम गैरेज में दाखिल हुए थे तो स्पेंसर की कार पर निगाह पड़ते ही हादसे का तमाम मंजर मेरी आंखों के सामने घूम गया था। कार का अगला हिस्सा बुरी तरह पिचका हुआ था, रेडियेटर भी टूट-फूट चुका था, अलबत्ता, हैरत की बात थी कि देवी की वो मूर्ति बिलकुल सही-सलामत थी। उस पर हल्की-सी खरोंच तक नहीं आई थी। देवी की वो परों वाली मूर्ति अभी भी आव और ताव के साथ जगमगा रही थी।

डोलन की निगाह उस मूर्ति पर ही जमी हुई थी और वो मुग्ध-सा मूर्ति को घूर रहा था। फिर वो तेजी से आगे बढ़ गया। उसने पिचके हुए रेडियेटर पर से वो मूर्ति उतारी और अपनी कार की तरफ चल पड़ा था।

कुछ मिनट बाद ही वो मूर्ति डोलन की कार के रेडियटर पर चमक रही थी। इस तरह वो मूर्ति क्लब के ही एक दूसरे मेम्बर के कब्जे में पहुंच गई थी। हालांकि क्लब की सरगर्मियां मंद पड़ गई थीं। स्पेंसर के मरने के बाद हमने उन गर्मियों में कोई आऊटिंग नहीं की थी।

बहुत-सी जगहें ऐसी थीं...जहां हम स्पेंसर के साथ जा चुके थे, उन जगहों पर पहुंचकर पिछली यादें हमें सताने लगती थीं। हमारे दिल उदास हो जाते थे।

वक्त गुजरने के साथ-साथ हमारे जख्म भी भरते गए और हमने धीरे-धीरे जिंदगी की रंगीनियों में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

डोलन हम सबमें सबसे ज्यादा झगड़ालू और गुस्से का तेज था, वो एक गैरेज में काम करता था। एक दिन उसके मालिक से उसका झगड़ा हो गया था और उसने नौकरी छोड़ दी थी। फिर उसे एक बड़ी बेकरी में ड्राइवर की नौकरी मिल गई थी। बेकरी के मालिक ने एक हल्का डिलीवरी ट्रक उसके हवाले कर दिया था।

डोलन ने थोड़े-से वक्त में ही अपने मालिक को खुश कर दिया था और मालिक उससे इतना प्रभावित हुआ था कि उसने ड्यूटी टाइम के बाद भी ट्रक डोलन के पास ही रहने की इजाजत दे दी थी।

वो एक छोटा-सा लगभग नया खूबसूरत ट्रक था जिसकी दोनों साइडों में बेकरी का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा हुआ था। डोलन मालिक की इजाजत का पूरा-पूरा फायदा उठाता था और ड्यूटी टाइम के बाद अपनी गर्लफ्रेंड को ट्रक पर लिए फिरता था। कई बार तो वो पिकनिक पर भी वही ट्रक ले जाता था।

एक शाम मैं काम से वापिस घर पहुंचा था और खाने की तैयारी कर रहा था कि मुझे कॉलबेल की आवाज सुनाई दी थी...उस दिन दोपहर से ही बारिश हो रही थी।

मैंने जाकर दरवाजा खोला तो मेरी निगाह बर्नी पर पड़ी थी, वो बेहद परेशान दिखाई दे रहा था। उसने मुझे बताया कि डोलन अस्पताल में है और उसकी हालत बहुत नाजुक है, वो हाईवे पर अपने ट्रक के नजदीक बेहोश पड़ा पाया गया था और करीब ही उसकी बेकरी का ट्रक उलटा पड़ा हुआ था।

मैंने पलटकर उसकी जैकेट उठाई थी और बर्नी का हाथ पकड़कर बोला था–

"आओ, उसके पास चलते हैं।"

अस्पताल में हमें डोलन से मिलने की इजाजत नहीं दी गई, सिर्फ उसके परिवार को कुछ मिंनट के लिए उससे मिलवा दिया गया था। उसके मां-बाप और बहन वेटिंग रूम में बैठे हुए थे। उनके चेहरे उतरे हुए थे। उसकी आंखों में एक ही सवाल था–

"यह सब कैसे हो गया?"

अस्पताल में हमें वहशत हो रही थी, इसलिए हम अस्पताल से निकल पड़े थे। कार में बैठने तक हमने आपस में कोई बातचीत नहीं की थी, हमारी हालत अजीब-सी हो रही थी।

मेरी आंखों के सामने डोलन का चेहरा घूम रहा था, वो मंजर याद आ रहे थे जब हम दोस्त इकट्ठे सैर-सपाटे को जाया करते थे। जब कार अस्पताल से कुछ फासले पर पहुंच गई थी तो मैंने खामोशी तोड़ते हुए बर्नी से कहा था–

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"डोलन एक अच्छा ड्राइवर था, उससे किसी गलती की उम्मीद कम ही की जा सकती थी। फिर यह हादसा कैसे हो गया?"

"तुम्हारे पास आने से पहले मैं उस बेकरी पर रुका था जहां डोलन काम करता था।" बर्नी ने बताया था–"उस वक्त एक और वहां मौजूद था, उसने हादसे की तफ्सील बताते हुए कहा था कि जिस वक्त डोलन के ट्रक का वो हादसा पेश आया था...उस वक्त वहां आसपास कोई कार या दूसरी गाड़ी मौजूद नहीं थी, डोलन सड़क पर तन्हा जा रहा था, उसका ट्रक लहराता हुआ...सड़क के किनारे नाले की मुंडेर से टकराकर उलट गया था। उस वक्त बारिश हो रही थी, लेकिन इतनी खतरनाक बारिश नहीं थी जो ड्राइविंग के लिए खतरनाक साबित हो। इससे जाहिर होता है कि सड़क पर उस जगह कोई चिकनी चीज बिखरी हुई थी तभी उसका ट्रक फिसल गया होगा।"

यह कहकर बर्नी गहरी सोच में डूब गया था, फिर थोड़ी देर की खामोशी के बाद बोला था–

"क्या तुम्हें वो सजावटी रेडियेटर कैप याद है, जो उसने स्पेंसर की कार के हुड पर से उतारी थी, क्रोमियम की वही मूर्ति जो पर फैलाए रहती थी और जिसका सिर गायब था?"

मैंने 'हां' में सिर हिला दिया था।

"उसने वो मूर्ति अपनी कार के रेडियटर पर फ़िट कर रखी थी।" बर्नी ने कहा था–"लेकिन कई दिन हुए उसने वो मूर्ति कार पर से उतारकर अपने ट्रक पर फिट कर ली थी। उसने मुझे बताया था कि उसने अब वो मूर्ति स्थायी तौर पर ट्रक पर ही लगी रहने देने का फैसला कर लिया है। एक हफ्ता पहले...मैंने खुद उस मूर्ति को उसके ट्रक पर लगा दिया था।"

कहकर बर्नी अर्थपूर्ण ढंग से मेरी तरफ देखने लगा था। मैं भी हैरत से उसकी सूरत तकने लगा था।

❑❑❑

❑❑❑

हमारा छोटा-सा ग्रुप अब बिखर चुका था। हमने जिस ऑटो क्लब की बुनियाद डाली थी, दो साथियों के मरने के बाद अब वो ख्वाब बन चुका था। देखने में हमारे सामने दोनों दोस्तों की मौत का ठोस कारण मौजूद था, इसके बावजूद मेरे दिल में एक वहम घर कर गया था और कई बार कोशिश करने के बावजूद मैं उस वहम को दिल से निकालने में कामयाब नहीं हो सका था। मुझे यकीन था कि इस वहम ने जरूर बर्नी के दिल में भी जन्म ले लिया होगा। आखिर जो भी हमारे ग्रुप का साथी था, उस कातिल मूर्ति की खरीदारी से लेकर आखिर तक की घटनाएं उसकी जानकारी में थीं।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अब ग्रुप के साथियों में से मैं और बर्नी ही बाकी बचे थे और डोलन की मौत के बाद हमारी मुलाकातें भी करीब-करीब खत्म ही होकर रह गई थीं।

वो नवंबर की एक सुहानी सुबह थी जब मुझे बर्नी के घर जाने का संयोग हुआ। उस दिन चमकीली धूप निकली हुई थी... मुझे सूचना मिली थी कि बर्नी ने अपनी अमरीकन ऑकलैंड कार बेच दी है और उसके बदले सुनहरे रंग की क्रिसलर स्पोर्ट्स कार खरीद ली है। नई कारें हमारी खास कमजोरी थीं।

मैं जिस वक्त बर्नी के घर पहुंचा था, उस वक्त बर्नी अपनी गैरेज के दरवाजे पर ही खड़ा हुआ था। गैरेज का दरवाजा खुला हुआ था और बर्नी के हाथ ग्रीस से लथपथ थे। शायद वो कार की ट्यूनिंग कर रहा था। अलबत्ता, जब मैं मकान में दाखिल हुआ तो वो किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।

"नई कार मुबारक हो बर्नी।" मैंने उसे उसके ख्यालों से चौंकाते हुए कहा था–"बड़ी प्यारी कार है।"

"थैंक्यू।" बर्नी ने जवाब दिया था–"मुझे भी यह गाड़ी बहुत पसंद है, इसमें ज्यादा काम नहीं करना पड़ता, बस थोड़ा सफाई वगैरह का ध्यान रखना पड़ता है।" उसने गर्वीले लहजे में कहा था।

"तुम बहुत खुशकिस्मत हो बर्नी।" मैंने कहा था–"मेरे पास तो अभी वही शेवरलेट चल रही है।"

फिर हम दोनों गैरेज में दाखिल हो गए थे, बर्नी मुझे उस स्पोर्ट्स कार की खूबियों के बारे में बताने लगा था।

लेकिन जब हम टहलते हुए कार के सामने वाले हिस्से की तरफ पहुंचे थे तो मेरी आंखें फटी-की-फटी रह गई थीं। विजय और दर्प की देवी की क्रोमियम की वो मूर्ति, जिसका सिर गायब था, बड़ी आव-ओ-ताव से बोनट पर जगमगा रही थी, उसके बाजू और पर उसी शान से फैले हुए थे।

मैंने सहमी हुई निगाहों से बर्नी की तरफ देखा था। बर्नी ने मेरे चेहरे पर उभरे सवाल को पढ़ लिया था। इससे पहले कि मैं वो सवाल जुबान पर लाता, उसने खुद ही जवाब पेश कर दिया।

"हां।" उसने सिर हिलाते हुए कहा था–"मैं स्मिथ के गैरेज में गया था जहां डोलन का ट्रक मरम्मत के लिए भेजा गया था... मैंने यह मूर्ति ट्रक पर से उतार ली थी, वर्कशॉप के मालिक ने कोई एतराज नहीं किया था। यह बहुत खूबसूरत सजावटी कैप है... मैं इसे बर्बाद होते नहीं देख सकता था। अब देखो।" उसने मूर्ति की तरफ इशारा करते हुए कहा था–"क्रिसलर स्पोर्ट्स कार पर कैसी सज रही है।"

मैं हैरत और खौफ के मिले-जुले भाव लिए उस खूनी मूर्ति को घूरने लगा।

"जब तुम इस मूर्ति की हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ हो तो फिर तुमने

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

इसे अपनी कार के बोनट पर क्यों फिट कर लिया है? क्या तुम्हें डोलन के बयान की सच्चाई पर यकीन नहीं है?"

"मैं साबित करना चाहता हूं कि वो एक इत्तेफाक ही था और हकीकत से उसका कोई सम्बंध नहीं है।" कहते हुए उसके माथे पर बल पड़ गए। शायद उसे खुद अपनी बात पर भी विश्वास नहीं था–"ये सब मूर्खताभरी बातें हैं। तुम इसे अच्छी तरह चैक कर लो। यह बिल्कुल ठोस और मजबूत बनी हुई है। इसका कोई हिस्सा अपनी जगह से हरकत नहीं कर सकता। इस तरह की घटनाएं सिर्फ जादुई कहानियों और भूतों-चुड़ैलों के किस्सों में पायी जाती हैं, हकीकत की दुनिया से इनका कोई ताल्लुक नहीं होता।"

कुछ ही दिनों में बर्नी की नई गोल्डन स्पोर्ट्स कार कस्बे में चर्चा का विषय बन गई थी। लोग उसे दूर से ही पहचान लिया करते थे।

मार्च के आखिरी दिनों में मुझे सूचना मिली कि बर्नी अपने मां-बाप और दादा को अपनी रिश्तेदारी में मिलवाने ले जा रहा था, लेकिन एक मौके पर उसके बाप को अपने कारोबारी कामों की वजह से अपनी रवानगी टाल देनी पड़ी थी, उसके साथ ही उसकी मां भी रुक गई थी। अलबत्ता, बर्नी और उसके दादा ने प्रोग्राम नहीं बदला था और वो सफर पर रवाना हो गए थे।

मुझे अगले दिन रेडियो समाचारों से मालूम हुआ था कि बर्नी की कार का एक्सीडेंट हो गया है। हादसा एक लम्बी और सुनसान सड़कर पर पेश आया था। उस हादसे में बर्नी बुरी तरह जख्मी हो गया था, जबकि उसके दादा जख्मों को बर्दाश्त न करते हुए स्वर्ग सिधार गए थे।

बर्नी को कई हफ्ते तक पास के एक करीबी कस्बे के अस्पताल में दाखिल रहना पड़ा था। जब उसकी हालत कुछ संभली थी, तो उसे अस्पताल से घर लाया गया था।

मैं जब उससे मिलने के लिए उसके घर गया था तो वो एक व्हील चेयर पर बैठा हुआ था। मैंने उसका दिल बहलाने के लिए उसकी सेहत के बारे में छोटी-मोटी बातें बनानी शुरू कर दीं। मैं बार-बार यही कह रहा था कि वो बिल्कुल ठीक-ठाक और सेहतमंद दिखाई दे रहा है।

लेकिन बर्नी पर मेरी बातों का कोई असर नहीं हुआ था, इसलिए मैंने भी खामोश हो जाना ही मुनासिब समझा था।

"तसल्लियों और झूठे दिलासों से कुछ नहीं होगा जॉनी... कुछ नहीं।" बर्नी ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा था। उसके लहजे से कमजोरी और मायूसी साफ जाहिर थी–"दादा मर चुके हैं और मैं तुम्हारे सामने अपाहिज बना व्हील चेयर पर बैठा हुआ हूं। यह सब मेरी अपनी गलती का नतीजा है। मैंने किस्मत का इम्तहान लेना चाहा था... लेकिन यह मेरी नादानी थी। मुझे वो हकीकत पहले

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ही स्वीकार कर लेनी चाहिए थी। वो हकीकत है माई डियर हकीकत... वो पर वाकई हरकत करते हैं।"

फिर बर्नी ही दोबारा बोला था–

"मैं जानता हूं कि डैडी मेरे लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं और उसके लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूं।"

मैंने महसूस किया कि बर्नी के लहजे की कमजोरी और मायूसी दोबारा उभर आई थी–"मेरे जेहन में भविष्य के लिए जाने क्या-क्या योजनाएं थीं... लेकिन अफसोस...।"

कहकर बर्नी ने एक सर्द आह भरी थी और खामोश हो गया था। फिर कुछ ठहरकर बोला था–

"मेरी दोनों टांगें बेकार हो गई हैं। डॉक्टर अभी तक इसकी वजह जान पाने में नाकाम हैं, वो कुछ और टेस्ट लेना चाहते हैं ताकि मेरी बीमारी की असल वजह मालूम कर सकें। उनका ख्याल है कि शायद कुछ अहम नसें कुचली गई हैं, कि जिसकी वजह से टांगों के पुट्ठों ने काम करना छोड़ दिया है। लेकिन मेरा ख्याल है कि मेरे अंदर कुछ और भी टूट-फूट गया है, मेरा दिल।"

"तुम अपनी बीमारी के बारे में इस अंदाज से क्यों सोचते हो बर्नी?" मैंने रूहांसे स्वर में कहा था–"तुम दोबारा सेहतमंद हो जाओगे। इस किस्म की चोटों को ठीक होने में जरा वक्त तो लगता ही है।"

मैं देर तक उसे तसिल्लयां देता रहा था। फिर बोला था–

"मैं महसूस करता हूं कि मैं खुद भी इन चक्करों में फंस गया हूं। हमारा पूरा ग्रुप ही इससे प्रभावित हुआ है। एक साल में यह तीसरा हादसा है जो हम दोस्तों में पेश आया है। स्पेंसर और डोलन हमसे हमेशा के लिए बिछुड़ गए हैं और तुम अपाहिज होकर व्हील चेयर तक सीमित रह गए हो। जब से हमने वो सजावटी रेडियेटर कैप खरीदी है, ऐसा लगता है जैसे मौत की देवी ने हमारा घर देख लिया हो।" मुझे खुद अपनी आवाज कड़वी लग रही थी।

"हां।" बर्नी ने कुछ इस अंदाज में यह इकलौता शब्द कहा था जैसे सांप फुंकारा हो, फिर कुछ ऊंची और साफ आवाज में बोला था–"जब से हमने यह मनहूस चीज खरीदी है...।" कहते हुए उसने अपने गाऊन की जेब में हाथ डाला था और जब उसका हाथ गाऊन की जेब से बाहर आया था तो हाथ में क्रोमियम की वही देवी की मूर्ति थी, बगैर सिर वाली, जिसके दोनों बाजू और पर फैले हुए थे और जो हम दोस्तों के लिए मौत साबित हो रही थी।

"जब मैं अस्पताल में दाखिल था तो डैडी ने बताया था कि पेड़ से टकराने के बाद मेरी क्रिस्लर माल तबाह हो गई थी... इसलिए उसे गाड़ियों को कबाड़खाने में भेज दिया गया था। लेकिन मैं कुछ और चाहता था।" कहते हुए पहली बार

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

बर्नी की आंखों में चमक दिखाई दी थी–"मैंने डैडी से कहा था कि खुद जाकर उस कबाड़खाने से यह रेडियेटर कैप ले आएं। मैं अपनी पूरी तसल्ली करना चाहता था। डैडी इस मूर्ति को मेरे पास ले आए। मैंने हर तरीके से इसकी जांच-पड़ताल की। तुम खुद देख सकते हो...कि इस पर कोई हल्की-सी खरोंच भी नहीं है। न ही कोई हिस्सा टूटा या टेढ़ा हुआ है। क्या तुम्हारी समझ में आता है कि ऐसा क्यों है? कार का इंजन पिचक कर रह गया है, दादा मर गए हैं। मैं हफ्तों अस्पताल में दाखिल रहा हूं लेकिन इस मनहूस मूर्ति पर खरोंच तक नहीं आई है, यह देखो।"

कहकर बर्नी ने वो मूर्ति मेरी तरफ उछाल दी थी। फिर वो झुंझलाए हुए लहजे में चीखा था–

"इसे दफन कर दो, पिघला दो। कुछ भी करो, लेकिन खुदा के लिए इसे मेरी नजरों से दूर ले जाओ जॉनी। मैं इसे एक पल भी अपनी निगाहों के सामने देखना पसंद नहीं कर सकता।" वो एक बार फिर कांपने लगा था।

बर्नी की चीख सुनकर उसकी मां और एक नर्स पोर्च में आ गई थीं। बर्नी थके हुए अंदाज में कुर्सी की पुश्त से टेक लगाकर हांफने लगा था ।

बर्नी की मां ने भीगी निगाहों से मेरी तरफ देखा था। मैंने उन निगाहों का मतलब समझकर बर्नी से इजाजत ली थी और उठ गया था।

विजय और गर्व की देवी नॉटर की बिना सिर वाली वो मनहूस मूर्ति मेरी बगल में दबी हुई थी।

❑❑❑
❑❑❑

बर्नी की टांगों में कुछ ताकत तो आ गई थी, लेकिन वो पूरी तरह सेहतमंद नहीं हो सका था। आखिरकार उसके मां-बाप उसे लम्बे दौर पर गर्म पानी के चश्मों और पहाड़ों पर सैर कराने ले गए ताकि उसकी सेहत में और ज्यादा सुधार आ सके। फिर मैंने सुना था कि कुदरती गर्म पानी के चश्मों और स्वास्थ्यवर्धक कुदरती जगहों का बर्नी की तबीयत तेजी से सुधर रही थी।

वक्त गुजरने के साथ-साथ हमारे बड़े कस्बे के हालात भी बदलते रहे थे, अब वो मध्यम दर्जे का शहर बन चुका था। मैं जिस प्लांट में काम कर रहा था। वहां अचानक मुझे एक बड़ी तरक्की मिल गई थी और मेरे हालात बहुत अच्छे हो गए थे। मैंने सबसे पहला काम यह किया कि शादी कर ली थी।

एलिस बेहद प्यारी लड़की थी, हमारी मुलाकात एक समर डांस के मौके पर हुई थी। एलिस इतनी सेवा भावना से भरपूर एक वफादार पत्नी साबित हुई थी कि मैं अपनी किस्मत पर नाज करने लगा था। कुदरत ने उसे सुंदरता की दौलत के साथ-साथ और भी बहुत-सी खूबियों से नवाजा था। कई बार तो मैं इस आशंका में पड़ जाता कि एलिस मुझसे मेरी ही तरह मोहब्बत करती है या यह मेरा वहम है?

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मेरी चाहत का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता था कि अगर उस दौर में वहशी चंगेज खान भी एलिस पर गलत निगाह डालने की कोशिश करता तो मैं उससे भी भिड़ने को तैयार हो जाता।

और फिर राबर्ट कोतन और उसकी पत्नी हमारे पड़ौस में आ बसे थे। हमारे साथ दोनों मियां-बीवी का व्यवहार हमदर्द और दोस्ताना था, इसके बावजूद मुझे वो जोड़ा कुछ अजीब-सा दिखाई देता था। इसकी वजह दोनों के स्वभाव की असमानता थी। राबर्ट बेतकल्लुफ और शोख मिजाज था जबकि उसकी बीवी जूलिया मूर्ख-सी और शर्मिली साबित हुई थी।

राबर्ट हैंडसम और व्यवहारकुशल था और ओहदे पर था। उस तक पहुंचने में एक बड़ा हाथ उसकी शख्सियत और कुशल व्यवहार का भी था। वो एक इंटरनेशनल शोहरत वाली जूता पॉलिश बनाने वाली कम्पनी में सेल्समैन की हैसियत से भर्ती हुआ था और तरक्की करते-करते डिस्ट्रिक्ट मैनेजर के ओहदे तक पहुंच गया था।

शुरूआत में हमारे दरम्यान बस रस्मी-सी दुआ-सलाम हुआ करती थी। फिर उन्होंने हमें डिनर पर बुलाया, सम्पन्नतावश हमें भी उनको बुलाना पड़ा।

तब हमें पता चला कि राबर्ट न सिर्फ मजाकिया बातों में माहिर था बल्कि एक बेहतरीन नक्काल भी था और उसके पास वार्ता और लतीफों का एक न खत्म होने वाला खजाना था और वो किसी भी महफिल की रौनक बनने का गुर जानता था। उस वक्त भी हम तीनों का सारा ध्यान उसी पर केन्द्रित था।

उस दौरान मैंने उसकी बीवी जूलिया की आंखों में एक अजीब-सी चमक उभरती देखी थी। उससे मुझे अंदाजा लगाने में दिक्कत नहीं हुई कि वो शायद दो-चार बार पहले भी इस किस्म की स्थिति से दो-चार हो चुकी थी।

फिर मैंने महसूस किया कि राबर्ट का ज्यादातर ध्यान मेरी बीवी एलिस पर ही केन्द्रित था। बातचीत के दौरान वो खासतौर पर एलिस की बात की तारीफ में एकाध फिकरा कहता, धीरे से उसका हाथ छूता था, अर्थपूर्ण ढंग से घूरता था।

उस दौरान मैंने जो कुछ महसूस किया वो यह था कि शुरूआत में एलिस ने राबर्ट की बातों और छुपे हुए इशारों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया था, लेकिन फिर वो राबर्ट की चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गई थी और मुस्कुरा-मुस्कुरा कर उसे जवाब देने लगी थी। खास तौर से जब राबर्ट कोई लतीफा या कहानी सुनाता था तो वह इस अंदाज में रंग जाती थी जैसे कमरे में उन दोनों के सिवा कोई तीसरा मौजूद ही न हो।

एलिस राबर्ट के लतीफों पर भी बेतहाशा दाद देने लगी थी, जैसे राबर्ट के लतीफे और बातें उसके लिए तेज शराब का काम कर रहे हों और वह उस शराब के नशे में डूब जाना चाहती हो।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

राबर्ट एलिस के साथ जो खेल खेल रहा था उसे भांपने के लिए किसी खास वजह की जरूरत नहीं थी। कुछ ही महीने में मैंने राबर्ट के बारे में जान लिया था कि वो कितना मक्कार और चालबाल आदमी है। इसकी वजह यह है कि मर्द दूसरे मर्द की मक्कारी और चालाकी को जल्दी ही भांप लेता है, जबकि औरत को उसका अंदाजा नहीं हो पाता।

मुझे यह भी मालूम हो गया था कि राबर्ट और एलिस छुप-छुप कर मुलाकातें करते हैं, लेकिन मैं इस बात की तस्दीक नहीं कर सका था।

मुझे अपने काम के सिलसिले में विभिन्न समयावधि के लिए बाहर भी जाना पड़ता था, कई बार तो कई दिन भी लग जाते थे। इसलिए उन्हें शहर के किसी भी होटल के कमरे में मिलने में क्या दिक्कत पेश आ सकती थी। वो साथ वाले शहरों में भी जा सकते थे, शहर के बाहर इस किस्म के होटलों की भरमार थी।

इस बात का ख्याल ही मुझे पागल कर देने के लिए काफी था। मैं एलिस को दिल की गहराइयों से चाहता था, इसलिए जब कभी भी यह ख्याल मेरे जेहन में उभरता था मैं फौरन उसे जेहन से झटक देता था।

इस बारे में मेरा ख्याल था कि जब तक यह मामला हद से आगे न बढ़ जाए, कोई निर्णायक कदम नहीं उठाना चाहिए।

मेरे साथ एलिस का जो व्यवहार हुआ करता था, उसमें काफी हद तक बदलाव आ गया था। पहले तो मेरी हर इच्छा पर सिर झुका लिया करती थी, लेकिन अब वो मूडी हो गई थी। लेकिन जब उसे अपनी ज्यादती का अहसास होता था तो वह न जाने कैसे-कैसे अपनी ग्लानि प्रकट करती रहती थी। यकीनन वो भी जबर्दस्त मानसिक यंत्रणा की शिकार थी। वो अपने व्यवहार की सख्ती की भरपाई शब्दों का मरहम लगाकर करने की कोशिश करती थी।

मैं जानता था कि वो अब भी मुझसे मोहब्बत करती थी और उसे अपनी बेवफाई का भी अहसास था। तन्हाई में वो जरूर खुद पर लानत-मलानत करके आंसू बहाती होगी। लेकिन राबर्ट से सामना होते ही वो उसकी चुम्बकीय शख्सियत के सम्मोहन में फंसकर सब कुछ भूल जाती थी।

बहरहाल, जब वो मेरी बांहों में होती तो मेरा दिल चाहता था कि मैं अपनी भड़ास निकाल लूं और उससे पूछूं कि वो यह दोहरा खेल क्यों खेल रही है?

लेकिन ऐसे मौकों पर वो यकीनन मेरे ख्याल पढ़ लेती थी और इससे पहले कि मैं अपने दिल की बात जुबान पर लाता, वो एक ऐसी आह भरती थी कि मेरी आवाज गले में ही घुट कर रह जाती थी, उसके साथ ही वो बेबसी से कंधे उचकाती हुई मेरी बांहों के घेरे से निकल जाती थी। उस मौके पर वो न जाने किन ख्यालों में खो जाती थी? फिर मैं भी उसे छेड़ना मुनासिब नहीं समझता था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

देखने में मैं और राबर्ट दोस्त थे, लेकिन उसके खिलाफ मेरे दिल में जो नफरत पैदा हो चुकी थी, वो दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही थी।

वक्त गुजरता रहा। एलिस ने अब हँसना तक छोड़ दिया था, लेकिन अब वो हमेशा खामोश ही रहने लगी थी।

मैंने भी उस दौरान कोई कदम नहीं उठाया था, बस खामोशी से इंतजार करता रहा था।

गर्मियों के मध्य का जिक्र है, एक दिन राबर्ट के मकान के अहाते में एक खटारा-सी कार दाखिल होती दिखाई दी। इस मॉडल की कारें दूसरे महायुद्ध के जनाजे में चला करती थीं और अब बेकार होकर कबाड़खाने पहुंच चुकी थीं।

मैं इत्तेफाक से उस वक्त अपने पोर्च में खड़ा हुआ था। कार के रुकते ही उसमें से एक मोटा-ताजा लड़का छलांग लगाकर बाहर निकला था, उसकी उम्र बीस साल के आस-पास दिखाई दे रही थी।

बाद में हमें पता चला कि वो लड़का राबर्ट का भतीजा था और उसका नाम डेविड था। उसके कॉलेज की छुट्टियां थीं...और वो छुट्टियां बिताने अपने चाचा के पास आया था।

उसने वो खटारा कार किसी कबाड़ी से खरीदी थी और उसे नये सिरे से नई बनाने का इरादा रखता था। मुझे उस लड़के के इरादे पैर हैरत हुई थी, क्योंकि वो उन्नीस सौ पैंतीस का मॉडल था और इस दौर में उसके पुर्जे हासिल करना नामुमकिन ही था।

फिर देखते-ही-देखते राबर्ट के घर के पीछे वाला गैराज डेविड की उम्र के लड़कों का ठिकाना बन गया था। कई बार तो राबर्ट खुद भी उनके साथ शामिल हो जाता था और वो हंगामा सुबह से शाम तक जारी रहता था।

और फिर उन लड़कों ने जो कारनामा अंजाम दिया, वो वाकई हैरतअंगेज और प्रशंसनीय था। एक चमकीली सुबह उन्होंने कार को गैराज से बाहर निकाला था, मैं हैरत से उसे देखता रह गया था। उस कार की शान ही कुछ और थी। उन्होंने कार का पुराना हुड बदल दिया था, चमकदार ओम इंजन फिट कर दिया था। पूरी कार पर उन्होंने हल्का क्रीम रंग किया था उन्होंने कार एनैमल पेंट के न जाने कितने कोट कर दिए थे कि कार धूप में आने के बाद नईनवेली दुल्हन की तरह झिलमिल-झिलमिल कर रही थी।

कार के पिछले हिस्से में पुराने जमाने के बड़े पहिए दिखाई दे रहे थे जबकि सामने के हिस्से में छोटे टायर लगे हुए थे। किस्सा मुख्तसर यह कि कार न सिर्फ नई बल्कि पहले के मुकाबले बहुत ताकतवर भी दिखाई दे रही थी। खासतौर पर डेविड खुशी से फूला नहीं समा रहा था।

उस वक्त तक डेविड का कॉलेज खुलने में दो हफ्ते बाकी रह गए थे, उसने

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

दो हफ्तों की मोहलत का पूरा फायदा उठाया...वो दिनभर अपनी कार में सैर करता फिरता था। शहर की लड़कियां उसकी कार में बैठने में फख्र महसूस करती थीं। वो हर रोज एक नई लड़की को कार में बिठाकर अकड़ता फिरता था।

कॉलेज खुलते ही डेविड चला गया। अलबत्ता, वो अपनी तैयार की हुई मॉडल ए कार राबर्ट के गैराज में छोड़ गया था। उसने कहा था कि जैसे ही उसे कॉलेज के आसपास कार रखने की कोई मुनासिब जगह मिल जाएगी वो कार ले जाएगा।

जिस रोज डेविड वापस गया, उसी रात का जिक्र है। मैं ऑफिस से वापिसी पर गैराज में कार खड़ी करने गया था।

गैराज में दाखिल होते ही अचानक मेरी निगाह विजय और गर्व की देवी नॉटर की उस मूर्ति पर पड़ी। वो खूनी मूर्ति जो अब तक मेरे दो दोस्तों की बलि ले चुकी थी और तीसरा एक हद तक अपाहिज हो गया था।

क्रोमियम की वो मूर्ति कई साल से मेरे गैराज की दीवार पर एक कील से लटकी हुई थी। यह मूर्ति मुझे बर्नी ने दी थी...लेकिन उसकी ख्वाहिश के बावजूद न तो मैंने उसे तोड़ा था न ही पिघलाया था, बल्कि यह कहना ज्यादा मुनासिब होगा कि मुझमें उस सुंदर मूर्ति को नष्ट करने का हौसला ही पैदा नहीं हो सका था। इस खून की प्यासी मूर्ति ने मुझे भी अपने जादू में जकड़ लिया था।

अलबत्ता, मैंने अपने दूसरे साथियों की तरह उसे अपनी कार के रेडियेटर पर लगाने की हिमाकत नहीं की थी। हैडलाइट्स की रोशनी में मूर्ति के साफ-सुथरे पर जगमगाने लगे थे।

उस मूर्ति के बारे में मैंने एक बात साफतौर पर नोट की थी–वो मूर्ति पिछले कई साल से गैराज के जिस हिस्से में लगी हुई थी, उसी हिस्से में पुराने टायर, खराब पुर्जे, तेल और रंग के खाली डिब्बों का भी ढेर लगा हुआ था। गैराज में सफाई के दौरान झाड़ू देने से और तेज हवा चलने से उन सभी चीजों पर मिट्टी की तहें जम जाती थीं, लेकिन दीवार पर टंगी उस मूर्ति पर मिट्टी की तह तो क्या, एक कण तक दिखाई नहीं देता था। इतना अर्सा गुजर जाने के बावजूद उसकी जगमगाहट और ताजगी में रत्तीभर भी फर्क नहीं पड़ा था। ऐसा लगता था मूर्ति के अंदर ही कोई शक्ति थी जो उसे अंदर से ही रोशनी देती थी और उस पर मिट्टी-धूल नहीं जमने देती थी।

मैंने कार का इंजन बंद किया था और नीचे उतर आया था। गैराज का दरवाजा बंद करते हुए मैंने महसूस किया था कि अंधेरा होने के बावजूद मूर्ति की जगमगाहट में कोई फर्क नहीं पड़ा था।

एक दिन राबर्ट बोला था–"जॉनी, मुझे यों महसूस होता है जैसे मेरा लड़कपन दौबारा लौट आया है।"

"वो कैसे?" मैंने पूछा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"आज डेविड का फोन आया था।" राबर्ट बोला–"उसकी पढ़ाई पूरी हो चुकी है और उसके पास इतना टाइम नहीं है कि अपनी कार लेने आ सके। वो कॉलेज के करीब ही कार के लिए एक गैराज तलाश कर चुका है। उसने मुझसे प्रार्थना की है कि मैं शनिवार को उसकी कार उसके पास पहुंचा दूं। वैसे भी मैं शनिवार को खाली हूं, इसलिए मैंने सोचा है कि शनिवार को ही उसकी कार उसके पास पहुंचा दूं। रास्ते में एक साहब से मिल भी लूंगा। इस तरह थोड़ा बिजनैस भी हो जाएगा और सैर की सैर भी! क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"बहुत बढ़िया।" मैंने चौंकते हुए कहा था। उस वक्त मेरा जेहन कहीं और भी भटक रहा था।

❑❑❑

❑❑❑

शनिवार की सुबह मैं असाधारण रूप से जल्दी ही जाग गया था। मुंह-हाथ धोने के बाद मैं सीधा गैराज में पहुंचा था और अपनी कार की सफाई में व्यस्त हो गया था। अभी मेरा काम आधा ही निबटा था कि राबर्ट अपने घर से निकल कर गैराज में दाखिल होता नजर आया। फिर उसने डेविड की कार गैराज से निकाली और उसका इंजन स्टार्ट करके छोड़ दिया।

मैं समझ गया कि वो डेविड के पास जाने की तैयारी कर रहा है। मैंने उसे आवाज दी–"राबर्ट, जरा ठहरो।" राबर्ट ने एक्सीलेटर पर तीन-चार बार दबाव डाला था और फिर इंजन बंद कर दिया था।

मैं अपने गैराज की तरफ लपका था और दीवार पर लटकी देखी खूनी मूर्ति उतारकर तेजी से राबर्ट के पास पहुंच गया था। मेरे हाथों में दबी वो मूर्ति राबर्ट की तेज निगाहों से नहीं बच सकी थी।

इससे पहले कि मैं कुछ कहता, राबर्ट फौरन बोल पड़ा–"यह तो बहुत खूबसूरत रेडियेटर कैप मालूम होती है।" राबर्ट की निगाहों से हैरत झलक रही थी और उसकी निगाहें क्रोमियम की उस जगमगाती हुई मूर्ति पर जमी हुई थीं–"ये तो उस जमाने में हुआ करती थी जब मैं बच्चा था। तुमने कहां से ली है यह?"

"हां।" मैंने सिर हिलाते हुए कहा था–"आजकल यह आउट ऑफ डेट हो चुकी है, आजकल की मॉडर्न कारों पर ये फिट भी नहीं हो सकती, क्योंकि आजकल कारों के रेडियेटर बोनट के अंदर होते हैं और उनकी कैप भी। ये कैप पिछले कई सालों से मेरे पास बेकार पड़ी हुई थी, मैंने इसे डेविड को भी दिखाया था।" मैंने झूठ बोला था–"उसे भी यह मूर्ति बहुत पसंद आई थी। मेरा ख्याल है तुम मेरी तरफ से यह मूर्ति डेविड को तोहफे के तौर पर देना, वो खुश हो जाएगा।"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं।" राबर्ट ने जोश से कहा था।

"तो क्यों न इसे अभी अपनी असली जगह पर फिट कर दिया जाए?" मैंने

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कार के सामने वाले हिस्से की तरफ बढ़ते हुए कहा था। फिर इससे पहले कि राबर्ट कुछ कह पाता, मैंने कार के रेडियेटर पर लगी पुरानी कैप उतारकर उसकी जगह विजय और गर्व की देवी नॉटर की मूर्ति फिट कर दी।

"अब देखो।" मैंने मूर्ति की तरफ इशारा करते हुए कहा–"अब इस कार की साज-सज्जा में कोई कसर नहीं रही।"

"बिल्कुल...बिल्कुल।" राबर्ट ने प्रशंसाभरे लहजे में कहा–"ऐसा लगता है कि जैसे यह मूर्ति सिर्फ इस कार के लिए ही बनाई गई हो। खासतौर से इसके फैले हुए बाजुओं और परों का तो जवाब ही नहीं है। मेरी बड़ी इच्छा थी कि मैं ऐसी किसी कार में लम्बी ड्राइव पर जाऊं और रफ्तार के सारे रिकॉर्ड ध्वस्त कर दूं। यह चार घंटे का सफर है, उस दौरान हाईवे नम्बर चार पर मुझे अपने सारे अरमान पूरे करने का मौका मिल जाएगा। मैं वापस आकर तुम्हें बताऊंगा फिर कार मेरे अरमान पूरे करने में किस तरह मददगार साबित होती है?" राबर्ट ने इंजन स्टार्ट करते हुए कहा था। मैंने हाथ लहराया था और पीछे हट गया था।

❑❑❑

❑❑❑

कई घंटे बाद मुझे यह खबर मिली थी कि सफर में राबर्ट अकेला नहीं था। मेरी बीवी एलिस से राबर्ट का प्रोग्राम पहले से ही फिक्स था और एलिस शहर के एक खास स्थान पर राबर्ट का इंतजार कर रही थी। फिर वो दोनों डेविड की कार में रवाना हो गए थे।

लेकिन जिस वक्त मुझे यह खबर मिली थी, उस वक्त तक बहुत देर हो चुकी थी, क्योंकि विजय और गर्व की देवी, जो बहुत दिनों से खून की प्यासी थी, अपने दो नए मुसाफिरों की बलि ले चुकी थी, राबर्ट और एलिस की लाशें हाइवे नम्बर चार पर तबाह कार में पायी गई थीं। दोनों ही अगली सीट पर थे।

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ऑस्ट्रियन कहानी

भुतहा कुल्हाड़ी

भुतहा कुल्हाड़ी की रहस्यमय कथा

"यह काम किसी कुल्हाड़ी का ही हो सकता है।" जिम ने कहा–"लेकिन सवाल यह है कि कुल्हाड़ी कहां है?"
"अगर इन्हें किसी कुल्हाड़ी ने ही मारा है तो कुल्हाड़ी लाश के करीब ही होनी चाहिए।" मारिया ने जवाब दिया।

लोग कहते हैं कि डर या खौफ रात के वक्त अपने शवाब पर होता है और लोग ज्यादातर रात को ही डर या खौफ का शिकार होते हैं। जब वो ख्वाबों में सरगोशियां करते हैं या सायों से डरते रहते हैं। लेकिन उसकी जिंदगी में डर और खौफ के ये क्षण भरी दोपहरी में आए थे।

उस दिन वो ऑफिस की खिड़की में से नीचे सड़क को देख रहा था जो पहाड़ी सिलसिले में चली गई थी। गर्मी...और कमरे की खामोशी ने उसे बेचैन कर दिया था कि अचानक फोन की घंटी बजने लगी थी...वो चौंक उठा–

"जिम, जल्दी आओ, मेरी मदद करो।" उसने रिसीवर उठाया था तो दूसरी तरफ से जल्दी से कहा गया था। फिर इससे पहले कि वो कोई जवाब देता, सिलसिला कट चुका था। उसने रिसीवर क्रेडिल पर रखा और तेजी से दरवाजे की तरफ भागा था।

उसे यकीन था कि फोन पर उसने जो आवाज सुनी थी वो मारिया की ही आवाज थी। ऑफिस से निकलकर वो तेजी से अपनी कार तक पहुंचा था, और कुछ ही क्षण में कार उसके घर की तरफ रवाना हो गई थी।

मारिया उस घर में अपने अंकल के साथ रहती थी जो उस पर कड़ी निगरानी रखते थे और उन दोनों की शादी में रोड़े अटकाते रहते थे। उसने कई बार जिम को अपने अंकल के बारे में बताया था, उसे मारिया की बातों पर यकीन भी था, लेकिन वो इस बात पर यकीन नहीं रखता था कि मारिया का अंकल रहस्यमयी काली शक्तियों का मालिक था और जादू-टोना जानता था। मगर वो उसकी इस बात से जरूर सहमत था कि उसके अंकल उसे पागल कर देना चाहते हैं।

वो मारिया के इकलौते संरक्षक थे और मारिया उनकी दया पर थी जिसे उन्होंने घर की चारदीवारी तक सीमित करके रख दिया था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

वो उस पर नए-नए प्रयोग करते रहते थे और उसे तरह-तरह की उलझा देने वाली कहानियां सुनाते रहते थे। जिनसे मारिया को अजीब-से खौफ का अहसास घेरे रहता था।

मारिया ने उसे कई बार बताया था कि उसके बूढ़े अंकल अक्सर खुद को ऊपरी मंजिल के एक कमरे में बंद कर लेते हैं और वहां वो किताबें पढ़ते रहते हैं, जो उन्होंने सबसे छुपाकर रखी थीं।

मारिया ने कई बार जिम से अपने ख्वाबों का भी जिक्र किया था। उसका कहना था कि काली आत्मा रात के वक्त उसके कमरे में आती है, उसके नयन-नक्श हैं लेकिन चेहरा नहीं है, उसकी आवाज है, लेकिन गला नहीं है। जब वो चीज सरगोशियां करती है तो मारिया का जिस्म कांपने लगता है, वो चीखने की कोशिश करती है लेकिन उसकी आवाज नहीं निकल पाती।

मारिया उस चीज को इंकावस कहती थी जिसका मतलब होता है, वो चीज जिसका सम्बन्ध आलौकिक और रहस्यमय शक्तियों से हो और जो रात के वक्त औरतों को डराती हो।

इसमें फर्क सिर्फ इतना था कि जिम इंकावस को एक रहस्यमय शक्ति के रूप में सिर्फ जानता ही था जबकि मारिया इंकावस को जाती तौर पर महसूस करती थी।

वो दिन-ब-दिन कमजोर और पीली पड़ती जा रही थी। जिम के ख्याल में उसकी दो अहम वजहें थीं–एक तो उसके घर का घुटा-घुटा माहौल और दूसरी वजह खुद उसके अंकल थे। रहस्यमय अंकल!

जिम ने मारिया के साथ उनके रवैये पर भी विरोध जताने की कोशिश नहीं की थी, क्योंकि वो जानता था कि ऐसी स्थिति में उसके उस घर में प्रवेश करने पर भी पावंदी लगाई जा सकती थी। जिम ने सोचा था कि वक्त गुजरने के साथ-साथ वह मसला भी हल होता चला जाएगा। लेकिन अब...वक्त बिलकुल नहीं था, मारिया को कोई हादसा पेश आ गया लगता था और उसे जल्दी ही देखना था कि मामला क्या है?

उस घर के सामने पहुंचकर उसने कार को ब्रेक लगाए तो बहुत-सी गर्द उड़ी थी। वो कार से उतरकर तेजी से घर में दाखिल हुआ था तो वहां अंधेरा था और हॉल से लगे हुए एक कमरे के दरवाजे पर मारिया खड़ी हुई थी।

उसके लालिमायुक्त सुनहरे बाल उसके कंधों पर बिखरे हुए थे, चेहरा पीला पड़ा हुआ था, लेकिन वो बिलकुल ठीक-ठाक नजर आ रही थी।

"जिम...तुम आ गए?" उसने बेचैनी से कहा था और जिम की तरफ बढ़ी थी। जिम ने भी उसकी तरफ कदम बढ़ाए थे, लेकिन उसके पांव किसी चीज से टकराए थे।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जिम ने नीचे देखा, उसके कदमों में अंकल की लाश पड़ी हुई थी और लाश के सिर से खून बह रहा था, ऐसा लगता था जैसे किसी तलवार या कुल्हाड़ी से उनके सिर पर जोरदार चोट मारी गई हो।

मारिया ने रोना शुरू कर दिया था और जिम उसे दिलासे देने लगा था।

"मेरी मदद करो।" मारिया ने सरगोशी की–"मेरी मदद करो।"

"हां, हां। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" जिम ने कहा–"लेकिन यह बताओ कि आखिर हुआ क्या है?"

"दरअसल...आज सुबह गर्मी बहुत थी। मैं बाहर खेतों की तरफ एक पेड़ के साये में लेट गई थी। जब मेरी आंख खुली थी तो मैं घर वापिस आ गई थी, तब मैंने अंकल को इसी हालत में पाया था।"

"तुमने किसी को देखा तो नहीं, या किसी किस्म का शोर तो नहीं सुना था?"

"नहीं।"

"यह काम किसी कुल्हाड़ी का ही हो सकता है, लेकिन सवाल यह है, वो कुल्हाड़ी है कहां?"

"कुल्हाड़ी...मैं नहीं जानती! अगर किसी ने इन्हें कुल्हाड़ी से ही मारा है तो वह लाश के करीब ही कहीं होगी!" मारिया ने कहा।

जिम ने कमरे में कुल्हाड़ी तलाश करनी शुरू कर दी। फिर वो एक तरफ बढ़ा–

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"जिम...तुम कहां जा रहे हो?" मारिया ने घबराकर पूछा।

"पुलिस को फोन करने।" जिम ने जवाब दिया।

"नहीं...ऐसा मत करो। अगर इस वक्त तुमने पुलिस को बुला लिया तो वो मुझे ही मुजरिम समझेंगे।" मारिया ने कहा।

"तुम ठीक कहती हो। अगर हमें हथियार मिल जाए तो उस पर से फिंगर प्रिंट्स लिए जा सकते हैं या पैरों के निशानों से ही कोई सुराग लगाया जा सकता है।"

जिम की बात सुनकर मारिया ने सर्द आह भरी।

"याद करने की कोशिश करो। क्या तुम्हें यकीन है कि उस वक्त तुम वाकई खेतों में थीं, जिस वक्त यह हादसा पेश आया था? क्या तुम्हें कुछ याद नहीं है?"

"नहीं जिम! मैंने बताया न कि मैं सो गई थी और वही डरावना ख्वाब देख रही थी जिसमें एक काली चीज...।"

"हूं...।" जिम ने कुछ सोचते हुए कहा। उसे खुद महसूस हो रहा था कि जैसे वो इन घटनाओं से दूसरी बार दो-चार हो रहा हो। वो सोच रहा था कि शायद उसने पहले भी ऐसी वारदात देखी है या फिर ऐसी किसी वारदात के बारे में कहीं पढ़ा है।

"कोशिश करो, शायद तुम्हें कुछ याद आ जाए।" जिम ने मारिया से कहा–"क्या तुम यह बता सकती हो कि तुम बाहर खेतों की तरफ क्यों गई थीं?"

"हां...मेरा ख्याल है कि मुझे कुछ याद आ रहा है। मैं वहां मछली पकड़ने की डोरी लेने गई थी।" मारिया ने कहा।

"मछली पकड़ने की डोरी?" जिम ने हैरत से कहा। फिर उसे याद आ गया कि उसने यह कहानी कहां पढ़ी थी।

"मेरी बात गौर से सुनो, तुम मारिया नहीं हो। तुम लिजा हो...बोरटन हो।"

जिम की बात सुनकर उसने कुछ भी नहीं कहा था। यह नाम मारिया के लिए कोई मतलब नहीं रखता था।

लेकिन जिम को याद आ गया कि यह एक पुरानी कहानी थी। उसने सहारा देकर मारिया को सोफे पर बिठाया और आहिस्ता-आहिस्ता उसे वो पुरानी कहानी सुनानी शुरू कर दी। कहानी की पहली अब तक हल नहीं हुई थी।

"अठारह सौ बानवें के अगस्त की बात है, लोथल नदी के किनारे जो आबादी है वहां आद्रे बारटन नामक एक शख्स अपनी दूसरी बीवी एल्वे बारटन के साथ रहा करता था। उसकी पहली बीवी से दो बेटियां, ऐमा और लिजा थीं और उनके घर में एक नौकरानी वर्था थी–

यह अगस्त की दो तारीख की बात है, उस दिन लिजा और वो नौकरानी वर्था घर पर थीं। मिस्टर और मिसेज बोरटन बीमार हो गए और लिजा ने अपनी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

एक सहेली मैरीन को बताया कि उसे संदेह है कि उसके घर में इस्तेमाल होने वाले दूध में जहर मिलाया गया था। लेकिन कोई लिजा की बातों पर यकीन नहीं करता था। उसकी बड़ी बहन ऐमा घर में आये हुए एक मेहमान जॉन के साथ घूमने बाहर गई हुई थी।

चार अगस्त को मिस्टर बोरटन अपने घर के सोफे पर लेटकर सो गया, लिजा खेत की तरफ निकल गई थी...जब वो वापिस आई थी तो उसे बोरटन की लाश मिली थी जिसका चेहरा बिगड़कर वीभत्स हो गया था। उसने नौकरानी वर्था को बुलाया और डॉक्टर को बुलाने के लिए गया, लेकिन डॉक्टर ब्राउन घर पर मौजूद नहीं था–

फिर वो एक पड़ोसन मिसेज चर्चिल से मिली और उसने उन्हें अपने बाप की मौत के बारे में बताया। उन्होंने उसकी मां के बारे में पूछा तो लिजा ने बताया कि वो घर पर नहीं हैं...मिसेज चर्चिल ने लोगों को सूचना दी, बहुत-से लोग जमा हो गए, उन लोगों में पुलिस वाले और डॉक्टर भी थे।

फिर मिसेज चर्चिल घर में दाखिल हुई थीं, जिनकी लाश भी थोड़ी देर बाद एक कमरे से बरामद हुई थी। उस लाश की हालत भी वैसी ही थी जैसी की बोरटन की लाश की थी। पुलिस ने उसी वक्त लोगों से पूछताछ शुरू कर दी थी। घर से कोई चीज चोरी नहीं गई थी और दोनों कत्लों का संदेह लिजा पर किया जा रहा था, उसका कहना था कि वो खेतों में थी और आड़ू खा रही थी और मछली पकड़ने की डोरी ढूंढ रही थी...।

फिर वो सो गई थी और अचानक उसने एक आवाज सुनी थी जिससे वो जाग गई थी और घर आ गई थी...ताकि उस आवाज का भेद जान सके, जब वो घर पहुंची तो उसे अपने बाप की लाश मिली थी। फिर एक स्थानीय दवा विक्रेता ने बताया था कि कुछ दिन पहले ही लिजा उससे जुएं मारने का जहर खरीदने आई थी, लेकिन उसने दिया नहीं था और कहा था कि डॉक्टर से लिखवा-कर लाए।

तहकीकात होती रही थी जिसके दौरान एक कुल्हाड़ी मिली थी जिसे हाल ही में धोया गया था और फिर उसे छुपा दिया गया था। तीसरे दिन लिजा की सहेली उसके घर गई थी तो उसने लिजा को अब कुछ कपड़े जलाते हुए देखा था। जब उसने लिजा से कपड़े जलाने की वजह पूछी थी तो बताया था कि उन कपड़ों पर पेंट गिर गया थे। मेरीन को अच्छी तरह याद था कि वही कपड़े लिजा ने उस दिन पहने हुए थे जिस दिन उसके घर में हादसे पेश आए थे। उसके बाद लिजा को गिरफ्तार कर लिया गया था...।

यह घटना बहुत मशहूर हुई थी और अखबारों में उसे बहुत अहमियत दी गई थी, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला था। फिर तेरह दिन के शोर-शराबे

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

के बाद यह खबर ठंडी पड़ गई थी। किसी की समझ में नहीं आ रहा था कि एक जवान लड़की ने अपने बाप को क्यों कत्ल कर दिया था और उसकी मां कहां गायब हो गई थी...?" जिम ने कहा–"यह कहानी तुम किसी भी पुरानी क्राइम मैगजीन में पढ़ सकती हो, आजकल भी कोई न कोई उसे छाप ही देता है।"

"जिम, तुमने मुझे यह सब कुछ क्यों बताया है? क्या तुम यह कहना चाहते हो कि मैं...। मैंने कुल्हाड़ी से अपने अंकल को मार डाला है?"

"मैं कुछ नहीं बता रहा।" जिम ने कहा–"मैं तो इस केस में और लिजा के केस में जो समानता है, उसकी बात कर रहा हूं।"

"तुम्हारा क्या ख्याल है, क्या हुआ होगा? म...मेरा मतलब है, लिजा के केस में?"

"मैं नहीं जानता।" जिम ने आहिस्ता से कहा–"मेरा ख्याल था कि शायद तुम इस पर कुछ रोशनी डाल सको।"

"ये दोनों घटनाएं एक ही जैसी भी तो हो सकती हैं।" उसकी आंखों में चमक आ गई थी–"तुम जानते ही हो, मैंने तुम्हें अपने ख्वाबों के बारे में बताया था और यह भी बताया था कि मेरे ख्वाबों में इंकावस आता है। फर्ज करो लिजा भी ऐसे ही ख्वाब देखती हो और उसे ख्वाबों के दौरान ही कत्ल करने की हिदायत दी गई हो?"

"अंकल ऐसी बातों को खूब जानते थे और उन्हें मालूम था कि ख्वाबों के दौरान किसी से किसी दुष्टात्मा को कैसे चिपकाया जाता है। यह भी तो हो सकता है कि जिस वक्त लड़की सो रही थी उसी वक्त उसने अपने मां-बाप को कत्ल कर दिया हो, और मेरे साथ भी वैसा ही हुआ हो।"

जिम की हैरत कुछ और बढ़ गई...मारिया ने आगे कहा–

"और तुम्हें यह भी अंदाजा होगा कि पुलिस इस बारे में क्या कहेगी?"

"अब बचाव की सिर्फ एक ही सूरत है कि हम आला-ए-कत्ल ढूंढ लें। जिम ने कहा।

फिर दोनों मिलकर उस हथियार को ढूंढने लगे जिससे कि अंकल को कत्ल किया गया था। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिली।

फिर जिम ने ही खामोशी तोड़ते हुए कहा–

"हम अंकल के कमरे तक आ पहुंचे हैं...अरे यह कमरा तो लॉक है, हैरत की बात है!"

"नहीं, अंकल इसे हर वक्त लॉक करके चाबी अपने पास रखा करते थे।" मारिया ने बताया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"मैं चाबी लाता हूं।" जिम ने कहा और दोबारा अंकल की लाश के पास आया। उसने अंकल की लाश की जेब में चाबी तलाश की और दोबारा मारिया के पास पहुंचा–

"मैं तुम्हारे साथ अंदर नहीं जाऊंगी।" मारिया ने कहा–"मैं कभी इस कमरे में नहीं गई थी, वो अक्सर खुद को इस कमरे में बंद कर लेते थे। मुझे खौफ महसूस हो रहा है जिम, मैं उनके बड़बड़ाने की आवाजें सुनती रहती थी...वो शैतान की प्रार्थनाएं किया करते थे। इस घर में भूत-प्रेत हैं जिम!"

"ठीक है, तुम यहीं इंतजार करो।" जिम ने कहा। फिर वो दरवाजा खोल कर अंदर चला गया।

और इस कमरे में किताबें थीं, फर्श पर बड़े-बड़े दायरे बने हुए थे, जो करीब एक दर्जन होंगे। दीवार पर नीले रंग के चॉक से ड्योमेट्रीकल शक्लें बनी हुई थीं और दीवारों तथा फर्श पर जगह-जगह मोम जमी हुई थी। कमरे में एक तेजधार हथियार ने उसका ध्यान अपनी तरफ खींचा। यह एक लम्बा चाकू था जो एक मेज पर रखा हुआ था और उस पर ताजा खून लगा हुआ था।

जिम को यकीन था कि इससे कत्ल नहीं किया गया। वो दरअसल कुल्हाड़ी तलाश कर रहा था, जो यहां नहीं थी। वो उस कमरे से बाहर निकल आया और हॉल कमरे में मारिया से जा मिला–

"क्या यहां कोई और जगह नहीं है?" जिम ने पूछा–"कोई और कमरा?"

"अब सिर्फ खेतों में बनी एक कोठरी रह गई है।" मारिया ने कहा–"तुम ऐसा करो, तुम घर में कुल्हाड़ी तलाश करो, मैं जाकर खेतों में देखती हूं।" कहकर मारिया बाहर चली गई।

जिम कमरों में विभिन्न चीजों के पीछे, नीचे और दाएं-बाएं कुल्हाड़ी तालाश करने लगा। अचानक उसे एक असामान्य-सा अहसास हुआ और वो चौंक कर पीछे मुड़ा...।

उसके पीछे एक शीशा था जिसमें उसे मारिया नजर आ रही थी जिसके हाथ में एक खतरनाक-सी कुल्हाड़ी थी...जिम ने बढ़कर उसके हाथ को थाम लिया और उसे अपनी पकड़ में जकड़ लिया। मारिया जमीन पर ढेर हो गई। उसके चेहरे पर अंधेरा-सा फैल गया था।

फिर मारिया के चेहरे पर छाया अंधेरा आहिस्ता-आहिस्ता छंटने लगा था। उसका चेहरा साफ हो गया और जिम को उसके सवाल का जवाब मिल गया था। मारिया के हाथों में जो कुल्हाड़ी थी, उस पर ताजा खून लगा हुआ था।

जिम ने उसे सोफे पर बिठा दिया, वो बिल्कुल निश्चल बैठ गई। जिम ने भी उसे छेड़ने की कोशिश नहीं की...वो मारिया को छोड़कर वापस हॉल में चला गया, कुल्हाड़ी उसके हाथ में ही थी। वो कोई और मौका हाथ से नहीं जाने

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

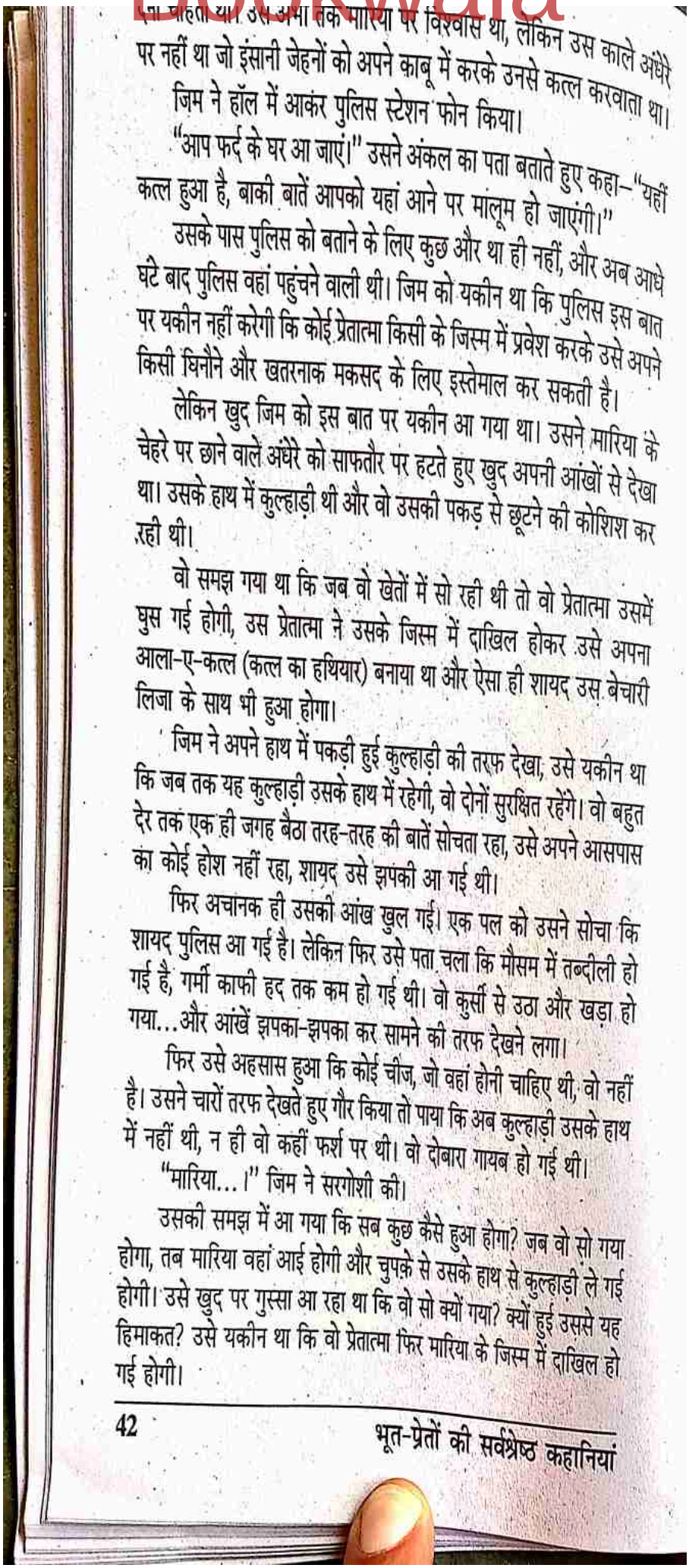

ना चाहता था। उसे अभी तक मारिया पर विश्वास था, लेकिन उस काले अंधेरे पर नहीं था जो इंसानी जेहनों को अपने क़ाबू में करके उनसे कत्ल करवाता था।

जिम ने हॉल में आकर पुलिस स्टेशन फोन किया।

"आप फर्द के घर आ जाएं।" उसने अंकल का पता बताते हुए कहा–"यहीं कत्ल हुआ है, बाकी बातें आपको यहां आने पर मालूम हो जाएंगी।"

उसके पास पुलिस को बताने के लिए कुछ और था ही नहीं, और अब आधे घंटे बाद पुलिस वहां पहुंचने वाली थी। जिम को यकीन था कि पुलिस इस बात पर यकीन नहीं करेगी कि कोई प्रेतात्मा किसी के जिस्म में प्रवेश करके उसे अपने किसी घिनौने और खतरनाक मकसद के लिए इस्तेमाल कर सकती है।

लेकिन खुद जिम को इस बात पर यकीन आ गया था। उसने मारिया के चेहरे पर छाने वाले अंधेरे को साफतौर पर हटते हुए खुद अपनी आंखों से देखा था। उसके हाथ में कुल्हाड़ी थी और वो उसकी पकड़ से छूटने की कोशिश कर रही थी।

वो समझ गया था कि जब वो खेतों में सो रही थी तो वो प्रेतात्मा उसमें घुस गई होगी, उस प्रेतात्मा ने उसके जिस्म में दाखिल होकर उसे अपना आला-ए-कत्ल (कत्ल का हथियार) बनाया था और ऐसा ही शायद उस बेचारी लिजा के साथ भी हुआ होगा।

जिम ने अपने हाथ में पकड़ी हुई कुल्हाड़ी की तरफ देखा, उसे यकीन था कि जब तक यह कुल्हाड़ी उसके हाथ में रहेगी, वो दोनों सुरक्षित रहेंगे। वो बहुत देर तक एक ही जगह बैठा तरह-तरह की बातें सोचता रहा, उसे अपने आसपास का कोई होश नहीं रहा, शायद उसे झपकी आ गई थी।

फिर अचानक ही उसकी आंख खुल गई। एक पल को उसने सोचा कि शायद पुलिस आ गई है। लेकिन फिर उसे पता चला कि मौसम में तब्दीली हो गई है, गर्मी काफी हद तक कम हो गई थी। वो कुर्सी से उठा और खड़ा हो गया...और आंखें झपका-झपका कर सामने की तरफ देखने लगा।

फिर उसे अहसास हुआ कि कोई चीज, जो वहां होनी चाहिए थी, वो नहीं है। उसने चारों तरफ देखते हुए गौर किया तो पाया कि अब कुल्हाड़ी उसके हाथ में नहीं थी, न ही वो कहीं फर्श पर थी। वो दोबारा गायब हो गई थी।

"मारिया...।" जिम ने सरगोशी की।

उसकी समझ में आ गया कि सब कुछ कैसे हुआ होगा? जब वो सो गया होगा, तब मारिया वहां आई होगी और चुपके से उसके हाथ से कुल्हाड़ी ले गई होगी। उसे खुद पर गुस्सा आ रहा था कि वो सो क्यों गया? क्यों हुई उससे यह हिमाकत? उसे यकीन था कि वो प्रेतात्मा फिर मारिया के जिस्म में दाखिल हो गई होगी।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जिम उस कमरे में आया, जहां मारिया को छोड़कर गया था। उसकी आंखें फर्श पर जमकर रह गईं जहां सुर्ख चमकदार धब्बे पड़े हुए थे, जो हॉल से बाहर की तरफ चले गए थे। वो खून था...ताजा खून!

जिम तेजी से उस तरफ दौड़ा, जिधर खून के वो कतरे गए थे। दूसरे कमरे में मारिया सोफे पर उसी तरह लेटी हुई थी, जिस तरह वो लिटाकर गया था।

फिर जिम फर्श पर पड़े हुए खून को गौर से देखने लगा, खून के वो कतरे सोफे के करीब पहुंचकर खत्म हो गए थे। वो खून के कतरे सोफे की तरफ से गए थे या सोफे की तरफ आए थे? उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।

अगर मारिया अभी तक वैसे ही लेटी हुई थी तो जाहिर था खूनी आत्मा ने उसके जिस्म पर कब्जा नहीं किया था...लेकिन जिम भी तो सो रहा था। अचानक यह ख्याल बिजली की तरह कौंधा। यह भी तो मुमकिन था कि जब वो सो रहा था तो प्रेतात्मा ने उसी पर ही कब्जा कर लिया हो।

वो याद करने की कोशिश करने लगा कि उसे नींद कैसे आ गई थी? लेकिन उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। वो चारों तरफ आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था, लेकिन उसे कुल्हाड़ी कहीं नजर नहीं आ रही थी। वो सोच रहा था कि कुल्हाड़ी कहां गई?

अचानक कमरे में रोशनियां नजर आने लगीं...हिलती-डुलती रोशनियां। अब वो कुल्हाड़ी भी नजर आने लगी थी—बिलकुल साफतौर पर, उसे अच्छी तरह देखा जा सकता था।

वो मारिया के सिर के पिछले हिस्से में घुसी हुई थी। प्रेतात्मा ने तब जिम के जिस्म पर कब्जा कर लिया था, जब वो सो रहा था, और उसके हाथों...मारिया को कत्ल करवा दिया था।

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

डच कहानी

मक्कार तांत्रिक (डॉगी)

आपसी विश्वासघात की शिक्षाप्रद कहानी

"हूं क्या समस्या है?" बूढ़े ने आंखें खोले बगैर ही पूछा था।

"मैं चाहता हूं किसी तरह मेरे अंकल का काम तमाम हो जाए।" नॉर्मन ने कहा–"लेकिन एकदम नहीं, धीरे-धीरे सख्त बीमार होकर मर जाएं वो।"

इस वक्त वो ट्रेन के फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट में बैठा मैक्सिको सिटी से न्यूयार्क की तरफ सफर कर रहा था। इस कम्पार्टमेंट में उसके अलावा चार मुसाफिर और भी थे। उसके सामने वाली बर्थ पर एक मुसाफिर अपने कुत्ते के साथ सफर कर रहा था, जबकि साइड वाली बर्थ पर साठ साल की एक बुढ़िया बैठी थी। जब से ट्रेन रवाना हुई थी, तभी से बुढ़िया मुंह-ही-मुंह में कुछ बुदबुदाती आ रही थी। जैसे ही ट्रेन की रफ्तार तेज होती, बुढ़ियां उंगलियों से अपने सीने पर क्रॉस का निशान बनाती थी और हाथ जोड़कर कम्पार्टमेंट की छत की तरफ देखने लगती थी।

शायद उसका यह पहला सफर था ट्रेन से। तीसरा मुसाफिर एक चालीस पैंतालीस साल का एक शख्स था जो सिर पर हैट जमाए और मुंह में सिगार दबाये खिड़की से बाहर गुजरते दृश्य देखने में मग्न था। चौथा मुसाफिर एक नौजवान था, शायद विद्यार्थी था, वो एक किताब पढ़ने में व्यस्त था।

ट्रेन को रवाना हुए दो घंटे से ज्यादा वक्त गुजर चुका था और वो अब तक रास्ते में तीन छोटे स्टेशनों पर ठहर चुकी थी।

तमाम मुसाफिरों का जायजा लेने के बाद उसने अपनी सामने वाली बर्थ के मुसाफिर पर एक बार फिर नजर डाली और उससे बातचीत करने के बारे में सोचने लगा, क्योंकि वो बेहद बोरियत महसूस कर रहा था। सामने की बर्थ वाला बार-बार अपने कुत्ते पर प्यार से हाथ फेरता था जो छोटे कद और लम्बे सफेद बालों वाला एक बहुत खूबसूरत कुत्ता था।

"आपका कुत्ता बहुत खूबसूरत है।" उसने बातचीत शुरू करते हुए कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

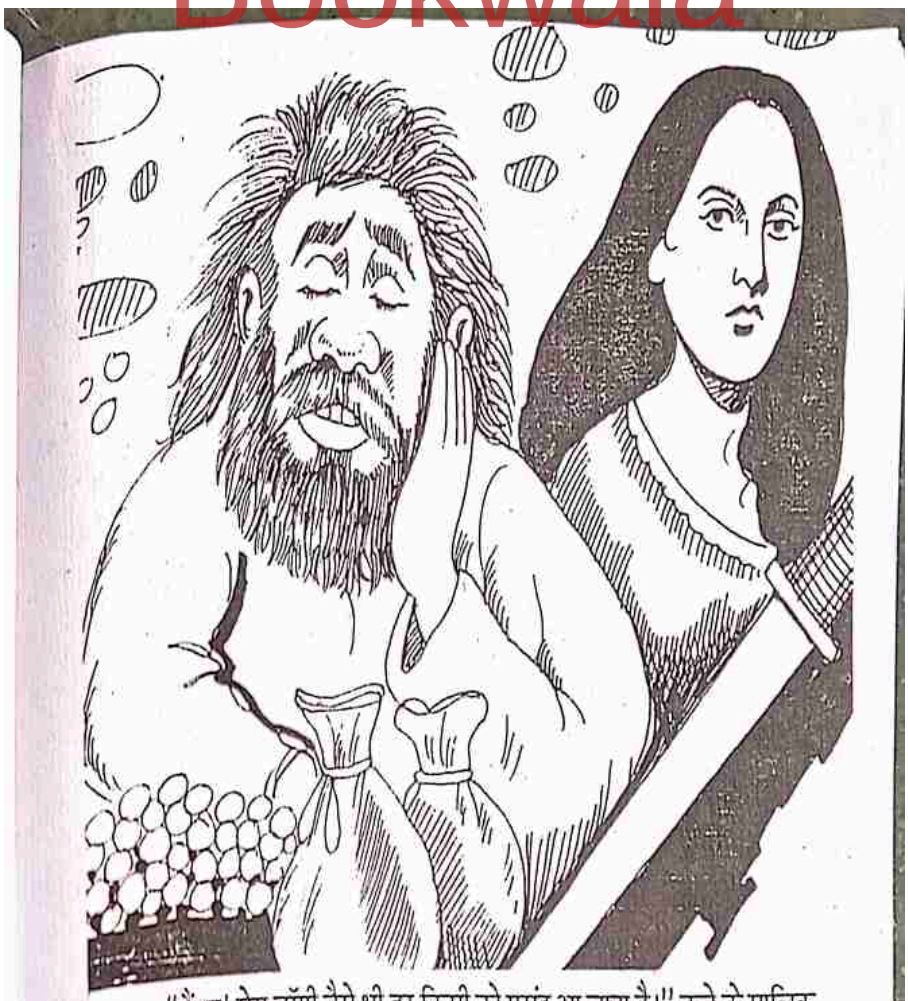

"थैंक्यू! मेरा डॉगी वैसे भी हर किसी को पसंद आ जाता है।" कुत्ते के मालिक ने मुस्कुराकर कहा और फिर प्यार से अपने कुत्ते पर हाथ फेरने लगा।

"आप न्यूयार्क जा रहे हैं मिस्टर?" उसने दोबारा कुत्ते के मालिक से कहा।

"फिलिप्स... मेरा नाम फिलिप्स है और मैं न्यूयार्क ही जा रहा हूं।" उसने दोबारा मुस्कुराते हुए जवाब दिया–"और आप...आप कहां तक जा रहे हैं?"

"मेरा नाम नॉर्मन है, नॉर्मन एडवर्ड, और मैं भी न्यूयार्क ही जा रहा हूं।" नॉर्मन भी मुस्कुराकर बोला।

"कोई खास काम है या सिर्फ तफरीह के लिए?" फिलिप्स ने पूछा।

"दरअसल, मेरे चाचा का फोन आया था कल सुबह! वो बेहद बीमार हैं, उन्हीं की देखभाल के लिए मैं जा रहा हूं।" नॉर्मन ने बताया।

"ओह...!" फिलिप्स ने अफसोस जताया।

"और आप किस सिलसिले में जा रहे हैं?" नॉर्मन ने पूछा।

"मेरा ट्रांसफर हुआ है वहां, इंस्पेक्टर के ओहदे पर।" फिलिप्स बोला।

"किस इलाके में?" नॉर्मन ने पूछा।

"जोनाथन पार्क कॉलोनी में।" फिलिप्स ने बताया।

"ओह वाकई! मेरे चाचा भी वहीं रहते हैं।" नॉर्मन खुश होकर बोला।

"खूब।" फिलिप्स बोला–"फिर तो मुलाकात होती रहेगी।"

और फिर उनमें बातों का एक लम्बा सिलसिला चल निकला। फिर उनकी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

बातों में बेतकल्लुफी भी आती गई। ट्रेन छोटे स्टेशनों पर रुकती... चलती, आखिरकार न्यूयार्क स्टेशन पर आ पहुंची। स्टेशन से बाहर आकर उन्होंने एक ही टैक्सी हायर की और रवाना हो गए।

पुलिस स्टेशन के करीब पहुंचकर फिलिप्स उतर गया और नॉर्मन के चाचा को देखने आने का कहकर पुलिस स्टेशन के अंदर दाखिल हो गया। टैक्सी आगे बढ़ गई और थोड़ी देर बाद ही नॉर्मन के चाचा के आलीशान बंगले के सामने जाकर ठहर गई।

नॉर्मन ने उतर कर किराया अदा किया और अपना सामान लेकर गेट के पास पहुंचा। वेल देने पर अंदर से चौकीदार बाहर निकला। नॉर्मन ने उसे सामान ले आने का इशारा किया।

चौकीदार से चाचा की तबियत के बारे में पूछता हुआ नॉर्मन उनके कमरे में दाखिल हुआ था। बेहद खूबसूरत, डेकोरेटेड कमरा था यह और कमरे में पड़े खूबसूरत, जहाजी साइज के बैड पर कम्बल ओढ़े कोई लेटा हुआ था।

बैड के करीब पहुंचकर उसने कम्बल का कोना जरा-सा हटाया, वो उसके चाचा ही थे। लेकिन उन्हें पहचानना ही मुश्किल था, वो बेहद कमजोर लग रहे थे। आंखों के गिर्द काले घेरे, पपड़ी जमे सुखे होंठ उन्हें वाकई बहुत बीमार साबित कर रहे थे।

अभी वो चाचा का जायजा लेने में ही व्यस्त था कि उन्होंने करवट लेते हुए आंखें खोल दीं। फिर थोड़ी देर पलकें झपकाने के बाद उन्होंने गौर से नॉर्मन की तरफ देखा–

"अरे... कौन... नॉर्मन बेटा" उन्होंने सवालिया ढंग से कहा।

"हां अंकल, मैं ही हूं।" वो बैड पर उनके करीब ही बैठते हुए बोला–"अब आपकी तबीयत कैसी है? जैसे ही मुझे पता चला, मैं वहां से रवाना हो गया था।"

अंकल ने लेटे-लेटे ही नॉर्मन का कंधा थपथपाया, और... फिर उनकी आंखों से आंसू बहने लगे।

"अरे... क्या हुआ अंकल! प्लीज, रोयें नहीं आप। आपने डॉक्टर से तो चेकअप कराया नहीं होगा, मैं अभी फोन करता हूं।" वो इन्हें दिलासा देते हुए उठने लगा।

"हां, डॉक्टर तो दिन-रात मेडिसन दे रहे हैं।" वो नॉर्मन का बाजू पकड़ कर उसे दोबारा बिठाते हुए बोले।

"तो फिर?" नॉर्मन ने पूछा–"कोई फर्क नहीं पड़ा?"

"फर्क कैसे पड़े बेटा, तन्हाई मुझे अंदर-ही-अंदर खाए जा रही है।" अंकल ने मायूसी से सिर हिलाते हुए कहा–"अगर तुम मेरे सगे बेटे होते, तब तो मेरे पास ही रहते न?"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"आखिर कब तक अंकल? एक-न-एक दिन तो मुझे अपने पैरों पर खड़ा होना ही था न?" नॉर्मन ने बेबसी से होंठ भींचते हुए कहा।

दरअसल नॉर्मन पहले अपने अंकल के पास ही रहा करता था, क्योंकि इन दोनों चाचा-भतीजे का एक-दूसरे के सिवा दुनिया में कोई नहीं था। उसकी शादी भी यहीं हुई थी, मैरी, उसकी पत्नी उसे बहुत पसंद थी और उन दोनों की तब से मैरिज हुई थी, वो दोनों हँसी-खुशी यहां रह रहे थे कि एक दिन अंकल ने बातों-बातों में जिक्र कर दिया था कि वो अपनी सारी जायदाद किसी समाज-कल्याण में लगे संस्थान को दान में दे देगा। यह बात नॉर्मन के दिल में बहुत खटकी थी। उसने सोचा था कि जिंदगी का क्या भरोसा, कल अगर अंकल स्वर्ग सिधार गए तो परसों हमें यह घर छोड़ना पड़ जाएगा। तो...क्यों न वो इसी वक्त चला जाए और जल्दी ही अपने पैरों पर खड़ा होने की कोशिश करे। चुनांचा दूसरे ही दिन...वो अपने एक जानकार के पास मैक्सिको रवाना हो गए थे। अब दोनों पति-पत्नी वहां एक जनरल स्टोर खोलकर जिंदगी गुजार रहे थे।

"बीवी और बच्चे को नहीं लाए?" अंकल ने पूछा।

"नहीं, अगर हम दोनों यहां आ जाते तो स्टोर का क्या बनता?"

"देखो बेटा, मेरी जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है और मेरा इस दुनिया में कोई नहीं है सिवा तुम्हारे। अगर मेरी कोई औलाद होती तो वह भी मुझे इतनी ही प्यारी होती, जितने कि तुम हो।" अंकल ने कहा–"अब जबकि तुम एक बेटे के बाप बन चुके हो, जिससे हमारी खत्म होती नस्ल में दोबारा इजाफा हुआ है, तो मैंने सोचा है कि मरने से पहले अपनी तमाम प्रॉपर्टी तुम्हारे नाम कर जाऊं। अब जबकि मैं आखिरी सांसों पर हूं तो मैंने इसीलिए तुम्हें बुलाया है कि...।"

"लेकिन आप तो समाज कल्याण को देने की बात कर रहे थे न?" नॉर्मन ने अंदर की खुशी को दबाते हुए कहा।

"हां सोच रहा था वैसा भी। पर अब मैंने अपना इरादा बदल दिया है। तुम ऐसा करो कि मैरी को फोन करो कि वह भी यहां चली आए।" अंकल ने कहा।

"ठीक है।" नॉर्मन ने मुस्कुराकर कहा। वो बेहद खुश था। उसके बस में नहीं था वर्ना वो वहीं नाचना शुरू कर देता। उसके अंकल की जायदाद बहुत बड़ी थी। इस आलीशान बंगले के अलावा न्यूयार्क सिटी में उनके दो प्लाजा थे जिनसे मासिक किराये के रूप में मोटी रकम आ रही थी और अब वो उस सारी जायदाद का इकलौता मालिक बनने जा रहा था। वो जायदाद, जिससे पिछले तीन सालों में वो निराश हो चुका था, अब फिर उसकी हो रही थी, तो भला क्यों न वो...खुशी में फूला न समाता? रात के खाने के बाद उसने फोन पर मैरी को सूचना दी–

"मैरी डार्लिंग, हम करोड़पति बनने वाले हैं।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"क्या मतलब?" दूसरी तरफ से उसकी बीवी की आवाज सुनाई दी।

"अंकल अपनी सारी जायदाद मेरे नाम कर रहे हैं। यानि कि उनके देहांत के बाद मैं उनका वारिस हूंगा।" नॉर्मन की आवाज से खुशी फूटी पड़ रही थी।

"मगर वो सामाजिक भलाई...।" मैरी ने कहना चाहा।

"अरे यार, उनका इरादा बदल गया है।"

"बस करो, ज्यादा ऊंचे ख्वाब न देखो, उनका इरादा दोबारा भी बदल सकता है।" मैरी ने व्यंग से कहा था।

"मैं समझा नहीं?" नॉर्मन ने चौंक कर पूछा।

"देखो नॉर्मन, उनके मरने के बाद ही जायदाद तुम्हारे नाम होगी न। और अभी तो वे जिंदा हैं। हो सकता है कि मरते-मरते एक बार फिर उनका इरादा बदल जाए। भला ऐसे अस्थिर दिमाग बूढ़े शख्स का कोई भरोसा है?"

"मैं नहीं समझता कि अब उनका इरादा चेंज होगा। तुम ऐसा करो कि तुम यहां चली आओ, स्टोर साईमन के हवाले कर दो, जैसे ही मुझे फुर्सत मिली, मैं वहां जाकर स्टोर बेच आऊंगा।"

"रहने दो नॉर्मन, मैं तुम्हें यह मशविरा नहीं दूंगी कि स्टोर बेचो या मुझे वहां बुलाओ। पहले तुम वहां रहकर कुछ दिन अंकल का रवैया देख लो, उसके बाद ही कुछ सोचेंगे। उनका इरादा बदल भी सकता है और तब वापस यहां आकर हमारा सेट होना बहुत मुश्किल हो जाएगा।"

"ठीक है।" नॉर्मन ने गहरी सांस लेकर कहा, और सिलसिला काट दिया।

अब न्यूयार्क में आए हुए नॉर्मन को दो हफ्ते गुजर चुके थे, अंकल की तबीयत सुधरती जा रही थी और नॉर्मन को उनके स्वर्ग सिधारने के चांसेज निकट भविष्य में तो नजर नहीं आते थे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करे? मैरी के फोन आ-जा रहे थे, खुद नॉर्मन को भी मैरी की लम्बी जुदाई खलने लगी थी, शादी के बाद वो दोनों पहली बार अलग हुए थे। न जाने वो घर और स्टोर दोनों एक-साथ कैसे संभाल रही होगी? सोच-सोच कर नॉर्मन की खोपड़ी चकरा रही थी।

अभी वो इन्हीं सोचों में गुम था कि गार्ड ने अंदर आकर एक विजिटंग कार्ड उसे दिया।

"इंस्पेक्टर फिलिप...ओह!" कार्ड पर नजर पड़ते ही हैरत से बोला-"बुलाओ-बुलाओ उसे अंदर, ड्राइंगरूम में बिठाओ, मैं अभी आ रहा हूं।"

ड्रेसिंग टेबल पर जाकर बाल संवारने के बाद वो तेजी से ड्राइंगरूम की तरफ चल पड़ा और दरवाजा खोलकर अंदर दाखिल हुआ-

"बड़े वादाखिलाफ निकले यार तुम तो, दो दिन बाद आने का कहकर पूरे दो हफ्ते बाद आए हो।" नॉर्मन ने फिलिप को गले से लगाते हुए कहा। साथ

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ही उसकी निगाह फिलिप के सफेद कुत्ते पर पड़ी जो उसके साथ ही सोफे पर विराजमान था।

"चलो मैं नहीं आया था तो तुम ही मालूम कर लेते। मैं तो आते ही केसेज में उलझ गया था, तुम तो फारिग थे।" फिलिप ने मुस्कुराकर कहा।

"फिलिप, मुझे तुम्हारा डॉगी बहुत पसंद आया है।" नॉर्मन बोला।

"च हिए?" फिलिप ने पूछा।

"क्य, मतलब?" नॉर्मन ने उलझकर पूछा।

"अरे भई, डॉगी चाहिए तो ले लो, और क्या मतलब!" फिलिप हँसकर बोला।

"अरे नहीं।" नॉर्मन भी हँसा।

"मैं तो समझता था कि तुम अब तक वापस लौट गए होंगे और हां, तुम्हारे अंकल की तबीयत कुछ सैट हुई या नहीं?"

"हां, अब पहले से बहुत बेहतर हैं।" नॉर्मन ने बताया।

"तुम वापस क्यों नहीं गए?" फिलिप ने अगला सवाल किया।

"दरअसल, अंकल का और मेरा हम दोनों के अलावा इस दुनिया में और कोई रिश्तेदार नहीं है। वो बेहद बीमार थे, उन्होंने सोचा कि कहीं वो जल्दी ही मर न जाएं इसलिए क्यों न अपने इकलौते भतीजे को अपनी जायदाद का मालिक बना जाऊं।" नॉर्मन ने नाटकीय ढंग से कहा।

"ओहो...फिर तो ऐश है तुम्हारी।" फिलिप चहककर बोला।

"लेकिन यार, इनके इरादों को बदलते देर नहीं लगती।" नॉर्मन ने ढीले पड़ते हुए कहा।

"इसका मतलब है अब तुम यहां उनके मरने का इंतजार कर रहे हो?" फिलिप ने मामले की तह तक पहुंचकर कहा।

"नहीं यार, ऐसी बात नहीं है। मेरी बीवी और बच्चे पीछे अकेले हैं, मैं सोच रहा हूं, कल-परसों वापस चला जाऊं।" नॉर्मन ने मायूस लहजे में कहा।

आधा घंटा इधर-उधर की बातें करने के बाद फिलिप ने जाने की इजाजत मांगी और उठकर खड़ा हो गया।

"यार थोड़ी देर तो और बैठो, अभी इतनी जल्दी भी क्या है?" नॉर्मन ने उसे रोकना चाहा।

"ऑफिस पहुंचना है, ड्यूटी टाइम हो रहा है।" फिलिप ने कहा। फिर बोला–"और हां, डॉगी तुम रख लो, जब तुम वापस जाने लगो तो मुझे लौटा देना।"

फिलिप का डॉगी नॉर्मन के लिए बहुत दिलचस्पी का सामान साबित हुआ था। पहले ही दिन वो उससे बहुत हिल-मिल गया था। अब दोनों इकट्ठे ही हर जगह नजर आते थे। लॉन में टहलते हुए इकट्ठे, स्वीमिंग पूल में नहाते तो इकट्ठे और शाम को जब नॉर्मन अंकल की गाड़ी में शहर की रंगीनियां देखने के लिए

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

निकलने लगता था तो डॉगी उससे पहले ही दौड़ कर गाड़ी के पास पहुंच जाता था और दुम हिलाने लगता था।

दो-तीन दिन तो डॉगी के साथ नॉर्मन का दिल बहला रहा, फिर उससे भी उकता गया। अंकल को तेजी से ठीक होते देखकर नॉर्मन को करोड़ों की जायदाद हाथ से निकलती साफ नजर आ रही थी। उसकी वजह अंकल का वो उखड़ा-उखड़ा व्यवहार था जो आजकल वो नॉर्मन के साथ कर रहे थे।

अब नॉर्मन टेढ़ी उंगलियों से घी निकालने के बारे में सोचने लगा था। पहला ख्याल उसके जेहन में डॉक्टर जॉन का आया था, अगर वो किसी भी तरह उसे अपने साथ मिला लेता तो किसी भी जहरीले इंजेक्शन से काम बन सकता था, मगर इसमें पकड़े जाने के चांसेज ज्यादा थे। नौकर-चाकर तक जानते थे कि अंकल की हालत अब तेजी से सुधरती जाती थी, ऐसे में अगर उन्हें मार दिया जाता तो पोस्टमार्टम जरूर होता और पोस्टमार्टम में सारा भेद खुल जाता और उसकी गर्दन फांसी के फंदे में होती।

दूसरा ख्याल उसके जेहन में रसोइये का आया था, मगर इसमें भी वही रिस्क था। स्लो पॉयजन। खानसामा किसी भी वक्त उसका राजफाश कर सकता था।

वो कोई ऐसी तरकीब सोचना चाहता था, जिससे सांप भी मर जाए और लाठी भी बची रहे। मगर ऐसी कोई भी तरकीब उसके जेहन में नहीं आ रही थी।

वो इस वक्त लॉन में सोफे पर बैठकर नाश्ता करने के बाद इन्हीं सोचों में गुम था कि गार्ड ने ताजा अखबार लाकर उसे दिया, और वो अनमना-सा अखबार के पन्ने पलटने लगा। एक पन्ने पर नजर पड़ते ही वो ठिठक गया, उस पर इश्तहार छपा हुआ था–

"हर मुश्किल का हल, फादर डेविड के पास।" और आगे फादर डेविड का पता लिखा हुआ था।

इश्तहार पढ़ते ही नॉर्मन की आंखें खुशी से चमकने लगी थीं और वो सोचपूर्ण ढंग के साथ बैठे हुए डॉगी पर हाथ फेरने लगा था।

एड्रैस अच्छी तरह दिमाग में बिठा लेने के बाद उसने आज ही फादर के पास जाने का इरादा किया था।

ग्यारह बजे के करीब वो अंकल से यह कहकर कि वो अपने एक दोस्त से मिलने जा रहा है, बाहर निकल आया था। उसके बाद वो गाड़ी लेकर फादर डेविड के ठिकाने की तरफ चल पड़ा था, डॉगी उसके साथ था।

फादर डेविड का ठिकाना भी क्या था, बस एक जर्जर-सा घर था, मगर शायद पेंट जमा किया गया था। बाहर... फादर डेविड के नाम का बोर्ड लगा हुआ था और दरवाजे के बाहर लोगों की लाइन लगी हुई थी। नॉर्मन ने गाड़ी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

से उतरकर लोगों की इतनी लम्बी लाइन देखकर गहरी सांस ली, कि न जाने मेरी बारी कब आएगी? डॉगी को उसने बाहर नहीं निकलने दिया था।

काफी देर के सब्र आजमाने वाले इंतजार के बाद शाम को चार बजे नॉर्मन की बारी आई और वो मकान के अंदर दाखिल हुआ। बैठक जैसा कोई कमरा था जिसके अंदर से धूप...अगर वगैरह की खुशबू बाहर आ रही थी, सारे कमरे में धुआं भरा हुआ था। नॉर्मन ने गौर से कमरे का जायजा लिया।

वहां सिर्फ दो आदमी मौजूद थे। एक दरवाजे के बाद ही बैठा हुआ था जो लाइन में लगे हुए लोगों को एक-एक करके अंदर भेजता था और बाहर निकालता था। दूसरा आदमी एक बूढ़ा था जो कमरे के मध्य में आंखें बंद किए...आलथी-पालथी मारे बैठा हुआ था। उसी के सामने मौजूद एक हांडी से वो धुआं उठ रहा था, उस गाढ़े धुएं की वजह से ही कमरे में अंधेरा महसूस हो रहा था।

नॉर्मन खामोशी से बूढ़े के सामने बैठ गया। जूते उसने दरवाजे के बाहर ही उतार दिए थे और माहौल का जायजा लेकर माहौल समझने की कोशिश कर रहा था।

"हूं...क्या समस्या है?" बूढ़े ने आंखें खोले बगैर ही पूछा। यकीनन यही फादर डेविड था।

"फादर, मैंने सुना है कि आप हर काम राजदारी से करते हैं?" नॉर्मन ने आगे झुककर सरगोशी में पूछा।

"ठीक सुना है तुमने। समस्या बताओ।" फादर की रौबीली आवाज उभरी।

"वो...दरअसल मेरे अंकल बहुत बूढ़े हो चुके हैं। वैसे भी बेकार हैं, बोझ बने हुए हैं मुझ पर।"

"तो...क्या चाहते हो तुम?" फादर डेविड ने पूछा।

"मैं चाहता हूं कि आप कोई ऐसी तरकीब बताएं कि अंकल का काम तमाम हो जाए। लेकिन एकदम अचानक नहीं, आहिस्ता-आहिस्ता सख्त बीमार होकर। यानि उनके मरने में कम-से-कम डेढ़-दो हफ्ते लग जाएं।" नॉर्मन ने जायदाद वाली बात गोल करते हुए अपनी बाकी समस्या सच-सच बता दी।

नॉर्मन की बात सुनकर फादर डेविड ने हांडी में हाथ डाला और इंसानी अंगूठे के बराबर पत्थर की कोई चीज निकालकर नॉर्मन को दे दी। नॉर्मन ने गौर से देखा तो वह चमगादड़ का पुतला था, छोटा-सा।

"यह चमगादड़ अंकल के बिस्तर के नीचे रख देना, फिर देखना कमाल।" फादर ने कहा और हाथ मिलाकर नॉर्मन को जाने का इशारा कर दिया।

□□□

□□□

नॉर्मन इस वक्त अंकल के कमरे में डॉगी के साथ मौजूद था। उसे मौके

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

की तलाश थी ताकि अंकल की निगाहें इधर-उधर हों तो वह चमगादड़ को उनके बिस्तर के नीचे रख सके। लेकिन अंकल बैड से टेक लगाए, आधे जिस्म पर कम्बल ओढ़े कोई किताब पढ़ने में व्यस्त थे। उन्होंने नॉर्मन की मौजूदगी का कोई नोटिस नहीं लिया था।

काफी देर तक इंतजार करने के बाद भी जब अंकल न हिले तो नॉर्मन उन्हें दिल-ही-दिल में कोसता हुआ खामोशी से उठा और वहां से चल दिया।

अब वो रात के इंतजार में था–जब अंकल खाना खाने के लिए डायनिंग हॉल में जाते–और अभी खाने के वक्त में दो घंटे की देर थी।

और फिर रात हो गई और रसोइये ने खाना लगा देने का एलान किया। नॉर्मन उस वक्त लाउंज में बैठा टी०वी० देख रहा था, जब उसने अंकल को खाना खाने के लिए डायनिंग हॉल की तरफ जाते देखा। वो भी खमोशी से उठा और डॉगी के साथ डायनिंग हॉल की तरफ बढ़ गया। लेकिन नॉर्मन के अंदर दाखिल होने से पहले ही वो डायनिंग हॉल के दूसरे दरवाजे से निकल कर बाहर आ गया।

लम्बा चक्कर काटकर तेजी से वो अंकल के कमरे में दाखिल हो गया, डॉगी भी उसके साथ था। नॉर्मन ने फुर्ती के साथ अंदर से दरवाजा बंद किया और बैड का गद्दा कोने से उठाकर चमगादड़ उसके नीचे रख दिया। चादर ठीक करके उसने यों हाथ झाड़े, जैसे बहुत बड़े काम से फारिग हुआ हो। उसके बाद वो दरवाजा बंद करके बाहर निकल गया और दोनों डायनिंग हॉल की तरफ चल पड़े।

दूसरे दिन सुबह अंकल को नाश्ते की मेज पर न पाकर नॉर्मन ने बटलर से उनके बारे में पूछा तो बटलर ने बताया–

"उनकी तबीयत ठीक नहीं है, उन्होंने सिर्फ चाय मंगवाई है बैडरूम में।"

"ओह...!" नॉर्मन दिल-ही-दिल में खुशी से झूम उठा।

नाश्ते से निपट कर वो अंकल के कमरे में गया, अंकल कम्बल ओढ़े लेटे हुए थे और बुखार की तेजी से उनका चेहरा तपकर सुर्ख हो रहा था। नॉर्मन ने दिल-ही-दिल में फादर डेविड के जादू की तारीफ की और अपनी मुस्कुराहट दबाते हुए अंकल से पूछा–

"क्या हो गया अंकल आपको?"

"बुखार हो रहा है, रात से तबीयत बहुत बेचैन है।" अंकल ने कराहते हुए कहा–"तुम ऐसा करो कि डॉक्टर जॉन को फोन करके बुला लो।"

"अच्छा।" नॉर्मन फोन की तरफ बढ़ गया।

डॉक्टर को वापस गए हुए थोड़ी ही देर हुई थी, जब गार्ड ने आकर नॉर्मन को फिलिप के आने की सूचना दी। नॉर्मन उस वक्त अंकल के कमरे में मौजूद

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

था। उसने फिलिप को वहीं भेज देने का निर्देश दिया और सोचने लगा कि फिलिप सुबह-सुबह कैसे वहां पहुंचा है?

"हैलो...। मैं इधर से गुजर रहा था कि सोचा तुमसे मिलता चलूं।" फिलिप ने अंदर दाखिल होते हुए कहा।

नॉर्मन और अंकल से हाथ मिलाने के बाद फिलिप सोफे पर बैठ गया। अंकल ने उन दोनों की बातों से उकताकर करवट बदल ली।

"अंकल की तबियत कैसी है अब?" फिलिप ने पूछा।

"रात से फिर खराब हो गई है, अभी-अभी डॉक्टर दवाई देकर गया है।"

"ओह भगवान इन्हें अच्छा करे।" फिलिप ने कहा–"और हां, तुम गए नहीं? उस दिन तो तुम कह रहे थे कि एक-दो दिन में चला जाऊंगा।"

"अंकल की तबीयत की वजह से मैं नहीं गया। तुम बताओ, तुम कैसे हो?" नॉर्मन ने जवाब देने के बाद पूछा।

"मैं ठीक-ठीक हूं...डॉगी कहां है?"

नॉर्मन ने इधर-उधर देखा–"अभी तो यहां था, शायद बाहर चला गया है?"

अभी वो दोनों बातों में व्यस्त थे कि बाहर से डॉगी के बेतहाशा भौंकने की आवाजें सुनाई दीं।

"यह क्या है?" फिलिप ने चौंक कर पूछा।

"पता नहीं। पहले तो कभी इतनी बुरी तरह से नहीं भौंका था यह।" नॉर्मन ने कहा–"ठहरो, मैं देखता हूं।" और वो उठकर बाहर निकल गया।

उसके बाहर जाते ही फिलिप तेजी से उठा और अंकल के बैड की तरफ बढ़ा। अंकल का मुंह दूसरी तरफ था और उन्होंने सिर तक कम्बल ओढ़ रखा था। फिलिप ने तेजी से हाथ बढ़ाकर सिरहाने की साइड से गद्दा हटाया और गद्दे के नीचे हाथ मारा तो उसके हाथ में वो पत्थर का चमगादड़ आ गया। उसे देख कर फिलिप की आंखें रहस्यमय ढंग से चमकने लगीं। जल्दी से वो चमगादड़ जेब में डालकर, चादर वगैरह ठीक करके, दोबारा अपनी जगह आकर बैठ गया।

बाहर डॉगी के भौंकने की आवाजें बंद हो चुकी थीं, थोड़ी देर बाद नॉर्मन अंदर दाखिल हुआ।

"क्या हुआ था?" फिलिप ने उसके अंदर दाखिल होते ही पूछा।

"कुछ नहीं, कोई बिल्ली थी शायद। तुम ऐसा करो कि बाहर आ जाओ, लाउंज में बैठते हैं। कहीं हमारी वजह से अंकल डिस्टर्ब न हो जाएं।" दोनों बाहर लाउंज में आ गए।

□□□

□□□

तीसरे पहर तक अंकल की तबीयत संभल गई थी। तीसरे पहर की चाय

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पर जब उसने अंकल को ठीक-ठाक देखा तो उसे बहुत हैरत हुई थी।

"अब कैसी तबीयत है अंकल?" नॉर्मन ने होंठ चबाते हुए पूछा।

"अब तो बिल्कुल ठीक हूं।" डॉक्टर जॉन वाकई बहुत काबिल डॉक्टर हैं।"

नॉर्मन की समझ में नहीं आ रहा था कि अंकल इतनी जल्दी ठीक कैसे हो गए? फादर डेविड ने जैसा कहा था वैसा कुछ नहीं हुआ था। फादर डेविड ने कहा था कि अंकल की तबीयत रोज-ब-रोज बिगड़ती जाएगी, और यहां तो मामला ही उलटा था। हो सकता है हवाओं के असर से कुछ ठीक हो गए हों और हवाओं का असर खत्म होते ही फिर बीमार हो जाएं... उसने सोचा, एक-दो दिन और देख लेता हूं।

तीन दिन गुजर गए, लेकिन अंकल की तबीयत सुधरती ही चली गई। नॉर्मन की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। चौथे दिन वो मौका पाकर अंकल के कमरे में दाखिल हुआ और गद्दा उठाकर उसने बैड पर हाथ मारा और उसे झटका-सा लगा... वहां चमगादड़ नहीं था। झुंझलाते हुए उसने पूरा बैड छान मारा, मगर चमगादड़ वहां होता तो मिलता।

'चमगादड़ कहां गया? कहां जा सकता है वो?' नॉर्मन ने सोचा और पलंग का गद्दा और चादर ठीक की—"हो सकता है नौकरों ने गद्दा वगैरह ठीक किया हो और चादर झाड़ते हुए...।" अब वो नौकरों से पूछताछ करने का रिस्क भी नहीं ले सकता था।

अगले दिन वो दोबारा फादर डेविड के पास जा पहुंचा और उसे सारा किस्सा सुना दिया था। उसने भी यही कहा—

"हो सकता है बिस्तर की सफाई के वक्त किसी ने छुपा लिया हो। बहरहाल, यह दूसरा चमगादड़ ले जाओ और इस बार इसे संभाल कर रखना।"

नॉर्मन ने उसका शुक्रिया अदा करके कुछ रकम उन्हें भेंट दी और वहां से चला आया। घर वापस आकर वो मौके की तलाश में जुट गया। जैसे ही अंकल नहाने के लिए बाथरूम में गए वो तेजी से उनके बैड के करीब पहुंचा, डॉगी भी उसके साथ था। नॉर्मन ने जल्दी से तकिये की डोरी खोली और चमगादड़ फोम के बीच रख कर डोरी बंद कर दी। चमगादड़ अब तकिये के सिरे पर, यानि डोरी बांधने की जगह पर डोरी और फोम के बीच में था। चमगादड़ को तकिये में छुपा कर नॉर्मन इधर-उधर देखता हुआ कमरे से बाहर चला आया।

तीन घंटे भी न गुजरे थे कि अंकल की तबीयत खराब हो गई। नॉर्मन चमगादड़ का असर देखने के लिए अंकल के कमरे में दाखिल हुआ तो वह कराह रहे थे।

"क्या हुआ अंकल?" नॉर्मन ने खुशी से झूमते हुए पूछा।

"सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है, मुझे नहाना नहीं चाहिए था।" अंकल ने कराहते हुए जवाब दिया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"ओह...सिरदर्द की टेबलेट ले लीजिए।" नॉर्मन ने मशविरा दिया।

"दो टेबलेट ले चुका हूं मगर कोई असर नहीं पड़ा। डॉक्टर जॉन को फोन किया है, वो आने ही वाला होगा।"

पंद्रह मिनट बाद डॉक्टर जॉन अपना मैडिकल बैग लिए अंदर दाखिल हुआ। अंकल को दवाइयां देने के बाद वो नॉर्मन को अंकल का सिर दबाने के लिए कहकर दो घंटे बाद वापस चला गया।

नॉर्मन उनका सिर दबाने लगा, अभी उसे सिर दबाते हुए आधा घंटा भी नहीं हुआ था कि फिलिप आ गया। नॉर्मन ने उसे अंकल के कमरे में ही बुला लिया।

"अब कैसी तबीयत है अंकल की?" फिलिप ने दुआ-सलाम के बाद पूछा। नॉर्मन अंकल के पास से उठकर फिलिप के पास सोफे पर जा बैठा था।

"दो दिन तो ठीक रहे हैं, आज फिर तबीयत खराब हो गई है।" नॉर्मन ने आंखें बंद करके लेटे हुए अंकल की तरफ़ देखकर जवाब दिया। वो हौले-हौले कराह रहे थे। अभी उसने बात पूरी की ही थी कि उसे डॉगी के कराहने की आवाजें आने लगी थीं।

"ओह...अब शायद फिर बिल्ली को देख लिया है उसने।" नॉर्मन ने आवाज सुनकर कहा।

"जाओ, देखो तो जरा।" फिलिप ने कहा–"अभी भौंकने लगेगा, और तुम्हारे अंकल के सिर में पहले से ही दर्द है।"

नॉर्मन सिर हिलाता हुआ उठकर बाहर चला गया। फिलिप उठकर अंकल के करीब पहुंच गया।

"अब कैसी तबीयत है आपकी?" उसने अकंल से पूछा।

"सिर दर्द से फटा जा रहा है और बुखार भी है।" अंकल ने बड़ी मुश्किल से आंखें खोलकर कहा।

"ओह...! तो आप कहें, सिर के नीचे से तकिया निकाल दें।" फिलिप बोला–"सिरदर्द में डॉक्टर लोग अक्सर रोगी को यही मशविरा दिया करते हैं।" और उनका जवाब सुने बगैर ही फिलिप ने हौले से उनके सिर के नीचे से तकिया...खींच लिया। अंकल अब गद्दे पर सिर रखकर आंखें बंद कर चुके थे।

फिलिप ने जल्दी से तकिये की डोरी खोली और पत्थर का चमगादड़ बाहर निकाल अपनी जेब में रख लिया। डोरी बंद करने के बाद उसने दोबारा अंकल को मुखातिब किया–

"अब कुछ फर्क है अंकल?"

"नहीं।" अंकल ने इंकार में सिर हिलाते हुए कहा।

"चलिए फिर रख लीजिए तकिया। वैसे ज्यादातर लोगों का सिरदर्द इस तरकीब से दूर हो जाया करता है।" कहकर उसने जल्दी से तकिया दोबारा अंकल

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

के सिर के नीचे रखा और फुर्ती से लपक कर सोफे पर बैठा ही था कि नॉर्मन डॉगी के साथ अंदर दाखिल हुआ।

"ले आया हूं इस नालायक को। खामख्वाह भौंकने लगता है।" नॉर्मन ने कहा और सोफे पर जम गया।

सुबह तक अंकल की तबीयत ठीक हो चुकी थी और नॉर्मन हैरत के समुद्र में गोते खा रहा था। यकीनन तकिये का गिलाफ बदला गया था और गिलाफ बदलने वाले ने ही चमगादड़ निकाला था। मगर रात को ही गिलाफ बदलने की जरूरत किसे महसूस हुई? नॉर्मन ने सोचा और यही जानने के लिए वो अंकल के कमरे में गया।

लेकिन यह क्या, गिलाफ तो वही था और अंकल बैड की बैक से टेक लगाए मजे से अखबार पढ़ने में व्यस्त थे।

"तबीयत ठीक हुई अंकल?" उसने हैरत से पूछा।

"हां, खुदा का शुक्र है।" कहकर अंकल ने फिर अखबार पर नजरें जमा दीं।

नॉर्मन थोड़ी देर वहीं खड़ा-खड़ा कुछ सोचता रहा, फिर वो मरे-मरे कदमों से अपने कमरे में लौट आया और सिर पकड़ कर सोफे पर बैठ गया। तकिये का गिलाफ वही था तो इसका मतलब कि तकिये को झाड़ा गया था। वो सोच रहा था, मगर मैंने तो तकिये की डोरी कसकर बांधी थी, चमगादड़ गिर तो नहीं सकता था। मुझे एक बार फिर तकिया खोलकर देखना चाहिए, हो सकता है कि चमगादड़ अंदर ही मौजूद हो और किसी वजह से असर न कर रहा हो।

जैसे ही नॉर्मन को मौका मिला, वो अंकल के कमरे में जा घुसा, तकिया खोला। मगर यह क्या? चमगादड़ वहां से ऐसे गायब था, जैसे गधे के सिर से सींग। अच्छी तरह इत्मीनान कर चुकने के बाद उसने तकिये की डोरी बंद की और घर से निकलकर सीधा फादर डेविड के पास जा पहुंचा।

"फादर, चमगादड़ इस बार मैंने तकिये के सिरे पर रखा था। वहां तो सोने वाले को महसूस भी नहीं हो सकता था कि तकिये के सिरे पर कुछ है।" नॉर्मन ने बड़े परेशान लहजे में कहा।

"हो सकता है कि तुम्हारे अंकल का हाथ वहां लगा हो और उन्हें पता चल गया हो कि तकिये में कुछ है, और उन्होंने उसे निकाल लिया हो।"

"हां, शायद ऐसा ही हुआ हो।" नॉर्मन ने मायूसी से कहा–"अब आप ही बताएं मैं क्या करूं?"

"मैं फिर तुम्हें एक चीज दे रहा हूं, लेकिन उसको तुम बैड की साइड वाली दराज में रखना और दराज की चाबी अपने पास सुरक्षित रखना, यह लो।"

कहकर फादर ने हांडी में हाथ डाला और कपड़े का बना एक पुतला निकाल

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कर नॉर्मन को दे दिया, दोबारा हांडी में हाथ डाला और उसमें से सुइयों का एक गुच्छा निकालकर नॉर्मन को दिया और कहा–

"पंद्रह सुईयां हैं इस गड्डी में। तुम्हें हर रोज इस पुतले में एक सुई घुसेड़नी है। पन्द्रह दिन बाद न सुईयां बचेंगी न तुम्हारा अंकल।"

नॉर्मन ने दोनों चीजें लेकर कोट की अंदरूनी जेब में डाल लीं, फादर को नजराना दिया और बाहर आकर गाड़ी में बैठा और घर की तरफ चल दिया।

दूसरे दिन जैसे ही अंकल शाम की चाय पीने लॉन में गए, नॉर्मन डॉगी के साथ कमरे में दाखिल हो गया। थोड़ी देर ही तलाश के बाद उसे चाबियों का गुच्छा मिल गया जिसमें पूरे घर की चाबियां थीं। यह गुच्छा उसे अंकल की शर्ट की जेब से मिला था। जो कि खूंटी पर लटकी हुई थी।

नॉर्मन ने उनमें से ढूंढकर दराज की चाबी बाहर निकाल ली, गुच्छा वापस उसने शर्ट की जेब में डाला। चाबी से दराज खोला, गुड्डा जेब से निकालकर एक सुई उसमें घुसाई और गुड्डा दराज में रखकर दराज बंद कर ताला लगा दिया। चाबी उसने अपनी जेब में डाल ली। उसके बाद उसने डॉगी को अपने पीछे आने का इशारा किया और कमरे से निकलकर लॉन की तरफ चला पड़ा, जहां अंकल चाय पी रहे थे।

रात होते-होते अंकल की तबीयत फिर खराब हो गई।

"क्या हुआ अंकल?" नॉर्मन ने पूछा–"क्या फिर सिरदर्द शुरू हो गया?"

"नहीं...अब तो सारे जिस्म में दर्द है। ये बीमारियां मेरी जान लेकर रहेंगी। बेटा...तुम फौरन डॉक्टर को बुलाओ।" अंकल ने दर्द से कराहते हुए कहा, और नॉर्मन ने डॉक्टर को फोन कर दिया।

डॉक्टर जॉन ने आकर अंकल को चैक किया, दवाइयां वगैरह दीं, एक इंजैक्शन भी लगा गया, मगर अंकल की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। आखिरकार डॉक्टर ने नींद का इंजैक्शन देकर उन्हें सुला दिया और नॉर्मन से कहा–

"अब आप बेफिक्र हो जाएं, ये सारी रात आराम से सोते रहेंगे, मैं फिर आकर इन्हें देख जाऊंगा।" कहकर वो चला गया।

रात का न जाने कौन-सा पहर था जब हल्के से खटके से नॉर्मन की आंख खुल गई।

नॉर्मन की नजर अपनी बायीं तरफ रखे टेलीफोन स्टैंड पर पड़ी जहां से अजीब-अजीब-सी आवाजें उभर रही थीं। नॉर्मन ने देखा, डॉगी पंजों के बल किसी इंसान की तरह खड़ा हुआ था और दाएं पंजे से उसने रिसीवर थाम रखा था और बड़ी अजीब भाषा में वो किसी से बात कर रहा था।

नॉर्मन की आंखें फटी-की-फटी रह गईं–"यह क्या! डॉगी क्या कर रहा है? कहीं मैं ख्वाब तो नहीं देख रहा?" उसने हौले से एक हाथ से आंखें मलीं,

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

लेकिन डॉगी वाकई किसी के साथ बातों में व्यस्त था।

फिर डॉगी ने रिसीवर रख दिया। रिसीवर रखकर उसने नॉर्मन की तरफ देखा, नॉर्मन ने जल्दी से आंखें बंद कर लीं...और सोता बन गया। खौफ और हैरत से उसका दिल धाड़-धाड़ कर रहा था।

थोड़ी देर बाद उसने डरते-डरते आंखें खोलीं तो देखा कि डॉगी सोफे पर लेटा हुआ था 'यकीनन यह कुत्ते के रूप में कोई और ही बला है।' नॉर्मन ने सोचा।

नॉर्मन की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या है? एक कुत्ता भी भला फोन पर बातें कर सकता है? और वो भी न जाने कौन-सी भाषा में?

फिर उसकी सोच का रुख बदल गया–'यह आखिर इस वक्त किससे बातें कर रहा था? क्यों कर रहा था? क्या मेरे बारे में...मेरे खिलाफ? लेकिन मेरे बारे में यह कौन-सी बातें कर सकता है?'

फिन नॉर्मन एकदम चौंका–'ओह...डॉगी ही तो मेरे साथ फादर डेविड के पास जाता है और जब भी मैं अंकल के कमरे में चमगादड़ वगैरह रखने जाता था, यह मेरे साथ ही होता था, कहीं यह इस बारे में तो किसी को नहीं बता रहा था?' सोच-सोचकर उसके दिमाग की नसें फटने लगीं, उसने सोचा कि इस बारे में वो सुबह फिलिप से बात करेगा...लेकिन वो कैसे यकीन करेगा कि एक कुत्ता फोन पर बात कर सकता है? बल्कि वो मेरा मजाक उड़ाएगा। फिर मैं क्या करूं? ओह...क्यों न इस मामले में फादर डेविड से बात करूं?' यह सोचकर वो बेफिक्र हो गया।

सुबह की रोशनी फैलने पर वो बिस्तर से निकल आया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि डॉगी है कौन और वो फोन पर बातें किससे कर रहा था?

नाश्ता करने के बाद नॉर्मन अंकल के कमरे में आया। डॉगी भी उसके पीछे था। अंकल जाग रहे थे, डॉक्टर जॉन उनके चैकअप के लिए आया हुआ था। अंकल दर्द से कराह रहे थे। कुछ देर बाद डॉक्टर जॉन चला गया। नॉर्मन वहीं अंकल के पास ही बैठ गया था, अभी कुछ देर ही गुजरी थी कि फिलिप आ पहुंचा और कमरे में दाखिल होते ही बोला–

"अब कैसी तबीयत है अंकल की?"

नॉर्मन ने उठकर फिलिप से हाथ मिलाया और सोफे पर बैठने का इशारा करते हुए बोला–

"बस यार, रात से फिर वही हालत है।"

"ओह...! यार नॉर्मन, तुम इन्हें किसी और डॉक्टर को क्यों नहीं दिखाते? शहर में और भी अच्छे-अच्छे डॉक्टर हैं।"

"लेकिन अंकल को डॉक्टर जॉन पर ही यकीन है, उन्हीं की दवाई अंकल को लगती है।" नॉर्मन ने कहा। अंकल दवाई खाकर दूसरी तरफ मुंह फेरकर

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

लेटे हुए थे। इतने में लॉन की तरफ से डॉगी के भौंकने की आवाज आई और नॉर्मन झुंझला गया।

"देखो यार, क्या हो गया है उसे?" फिलिप ने कहा।

"अपने आप चुप हो जाएगा।" नॉर्मन ने कहा–"फिजूल ही भौंकता रहता हैं।" नॉर्मन दोबारा फिलिप के साथ बातों में व्यस्त हो गया। लेकिन डॉगी के भौंकने और गुर्राने में इजाफा ही होता रहा और अब उसकी गर्जदार आवाज से पूरा बंगला गूंज रहा था। इतने में अंकल ने नॉर्मन को आवाज दी। आवाज बहुत धीमी और कमजोर थी–

"देखो बाहर डॉगी किस पर भौंक रहा है?" उन्होंने कहा और दोबारा आंखें बंद कर लीं।

और नॉर्मन को न चाहते हुए भी बाहर जाना पड़ा। रात से ही उसे डॉगी से खौफ महसूस हो रहा था और वो नहीं चाहता था कि डॉगी से उसका सामना हो।

नॉर्मन के कमरे से निकलते ही फिलिप तेजी से उठा, उसने जेब से मास्टर की निकाली और उससे बैड की दराज का ताला खोल लिया। दराज खुलते ही फिलिप की निगाह कपड़े के उस पुतले पर पड़ी जिसमें सुई घुसी हुई थी। फिलिप ने हाथ बढ़ाकर वो पुतला उठाया और अपने कोट की अंदरूनी जेब में रख लिया और आकर सोफे पर बैठ गया।

कुछ देर बाद ही डॉगी की आवाज आनी बंद हो गई और कुछ सैकेण्ड्स बाद ही नॉर्मन अंदर दाखिल हुआ।

"क्या हुआ था?" फिलिप ने मुस्कुराते हुए पूछा।

"यार, यह डॉगी किसी दिन मुझे पागल करके छोड़ेगा। तुम उसे ले क्यों नहीं जाते?" नॉर्मन ने गुस्से से कहा।

"इतनी जल्दी उकता गए? प्यारा-सा तो है मेरा डॉगी?" फिलिप बोला।

"बस, इस प्यारे-से को अपने पास ही रखो तो बेहतर है।" नॉर्मन ने झल्ला कर कहा। उसका दिल चाहा कि फिलिप को रात वाली घटना के बारे में बता दे, मगर फिर कुछ सोचकर चुप रह गया।

"अच्छा, आज तो नहीं, मुझे दो-तीन जरूरी काम हैं, एक-दो दिन में वो निबट जाएं तो मैं इसे यहां से ले जाऊंगा।" कहने के साथ ही फिलिप उठ खड़ा हुआ–"अच्छा, अब मुझे इजाजत दो।" उसने नॉर्मन की तरफ हाथ बढ़ा दिया।

फिलिप के चले जाने के बाद नॉर्मन ने अंकल का जायजा लिया। शायद डॉक्टर जॉन की दवाओं में कोई नींद की दवा भी मौजूद थी जिसकी वजह से वो चुपचाप सो रहे थे।

नॉर्मन ने सोचा कि क्यों न पुतले में दूसरी सुई चुभो दे। अच्छा मौका है, अंकल बेखबर सो रहे हैं। वो दबे पांव बैड के पास आया, जेब में से दराज की

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

चाबी निकाली और लॉक खोल लिया। लेकिन यह क्या! खाली दराज उसका मुंह चिढ़ा रही थी।

नॉर्मन हक्का-बक्का रह गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो रहा है? चाबी तो मेरे पास है, फिर दराज किसने खोली? और अगर खोली नहीं तो पुतला कैसे गायब हो गया? हैरत से वो बुत बन गया था।

दराज बंद करके वो तेजी से बाहर निकला और फौरन फादर डेविड की तरफ रवाना हो गया। इस बार नॉर्मन ने डॉगी को अपने साथ नहीं लिया था।

फादर के घर पहुंचकर अपनी बारी आने पर नॉर्मन ने सभी विवरण फादर डेविड को सुनाया...डॉगी के बारे में बताया...और पुतले के गायब होने के बारे में बताया। अब तो फादर डेविड का माथा ठनका। उसने नॉर्मन से कुछ और तफ्सील जानने के लिए पूछा–

"यह बताओ कि नौकरों के और तुम्हारे अलावा तुम्हारे अंकल के कमरे में कौन आता-जाता है?"

"शुरू में तो अंकल के कुछ दोस्त उनका हालचाल जानने आते थे, अब कोई नहीं आता। हां, मेरा दोस्त फिलिप, वही जिसने मुझे डॉगी दिया था, वो आता रहता है।" नॉर्मन ने बताया।

"हूं...फिलिप कितनी बार आता है और किस वक्त आता है?"

"वो आता रहता है, अक्सर डॉक्टर जॉन के जाने के बाद आता है।"

"उसकी मौजूदगी में भी तुम अंकल के कमरे से बाहर गए थे?"

"हां कई बार...बल्कि हर बार।" नॉर्मन ने कहा और फिर चौंक गया–"एक खास बात...मैंने तो इस बारे में कभी सोचा नहीं।" नॉर्मन ने होंठ भींचकर कहा, सारा मसला ही उसकी समझ में आ रहा था।

"हर बार जब फिलिप आता है तो डॉगी भौंकने लगता है, मैं बाहर जाकर उसे देखता हूं। थोड़ी देर लगती है मेरे बाहर जाकर डॉगी को चुप कराने में, और उतनी देर फिलिप अंकल के कमरे में अकेला होता है और हर बार फिलिप के जाने के बाद अंकल ठीक हो जाते हैं और जो चीजें आप देते हैं वो भी गायब होती हैं।" नॉर्मन ने बताया।

"हूं...ऊं...।" फादर ने जैसे सारा मामला समझकर सिर हिलाया–"कुत्ते के रूप में जो भी बला है, वो फिलिप से मिली हुई है। वही रात को फोन करके फिलिप को बताती है कि जो चीज तुम मुझसे ले जाते हो, वो कहां रखी हुई है? फिर फिलिप जब आता है तो तुम्हें कमरे से बाहर निकालने के लिए डॉगी भौंकने लगता है।" फादर ने कहा।

"अब क्या करना चाहिए फिर?" नॉर्मन ने फिक्रमंद लहजे में कहा। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि फिलिप ऐसा क्यों कर रहा है?

"अब...अब सबसे पहले उस कुत्ते का इलाज करना है।" फादर ने कहा

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

और फिर सामने रखी धुआं उगलती हांडी में हाथ डालकर कोई चीज निकाली, वो एक सलीव था, जिसके साथ डोरी बंधी हुई थी। उस पर थोड़ी देर कुछ पढ़ कर फूंकने के बाद फादर ने वो सलीव नॉर्मन के हवाले कर दिया।

"यह किसी तरह कुत्ते की गर्दन में पहना दो। कुत्ता यह सलीव आसानी से कभी नहीं पहनेगा, उसे यह चालाकी से ही पहनानी पड़ेगी। यह पहनने के बाद वो पागल हो जाएगा और पागलपन की हालत में मर जाएगा। उसके बाद ही हम तुम्हारे अंकल के बारे में कुछ सोचेंगे।" नॉर्मन उसका शुक्रिया अदा करके वहां से चला गया।

नॉर्मन अंकल के बंगले पर पहुंचा तो दोपहर के दो बज चुके थे, डॉगी लॉन में मौजूद था। नॉर्मन को आता देखकर वो दुम हिलाता हुआ नॉर्मन की तरफ आया।

नॉर्मन बाजार से उसके लिए एक जंजीर खरीद लाया था, उसने गाड़ी से जंजीर निकाली और फुर्ती से डॉगी के गले में डालकर तेजी से कुंडी लगा दी। अब जंजीर डॉगी के गले में कस चुकी थी और उसका दूसरा सिरा नॉर्मन के हाथ में था। नॉर्मन उसे लिए हुए अपने बैडरूम में दाखिल हुआ और सोफे के पाये से जंजीर बांधकर वो तेजी से अंकल के बैडरूम में आया, वो सो रहे थे। बैडरूम से बाहर आकर उसने नौकर से अंकल के बारे में पूछा।

"साहब दोपहर का खाना खाकर और दवा लेकर सो गए थे।" नौकर ने बताया।

नॉर्मन उनकी तरफ से संतुष्ट होकर वापस अपने कमरे में आया। डॉगी खामोशी से सोफे के ऊपर चढ़कर बैठा हुआ था। नॉर्मन ने दरवाजा बंद किया, मगर लॉक नहीं किया और जेब से फादर डेविड का दिया हुआ क्रॉस निकाल लिया। क्रॉस पर नजर पड़ते ही डॉगी सोफे पर खड़ा हो गया और गुर्राने लगा।

नॉर्मन ने बिजली की सी तेजी से लपक कर सलीव कुत्ते के गले में डाला और डोरी कसकर बांध दी। डोरी और... सलीव डॉगी के लम्बे-लम्बे बालों में छुप गई।

यह सब करने के बाद वो बैड पर टेक लगाकर बैठ गया और सलीव की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगा। अभी आधा घंटा भी न गुजरा था कि डॉगी ने भौंकना शुरू कर दिया, अब वो जंजीर तोड़ने की कोशिश कर रहा था। उछल-उछल कर नॉर्मन पर हमला करने की कोशिश कर रहा था। नॉर्मन खमोशी से यह सब देखता रहा। डॉगी डेविड के कहने के मुताबिक पागल हो चुका था और अब उसकी हालत खराब थी। जुबान बाहर लटक आई थी, आंखें सुर्ख थीं। वो कभी सोफे पर चढ़ जाता और कभी उछल कर नॉर्मन पर छलांग लगाने की कोशिश करता था। वो जोरों से गुर्रा रहा था, भौंक रहा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

दरवाजे पर दस्तक हुई, नॉर्मन के आ जाओ कहने पर बटलर अंदर दाखिल हुआ, वो डॉगी के भौंकने की वजह जानने आया था।

"कुछ नहीं हुआ इसे। तुम जाओ, अब मेरे कमरे में कोई न आए।" नॉर्मन ने सख्त लहजे में कहा। बटलर डॉगी की तरफ देखता हुआ लौट गया।

अंकल की तरफ से नॉर्मन बेफिक्र था क्योंकि नौकर ने उसे बताया था कि वो दवाई खाकर सोए हुए हैं।

डॉगी अब वाकई पागल कुत्तों की तरह हरकतें कर रहा था, गुर्राहटोंभरी भौंकने की आवाजों में इजाफा होता जा रहा था। अब डॉगी को इस हालत में एक घंटा ही गुजरा था कि कमरे का दरवाजा एक धमाके के साथ खुला था। फिलिप अंदर दाखिल हुआ था। उसका चेहरा पसीने से तर था, आंखें सुर्ख हो रही थीं और वो बुरी तरह हांफ रहा था। आते ही वो बोला–

"क्या हुआ है मेरे डॉगी को?" नॉर्मन उसे देखकर उठ खड़ा हुआ।

"तुमने...तुमने, इसे बांधा क्यों है?" फिलिप ने कहा और तेजी से बढ़कर डॉगी की जंजीरें खोल दीं और डॉगी के जिस्म पर प्यार से हाथ फेरने लगा।

"फिलिप, मत खोलो इसे, यह पागल हो चुका है...इसके करीब मत जाओ।" नॉर्मन तेजी से बोला। मगर फिलिप डॉगी के जिस्म पर हाथ फेरे जा रहा था।

"क्यों, क्या हुआ है इसे?" उसने गुस्सैले लहजे में पूछा–"कल तक तो ठीक-ठाक था।" फिलिप की लाल अंगारा आंखें नॉर्मन पर जमी हुई थीं, लेकिन नॉर्मन के जवाब देने से पहले ही फिलिप की आंखों में हैरत की चमक उभरी थी...क्योंकि उसका हाथ डॉगी के गले में पड़ी सलीव वाली जंजीर से टकराया था। फिलिप ने झटके से जंजीर खींच ली। जंजीर की डोरी टूट गई थी और सलीव फिलिप के हाथ में आ गई थी।

अब फिलिप कभी भयानक गुस्से में कभी हाथ में पकड़ी सलीव को देखता था और कभी नॉर्मन को। डॉगी फिलिप के पीछे हटते ही सोफे पर से उछला था और उसने नॉर्मन पर हमला कर दिया था।

दूसरे ही पल नॉर्मन फर्श पर पड़ा था और डॉगी उसे झंझोड़ रहा था। नॉर्मन बुरी तरह तड़प रहा था और कराह रहा था, जबकि फिलिप कुछ कदम के फासले पर खड़ा उन्हें देख-देखकर मुस्कुरा रहा था।

नॉर्मन के कपड़े तार-तार हो चुके थे और बुरी तरह जख्मी हो गया था। जब डॉगी ने देखा कि अब नॉर्मन हिलने-डुलने में भी असमर्थ है तो उसने नॉर्मन के गिर्द चकराते हुए उसके जख्मों से रिसता हुआ खून चाटना शुरू कर दिया। कम-से-कम दस मिनट वो नॉर्मन के जख्मों को चाटता रहा। नॉर्मन फर्श पर पड़ा बुरी तरह कराह रहा था।

डॉगी को नॉर्मन के जख्म चाटते हुए अभी ग्यारहवां मिनट शुरू हुआ ही

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

था कि अचानक स्थिति बदल गई। डॉगी ने फर्श पर लोट लगाई–और जब वो उठा तो वो नॉर्मन के रूप में था और नॉर्मन...जख्मी नॉर्मन डॉगी बन चुका था। यानि उसकी आत्मा डॉगी के जिस्म में प्रवेश कर चुकी थी। डॉगी के रूप में अब भी फर्श पर पड़ा कराह रहा था, तड़प रहा था।

डॉगी ने, जो अब नॉर्मन बन चुका था, अपने कपड़े झाड़े और फिलिप की तरफ बढ़ा। फिलिप ने बाजू फैला दिए–

"वेलडन बेटे...वेलडन।" उसने नकली नॉर्मन को गले लगा लिया–"अब यह सारी जायदाद हमारी है। किसी को शक भी नहीं होगा कि तुम नॉर्मन के जिस्म में कोई और ही हो। हा...हा...हा।" फिलिप ने ऊंचा कहकहा लगाया।

"डैडी, यू आर ग्रेट। आप वाकई जीनियस हैं।" नॉर्मन बोला–"लेकिन आपने इतनी देर क्यों कर दी? मुझे इतने दिन कुत्ते के जिस्म में रहना पड़ा।" नॉर्मन ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा।

"मैं चाहता था कि तुम नॉर्मन के साथ चिपके रहकर उसके चलने-फिरने, उठने-बैठने और बोल-चाल का ढंग अच्छी तरह दिमाग में बिठा लो, अब तुम्हें नॉर्मन बनकर जो रहना है।" फिलिप ने कहा और कहकहा लगाया–"अब अंकल को मरने से और तुम्हें जायदाद का मालिक बनने से कोई नहीं रोक सकता।"

"लेकिन डैड, तुम्हें कैसे पता चला कि...?" नॉर्मन ने कहना चाहा।

"वहीं मैक्सिको में जब यह ट्रेन में मिला था तो मैंने पता चला लिया था कि यह आदमी करोड़ों के खजाने की कुंजी है...आखिर काले जादू के माहिर हैं हम, और वहीं से मैंने तुम्हें फोन करके स्टेशन बुला लिया और उसी कम्पार्टमेंट में सीटें बुक करवा दी थीं जिसमें यह सफर कर रहा था।" फिलिप ने डॉगी की तरफ इशारा करके कहा, जोकि वास्तव में नॉर्मन था–"और फिर इससे दोस्ती बढ़ाने में जरा भी देर नहीं लगी थी।"

"वैरी गुड डैड! लेकिन अब इसकी बीवी और बच्चे का क्या होगा?" नॉर्मन के रूप में डॉगी ने पूछा।

"इसकी बीवी बेहद खूबसूरत है, तुम मजे से उसके साथ रहना, भविष्य में अब ऐश-ही-ऐश है माई सन!" फिलिप ने कहकहा लगाया–"और इसे...इसे तो अभी ठोंक-पीटकर अपना वफादार भी बनाना है।"

दोनों बाप-बेटा हाथ-पर-हाथ मारकर हँस पड़े, और नॉर्मन...वो अपनी शैतानी योजनाएं बनाता-बनाता अपने से भी बड़े शैतानों के चंगुल में फंस गया था। बंगले में बाप-बेटे के शैतानी कहकहे गूंज रहे थे, और नॉर्मन कुत्ते के रूप में फर्श पर पड़ा तड़प-तड़प कर कराह रहा था।

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

इटालवी कहानी

भूत बंगला

भटकती आत्माओं का दिलचस्प अफसाना

वो शहर के बाहर बने उस बंगले को किराये पर लेने के लिए देखने पहुंचा था। मगर रातभर बंगले में और आसपास ऐसी रहस्यमय घटनाएं घटती हैं कि वो सुबह बंगले से भाग निकलता है और सीधा पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचता है।

हमेशा, यानि हर साल की तरह, इस साल भी मेरी बीवी ने मुझसे पूछा कि मैंने छुट्टियां मनाने के लिए किसी दूर दराज की सुहावनी जगह पर किसी अच्छे मकान का इंतजाम करने के लिए क्या सोचा है?

मैंने नहीं में जवाब दिया। जब से हमारी शादी हुई थी, यानि शादी के बाद के पहले दो-तीन साल छोड़कर जब से हमें डॉक्टरों ने बताया था कि औलाद हमारे मुकद्दर में नहीं है। हमारा नियम बन गया था कि हम दोनों मियां-बीवी छुट्टियां किसी दूर-दराज इलाके के शांत और मनोरम स्थान पर गुजारा करते थे।

मेरी बीवी क्लारा ने अखबार का इश्तहारों वाला पन्ना मेरी तरफ बढ़ाया जिसमें एक इश्तहार पर निशान लगा हुआ था।

इश्तहार हमारी इच्छानुसार ही था, नॉरफोक रोड पर आलीशन फर्निश्ड बंगला, साई बाग, गैरेज, बोट हाउस सभी सुविधाएं, किराया मुनासिब उपलब्ध है।

बिल्कुल ठीक, नॉरफोक रोड दूर-दराज इलाका था और किराया क्लारा के ख्याल से कम और मेरे ख्याल से बहुत ज्यादा था। बहरहाल, मैं अपनी चहेती, इकलौती बीवी की हठ के सामने इसके सिवा और क्या कह सकता था कि खामोशी से सिर झुका दूं, मैंने फोन उठाया और इश्तहार में दर्ज नम्बर मिलाए। एजेंट से बात की, उसने कहा–

"सर आप नॉरफोक रोड पहुंचें, मैं मिसेज मार्था को फोन कर देता हूं, वो आपको बंगला दिखा देगी और आपकी सेवा भी करेगी, वो हाउस कीपर है।"

क्लारा ने आग्रह किया–"डियर तुम्हें वहां जरूर जाना चाहिए, बंगले और उसके आसपास के माहौल का जायजा लेना जरूरी है वहां जाने से पहले।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

बहरहाल, जब म घर स रवाना हुआ तो मौसम कुछ थोड़ा-सा खराब था, लेकिन रास्ते में ही बर्फ का अंधा कर देने वाला तूफान शुरू हो गया जिसमें सफर करता मैं इंतहाई दूर एक वीरान इलाके में पहुंचा। रेलवे स्टेशन पर उतरकर मुझे और पांच मील का सफर टैक्सी से करना पड़ा, जो काफी तकलीफदेह था।

खुदा का शुक्र कि मिसेज मार्था उस वक्त वहां मौजूद थी। उस पर उसने यह मेहरबानी भी की थी कि न सिर्फ आतिशदान में आग सुलगा रखी थी बल्कि मेरे डिनर का भी मामूली-सा इंतजाम कर रखा था।

डिनर से फारिग हुआ तो बूढ़ी महिला मिसेज मार्था ने सुबह तक के लिए इजाजत मांगी। बर्तन उसने साफ करके रख दिए थे किचन में।

मिसेज मार्था को रुख्सत करके मैंने गेट बंद किया और लम्बे-चौड़े अंदरूनी अहाते का मुआयना शुरू किया, गैरेज मेन गेट के करीब पन्द्रह फुट दूर थी। मैं वहां तक गया, मगर उसे खोलकर देखना जरूरी न समझा। बर्फबारी की शिद्दत में कमी हो गई थी, लेकिन मैंने बाग में जाने का विचार त्याग दिया।

वहां छाए अंधेरे और सन्नाटे का आप अंदाजा नहीं लगा सकते। मैं संतुष्ट हो गया कि छुट्टियां गुजारने के लिए यह उपयुक्त स्थान है।

पोर्च और बरामदे में से गुजर कर मैं अंदर दाखिल हुआ और विभिन्न कमरों का जायजा लेता सेंट्रल हॉल में आतिशदान के सामने कुर्सी पर जा बैठा। फिलहाल

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

इटालवी कहानी

भूत बंगला

भटकती आत्माओं का दिलचस्प अफसाना

वो शहर के बाहर बने उस बंगले को किराये पर लेने के लिए देखने पहुंचा था। मगर रातभर बंगले में और आसपास ऐसी रहस्यमय घटनाएं घटती हैं कि वो सुबह बंगले से भाग निकलता है और सीधा पुलिस हैडक्वार्टर पहुंचता है।

हमेशा, यानि हर साल की तरह, इस साल भी मेरी बीवी ने मुझसे पूछा कि मैंने छुट्टियां मनाने के लिए किसी दूर दराज की सुहावनी जगह पर किसी अच्छे मकान का इंतजाम करने के लिए क्या सोचा है?

मैंने नहीं में जवाब दिया। जब से हमारी शादी हुई थी, यानि शादी के बाद के पहले दो-तीन साल छोड़कर जब से हमें डॉक्टरों ने बताया था कि औलाद हमारे मुकद्दर में नहीं है। हमारा नियम बन गया था कि हम दोनों मियां-बीवी छुट्टियां किसी दूर-दराज इलाके के शांत और मनोरम स्थान पर गुजारा करते थे।

मेरी बीवी क्लारा ने अखबार का इश्तहारों वाला पन्ना मेरी तरफ बढ़ाया जिसमें एक इश्तहार पर निशान लगा हुआ था।

इश्तहार हमारी इच्छानुसार ही था, नॉरफोक रोड पर आलीशन फर्निश्ड बंगला, साई बाग, गैरेज, बोट हाउस सभी सुविधाएं, किराया मुनासिब उपलब्ध है।

बिल्कुल ठीक, नॉरफोक रोड दूर-दराज इलाका था और किराया क्लारा के ख्याल से कम और मेरे ख्याल से बहुत ज्यादा था। बहरहाल, मैं अपनी चहेती, इकलौती बीवी की हठ के सामने इसके सिवा और क्या कह सकता था कि खामोशी से सिर झुका दूं, मैंने फोन उठाया और इश्तहार में दर्ज नम्बर मिलाए। एजेंट से बात की, उसने कहा–

"सर आप नॉरफोक रोड पहुंचें, मैं मिसेज मार्था को फोन कर देता हूं, वो आपको बंगला दिखा देगी और आपकी सेवा भी करेगी, वो हाउस कीपर है।"

क्लारा ने आग्रह किया–"डियर तुम्हें वहां जरूर जाना चाहिए, बंगले और उसके आसपास के माहौल का जायजा लेना जरूरी है वहां जाने से पहले।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

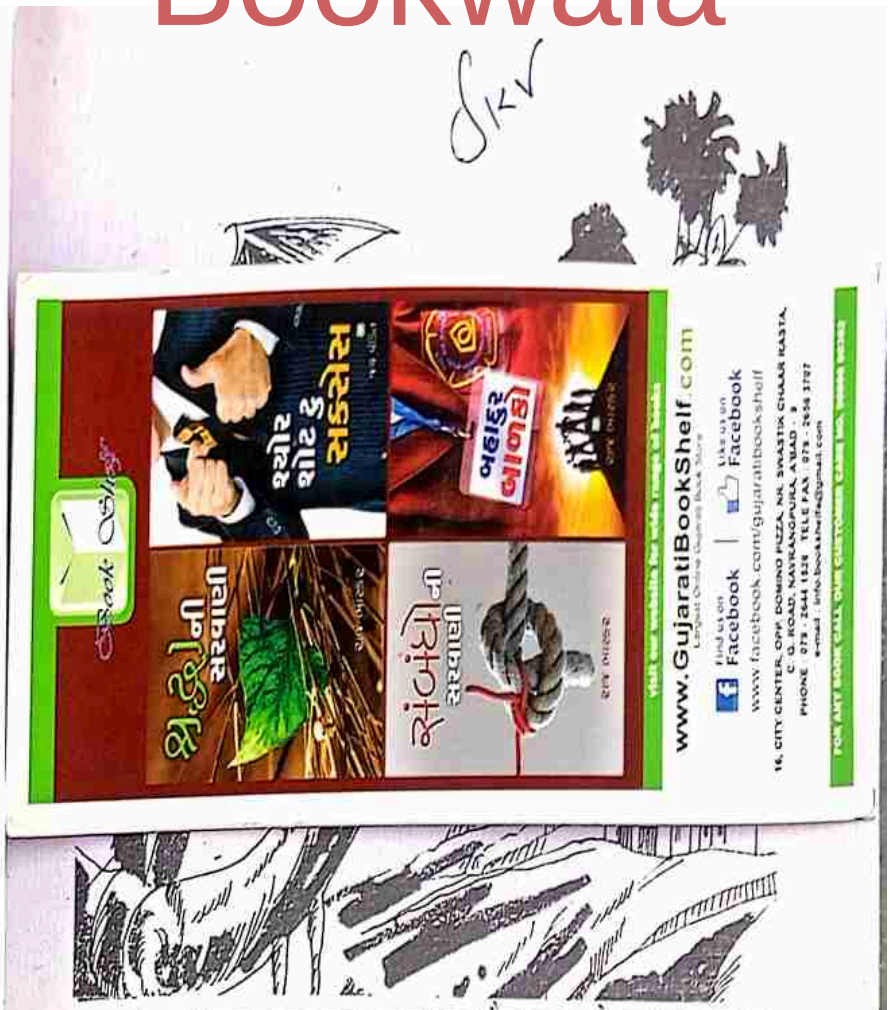

बहरहाल, जब मैं घर से रवाना हुआ तो मौसम कुछ थोड़ा-सा खराब था, लेकिन रास्ते में ही बर्फ का अंधा कर देने वाला तूफान शुरू हो गया जिसमें सफर करता मैं इंतहाई दूर एक वीरान इलाके में पहुंचा। रेलवे स्टेशन पर उतरकर मुझे और पांच मील का सफर टैक्सी से करना पड़ा, जो काफी तकलीफदेह था।

खुदा का शुक्र कि मिसेज मार्था उस वक्त वहां मौजूद थी। उस पर उसने यह मेहरबानी भी की थी कि न सिर्फ आतिशदान में आग सुलगा रखी थी बल्कि मेरे डिनर का भी मामूली-सा इंतजाम कर रखा था।

डिनर से फारिग हुआ तो बूढ़ी महिला मिसेज मार्था ने सुबह तक के लिए इजाजत मांगी। बर्तन उसने साफ करके रख दिए थे किचन में।

मिसेज मार्था को रुख्सत करके मैंने गेट बंद किया और लम्बे-चौड़े अंदरूनी अहाते का मुआयना शुरू किया, गैरेज मेन गेट के करीब पन्द्रह फुट दूर थी। मैं वहां तक गया, मगर उसे खोलकर देखना जरूरी न समझा। बर्फबारी की शिद्दत में कमी हो गई थी, लेकिन मैंने बाग में जाने का विचार त्याग दिया।

वहां छाए अंधेरे और सन्नाटे का आप अंदाजा नहीं लगा सकते। मैं संतुष्ट हो गया कि छुट्टियां गुजारने के लिए यह उपयुक्त स्थान है।

पोर्च और बरामदे में से गुजर कर मैं अंदर दाखिल हुआ और विभिन्न कमरों का जायजा लेता सेंट्रल हॉल में आतिशदान के सामने कुर्सी पर जा बैठा। फिलहाल

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

सोने का कोई इरादा नहीं था। काफी देर तक आतिशदान की प्रफुल्लतादायक गर्मी का आनंद उठाने के बाद मैं उठा और बैडरूम में दाखिल हुआ।

मेरा सामान मिसेज मार्था ने सलीके से रखा हुआ था। मैंने बैग में से एक उपन्यास निकाला और दोबारा सेंट्रल हॉल में आतिशदान के सामने आराम कुर्सी पर बैठकर उपन्यास पढ़ना शुरू कर दिया। बंगले में आसपास जो खामोशी थी वो पढ़ने-लिखने के लिए बहुत सहयोगी थी। बंगला नॉरफोक से बाहर बहुत दूर नदी किनारे स्थित था। पिछले दिनों से जारी बर्फबारी की वजह से नदी की ऊपरी सतह जम चुकी थी, इसलिए बोट हाउस की तरफ से पानी के हिलकोरे लेने की आवाज भी नहीं आ रही थी।

सन्नाटा इतना गहरा था कि सिवा आतिशदान में कभी-कभार चटख उठने वाली लकड़ियों की आवाज के, किसी किस्म की कोई आवाज नहीं आ रही थी। उपन्यास की रोचकता ने मेरा सारा ध्यान इस तरह खींच लिया था कि आधी से ज्यादा रात कब और कैसे गुजर गई थी, मुझे पता ही नहीं चला था। अचानक किसी कार की आवाज ने उस ठोस सन्नाटे को छिन्न-भिन्न कर दिया।

दूर से आती हुई किसी कार की आवाज पल-पल तेज और करीब होती जा रही थी। फिर अचानक बंगले से कुछ दूर कार की आवाज बंद हो गई। मुझे चिंता और हैरानी हुई कि इतनी रात गए, इतनी दूर इस वीराने में, गिरती हुई बर्फ के नीचे यहां कौन आया है?

अब तक आप समझ गए होंगे कि मैं बुजदिल और डरपोक आदमी नहीं हूं, क्लारा और मेरे जानने वाले मुझे निडर पॉल के नाम से जानते थे। बहरहाल, मैं स्थिति का जायजा लेने के लिए बंगले से बाहर आया... पोर्च से लगे बरामदे में से ही मुझे एक कार रुकी हुई नजर आई, क्योंकि बंगले की बाऊंड्री तीन फुट से ज्यादा ऊंची नहीं थी। मैं बाहरी गेट से बाहर गया।

कार बंगले से बीस-पच्चीस फुट दूर खड़ी थी और हैडलाइटों की रोशनी से आंखें चुंधिया रही थीं। मैं करीब पहुंचा तो देखा कि काफी बड़ी कार लिमोजिन रास्ते के बीचो-बीच खड़ी हुई है और एक लड़की उसका बोनट खोले उस खड़ी कार के इंजन का जायजा ले रही है।

मेरे करीब पहुंचने पर भी शायद उसने मेरे कदमों की आहट नहीं सुनी थी, क्योंकि वो इंजन से उलझी रही थी। मैंने उसे मुखातिब किया–"मिस, क्या मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूं?"

"इंजन चलते-चलते बंद हो गया है।" वो सिर उठाए बगैर बोली–"मेरी समझ में नहीं आता क्या खराबी है?"

मैंने इंजन में झांका, लड़की एकदम दो कदम पीछे हट गई।

"रेडियेटर में पानी है?" मैंने पूछा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"पानी...पानी का इंजन में क्या काम?"

"गाड़ियां सिर्फ गैस और पेट्रोल से ही नहीं चलतीं मिस, इनमें पानी का भी काम होता है जो इंजन ठंडा रखता है।"

"ओह...!" वो बोली–"क्यों न इसमें थोड़ी बर्फ डाल दें? यह इतनी सारी बिखरी पड़ी है?"

"नहीं।" मैंने कहा–"बर्फ कारबोरेट को खराब कर देगी, जरा ठहरो।"

मैं तेजी से बंगले में गया और एक बाल्टी में पानी भर लाया। लड़की ने रेडियेटर का ढक्कन खोला जो उसके हाथ से उछलकर नीचे जा गिरा। रेडियेटर आग हो रहा था। मैंने थोड़ा-सा पानी डाला। जो फौरन भांप बनकर उड़ गया। हमने फिर थोड़ी-थोड़ी देर बाद थोड़ा-थोड़ा पानी डाला, मगर रेडियेटर ने फौरन उसे बाहर उछाल दिया। काफी देर तक हम इंजन के दूसरे हिस्सों से भी उलझे रहे, मगर कार स्टार्ट न हो सकी।

मुझे फौरन ख्याल आया कि वो काफी देर से सूखे रेडियेटर के साथ कार चलाती आ रही थी जिसके नतीजे में इंजन तबाह हो गया था। मैंने कहा–

"मिस, अब यह कार बगैर मैकेनिक के ठीक नहीं हो सकती।"

"इसका मतलब मुझे सारी रात कार में ही गुजारनी पड़ेगी?"

"अगर तुम पसंद करो तो गरीब का बंगला हाजिर है।" मैंने पेशकश की।

"नहीं, मैं कार यहीं छोड़कर पैदल चली जाऊंगी।"

"नादानी की बातें मत करो।" मैंने कहा–"ऐसे मौसम में, आधी रात को कहां जाओगी? आगे मीलों दूर तक कोई आबादी नहीं है।"

उसी वक्त हमने एक गाड़ी के इंजन की आवाज के साथ-साथ गड़गड़ाहट की आवाज भी सुनी और चौंककर देखा तो बहुत दूर हैडलाइटें चमकतीं नजर आईं, आने वाली गाड़ी का रुख इसी तरफ था।

"आपके ख्याल में, आने वाली क्या चीज हो सकती है?" लड़की ने पूछा।

"मेरे ख्याल में...?" मैंने कहा–"यह दूध वाले की लारी है।"

गाड़ी अभी बहुत दूर थी। जैसे-जैसे वो करीब आती गई, उसकी हैडलाइटों की रोशनी तेज होती चली गई, आखिर वो करीब आकर रुक गई, क्योंकि लिमोजिन सड़क के बीचो-बीच खड़ी थी। लारी का ड्राइवर उतरकर हमारे करीब आया–

"क्या मामला है जी, क्या मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकता हूं?"

हमने उसे सारी सिचुएशन बताई, तो वह बोला–

"मैं एप्पल विले जा रहा हूं, वहां तक इस कार को लारी से बांधकर ले जा सकता हूं। हालांकि मेरी गाड़ी में दूध के डिब्बे भरे हुए हैं।"

मगर लड़की इस प्रस्ताव पर भी तैयार नहीं हुई। पहले वो मेरी पेशकश ठुकराकर बंगले में रात गुजारने से इंकार कर चुकी थी। आखिर यह तय किया

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

गया कि लिमोजिन को गैरेज में बंद करके ड्राइवर के साथ करीबी शहर तक जाएगी और दूसरे दिन किसी वक्त मैकेनिक को साथ लेकर कार ले जाएगी।

मैंने ड्राइवर के साथ मिलकर लिमोजिन को धक्का लगाकर गैरेज में बंद किया। वो जाने के लिए तैयार हुए, तो मैंने कहा–

"सर्दी बहुत है, थोड़ी देर अंदर बंगले में आराम कर लो फिर चले जाना।"

वो मेरे साथ बंगले में आ गए। मैंने उन्हें आतिशदान के सामने सेंट्रल हॉल में बिठाया, तीन गिलासों में डाली, सोडा उपलब्ध नहीं था, इसलिए पानी मिलाया, उन्हें पेश किया। लारी ड्राइवर, जिसने अपना नाम वेलीनो बताया, उसने और लड़की ने विस्की पी और चल पड़े।

उस लड़की का रवैया शुरू से ही कुछ उखड़ा-उखड़ा हुआ था, बाहर कार के पास भी वो रोशनी से बचने की कोशिश करती रही थी। मेरे और टैक्सी ड्राइवर के साथ भी, हालांकि हम दोनों उसके साथ बड़ी हमदर्दी से पेश आ रहे थे, उसका व्यवहार शुष्क और कुछ असभ्य-सा रहा था। वो कुछ बेचैन-सी रही थी।

मैंने महसूस किया कि जैसे वो इस हमदर्दी, अपनेपन-भरे माहौल से जान छुड़ाकर जल्दी-से-जल्दी वहां से जाना चाहती हो। वह बात मुझे बहुत अस्वाभाविक लगी थी। अब भी वो रोशनी से दूर रहने की कोशिश करती महसूस हो रही थी। मैंने अभी तक उसे गौर से नहीं देखा था, हॉल की रोशनी में मुझे उसको गौर से देखने का मौका मिला, वो लड़की कहलाने की उम्र से थोड़ा आगे निकल गई थी।

बहरहाल, उनको विदा करके मैं अपने बैडरूम में आया। बैडरूम में साइड टेबल पर कुछ दूसरी किताबों के साथ लोकल गाइड बुक नक्शों सहित रखी हुई थी। मैंने सोचा था कि मैंने अपना उपन्यास जहां पर छोड़ा था वहीं से फिर पढ़ना शुरू कर दूंगा, लेकिन अनायास ही मैंने वो गाइड बुक उठा ली।

दो-चार पन्ने ही मैंने पलटे थे गाइड बुक के कि मैं चौंक उठा और पूरी गाइड बुक देखने पर मजबूर हो गया। मुझे ताज्जुब हुआ कि वो औरत किधर से आई थी? क्योंकि इस बंगले के सामने से गुजरने वाली सड़क आम रास्ता नहीं थी। यह एक महत्वहीन सड़क थी और एप्पल विले वगैरह शहरों में जाने वाली मशहूर बड़ी सड़कों से बहुत दूर थी।

मुझे महसूस हुआ कि इस सारे चक्कर में कहीं-न-कहीं कोई असाधारण बात जरूर है। इस सड़क से गुजरने का मतलब है कि सड़क इस्तेमाल करने वाला लोगों की निगाहों से बचना चाहता है, या फिर कार चोरी की भी हो और हाईवे पर की गश्ती पुलिस से उसे बचना जरूरी हो।

अब मुझे बेचैनी महसूस होने लगी थी, मैंने फैसला किया कि मुझे फौरन गैरेज में जाकर एक बार फिर कार का जायजा लेना चाहिए। मैंने हुक से चाबी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उतारी और गैरेज में जाकर कार का जायजा लेना शुरू किया। तब तो मैंने सिर्फ इंजन देखा था, या फिर गाड़ी को धक्का लगाया था।

लिमोजिन ने गैराज को लगभग भर दिया था, मैंने दीवार के साथ-साथ रगड़ खाते हुए जाकर कार का दरवाजा खोला। मुझे लगा जैसे कार के अंदर से किसी ने दरवाजे को धकेला हो, मैं अचानक लगने वाले इस झटके की वजह से अपना संतुलन कायम न रख सका और पीछे की दीवार से टकराकर गिर गया।

मैं संभलकर उठा, कार के पास जाकर दरवाजे के सहारे देखा तो मुझे कुछ नजर न आया, क्योंकि जो मोमबत्ती मैं लेकर आया था, दरवाजे के धक्के से हाथ से छूट गई थी। मैंने हाथों से फर्श टटोला तो कार के नीचे से मोमबत्ती मिल गई। मैंने मोमबत्ती दोबारा जलाकर देखा तो मोमबत्ती हाथ से गिरते-गिरते बची।

मैंने देखा कि दरवाजे से टकराने वाला एक आदमी है, मुर्दा आदमी जो कार के अंदर फुटमेट पर दरवाजे के सहारे बिठाया गया था। वो अब खुले हुए दरवाजे से बाहर लुढ़क रहा था।

किसी तरह मुश्किल से मैंने उसे कार के अंदर धकेल कर दरवाजा बंद कर दिया। मैं कार से घूम कर दूसरी तरफ आया और दूसरी तरफ का दरवाजा खोला और हाथ बढ़ाकर कार की छत पर लगा छोटा-सा बल्ब रोशन कर दिया।

यह एक दुबला-पतला लम्बा-सा आदमी था, कद छः फुट छः इंच से निकलता हुआ लगता था, सांवला-सा रंग, बीमारों जैसा चेहरा, गहरी मोटी मूंछें, उसकी पीठ पर कंधे से नीचे, सीधे बाजू की कोहनी के पास गोली का सुराख था जो साफ नजर आ रहा था। गोली शायद उसके फेफड़े में जा घुसी थी।

लाश की जेबों में कोई कागज वगैरह नहीं था, उसके कोट या कमीज पर भी किसी दर्जी का लेबिल नहीं था। उसकी जेब में सिर्फ कुछ हजार नीरा के नोट थे। लेकिन यह भी किसी किस्म का सबूत नहीं थे। इन सारी बातों से कुछ पता नहीं चलता था कि उसे किसने कत्ल किया था, उसी औरत ने, या फिर किसी और ने?

बहरहाल, इस शख्स के कत्ल की कहानी वही बता सकती थी। वो जा चुकी थी और मैं उस बारे में कुछ नहीं कर सकता था। यहां न तो टेलीफोन था और न ही पुलिस को सूचना देने का कोई दूसरा साधन।

बहरहाल, मैंने गैरेज को दोबारा बंद करके ताला लगाया और आकर सो गया। अब सुबह ही कुछ किया जा सकता था...इस वक्त तो रात के साढ़े तीन से ज्यादा का वक्त गुजर चुका था।

सुबह मैं जल्दी ही जाग गया था और मिसेज मार्था के आने तक मैं बाहर जाने के लिए तैयार हो गया था और मिसेज मार्था के आने से पहले मुझे दुःख और हैरत का एक धक्का भी लग चुका था। वो यह कि मैंने सुबह एक बार

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

फिर गैरेज में जाकर कार और लाश का मुआयना करने का फैसला किया था।

जब मैं गैरेज में पहुंचा था तो उसका गेट खुला हुआ मिला था। रात को शायद मैं गैरेज की चाबी गेट में लगी हुई ही छोड़ गया था ताले में। मैंने गेट के पट को बाहर की तरफ खींचा तो वह खुलता चला गया, गैरेज बिल्कुल खाली पड़ी हुई थी, न कार थी, न लाश!

रात को वहां मोमबत्ती गिर पड़ी थी, वहां कुछ ऑयल पड़ा हुआ था। मैं बाहरी गेट की तरफ गया, बाहर निकलकर देखा तो रात को होने वाली बर्फबारी ने कार और लॉरी के टायरों के निशान मिटा दिए थे। रात के सारे निशान मिट चुके थे। दो बातों में से एक बात जरूर हुई थी–या तो कुछ लोग उस वक्त आए जब मैं गहरी नींद सो रहा था, और वो लिमोजिन ले गए थे, या रात की सारी घटनाएं मैंने आतिशदान के सामने कुर्सी पर पड़े सोते हुए ख्वाब में देखी थीं।

अचानक मुझे गिलासों का ख्याल आया जिनमें हमने रात विस्की पी थी। मैं सेंट्रल हॉल में गया, वहां तीन गिलास मौजूद थे। इसका मतलब मैंने रात को ख्वाब नहीं देखा था, बल्कि कार ही वहां से ले जाई गई थी। उन्होंने बड़ी चालाकी से काम किया था? बिल्कुल खामोशी से।

लड़की ने अपना गिलास आतिशदान पर रख दिया था। मैंने करीब जाकर जायजा लिया उस पर अंगुलियों के निशान साफ नजर आ रहे थे जिनमें से कुछ तो मेरे थे और कुछ उस लड़की के थे। मैंने सावधानी से गिलास को एक पोलीथीन में लपेट लिया।

मिसेज मार्था के आने के बाद मैंने उनकी सेवा के बदले उन्हें कुछ रकम दी और वहां से एप्पल विले आया, वहां मैंने एजेंट को बताया कि मैं मकान के बारे में अपने फैसले की सूचना दे दूंगा। वहां से मैंने ट्रेन पकड़ी और सीधा मिलान पहुंचा, जहां पुलिस हैडक्वार्टर में मेरा एक दोस्त ऑफिसर था।

मैंने गिलास उसके हवाले कर दिया और कहा, इस पर उंगलियों के निशान हैं, तुम अपने आदमियों से कहो कि वो इन निशानों के बारे में मालूम करें।

"हो सकता है, वो इनके बारे में कुछ भी मालूम न कर सकें।" मेरे दोस्त ने कहा। फिर भी उसने तीनों गिलासों को फिंगरप्रिंट्स सेक्सन में भिजवा दिए।

मिलान के पुलिस वाले हैरतअंगेज ढंग से तेज रफ्तार साबित हुए, करीब तीन-चार मिनट बाद ही वो एक फाइल लिए हुए आया और उसने वो फाइल मेरे दोस्त के हवाले कर दी। उसने फाइल के पन्ने पलटे और कहना शुरू किया–

"गिलास पर जो फिंगरप्रिंट्स हैं, वो मिस सेली के हैं।" उसने फाइल में से एक तस्वीर निकालकर मेरे सामने डाल दी। यह उसी लड़की या औरत की तस्वीर थी। मेरा दोस्त पुलिस ऑफिसर कह रहा था–

"मिस सेली बड़ी खामोश तबीयत की और कुछ घमंडी-सी थी, उसका खास

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

शौक शॉप लिफ्टिंग था, वो खासतौर पर सुपर स्टोरों में अपनी चोरी का कमाल दिखाती थी, कुछ अर्से बाद वो एक रेस गैंग की मेम्बर बन गई...उस गैंग की एक दूसरे गैंग से ठन गई। सेली अपने एक दोस्त के साथ कहीं जा रही थी कि उसके दोस्त को गोली लग गई, सेली कार में दोस्त को लेकर नारफोक की तरफ भाग गई थी। नारफोक से कुछ आगे उसकी कार खराब हो गई थी। उसने कार एक बंगले के गैरेज में छोड़ी और एक दूध सप्लाई करने वाले की गाड़ी में एप्पल विले की तरफ रवाना हो गई थी, मगर वो एप्पल विले कभी न पहुंच सकी क्योंकि रास्ते में ही लारी का एक्सीडेंट हो गया था, सेली और लारी ड्राइवर उछल कर बाहर गिरे थे और दोनों के सिर वहां पड़े पत्थरों से टकराकर चूर-चूर हो गए थे। महत्वहीन और खतरनाक रास्तों पर चलने वालों का यही अंजाम होता है।"

"क्या इटैलियन पुलिस वाले जादूगर हैं जो इतनी जल्दी इतनी तफ्सील से सारी घटनाएं मालूम कर लीं, क्योंकि अभी बीती रात तो ये घटनाएं घटी ही हैं?"

"नहीं यार।" मेरे दोस्त ने कहा–"इन्हें घटे नौ बरस बीत चुके हैं।"

"क्या?" मैं हैरत से उछल पड़ा।

"हां, उसके बाद से सुना है कि उनकी आत्माएं उसी मौसम में अक्सर रात को उसी वक्त वो पूरा ड्रामा उस सड़क पर दोहराती रहती हैं।"

मेरे दोस्त ने कहा था और मैंने सिर पकड़ लिया था, मुझे पूरा कमरा घूमता हुआ महसूस हो रहा था।

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ब्रिटीश कहानी

प्रेतों का हंगामा

विश्व की सबसे खतरनाक पांच कहानियों में से एक कहानी

सतरह साल के एक लड़के ने तंत्र-मंत्र की किताबें पढ़कर अपनी अधकचरी बुद्धि द्वारा सीधा शैतान से सम्पर्क कर डाला था और शैतान के साथियों से जब उसकी दोस्ती हो गई तो उसने अपने बेहतरीन दोस्तों को बुलावा भेजा।

शैतान के साथी आ पहुंचे, कई लोगों को जान से हाथ धोना पड़ा, सैकड़ों बच्चों सहित एक अस्पताल के सारे मरीजों की जान खतरे में पड़ गई।

बारिश में भीगते हुए उसने तेजी से पार्किंग लॉन पार किया और मारवरी अस्पातल के दरवाजे में दाखिल हुआ। उसकी दायीं बगल के नीचे दबे भूरे रंग के थैले में एक पिशाच का इतिहास बंद था।

आगे बढ़ते हुए उसने अपने रेनकोट को झाड़ा और हरे रंग के चिकने फर्श पर पानी की बूंदें टपकाता हुआ मुख्य सूचना डेस्क पर बैठी हुई नर्स के पास पहुंचा। वो मिसेज क्रिस्ट को पहचानता था, उसने नर्स का अभिवादन किया...मिसेज क्रिस्ट ने 'गुड मॉर्निंग' कहते हुए उसका नेम टेग निकालने के लिए दराज खोली–

"आज का दिन तो पूरी तरह भीगा हुआ है।" नर्स ने नाक की फुंगी पर टिके चश्मे के ऊपर से उसे देखते हुए कहा। वो रजिस्ट्र में साइन कर रहा था। नर्स आगे बोली–"मौसम का फायदा उठाते हुए रकम पैदा करने के लिए आज यहां बेशुमार डॉक्टर पहुंचे हुए हैं।" नर्स ने टिप्पणी की।

"हां।" कहकर उसने तेजी से अपना नाम लिखा–"डॉक्टर जैक शॉन, फिर उसने तारीख और वक्त लिखा, सोलह अक्टूबर, वक्त दस बजकर सत्तावन मिनट। फिर उसने लिस्ट में लिखे दूसरे नामों पर नजर डाली तो नोट किया कि...इसमें सरकारी वकील मिस्टर फॉस्टर का नाम मौजूद नहीं है। वो अभी तक अस्पताल नहीं पहुंचा था। जैक ने सोचा–यहां लॉबी में ठहरकर उसका इंतजार करूं या

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अकेले ही ऊपर जाऊं? फिर उसने तय किया कि वो यहीं ठहर कर इंतजार करेगा, जल्दीबाजी की क्या जरूरत है।

"आज तो वर्क लोड बहुत होगा?" मिसेज क्रिस्ट ने पूछा।

उसकी आवाज से पता चलता था कि वो अच्छी तरह जानती है, वही क्या सारा स्टाफ जानता है। जैक ने सोचा और यह तो सूचनाधिकारी है। वही दक्ष और मिलनसार! पिछले छः बरसों में जैक जब भी यहां आया था, उसने मिसेज क्रिस्ट को यहीं देखा था। फिर अखबारों में इस केस की तस्वीरें भी छप चुकी थीं और यही हाल टी०वी० और रेडियो का था।

"नहीं।" जैक ने जवाब दिया–"किसी से मिलना है।"

उसने खिड़की से बाहर देखना शुरू कर दिया। आसमान सुरमई हो रहा था, बारिश भी सुरमई थी और उस जंगल का रंग भी सुरमई हो चला था जिसने इस अस्पताल को घेर रखा था। बरसिंघम शहर यहां से पश्चिम में करीब चार मील दूर था और वो उस वादी में गुम था, जिसे बादलों ने ढांप रखा था।

जैक ने नर्स को छोड़ा और मुड़कर लॉबी में चला गया जहां बहुत-सी कुर्सियां पड़ी हुई थीं। जैक ने वहां से एक अखबार उठा लिया और उस सीट पर जा बैठा, जिसका रुख खिड़की की तरफ था। जैक ने अपना कोट उतारकर टांग दिया और...इंतजार के पल अखबार पढ़कर गुजारने लगा। सरकारी वकील के बगैर

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

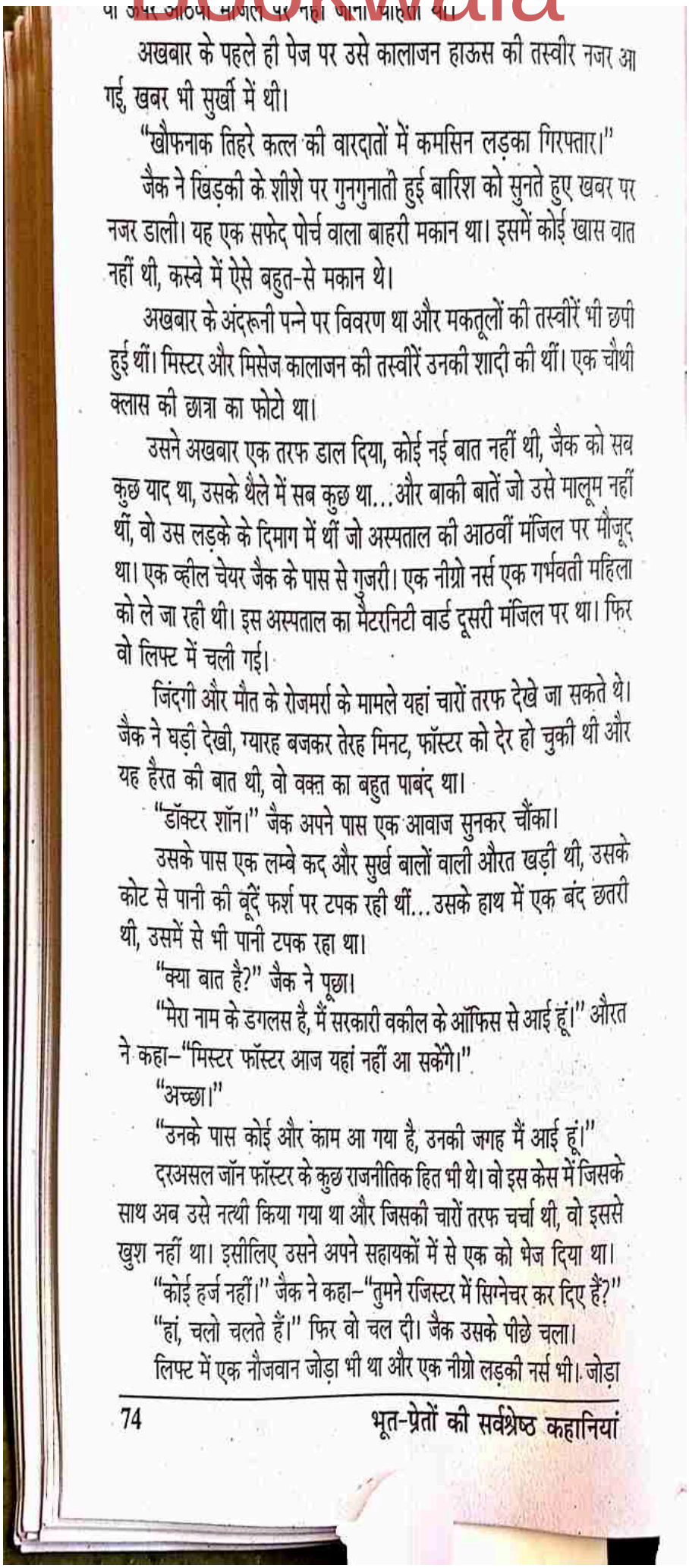

पा ऊपर आठवां मंजिल पर नहीं जाना चाहता था।

अखबार के पहले ही पेज पर उसे कालाजन हाऊस की तस्वीर नजर आ गई, खबर भी सुर्खी में थी।

"खौफनाक तिहरे कत्ल की वारदातों में कमसिन लड़का गिरफ्तार।"

जैक ने खिड़की के शीशे पर गुनगुनाती हुई बारिश को सुनते हुए खबर पर नजर डाली। यह एक सफेद पोर्च वाला बाहरी मकान था। इसमें कोई खास बात नहीं थी, कस्बे में ऐसे बहुत-से मकान थे।

अखबार के अंदरूनी पन्ने पर विवरण था और मकतूलों की तस्वीरें भी छपी हुई थीं। मिस्टर और मिसेज कालाजन की तस्वीरें उनकी शादी की थीं। एक चौथी क्लास की छात्रा का फोटो था।

उसने अखबार एक तरफ डाल दिया, कोई नई बात नहीं थी, जैक को सब कुछ याद था, उसके थैले में सब कुछ था...और बाकी बातें जो उसे मालूम नहीं थीं, वो उस लड़के के दिमाग में थीं जो अस्पताल की आठवीं मंजिल पर मौजूद था। एक व्हील चेयर जैक के पास से गुजरी। एक नीग्रो नर्स एक गर्भवती महिला को ले जा रही थी। इस अस्पताल का मैटरनिटी वार्ड दूसरी मंजिल पर था। फिर वो लिफ्ट में चली गई।

जिंदगी और मौत के रोजमर्रा के मामले यहां चारों तरफ देखे जा सकते थे। जैक ने घड़ी देखी, ग्यारह बजकर तेरह मिनट, फॉस्टर को देर हो चुकी थी और यह हैरत की बात थी, वो वक्त का बहुत पाबंद था।

"डॉक्टर शॉन।" जैक अपने पास एक आवाज सुनकर चौंका।

उसके पास एक लम्बे कद और सुर्ख बालों वाली औरत खड़ी थी, उसके कोट से पानी की बूंदें फर्श पर टपक रही थीं...उसके हाथ में एक बंद छतरी थी, उसमें से भी पानी टपक रहा था।

"क्या बात है?" जैक ने पूछा।

"मेरा नाम के डगलस है, मैं सरकारी वकील के ऑफिस से आई हूं।" औरत ने कहा–"मिस्टर फॉस्टर आज यहां नहीं आ सकेंगे।"

"अच्छा।"

"उनके पास कोई और काम आ गया है, उनकी जगह मैं आई हूं।"

दरअसल जॉन फॉस्टर के कुछ राजनीतिक हित भी थे। वो इस केस में जिसके साथ अब उसे नत्थी किया गया था और जिसकी चारों तरफ चर्चा थी, वो इससे खुश नहीं था। इसीलिए उसने अपने सहायकों में से एक को भेज दिया था।

"कोई हर्ज नहीं।" जैक ने कहा–"तुमने रजिस्टर में सिग्नेचर कर दिए हैं?"

"हां, चलो चलते हैं।" फिर वो चल दी। जैक उसके पीछे चला।

लिफ्ट में एक नौजवान जोड़ा भी था और एक नीग्रो लड़की नर्स भी। जोड़ा

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

दूसरी मंजिल पर उतर गया। नर्स जब चौथी मंजिल पर उतरी तो जैक ने अपनी साथिन से पूछा–

"तुम उससे पहले कभी मिली हो?"

"नहीं। तुम तो मिल चुके होगे?"

"नहीं।" जैक ने भी सिर हिलाया।

लिफ्ट ऊपर जा रही थी, उसके पुराने गियर चरमरा रहे थे, औरत की नीली आंखें नम्बरों पर थीं।

"शायद फॉस्टर इस केस से खुश नहीं है?" जैक ने कहा।

औरत ने कोई जवाब नहीं दिया, ऐसे केसों में प्रॉसीक्यूटर की अच्छी खासी पब्लिसिटी हो जाती है।"

"डॉक्टर शॉन, यह कोई आम केस नहीं है।" औरत ने जैक को तेज नजरों से घूरा–"खुदा न करे, ऐसा कोई दूसरा केस हो।" वो धीरे से बोली थी।

लिफ्ट को हल्का-सा झटका लगा, आठवीं मंजिल आ चुकी थी। लिफ्ट के दरवाजे खुले, वो दोनों अब अस्पताल के मानसिक रोगी वार्ड में पहुंच चुके थे। यहां पागल और अर्धपागल कटघरों में बंद दरिन्दों की तरह टहलते थे।

❑❑❑

❑❑❑

"हाय जॉकी!" रेतीले रंग के बालों वाली एक औरत, जिसने नीला लिबास पहन रखा था और बालों पर एक हेयर बैंड चढ़ा रखा था, वो नारा लगाकर उनकी तरफ लपकी। उसके चेहरे पर बहुत-सी झुर्रियां थीं और उसने होठों पर लाल रंग की लिपिस्टिक पोत रखी थी।

"आज तुम मुझे देखने आए हो न?" उसने पास पहुंचकर कहा।

"सॉरी मार्गी, आज मैं तुम्हारे पास नहीं आया हूं।" जैक ने कहा।

"अरे छोड़ो। मुझे एक ब्रिज पार्टनर की तलाश है, सब बड़े जोश में हैं।" मार्गी ने डगलस को सख्ती से घूरा–"यह कौन है? तुम्हारी गर्लफ्रेंड?"

"नहीं। यह मेरी दोस्त है।" जैक ने किसी पेचीदगी से बचने के लिए कहा।

एक बूढ़ा-सा और कमजोर-सा आदमी, जिसने साफ-सुथरा सूट पहन रखा था, उनकी तरफ बढ़ा। उसने अपने गले से अजीब-सी गुर्राहटें निकालीं।

"बंद करो यह मूर्खता रेटर।"

राहदारी में बहुत-से लोग आ-जा रहे थे, के थोड़ा पीछे हट गई। उसकी पीठ पीछे लिफ्ट का पिंजरा नीचे जा रहा था, उसने मुड़कर देखा, इस फ्लोर की लिफ्ट में कोई बटन नहीं था, उसे भी मदद से ऑपरेट किया जाता था।

"अब तुम भी फंस गईं।" मार्गी ने के से कहा–"हम सबकी तरह।"

"क्या किसी ने नहीं बताया कि हम परेड पर जाने वाले हैं?" एक भारी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

आवाज गूंजी– "जरा डॉक्टर शॉन को दम तो लेने दो।" एक नीग्रो नर्स, जिसके नितम्ब काफी भारी थे, वो जैक और डगलस की तरफ बढ़ी। रेटर ने उसकी तरफ देखकर मुंह से एक जोरदार गुर्राहट निकाली।

"डॉकी आज मुझे देखने आए हैं रोजाली।" मार्गी ने कहा।

"नहीं, ये हमारे वार्ड में किसी को नहीं देखेंगे।" नीग्रो औरत ने बताया। उसकी आंखें कंजी थीं और उसके चेहरे पर जड़ी हुई-सी लगती थी– "इनके पास एक दूसरा काम है।"

"कौन-सा काम है?"

"शायद किसी नए पंछी को देखेंगे।" एक जवान आवाज उभरी। यह शख्स राहदारी के किनारे पर एक कुर्सी पर बैठा हुआ था।

"तुम चुप रहो मिस्टर चैम्बर।" रोजाली ने उसे झिड़का।

उस पुरानी-सी जैकेट पहने तीस-पैंतीस साल के शख्स ने एक सिगरेट निकाल कर सुलगाई और रोजाली को घूरा... वो कमीज की आस्तीनें चढ़ा रहा था।

"क्या हाल है देव?" जैक ने पूछा ताकि माहौल जरा शांत हो सके– "क्या तुम्हारे सिर का दर्द ठीक है?"

"अपनी सिगरेट बुझा दो मिस्टर चैम्बर।" नर्स ने फिर आवाज उठाई, उसे चैम्बर ने सुनी-अनसुनी कर दी।

"सुना नहीं। मैं कहती हूं सिगरेट बुझा दो।" नर्स उसकी तरफ बढ़ी।

देव ने एक लम्बा कश लेकर नथुनों से धुआं निकाला और फिर सिगरेट का जलता हुआ सिरा मुंह में रख लिया। के ने घबराकर उसकी तरफ देखा।

"अब ठीक है।" देव ने जलता हुआ सिगरेट का टुकड़ा निगल लिया।

"शुक्रिया।" नर्स ने रुखाई से कहा। फिर वो के से बोली– "मैडम घबराएं नहीं, यह सारा दिन ऐसी ही हरकतें करता रहता है।"

"यह तुम्हारे दिए हुए खाने से लाख दर्जे अच्छा होता है।" देव ने कहा।

"मुझे प्यास लग रही है।" के ने वाटर कूलर की तरफ बढ़ते हुए कहा।

एक छोटी-सी औरत, जिसके बाल बयां के घोंसले की तरह थे, वो उसकी परछाई की तरह उसके साथ बढ़ी कि के ने उसे नजरअंदाज करने की कोशिश की। फॉस्टर ने उसे पहले ही बता दिया था कि अस्पताल का मानसिक रोगी वार्ड कोई अच्छी जगह नहीं है।

के की उम्र अट्ठाइस साल थी, हॉल ही में कॉलेज से निकली थी, जरूरी था कि वो कुछ करके दिखाती, यह काम उसके लिए इम्तहान जैसा था। इससे पहले जो केस उसे मिला था उसमें उसे एक लाश के बदन में गोलियों से बने सुराख गिनने पड़े थे। लाश उन्हें लोगान झील में मिली थी।

"डॉक्टर कैथरोन पहले से मौजूद हैं।" नर्स रोजाली ने कहा और सफेद दरवाजे

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

की तरफ इशारा किया जो हॉल के आखिर में था। रास्ते के दोनों तरफ दीवारें और छत सफेद थीं–"वो पन्द्रह मिनट से वहां हैं।"

"क्या लड़के को आजाद कर दिया गया है?" जैक ने पूछा।

"मुझे उम्मीद नहीं! तुम्हारे और वकील के अलावा यह मुमकिन नहीं। मेरा ख्याल है तुम्हारी साथी वकील है।"

"हां, है।"

"मैं देखते ही समझ गई थी। तुम तो डॉक्टर कैथरोन को जानते हो, वो अंदर बैठे हुए सोच रहे होंगे।"

"हमें देर हो चुकी है, हमें अंदर जाना चाहिए।"

"डॉकी, ध्यान से अंदर जाना। वो लड़का बहुत खतरनाक है, मैंने आते-जाते उसे देखा है, उसकी आंखों से किरणें निकलती हैं, वो...वो तुम्हें मार देगा।"

"शुक्रिया।" डॉक्टर जैक ने कहा।

"निगरानी पर कौन है?" उसने पूछा।

"गुल दरवाजे पर है, बॉबी डेस्क ड्यूटी पर है।" नर्स ने बताया।

"ठीक है।" उसने के की तरफ देखा, वो उस छोटी-सी औरत से जान छुड़ाने में लगी हुई थी जिसे सब यहां बिल्ली कहते थे। वो दरवाजे की तरफ चला, नर्स रोजाली उसके साथ थी और के पीछे।

"डॉक्टर, बेहतर है कि अंदर मत जाओ।" अचानक देव ने कहा–"वो पक्का हरामी है।'

"क्या करें देव, यह तो हमारी ड्यूटी है।" जैक ने गहरी सांस ली।

"लात मारो ड्यूटी की दुम पर! जान है तो जहान है।"

जैक ने कोई जवाब नहीं दिया और आगे बढ़ता रहा। वो नर्स के डेस्क के पास से गुजरा जहां मिसेज मेरी और मिसेज एसटी की ड्यूटी थी। दरवाजा करीब आ चुका था। उसके थैले में जो कागजात और तस्वीरें थीं, वो सब उसके जेहन में उभर आई थीं, मगर वो एक साईकोट्रिस्ट था और बहुत माहिर, उसका पहले भी पागल मुजरिमों से वास्ता पड़ चुका था, उसे इनका तजुर्बा था।

जैक को तय करना होता था कि कोई शख्स मुकदमे में पेश होने के लायक है भी या नहीं? इस काम में उसे बहुत नागवारी भी बर्दाश्त करनी पड़ती थी, मगर यह...यह मामला बिल्कुल अलग था। तस्वीरें...हालातं...वो सफेद मकान, जिसमें सलाखें लगी हुई थीं सभी खिड़कियों में। सब कुछ भिन्न था और परेशान कर देने वाला था।

जैक ने दरवाजे पर लगे हुए बटन को दबाया, अंदर घंटी गूंजी। दरवाजे पर शीशे वाले चौखटे से उसने गुल को बढ़ते हुए देखा। गुल एक लम्बा-चौड़ा आदमी था, उसके बाल क्रिस कट थे, आंखें भारी पपोटों वाली थीं, वो चेहरे से किसी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ब्लड राऊंड जैसा दिखता था।

जैक को पहचानकर उसने दरवाजा खोल दिया। उसने जैक का अभिवादन किया और बोला–

"डॉक्टर, हमें तुम्हारा इंतजार था।" दरवाजा बंद करके उसने फिर ताला लगा दिया गया।

"डॉक्टर कैथरोन कांफ्रेंस हॉल में हैं।" गार्ड गुल ने बताया, फिर उसने के से पूछा–"मिस, आप कैसी हैं?"

"फाइन।" के ने कहा और डॉक्टर जैक के पीछे हो गई। गुल साथ था।

वो एक राहदारी में गये जिसका फर्श चिकना और हरे रंग का था, उसके दोनों तरफ तालाबंद दरवाजों वाले कमरे थे, ऊपर से लाइट-रोशनी का इंतजाम था। राहदारी के अंत पर एक इकलौती खिड़की थी जो जंगल की तरफ खुलती थी। उसमें सलाखें लगी हुई थीं।

वहां पड़ी एक डेस्क के पीछे एक जवान नीग्रो शख्स बैठा हुआ था जिसने गुल जैसी ही सफेद वर्दी पहन रखी थी और वो कोई मैगजीन पढ़ने में व्यस्त था और कानों में एयरफोन लगा रखा था। शायद वो म्यूजिक सुन रहा था। जैक को देखकर वो खड़ा हुआ, यह बॉबी थी। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं और उसने नाक में एक सुनहरी कील पहन रखी थी।

"हैलो डॉक्टर" बॉबी ने कहा और फिर के की तरफ आदर से झुका।

"मॉर्निंग बॉबी, क्या पोजीशन है?" जैक ने पूछा।

"चल रही है गाड़ी।"

"मुलाकात की तैयारी पूरी है?"

"बिल्कुल, डॉक्टर कैथरोन अंदर हैं।" उसने उस बंद दरवाजे की तरफ किया, जिस पर कांफ्रेंस रूम की तख्ती लगी हुई थी।

"क्या कालाजन को बाहर लाया जाए?" बॉबी ने पूछा।

"हां।" जैक ने कहा। उसने बढ़कर दरवाजा खोला और के से अंदर चलने के लिए कहा।

अंदर फर्श पर कालीन था, सलाखें लगी खिड़कियों में धुंधले शीशे लगे हुए थे जिनसे हल्की रोशनी अंदर आ रही थी। वहां एक लम्बी-सी इकलौती मेज रखी हुई थी जिसके एक तरफ तीन कुर्सियां रखी हुई थीं और सिरे पर एक कुर्सी मौजूद थी। उनमें से एक पर गंजे सिर और भूरी दाढ़ी वाला एक आदमी बैठा हुआ था। के को देखकर वो कुर्सी से उठ गया।

"ओह, हैलो! मैं समझा था मिस्टर फॉस्टर आएंगे।"

"ये के डगलस हैं और यह डॉक्टर कैथरोन, साईकोट्रिस्ट सर्विस के हैड।"

"आपसे मिलकर खुशी हुई डॉक्टर।" के ने कहा और उसने अपनी छतरी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

एक तरफ रख दी। उसने अपना भीगा हुआ कोट उतारा और एक तरफ खूंटी पर टांग दिया। कोट के नीचे उसने जैकेट पहन रखी थी, जैकेट और स्कर्ट!

"ठीक है, हम शुरू करते हैं।" जैक ने मेज के सिरे पर बैठते हुए कहा। फिर उसने अपना थैला सामने रखकर उस थैले को खोला।

"मैंने काजालन को बुलाया है, वो कोई गड़बड़ तो नहीं कर रहा?"

"नहीं।" डॉक्टर कैथरोन ने कहा–"जब से उसे यहां लाया गया है, वो बिल्कुल शांत है। बस हिफाजत के ख्याल से हमने उसे बांध रखा है।"

"बांध रखा है?" के ने हैरत से पूछा।

"मेरा मतलब है वो स्ट्रेज जैकेट में है।" डॉक्टर ने बताया।

"मगर आपने तो कहा था, वो शांत और ठंडा है...फिर यह जैकेट...?"

"मिस के...!" जैक ने अपने थैले में से एक फोल्डर निकालते हुए कहा–"तुम्हें इस मामले के बारे में कितना मालूम है? मैं समझता हूं कि फॉस्टर ने तुम्हें इस मामले में काफी कुछ बताया होगा। फिर तुमने अखबार वगैरह भी जरूर देखे होंगे। क्या तुमने पुलिस की ली हुई तस्वीरें भी देखी हैं?"

"नहीं।" मिस्टर फॉस्टर ने कहा था कि वो एक फर्स्टहैंड और ताजा राय चाहते हैं।" जैक के होठों पर कड़वी मुस्कुराहट उभरी।

"फिजूल बात है।" वो बोला–"फॉस्टर को मालूम था कि तुम वो तस्वीरें यहां देखोगी। चलो, यों ही सही, मैं तुम दोनों को मायूस नहीं करूंगा। उसने फोल्डर खोला और आधा दर्जन तस्वीरें मेज पर डालकर के की तरफ खिसका दीं।

के ने तस्वीरों की तरफ हाथ बढ़ाया ही था कि वो रुक गई। वो तस्वीर, जो ऊपर थी, उसमें एक कमरे का दृश्य था जिसका सारा फर्नीचर टूटा-फूटा और बिखरा पड़ा था, दीवारों पर भूरे धब्बे थे जो खून के स्प्रे की तरह थे। बड़े-बड़े अक्षरों में किसी ने खून में अंगुली भिगोकर लिखा था–"हेल शैतान।"

इन शब्दों के साथ दीवार पर पीले रंग के लोथड़े चिपके हुए थे। उसे मालूम हो गया कि वो इंसानी गोश्त है। के ने अंगुली से ऊपर वाली तस्वीर खिसकाई और दूसरी तस्वीर ने जैसे उसके दिमाग में कील ठोंक दी। उसमें टूटे-फूटे इंसानी अंगों का ढेर था, जिन्हें कमरे में इधर-उधर फेंक दिया गया था।

"ओह मेरे खुदा!" के ने सिसकारी ली। उसे उबकाई आने लगी थी।

और फिर दरवाजा खुला और वो लड़का, जिसने अपनी मां, अपने बाप और दस साल की बहन को मारकर उन्हें लोथड़ों में तब्दील कर दिया था, वो अंदर दाखिल हुआ।

❑❑❑

❑❑❑

और किसी प्रकार की हिचकिचाहट में मेज के दूसरी तरफ पड़ी कुर्सी की तरफ बढ़ा और जाकर बैठ गया। यह टिम कालाजन था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उसके दाएं-बाएं गुल और बॉबी जैसे मजबूत गार्ड थे, वो जाकर उसके पीछे खड़े हो गए। हालांकि लड़के का जिस्म जकड़ा हुआ था, उसकी आंखों पर गोल फ्रेम का चश्मा था जो ऊपर लगी ट्यूब लाइट की रोशनी में चमक रहा था। उसने शीशों के पीछे से अपने मुलाकातियों को देखा और मुस्कुराया। इस मुस्कुराहट में कोई शैतानियत नहीं थी, उसका अंदाज दोस्ताना था।

"हाय एवरीबॉडी।" वो बोला।

"हैलो टिम!" डॉक्टर कैथरोन ने कहा–"इनसे मिलो, यह डॉक्टर शॉन हैं और ये मिस डगलस। ये दोनों तुमसे बातें करने आए हैं।"

"खुशी की बात है।" लड़के ने कहा।

के अभी तक तस्वीरों के प्रभाव में थी, तीसरी तस्वीर तो उसने देखी ही नहीं थी, वो उससे देखी ही नहीं गई थी। वो लड़के की तरफ देखते हुए अजीब किस्म की उलझन महसूस कर रही थी। उसने केस फाइल पढ़ रखी थी, लड़के का हुलिया पढ़ चुकी थी। उसे मालूम था कि लड़के की उम्र सतरह साल थी।

वो ताज्जुब से उस लड़के को मुस्कुराते हुए देख रही थी। उसने तस्वीरें एक तरफ सरका दीं और हाथों की उंगलियां आपस में फंसाकर बैठ गई। यह एक दूसरा इम्तहान है, उसने सोचा। शायद फॉस्टर जानना चाहता है कि मैं बर्फ की बनी हुई हूं या नहीं? लानत है मुझ पर।

"तुम्हारे बाल पसंद आए मुझे।" लड़के ने के से कहा–"इनका अखरोटी कलर बहुत प्यारा है, क्या ये ऑरिजनल हैं?"

"थैंक्यू।" किसी तरह के ने जुबान खोली, उसने पहलू बदला–"ऑरिजनल ही हैं।"

लड़के की आंखें काली और बर्छे जैसी थीं, के को ये दो आंखें दो शोलों की तरह लग रही थीं जो पीले रंग के उस चेहरे पर जड़ी हुई थीं, उसके बाल हल्के भूरे थे और छोटे-छोटे कटे हुए थे, उसकी आंखों तले काले घेरे थे या तो थकान से बने थे या फिर जुनून से।

जैक भी लड़के का जायजा ले रहा था। टिम कालाजन अपनी उम्र के हिसाब से जिस्म में कम था। उसके सिर का आकार कुछ बेढंगा-सा था, दोनों तरफ से वो कुछ फूला हुआ-सा था, जबकि सामने का हिस्सा बुरी तरह आगे को निकला हुआ था। उसकी गर्दन सीधी और अकड़ी हुई-सी लग रही थी।

लड़के ने दोनों को गहरी नजरों से देखा।

"तुम लोग इसे हमारे साथ छोड़ दो।" डॉक्टर कैथरोन ने दोनों गार्डों से कहा।

वो दोनों रूम से बाहर चले गए, उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया।

"तुम कैसा महसूस कर रहे हो टिम?"

टिम के होठों पर चौड़ी मुस्कुराहट फैल गई।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"बिल्कुल आजाद।"

"मेरा मतलब है जिस्मानी तौर पर! कोई दर्द... कोई तकलीफ?"

"नो सर! कुछ नहीं।"

डॉक्टर ने अपनी फाइल में देखा–"कुछ मालूम है तुमको कि हम तुमको यहां क्यों लाए हैं?"

"हां, मालूम है।" टिम ने जवाब दिया।

"बताओ तो क्यों?"

"नहीं।" टिम ने कहा–"मैं सवालों के जवाब देते-देते तंग आ गया हूं। अब मैं खुद कुछ पूछना चाहता हूं।" टिम कालाजन ने कहा–"पूछूं?"

फिर टिम ने के की तरफ देखा–"मैं इन लोगों के बारे में जानना चाहता हूं। पहले इन महिला के बारे में। लेडी तुम कौन हो?"

के ने कैथरोन की तरफ देखा, उसने इशारा कर दिया। जैक ने तस्वीरें समेट ली थीं और उन्हें देख रहा था। मगर उसके कान आवाजों की तरफ थे।

"तुम्हें... डॉक्टर कैथरोन बता चुके हैं। मेरा नाम के डगलस है और मैं सरकारी वकील हूं।"

"नहीं।" टिम ने हाथ उठाकर कहा–"मेरा मतलब है मैं जानना चाहता हूं कि तुम कौन हो? शादीशुदा या तलाक... बच्चे हैं या नहीं, धर्म क्या है? तुम्हारा लकी कलर कौन-सा है?"

"ओह... अच्छा! नहीं, मैं शादीशुदा नहीं हूं।" वो तलाक ले चुकी थी, मगर बताना नहीं चाहती थी–"मेरे बच्चे नहीं हैं। मैं... मैं...।"

अचानक वो झिझकी। क्या मूर्खता है... क्या जरूरत है उसे अपनी निजी बातें बताने की? टिम प्रतीक्षक था, उसकी आंखें सपाट थीं।

"मैं कैथोलिक हूं।" आखिर के ने कहा–"और मेरा फेवरिट कलर हरा है।"

"कोई ब्वॉय फ्रेंड है तुम्हारे पास, या अकेली ही रहती हो?"

"तुमको इससे क्या मतलब है कि...?"

"सवालों के जवाब देना आसान काम नहीं है मिस!" टिम ने कहा–"देखा तुमने, यह कोई मजाक नहीं है। मगर तुम मुझसे उसी वक्त कुछ मालूम कर सकोगी, जब मुझे कुछ बताओगी। मेरा ख्याल है कि तुम अकेली ही रहती हो... हो सकता है कि लोगों को डेट भी देती हो।"

के अपनी खिसियाहट को छुपा न सकी। टिम हँसा–

"ठीक कहा न मैंने! अच्छा, अब यह बताओ कि तुम अच्छी कैथोलिक हो या बुरी कैथोलिक?"

"टिम!" डॉक्टर कैथरोन ने उसे रोका, उसकी आवाज में नर्मी भी थी और मजबूती भी–"देखो, तुम सही नहीं जा रहे हो। हम सब जल्दी-से-जल्दी यह

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मामला निबटा देना चाहते हैं।"

"अब तुम बताओ।" टिम ने कैथरोन को नजरअंदाज करके जैक से कहा–"तुम्हारी क्या कहानी है?"

जैक ने तस्वीरों में से एक तस्वीर निकाली जिसमें दीवार पर खून से लिखा गया था। फिर बोला–

"मेरी शादी को चौदह बरस हो चुके हैं, मेरे दो लड़के हैं, मैं एक मेथोडिस्ट हूं और मेरा फेवरिट कलर गहरा नीला है, मैं एक बास्कट बाल प्लेयर भी हूं और मुझे चायनीज फूड पसंद है और कुछ?"

टिम ने सोचपूर्ण ढंग से पूछा–"अच्छा, हां! तुम खुदा को मानते हो?"

"मानता हूं। वो एक सबसे ऊंची हस्ती है, और तुम?"

"म... मैं भी एक और ऊंची हस्ती पर यकीन रखता हूं।" टिम ने कहा–"यह बताओ तुम्हें खून का जायका अच्छा लगता है?"

जैक ने बड़ी मुश्किल से अपने चेहरे को सपाट रखा और बोला–

"नहीं।" उसकी आवाज में कोई भाव नहीं था।

"मेरी ऊंची हस्ती को बहुत पसंद है।" टिम ने कहा–"खून का जायका उसे बहुत पसंद है।" वो एक-दो बार आगे-पीछे हिला, उसकी जैकेट में से सरसराहटें उभरीं, उसका भारी सिर आगे-पीछे झूला–

"ओ०के०! मैं जानता था कि मुझसे सवाल करने वाले कौन हैं? चलो अब शुरू हो जाओ, पूछो, तुम लोग क्या पूछना चाहते हो?"

"टिम, मैं जानना चाहता हूं कि बारह अक्टूबर की रात को ग्यारह और बारह बजे के दरम्यान तुम्हारी दिमागी मानसिक स्थिति कैसी थी? क्या तुम्हें मालूम है कि मैं किस घटना के बारे में बात कर रहा हूं?"

टिम कुछ देर तक चुप रहा, उसकी नजरें खिड़की के धुंधले शीशे पर थीं। फिर उसने कहा–

"हां, यही वो वक्त था, जब वो प्रकट हुए थे और उन्होंने सारे घर को कूड़ाघर बना दिया था।"

"तुमने पुलिस लेफ्टिनेंट मारकोस को जो बयान दिया था, उसमें कहा था कि वो तुम्हारे मां-बाप के मकान में आए थे और उन्होंने...।" कहकर जैक ने थैले में से टिम के बयान की कॉपी निकाली थी और उसमें से पढ़ते हुए बोला–

"और बर्बादी उन्होंने ही फैलाई थी। मैं उन्हें रोक नहीं पाया था। दरअसल, मैं चाहता भी तो उन्हें रोक नहीं सकता था। वो आए, उन्होंने सब कुछ बर्बाद किया और काम पूरा करके अपनी जगह लौट गए थे। मैंने पुलिस को फोन किया था। क्योंकि मुझे पता था कि किसी-न-किसी ने चीखें जरूर सुनी होंगी। यह था तुम्हारा बयान, ठीक है?"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"हां...शायद यही था।" टिम कालाजन लगातार खिड़की के एक खास हिस्से को देखे जा रहा था, उसकी आवाज भी भारी हो गई थी।

"वो कौन थे?"

टिम ने पहलू बदला, खिड़की के शीशों पर बारिश की तेज बूंदें बजीं। के ने अपने दिल की धड़कनें तेज होती महसूस कीं।

"वो मेरे दोस्त थे।" टिम ने कहा–"मेरे बेस्ट फ्रेंड।"

"अच्छा!" जैक ने सोचा, बात किसी तरह तो खुली थी–"क्या तुम उनके नाम बताओगे?"

"उनके नाम?" टिम ने कहा–"तुम लोग शायद उन्हें ठीक से नहीं समझ पाओगे। मेरा मतलब है उनके असली नाम बोलने में बहुत पेचीदा हैं। मैंने अपने तौर पर उनके नाम रख दिए हैं। हिटलर, मेंढक और मां। वो मेरे बेहतरीन दोस्त हैं।"

थोड़ी देर खामोशी रही, फिर कैथरोन ने अपने नोट्स देखे, जैक ने छत की तरफ देखा, फिर उसने एक सवाल जड़ा, मगर के ने उससे पहले ही पूछ लिया–

"वो कौन हैं? मेरा मतलब है, वो कहां से आए हैं?"

टिम मुस्कुराया, जैसे उसे पहले से ही मालूम था कि यही सवाल पूछा जाएगा।"

"दोजख से।" उसने कहा–"वो वहीं रहते हैं।"

"अच्छा, तो एक हिटलर है?" जैक ने पूछा।

"मैंने यह नाम उसके लिए खुद रखा है, वैसे वो हिटलर नहीं है। वो थोड़ा अधेड़ है। मगर एक बार वो मुझे एक ऐसी जगह ले गया था, जहां दीवारें थीं, कांटेदार तार थे, और लाशों को भट्टी में झोंका जाता था।" उसने आंखें बंद कर लीं–"वो एक गाईडेड टूर था, उस जगह हर तरफ फौजी मौजूद थे और वहां ऐसी चिमनियां थीं जिनमें भूरा धुआं निकलता था। वहां एक मीठी-सी बू थी और वहां ऐसे लोग थे जो वायलन बजा रहे थे जबकि दूसरे लोग कब्रें खोद रहे थे। हिटलर जर्मन बोलता है, मैंने उसे हिटलर कहना शुरू कर दिया है।"

जैक ने एक तस्वीर की तरफ देखा, जिसमें वो दीवार नजर आ रही थी, जिस पर खून से स्वास्तिक के निशान बनाए गए थे। वहीं पर नन्हीं बच्ची की बेसिर और बगैर पैर की लाश पड़ी हुई थी, उसका पेट भी चीर दिया गया था। उसने उसके बचे हुए अंग दीवारों और फर्श पर फेंक दिए थे।

जैक को महसूस हुआ जैसे वो अंदर से पसीने-पसीने हो रहा हो, हालांकि ऊपर से वो शांत नजर आ रहा था। सबसे ज्यादा हैरतनाक बात यह थी कि और पुलिस ने भी उसकी तस्दीक कर दी थी कि लड़के के पास कोई भी हथियार या तेजधार औजार नहीं था। फिर किस तरह उसने अपने मां-बाप और बहन की

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

लाशों को चीर-फाड़ दिया था? उनके अंग कमरे में बिखेर दिए थे?

सवाल यही था कि उसने किस तरह उन्हें चीर-फाड़ डाला था? इंसानी हाथों में इतनी ताकत हरगिज नहीं होती। लाशों पर लम्बे नाखूनों वाले पंजों के गहरे निशान मौजूद थे, आंखों को नोंच दिया गया था, दांत टूटे हुए थे।

यह वहशत का एक बेहद खौफनाक प्रदर्शन था। यही नहीं, 'हेल शैतान' के शब्द सिर्फ इंगलिश में ही नहीं, छः भाषाओं में लिखे गए थे। जर्मन, डेनिश, इटैलियन, यूनानी, फ्रेंच, स्पेनी। यहां तक कि अरबी भाषा का इस्तेमाल किया गया था। जबकि स्कूल की रिपोर्ट के मुताबिक यह लड़का अंग्रेजी भी बस कामचलाऊ ही जानता था। तो फिर वो इतनी भाषाएं कैसे जान गया?

"टिम, तुम्हें यूनानी भाषा किसने सिखाई थी?" जैक ने पूछा।

टिम ने आंखें खोलीं–"मुझे यूनानी नहीं आती। यह हरकत मेंढक की थी।"

"मेंढक, ओ०के०! अब जरा उस मेंढक के बारे में बताओ।" जैक ने कहा।

"वो बहुत बदसूरत है। बिल्कुल मेंढक जैसा, उसे मेंढक जैसे ही उछलने का शौक है।" टिम बोलते हुए आगे झुक आया। के जरा पीछे हट गई, हालांकि वो उससे पहले ही तीन-चार फुट के फासले पर थी।

"मेंढक बहुत स्मार्ट है, जो हर जगह होता है, पूरी दुनिया में। उसे दुनिया की हर भाषा आती है।" टिम सीधा होकर अजीब-से ढंग से मुस्कुराने लगा।

जैक ने कलम निकाला और पुलिस वाले बयान के ऊपर उसने बड़े अक्षरों में हिटलर और फ्रॉग (मेंढक) लिखा। उसके आगे उसने 'मां' लिखा। टिम उसे यह करते देख रहा था।

"टिम, तुम अपने दोस्तों से किस तरह मिले थे?" जैक ने पूछा।

"मैंने उन्हें प्रार्थना करके बुलाया था, और वो आ गए थे।"

"बुलाया था? किस तरह? कैसी प्रार्थना?"

"किताबों की मदद से, जादू-मंत्र की किताबों की मदद से। वो प्रार्थना भी है किताब में...।"

जैक ने कुछ सोचते हुए सिर हिलाया, टिम के कमरे की तलाशी में पुलिस को तंत्र-मंत्र की कुछ किताबें भी मिली थीं जो शैतानी सिद्धियों से सम्बन्ध रखती थीं–और टिम ने पुलिस को बताया था कि उसने वो किताबें फुटपाथ पर के एक कबाड़ी से खरीदी थीं।

"तो ये हिटलर और फ्रॉग बगैर शैतानी चीजें हैं?"

"हां, उनके बारे में यह भी कहा जा सकता है।" टिम ने जवाब दिया।

"क्या तुम बता सकते हो कि पहली बार तुमने उन्हें कब बुलाया था?"

"बिल्कुल। यह कोई दो साल पहले की बात है। शुरू-शुरू में उन्हें बुलाने का काम जरा मुश्किल साबित हुआ था। वो उस वक्त तक नहीं आते जब तक

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कि मन और आत्मा से उन्हें न बुलाए। फिर उनकी और किताब की हर-एक हिदायत पर अमल करना पड़ता है, जरा-सी गलती से सब बेकार हो जाता है। मैंने कोई सौ बार कोशिश की थी...तब कहीं मां आई थी, सबसे पहले वही आई थी।"

"मां औरत है?" जैक ने पूछा–"और हिटलर तथा फ्रॉग मर्द?"

"हां, मां बड़ी तजुर्बेकार है।" टिम ने के की तरफ देखा और बोला–"उसे सब कुछ मालूम है, उसने मुझे सैक्स के बारे में बहुत-सी बातें बताई थीं।" उसने अबकी कनखियों से के की तरफ देखा–"उसने मुझे बताया था कि औरतों से किस तरह मजे लिए जा सकते हैं। औरत को जब मर्द की जरूरत होती है तो वह कैसी-कैसी हरकतें करती है। उसने मुझे बहुत कुछ दिखाया, कई जगह ले गई थी। उसने लड़कों को इस्तेमाल करने के तरीके भी बताए थे और यह भी कि लड़कों को इस्तेमाल करके किस तरह आजाद किया जा सकता है।"

"आजाद करने से क्या मतलब है तुम्हारा?"

"जिस्मों की कैद से आजाद कर देना। यानि मार-मार कर बोटी-बोटी काट कर कचरे में फेंक देना। उनकी रूहें सीधी दोजख में जाती हैं।" टिम ने फिर के की तरफ देखा, जिसकी रंगत उड़ी हुई थी।

"वहम।" जैक ने लिखा, "शैतानी इरादों से सम्बन्धित।" फिर वो बोला–"तुमने डॉक्टर कैथरोन को बताया था कि तुम खुद को बिल्कुल आजाद महसूस कर रहे हो, उसका क्या मतलब था?"

"मेरा एक हिस्सा दोजख (नरक) में पड़ा हुआ है। उस रात...तुम समझ रहे हो न? मैंने आत्मा का एक हिस्सा भेंट कर दिया था। यह एक टैस्ट था, सबकी परीक्षा ली जाती है। मैंने वो परीक्षा कर ली थी। एक ही परीक्षा बाकी है अभी।"

"अच्छा...उसके बाद तुम्हारी आत्मा सम्पूर्ण रूप से नारकीय हो जाएगी?"

"हां। लोगों को नरक के बारे में सही जानकारी नहीं है, वो एक घर जैसी जगह है, यहां से वो बहुत ज्यादा अलग नहीं है। अलबत्ता, यहां से ज्यादा सुरक्षित जरूर है। वहां सुरक्षा मिलती है। मैं वहां जा चुका हूं और महान शैतान से मिल चुका हूं। उसने कहा था कि वो मुझे फुटबॉल खेलना सिखाएगा। वो मुझे अपनी टीम में जगह देने वाला है, वो कह रहा था कि मैं उसे अपना बड़ा भाई समझूं। उससे प्यार करूं।" उसने चश्मे के पीछे से पलकें झपकाईं और बोला–"यहां तो प्यार करना बहुत मुश्किल काम है, दोजख में बहुत आसान है। वहां कोई रोक-टोक नहीं है। दोजख बिना दीवारों वाली जगह है।" उसने अपनी जगह हिलना शुरू कर दिया–"शैतान बहुत दयालु है। उसकी आवाज रसीली है। वो कहता था कि जब कोई नई आत्मा दुनिया...दुनिया में शरीर धारण करके जन्म लेती है तो उसे बहुत अफसोस होता है, क्योंकि जिंदगी एक बहुत कठिन चीज

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

है, बच्चों को अपने मां-बाप की करनी भुगतनी पड़ती है।" वो बोलते हुए ज्यादा जोर से हिलने लगा, "वो बच्चों की आजादी में दिलचस्पी रखता है। तुम मुझे पिंजरे में बंद नहीं रख सकते।" टिम जोर से चीखा।

"टिम!" कैथरोन, जिसे टिम के इस तरह हिलने से वहशत हो रही थी, बोला–"ठीक है बैठो।"

टिम चीख रहा था, उसके चेहरे की रगें उभर आई थीं–"नहीं, मुझे कैद में नहीं रखा जा सकता। डैड ने यही कहना चाहा था। वो मेरी किताबों को जलाने जा रहे थे। कोई मुझे पिंजरे में नहीं रख सकता।"

कैथरोन उठ खड़ा हुआ, उसने गुल और बॉबी को आवाजें दीं।

"ठहरो।" लड़का चीखा, उसकी आवाज में हुक्म था।

कैथरोन रुक गया, उसका हाथ दरवाजे की नॉब पर था।

"ठहरो।" टिम ने संघर्ष बंद कर दिया। उसका चश्मा चेहरे पर टेढ़ा हो गया था, टिम ने सिर को झटका दिया और चश्मा उसके कानों से निकल गया और सीधा के की गोद में जा गिरा–"ठहरो," लड़के ने कहा–"मैं ठीक हूं। अलबत्ता, अब मुझे कैद नहीं किया जा सकता क्योंकि मेरी आत्मा का एक हिस्सा जहन्नुम पहुंच चुका है।" टिम मुस्कुराया और उसने जुबान से होठों को तर किया–"अब मेरी दूसरी परीक्षा का वक्त हो चुका है, इसीलिए उन्होंने मुझे यहां आने दिया है, ताकि मेरे जरिये वो भी यहां पहुंच सकें।"

"कौन?" जैक को अहसास हुआ कि उसके रोंगटे खड़े हो रहे हैं।

"मेरे बेहतरीन दोस्त...मेरा मतलब है...हिटलर, फ्रॉग और मां। वो यहां आ गए हैं...मेरे अंदर।"

"कहां?" के ने हैरत से पूछा।

"मैं दिखाता हूं तुम्हें, फ्रॉग कहता है कि उसे भी तुम्हारे बाल बहुत अच्छे लगे हैं, वो इन्हें छूना चाहता है।" लड़के का सिर हिला, उसकी गर्दन की रगें फूल गईं–"मैं तुम्हें अपने बेहतरीन दोस्त दिखाता हूं।" वो बोला–"ओ०के०?"

के खामोश रही, कैथरोन दरवाजे पर निश्चल खड़ा था, उसका हाथ दरवाजे की नॉब पर था, जैक कलम पकड़े स्तब्ध बैठा था।

खून की एक बड़ी बूंद धीरे से टिम की बायीं आंख से निकली, चमकीला और सूर्ख खून! बूंद फिसलती हुई टिम के गाल पर आई और वहां से होठों और ठोड़ी पर।

फिर टिम की बायीं आंख का ढेला अपनी कटोरी से बाहर निकलने लगा–"लो, वो आ रहे हैं।" उसने सरगोशी की, उसकी आवाज फंसी-फंसी थी–"तैयार हो जाओ सब।"

□□□

□□□

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"इसे तो हैमरेजिंग हो रही है।" जैक इतनी तेजी से उठा कि उसकी कुर्सी लुढ़क गई–"डॉक्टर, एमरजेंसी रूम को फोन करो।"

कैथरोन बाहर की तरफ भागा ताकि डेस्क से फोन कर सके। जैक लपक कर लड़के की तरफ गया। टिम की सूरत से लग रहा था जैसे उसका दम निकल रहा हो। खून की दो और लकीरें उसकी बायीं आंख से निकल रही थीं जो उसके अंदर से किसी जोरदार दबाव का नतीजा थीं।

टिम कांप रहा था, उसके गले से घुटी-घुटी-सी कराह निकली, जैक ने उसकी स्ट्रीट जैकेट के तस्में ढीले करने की कोशिश की, मगर अब टिम के जिस्म को झटके लगने लगे थे और वो इतनी तेजी से मचल रहा था कि जैक के हाथ नहीं टिक रहे थे।

के खड़ी हो गई थी, जैक ने उससे कहा–

"जरा मेरी मदद करो ताकि मैं इसकी बंदिशें खोल सकूं।"

मगर के हिचकिचाहट में थी। जो तस्वीरें उसने देखी थीं उसके खौफनाक प्रभाव ने शायद उसे अभी तक अपनी लपेट में ले रखा था। उसी वक्त गुल अंदर आया, उसने स्थिति को भांपा, तो लपक कर लड़के को पकड़ लिया। जैक ने आखिरकार एक तस्मा खोल ही दिया, खून अब उसके गालों, होठों और गर्दन को भिगो रहा था और लड़के का मुंह इस तरह खुला हुआ था, जैसे वो बेआवाज चीखने की कोशिश कर रहा हो।

टिम की जुबान उसके मुंह से बाहर निकल आई थी और अब इधर-उधर फड़क रही थी और टिम का जिस्म इस बुरी तरह से फड़क रहा था कि गुल जैसा ताकतवर शख्स भी उसे संभाल नहीं पा रहा था।

जैक ने दूसरे तस्मे को खींचा–और अचानक टिम की बायीं आंख अपनी कटोरी से बाहर निकली और खून के फव्वारे के साथ कमरे में उछली, वो सामने की दीवार से टकराई और किसी अंडे की तर फट गई। के त्यौराकर गिरते-गिरते बची।

"संभालो...इसे संभालो।" जैक चीखा।

लड़के का चेहरा चटका और चेहरे की हड्डियां चटकने की चटाचट सुनाई दी। उसका माथा बुरी तरह फूल गया था। खोपड़ी में गूमड़ उभर आया था, जैसे उसका सिर किसी भी पल फटने वाला हो।

कैथरोन और बॉबी कमरे में वापस आ गए। डॉक्टर का चेहरा हल्दी की तरह पीला हो रहा था। बॉबी ने जैक को एक तरफ हटा दिया और जैकेट का तीसरा बक्कल खोलने लगा।

"एमरजेंसी वाले आ रहे हैं।" कैथरोन ने कहा–"ओह मेरे खुदा...यह क्या...यह क्या हो रहा है उसे?"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जैक ने बेबसी से गर्दन हिलाई। उसने देखा, लड़के की कमीज भी खून से रंग गई है, उसकी नष्ट हो चुकी आंख का घेरा पिचक कर जैसे उसके दिमाग में अंदर जाकर कहीं गुम हो गया था। उसकी आंख जैक पर जमी हुई थी। यह एक सर्द-सी नजर थी। जैक पीछे हट गया, ताकि गुल और बॉबी काम कर सकें।

लड़के की जुबान करीब एक इंच बाहर निकल आई थी, उसके निकलने की प्रक्रिया जारी थी कि गोश्त फटने की आवाज आई, जुबान करीब दो इंच और बाहर निकल आई। जुबान का रंग हरे रंग में सुर्मा मिले जैसा हो गया था।

गुल और बॉबी हड़बड़ाकर पीछे हटे, टिम का जिस्म लरजा, उसकी इकलौती आंख घूरे जा रही थी। उसके चेहरे और सिर की शक्लें बदलती जा रही थीं, लगता था जैसे अंदर से उन पर हथौड़े मारे जा रहे हों।

"ओ मेरे खुदा!" बॉबी घबराकर और पीछे हटा।

कोई चीज जैसे टिम कालाजन के माथे में कुलबुलाई, जुबान बराबर बाहर निकलती आ रही थी, उसमें कांटे से उगे हुए थे। फिर वो कांटेदार जुबान लड़के की गर्दन के गिर्द कस गई।

टिम का चेहरा धुंधला गया था, नाक और होठों पर खून लगा हुआ था और यही हाल आंख के खाली घेरे का था। उसकी कनपटियां फूल रही थीं और पिचक रही थीं।

अचानक टिम के चेहरे का बायां हिस्सा किसी पटाखे की तरह फटा, साथ ही उसके सिर में कई सुर्ख-सुर्ख दरारें पड़ गईं। फिर ये दरारें चौड़ी हो गईं।

के के मुंह से एक भिंची-भिंची-सी आवाज निकली और कैथरोन दीवार के साथ जा टिका। सहमे और उलझे हुए जैक ने उस काले घेरे में, जिसमें कभी टिम की आंख थी, उसमें कुछ हलचल देखी। वो घेरा फैलकर कुछ और बड़ा हो गया था।

और फिर आंख के उस खाली गड्ढे में से एक हड्डियों के पंजे जैसा सुरमई हाथ उभरता दिखाई दिया, छोटा-सा हड्डियों का पिंजर हाथ। यह हाथ किसी नवजात बच्चे के हाथ के बराबर था, अलबत्ता उसमें पांच के बजाय सिर्फ तीन ही उंगलियां थीं। उन उंगलियों पर तीन लम्बे-लम्बे नोकीले नाखून मौजूद थे। यह पंजा उस बाजू से जुड़ा हुआ था जो चमड़े पर चढ़े हुए तारों जैसे मसतज का था।

इधर लड़के का मुंह फैलता हुआ चौड़ा हो रहा था। उसके जबड़े टूटने के करीब पहुंच चुके थे। उस खुले हुए मुंह के अंदर कांटेदार कूल्हे और उनसे जुड़ी पूंछ नजर आई जो कभी एक इंसानी जुबान थी एक छोटी-सी, हरे रंग की शै, जिस पर कांटे उगे हुए थे और दो पिस्टल जैसे पैर भी टिम के मुंह से बाहर आ रहे थे। फिर वो शै जोर लगाकर बाहर आ गई।

और फिर एक गंजा-सा सिर, जो किसी इंसानी ठुड्डी के बराबर था और जिसका

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

रंग सड़े हुए गोश्त जैसा था, जैक के सामने था। फिर उसका दूसरा बाजू भी सामने आया, टिम ने उसे भी नथुने फुलाकर बाहर निकाल लिया। जैक ने देखा, उस चेहरे में जड़ी हुई आंखें सुर्ख-सुर्ख हैं और तिरछी भी।

गुल के होंठ हिल रहे थे, वो न जाने क्या कह रहा था? गंजा सिर उसकी तरफ घूमा, उसके होंठ मुस्कुराये, 'दांत' किसी चाकू की तरह चमके और कोई शै लड़के की खोपड़ी में रेंगी।

जैक की सांस जैसे रुक गई, के डगलस के होठों में चीख ने दम तोड़ दिया। एक मकड़ी जैसी चीज जो चमक रही थी। अपने छः पैरों और सूंडों के साथ लड़के के खुले हुए सिर से बाहर आई।

चार इंच व्यास का सिर, जो लोहे के धड़ से जुड़ा था और जिस पर कांटों जैसे सख्त बाल उगे हुए थे, उसने खुद को उभारा। यह चेहरा एक औरत का था, चांदी जैसी भौंहों तले सफेद आंखें थीं। बाहर आते ही उसके होठों पर मुस्कुराहट उभरी और सफेद आंखों ने जैक की तरफ देखा, होठों के पीछे से दो आरी जैसे लम्बे दांत दिखाई दिए। कैथरोन अचानक कराहा और दीवार के साथ चिपका हुआ नीचे बैठ गया।

बाहर राहदारी में बजर की आवाज उभरी। एमरजेंसी वाले आ गए थे, मगर वहां दरवाजा खोलने वाला कोई नहीं था। वो जानवर-सा शैतान, जिसके जिस्म पर कांटे थे, करीब-करीब लड़के के मुंह से बाहर आ चुका था। उसके जालेदार पैर टिम के मुंह पर जमे हुए थे।

उसने अपने फूले हुए सिर को घुमाया। उसकी आंखें उल्लू जैसी थीं, उसका चेहरा दरारदार और झुर्रियोंभरा था, उसका मुंह सुर्ख किनारों वाले प्याले जैसा था किसी जोंक के मुंह की तरह। उसकी आंखें पटपटा रही थीं, उन पर जैसे कोई पारदर्शी फिल्म चढ़ी हुई थी।

उसने आंखें पटपटाकर कमरे का जायजा लिया। टिम कालाजन का सिर अब किसी सुराख हो चुके गुब्बारे की तरह पिचक गया था। वो गंजे सिर वाली शै हिटलर था, जैक ने अंदाजा लगाया।

उस शै ने खुद को आंख के गड्ढे से अलग किया, उस शै के पैर ज्योंही बाहर आए, टिम के मुंह से हवा-सी निकल गई, जिसमें खून और भेजे की बू भरी हुई थी।

फिर टिम का चेहरा पिघलने लगा, किसी नर्म मोम की तरह, वो मकड़ी जैसी पिशाचिनी मां थी। शैतान की चेली! जैक ने समझ लिया था। वो शै चल कर टिम के कंधे पर जा रुकी, उसी वक्त लड़के का चेहरा अंदर की तरफ धंस गया। अब उसके सिर की जगह सिर्फ लोथड़े थे, वो भी कंधे पर ढलक गए और लटकने लगे! अब टिम कालाजन कहीं नहीं था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अलबत्ता तीन पिशाच जरूर सामने थे, छोटे आकार के, लेकिन शैतान के चेले। शैतानियत से भरपूर! जैक ने देखा और लड़खड़ाकर पीछे हटा, उसका जिस्म के से टकराया और के बड़ी मुश्किल से खुद को संभाल सकी। पहले उन्होंने टिम के मां-बाप और बहन को मौत के घाट उतारा होगा, फिर उन्होंने खुद लड़के के अंदर डेरे डाल लिए होंगे। जैक ने सोचा।

जैक एक सदमे की हालत से दो-चार था। उसकी अक्ल काम नहीं कर रही थी। उसके कान निरंतर बजर की आवाजें सुन रहे थे, एमरजेंसी स्टाफ दरवाजे के उधर प्रतीक्षक खड़ा था। मगर जैक को महसूस हो रहा था जैसे वो चल नहीं सकता। लड़के ने कहा था–"वो मेरे बेहतरीन दोस्त हैं। मैंने उन्हें बुलाया था, और वो आ गए।" और इस वक्त वो तीनों वहां मौजूद थे।

वो पिशाच, जिसे टिम ने हिटलर का नाम दिया था, अचानक हवा में उछला और गुल पर जा पड़ा। उसने गुल के चेहरे पर अपनी तीन लोहे जैसी उंगलियां गड़ा दीं। गुल किसी बकरे की तरह चीखा।

उसके हाथ इतनी तेजी से गुल का चेहरा नोंच रहे थे कि गुल कुछ कर ही न सका और मुंह के बल फर्श पर गिर गया। देखते-ही-देखते उस पिशाच ने गुल के चेहरे की खाल को किसी नकाब की तरह नोंच कर रख दिया।

फिर उसने अपने पैर गुल की गर्दन में कैंची की तरह डाल दिए और जल्दी-जल्दी गुल के चेहरे का गोश्त निगलने लगा, किसी भूखे दरिंदे की तरह।

बॉबी एक तेज चीख के साथ भागा, उसने दरवाजे को खोला नहीं बल्कि तोड़ दिया, कब्जों से उखाड़ दिया, वो हॉल में जाकर गिरा। जैक ने के का हाथ पकड़ा और तेजी से उसे खींचता हुआ दरवाजे की तरफ दौड़ा। मां ने उसका पीछा किया। वो पागलों की तरह चीखने लगी थी।

फिर एक आकार उसके सिर की तरफ लपका। उसने झुकाई दी और खुद को बचाने के लिए दोनों हाथ सामने किए, वो शै, जिसे टिम ने फ्रॉग का नाम दे रखा था, उसके कंधे पर जा पड़ा था, उसकी कांटेदार पूंछ कोहनियों के पास से उसके लिबास को फाड़ रही थी। जैक ने हाथ घुमाया, और फ्रॉग वहां से छलांग मारता हुआ डॉक्टर कैथरोन के गंजे सिर पर जा पड़ा।

"छोड़ दे...छोड़ दे मुझे।" कैथरोन चीखा।

जैक दरवाजे से पहले ही रुक गया, मगर इतनी देर में कैथरोन हर किस्म की मदद से दूर जा चुका था। फ्रॉग ने अपना मुंह कैथरोन के सिर पर रख दिया था, अब उसका सिर अपने आकार से दोगुना हो गया था।

फ्रॉग की पूंछ कैथरोन की गर्दन के गिर्द किसी फीते की तरह लिपट गई थी। कैथरोन के मुंह से एक दर्दनाक तेज चीख निकली और उसका सिर किसी तरबूज की तरह फट गया था। फ्रॉग अब गोश्त और खून को चूस रहा था, जैसे उसे मनपसंद खुराक मिल गई हो।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जैक ने के को खींचा और कमरे से बाहर निकल गया। उधर बॉबी ताला लगे दरवाजे की तरफ लपक रहा था, साथ ही साथ वो मदद के लिए चीखता भी जा रहा था। अचानक उसका पैर फिसला और वो मुंह के बल गिर गया। दरवाजे की दूसरी तरफ से जोर-जोर की दस्तक दी जा रही थी। शीशे से जैक को बाहर कई चेहरे दिखाई दे रहे थे। बॉबी दरवाजे की कुंडी तलाश रहा था।

"जल्दी करो बॉबी।" जैक चीखा।

नीचे मां नामी शै फुदकती हुई आ रही थी। उसका मुंह खुला हुआ था और उस खुले हुए मुंह से चहचहाटें निकल रही थीं। फ्रॉग भी अब कांफ्रेंस रूम से बाहर आ रहा था। उसके मुंह से कैथरोन के भेजे के अवशेष चिपके हुए थे।

"खोलो बॉबी।" जैक चीखा।

बॉबी ने तीसरी कुंजी आजमाई, उसके हाथ कांप रहे थे। यह तीसरी कुंजी बहुत बड़ी थी। तब जैक को ख्याल आया कि इस दरवाजे की कुंजी तो गुल के पास रहती थी। जो मर चुका था। जैक ने पीछे घूमकर देखा। पन्द्रह फुट के फासले पर उसे मां दिखाई दी, उसके पीछे फ्रॉग! फ्रॉग उछलता हुआ आ रहा था। हिटलर कांफ्रेंस रूम में चल रहा था। एक-दो फुट का अजूबा, जो इंसान और शैतान की लुगदी जैसा था।

"मेरे खुदा!" बॉबी कराहा–"कोई कुंजी फिट नहीं हो रही।" मगर फिर पांचवीं कुंजी से दरवाजा खुल गया। उसने तूफानी रफ्तार से दरवाजा खींचा और खोल दिया। मगर फ्रॉग उसके कंधे पर पहुंच चुका था। उसके नाखून बॉबी के बाजुओं में फंस रहे थे।

बॉबी ने पिशाच को गिराने के लिए हाथ चलाए, जोर से चीखा। जैकी की नाक में फ्रॉग के गोश्त की बदबू महसूस हो रही थी।

दरवाजे के उधर एमरजेंसी से आए लोग भौचक्कों की तरह उन्हें देख रहे थे। उनके दौरान एक मेज थी। रोजाली ने उन्हें देख लिया था और मिसेज स्टुअर्ट ने भी–और दोनों स्तब्ध खड़ी थीं।

जैक ने फ्रॉग पर अपने दोनों हाथ डाल दिए, उसे यों लगा जैसे उसने किसी बड़े-से दहकते अंगारे को पकड़ लिया हो। उस पिशाच की कांटेदार पूंछ चली, मगर उसने बॉबी के बदन से उसे खींच लिया। फ्रॉग के साथ ही बॉबी की खाल भी उधड़ती चली गई।

खुद जैक की हथेलियां जख्मी हो चुकी थीं–उसकी दुम और जिस्म के कांटों से। जैक ने पूरी ताकत से फ्रॉग को दीवार पर दे मारा। दीवार पर लगने से पहले ही उस पिशाच ने खुद को मोड़कर किसी गेंद की तरह बना लिया, सिर को उसने जिस्म के अंदर छुपा लिया था। उसका जिस्म दीवार से टकराया, और वो नीचे गिर गया।

मगर उस दौरान के डगलस और बॉबी, दोनों दरवाजे से निकल चुके थे।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जैक ने जम्प लेकर खुद को दरवाजे से बाहर किया और धड़ाक से दरवाजा बंद कर दिया। उसी पल कोई शै जोर की आवाज के साथ दरवाजे से टकराई थी। दूसरी तरफ से फ्रॉग ने उछाल मारी थी, मगर बंद दरवाजे से टकराकर रह गया था। रोजाली ने बढ़कर दरवाजा लॉक कर दिया था।

बॉबी किसी खुजली वाले कुत्ते की तरह भाग रहा था। वो पहले मिसेज स्टुअर्ट से टकराया फिर चेम्बर से।

"ऐ, कहां भाग रहे हो?" देव चेम्बर ने आवाज दी। बॉबी लिफ्ट में जा घुसा जो एमरजेंसी वालों को ऊपर लाई थी और खुली पड़ी थी। उसने पागलों की तरह बटन दबाया।

"मैरी!" रोजली चीखी–"पट्टियां लाओ, जल्दी करो।" उसने जैक की कलाई थाम रखी थी और उसकी हथेलियां देख रही थी। जैक की हथेलियों में सुराख हो गए थे। दोनों हथेलियां जख्मी हो चुकी थीं। उसी तरह उनकी खाल भी जली हुई थी। अब उसे दर्द का अहसास होने लगा था। वो कराहकर बोला–

"उन खबीसों ने कैथरोन और गुल को मार डाला है। वो तीन हैं, और तीनों लड़के के अंदर से निकले हैं...उसके मुंह और सिर से, वो लड़का एक बगैर मुंह और बगैर सिर का बन चुका है।"

फिर बॉबी बेहोश हो गया, रोजाली ने बड़ी मुश्किल से उसे संभाला।

"वो...वो क्या चीज थी?" मिसेज स्टुअर्ट हकलाई। उसने फ्रॉग को देख लिया था जिसकी आंखें उल्लू जैसी और जिस्म मेंढक जैसा था। तभी उसकी निगाह के पर पड़ी, जिसके कंधे से खून रिस रहा था।

"ओह...तुम भी जख्मी हो?" उसने कहा।

के ने अपना बाजू देखा। उस जगह फ्रॉग की पूंछ ने उसका लिबास उधेड़ा था और उसके कटे बाजू में भी उतर गए थे। उसके जेहन में अभी तक कैथरोन के फटते हुए सिर का नक्शा जमा हुआ था।

नर्स उसे लेकर राहदारी की तरफ चली जहां एक कुर्सी पड़ी हुई थी। एमरजेंसी वालों में से एक ने उसकी मरहम-पट्टी शुरू कर दी। जैक को भी मैडिकल एड दी जाने लगी।

उसी वक्त कोई शै दरवाजे से टकराई, दरवाजा हिलकर रह गया।

"डॉकी...।" मार्गी की आवाज उभरी। वो आतंकित-सी उसके पास खड़ी थी–"डॉकी, क्या हुआ? कमरे के अंदर कौन है?"

दरवाजे से कोई शै फिर टकराई। वो शख्स, जिसने जैक की ड्रेसिंग की थी, लरज कर बोला–

"या खुदा, लगता है अंदर किसी ने दरवाजे पर हथौड़ा मारा है।"

"दरवाजे से दूर रहो।" जैक चीखा–"सब हट जाएं। रोजाली, सब मरीजों को वार्ड से हटवाओ। सबको नीचे ले जाओ, जल्दी करो।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

दरवाजे पर फिर तीसरी टक्कर मारी गई और उसके शीशे चटक गए।

"मैंने कहा था न।" देवी, जो सिगरेट पी रहा था, हँसकर बोला–"कि अंदर न जाओ अब देखो।"

"चुप रहो।" रोजाली ने उसे डांटा।

मैरी चीख उठी, क्योंकि तभी एक टक्कर ने दरवाजे के शीशे तोड़ दिए थे। फिर उनसे दो छोटे-छोटे हाथ निकले जिनके नाखून छुरियों जैसे थे।

जैक भौंचक्का देख रहा था। उसका जिस्म ऊपर से शून्य-सा प्रकट हो रहा था। मार्गी चीखी। देव चैम्बर की सिगरेट गिर गई। फिर उस शै ने छलांग लगाई और ऊपर से दरवाजे के इधर कूद पड़ी। उसने खुद को सीधा किया। उसकी आंखों में खूंखार चमक थी।

उधर मां ने भी टूटे हुए शीशे के शून्य से सिर निकाल लिया था, उसके बाल लोहे के कांटों की तरह खड़े थे।

'ये हम सबको मार देंगे।' जैक ने सोचा।

उसके खौफ ने अब नकारात्मक रूप धारणकर गुस्से की शक्ल ले ली थी। हर चीज की हद होती है। खौफ अब इतना बढ़ गया था कि उसका असर खत्म हो गया था। वो सोच रहा था, इस फ्लोर पर मौजूद हर शख्स की किस्मत में अब मौत लिखी हुई है और उसके बाद... ये शैतानी शै दूसरी मंजिलों के वार्डों पर हमला कर सकती थीं। मां का मकड़ी जैसा जिस्म ऊपर से निकलकर नीचे कूदा, फर्श पर धप्प की आवाज पैदा हुई। फिर वो भी हिटलर के पास जा रुकी।

फिर के पहले हिली, वो राहदारी में पागलों की तरह नहीं भागी, क्योंकि लिफ्ट जा चुकी थी, जीनों के दरवाजे पर ताला लगा हुआ था, सिर्फ कॉरीडोर ही रह गया था। वो कुर्सी से उठी, उसने नर्स को और दूसरे एमरजेंसी वालों को पार किया और पहले वाली टेबल के पास पहुंची, जो वहां पड़ी हुई थी, सब यही करना था उसे! वो भी आने वाली कयामत को भांप चुकी थी।

"नहीं।" उसने होंठों में ही कहा और टेबल को अपने सामने धक्का दिया। टेबल के पहिए खड़खड़ाये और वो हिटलर तथा मां की तरफ चली। मगर वो दोनों टेबल से बहुत तेज रफ्तार थे। मां फुदक कर एक तरफ हो गई... और हिटलर उछल कर दूसरी तरफ हो गया।

अब फ्रॉग भी दरवाजे के शून्य से बाहर आ रहा था। मेज जोर से दरवाजे के साथ टकराई और पीछे की तरफ पलट गई। हिटलर ने मुंह से खरखराती हुई-सी आवाज निकाली।

कोई नहीं चीखा, जैक ने गहरी सांस ली, उसने रोजाली से कहा–

"सब लोग पीछे हट जाएं।" मगर रोजाली खड़ी रही। "सबको नीचे ले जाओ।" जैक ने फिर कहा, आखिर रोजाली हिली, उसने मार्गी का बाजू थामा और राहदारी में भागी, फिर दूसरे भी उसके पीछे लपके। किसी ने पीछे मुड़कर

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

नहीं देखा। देव थोड़ी देर रुका रहा, फिर वो भी उछलकर भागा।

फ्रॉग के अगले पैर शून्य में से बाहर लटक चुके थे, मगर वो खुद उसमें फंस गया था। जैक के लिए यह भी कोई इत्मीनान की बात नहीं थी। मां ने पैर हिलाए और थोड़ा-सा आगे बढ़ी, हिटलर उचक कर मेज पर चढ़ गया।

जैक को मालूम था कि इस आठवीं मंजिल पर कहीं कोई हथियार नहीं है, यहां तक कि न कोई चाकू था, हथौड़ी तक भी नहीं थी, गन का तो सवाल ही पैदा नहीं होता था, शायद सबसे काम की चीज टॉयलेट पलंजर ही था। भला उससे वो टिम के बेहतरीन दोस्तों को क्या नुकसान पहुंचा सकता था?

फ्रॉग जोर लगा रहा था ताकि अपने कूल्हे दरवाजे के ऊपर की जगह से निकाल सके। मां बड़ी सावधानी से रेंग रही थी और हिटलर की आंखें इधर-उधर खतरनाक इरादे से देख रही थीं।

"बचाओ...बचाओ।"

तेज आवाज सुनकर जैक ने आवाज की दिशा में देखा। मिसेज स्टुअर्ट नर्स की डेस्क पर थी और उसके हाथ में फोन का रिसीवर था–"हम आठवीं मंजिल पर हैं, खुदा के लिए कुछ करो।"

हिटलर के पैर खुले और वो शैतान जैक और के की तरफ उछला और जोर से फर्श पर गिरा। उसने दूसरी छलांग लगाई और नर्स की मेज पर पहुंच गया।

नर्स अभी फोन नहीं रख सकी थी। अपने पंजों के एक ही वार से उस शैतान ने उसका नरखरा उधेड़ दिया। रिसीवर नर्स के हाथ से निकल गया। फिर हिटलर उसके सीने से चिपट गया। नर्स गिरकर तड़पने लगी मगर शैतानी शै ने अपने दांत उसकी गर्दन में गाड़ दिए। जहां से गुर्राहटें निकल रही थीं।

"छोड़ो इसे शैतान।" अचानक रोजाली उसकी तरफ झपटी, उसके हाथ में एक झाड़ू थी। भला झाड़ू की चोट उस शै के लिए क्या मायने रखती थी? हिटलर न रखने में मुंह गाड़े वहीं चिपटा रहा। जरा-सी देर में मिसेज स्टुअर्ट खत्म हो चुकी थी, हिटलर एक बार फिर उछल कर मेज पर जा चढ़ा था।

"बचना जैक!" अचानक के चीख उठी।

जैक बिजली की सी तेजी से पलटा। फर्श पर मां तेज रफ्तारी से बढ़ रही थी। जैक ने जूते की एक भरपूर ठोकर उसके जिस्म पर रसीद की, उस शै के मुंह से हल्की-सी आवाज निकली और वो उड़ती हुई दीवार से जा टकराई। मगर अगले ही क्षण वो फिर जैक की तरफ पलटी, उसकी रफ्तार बहुत तेज थी।

अचानक एक कुर्सी हवा में उड़ती हुई आई, वो पहले तो खुद जैक से टकराई, फिर मां पर गिरी। मां के मुंह से फिर एक आवाज निकली। कुर्सी तले उसकी टांगें दब गई थीं और टांगों से नीले रंग का खून निकल पड़ा था, गाढ़ा-गाढ़ा।

"मारो साली को।" देव की आवाज उभरी।

"डॉकी भागो।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

रोजाली ने झाड़ू से फिर हिटलर पर वार किया, मगर शैतान ने उसे इस बार पकड़ लिया। उन दोनों में पल-दो पल खींचा-तानी हुई। हिटलर ने झाड़ू छोड़ी तो रोजाली अपने ही जोर से लड़खड़ाकर पीछे गिरी।

अचानक लिफ्ट का दरवाजा खुला और नाटे कद का एक मजबूत आदमी, जिसने खाकी रंग की गार्डों वाली वर्दी पहन रखी थी, लिफ्ट से बाहर आया, उसके पास रिवाल्वर था, हिटलर पर नजर पड़ते ही वो जैसे पथरा गया। हिटलर भी अब उसी को देख रहा था।

फिर गार्ड हिला और बड़बड़ाया–"ओह खुदाया!"

हिटलर ने उछाल भरी और सीधा गार्ड पर आया और उसने पंजे गार्ड के सीने पर गाड़ दिए। पल भर में उस शख्स का सीना गोश्त और खून की तस्वीर बन गया। गार्ड को खत्म करने में उसने मुश्किल से दस-पंद्रह सैकण्ड्स लिए होंगे।

हिटलर मुर्दा शक्ल में जीने पर बैठा हुआ था और अपने पंजे चाट रहा था, फिर उसने रोजाली की तरफ देखा, जो खिसक कर उससे जरा दूर हो गई थी। उसे अहसास था कि अगले पल क्या होने वाला है? तभी देव की आवाज उभरी–

"ऐ दोजखी!" उसने एक कुर्सी और हासिल कर ली थी और उसे हिटलर पर फेंकने के लिए सिर से ऊपर उठा चुका था। उस शैतान ने देव को देखा, देव बढ़कर उसके और रोजाली के दरम्यान आ गया।

"आओ, आओ।" उसने हिटलर को ललकारा।

"रोजाली भागो, सबको नीचे ले जाओ।" वो उसकी ओर देखे बगैर बोला। यों लग रहा था जैसे उसने खुदकुशी का इरादा कर लिया हो–"डॉकी, इन महिला के साथ तुम भी भाग जाओ।"

रोजाली उठ खड़ी हुई, हिटलर ने उसकी तरफ देखा। देव ने फिर कुर्सी लहराई, ताकि उस शैतानी शै का ध्यान बंटा सके। जैक और के उसके पास से आगे निकल गए। मां भी राहदारी में आहिस्ता से बढ़ रही थी...उसके दो पैर टूट चुके थे।

"तुम तो मुझे जानते होंगे।" देव ने कहा–"नींद में मेरी-तुम्हारी मुलाकातें होती रही हैं, हरामजादे, तू मेरे दिमाग में घुस कर मुझे पागल कर रहा है, इसीलिए मैं यहां आया हूं। तेरी खबर लेने।"

हिटलर ने छलांग लगाई, मगर कुर्सी के पायों से टकराया।

"अच्छा तो मच्छर, तू उछलना चाहता है।" देव ने फिर उसे मुखातिब किया–"मैं इतना आसान शिकार भी नहीं हूं बेटा।" फिर देव ने जल्दी से रोजाली की तरफ देखा, वो देव से कुछ फासले पर थी। उसने अपनी कुंजी से जीनों का दरवाजा खोल लिया था।

"जल्दी करो।" देव चीखा और उसने नीचे की तरफ देखा, मां, जिसका मुंह

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

सफेद और चेहरा औरत का था, उसी की तरफ रेंग रही थी। फ्रॉग शैतान अभी तक दरवाजे में फंसा वहां से निकलने के लिए जोर लगा रहा था।

हिटलर ने फिर छलांग लगाई, देव ने कुर्सी घुमाई, मगर हिटलर आखिरी पलों में रुक गया, कुर्सी हवा में घूमकर रह गई।

"बेटा, भले ही तुम मर्द नहीं, मगर मैं तुम्हारी गर्दन जरूर तोड़ दूंगा।" देव ने कहा।

रोजाली मरीजों और एमरजेंसी स्टाफ वालों को लेकर जीनों पर चल दी थी, जैक असमंजस में पड़ा रुका रहा। वो मां को देख रहा था, जो आहिस्ता-आहिस्ता देव की तरफ बढ़ रही थी।

"देव।" वो चिल्लाया–"दरवाज़ा खुला है, आ जाओ तुम भी!"

जवाब में देव हँसा–"यार डॉक्टर, तुम भी खूब हो।" उसने कहा–"क्या तुम चाहत हो कि ये नन्हें पिशाच सारे अस्पताल में दरदनाते फिरें? तुम जाओ और दरवाजा बंद कर दो।"

के ने जैक को झटका दिया, सब नीचे चले गए थे। सिवा उसके और के डगलस के।

"नीचे चलो, हम पुलिस को बुलाते हैं।" के की आवाज लरज रही थी।

जैक खुद भी जाना चाहता था, मगर इस वक्त वो बड़ी कशमकश में था। उसके सामने एक मानसिक रोगी था जो उन शैतानों के सामने दीवार बनकर खड़ा हो गया था। वो तो एक स्वस्थ मर्द था, वो कैसे चला जाता? नहीं, वो उसे अकेला नहीं छोड़ सकता था।

उसे मालूम था कि थोड़ी दूर में ही देव को भी उधेड़ डाला जाएगा और उसके बाद वो तीनों शैतान नीचे का रुख जरूर करेंगे। इन्हें यहीं रोकना होगा।

"के को ले जाओ।" जैक ने रोजाली से कहा–"और दरवाजा बंद करते जाना।"

"नहीं डॉक्टर तुम...।"

"जैसा कह रहा हूं वैसा करो रोजाली!" जैक चीखा–"अगर ये शैतान नीचे पहुंच गए...।" रोजाली पहले तो हिचकिचाई, फिर उसने के को खींचा–"मिस चलो।" फिर उसके पीछे जीनों का दरवाजा बंद हो गया।

उसी पल हिटलर उछला। देव जरा-सा हटा और उसने कुर्सी चलाई। कुर्सी शैतान के कंधे पर लगी और उसे दीवार तक फेंक दिया।

मां करीब देव के पांव के पास पहुंच गई थी और जैक ने देखा कि फ्रॉग भी अचानक दरवाजे से छूट गया था। फ्रॉग भद् की आवाज के साथ फर्श पर कूद पड़ा और तेजी से देव की तरफ बढ़ा। देव ने भी उसे देख लिया था। उसने उसकी तरफ कुर्सी लहराई।"

"संभलो।" जैक चीखा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मगर इतनी देर में हिटलर छलांग लगाता हुआ देव पर जा गिरा था। वो देव के घुटनों से टकराया था, उधर मां उछलकर उसके टखनों से चिपट गई थी।

देव ने कुर्सी मां पर मारी, लेकिन वो निशाने पर नहीं लग सकी। देव का बैलेंस बिगड़ा और वो फर्श पर गिरा। फिर हिटलर का पंजा उसके सीने पर पड़ा और उसका सीना खुल गया। देव ने आखिरी बार जैक की तरफ देखा और कराहा–

"रिवाल्वर...।"

फिर हिटलर के दूसरे वार ने उसे बिल्कुल खामोश कर दिया। जैक तीर की तरह लिफ्ट की तरफ दौड़ा। उसे याद आया, गार्ड के जिस्म के पास रिवाल्वर पड़ा हुआ था। कई तरह की आशंकाएं उसके जेहन में उभर रही थीं–पता नहीं वो लोडेड भी है या नहीं?

फिर उसने सोचा–'कुछ भी हो, उसे रिवाल्वर से काम लेना ही है, उसके बगैर उसकी जिंदगी के पल गिने-चुने ही रह गए हैं।' टिम के दोस्त शैतान के चेले पिशाच उसे जिंदा नहीं छोड़ने वाले थे।

पूंछ हिलाते हुए फ्रॉग ने जैक के पीछे की तरफ से उस पर छलांग लगाई। वो अभी लिफ्ट तक पहुंच नहीं सका था। उसने तेजी से झुकाई दी, उसका पैर फिसला, फ्रॉग की पूंछ उसके सिर के एक हिस्से से टकराई।

उसने हाथ फैलाकर गन हासिल करने की कोशिश की और रिवाल्वर उसके हाथ में आया ही था कि उसे अपने मुंह से नजदीक मां नामी मकड़ी जैसी वो औरत रेंगती नजर आई, उसके दोनों नोकदार दांत निकले हुए थे। उसके पैर जैक के कंधे से टकराए, एक तीखी बदबू, उसे अपने नथुनों में घुसती महसूस हुई, वो बस मुंह मारने ही वाली थी। जैक ने हाथ खींचा, रिवाल्वर की नाल मां के जिस्म से लगाई, और ट्रेगर दबा दिया।

कुछ नहीं हुआ, सिर्फ हल्की-सी क्लिक की आवाज उभरी।

हिटलर उठ गया था।

फ्रॉग कॉरीडोर की तरफ पलटा...

मां मुस्कुराई–

जैक ने फिर ट्रेगर दबाया, अबकी बार शोला शायद किसी लोडेड सिलेंडर से टकराया था।

'धांय...!'

जोरदार धमाका हुआ!

मां के सिर का एक हिससा उड़ गया था, हर तरफ हरे रंग के द्रव्य की बारिश-सी हुई। जो जल्दी से पीछे हट गई। हिटलर अपनी जगह निश्चल हो गया।

जैक ने एक और फायर किया, मां का बदन फिरकी की तरह नाचने लगा। फ्रॉग घूमा, वो उछला और जैक की गर्दन के पास गिरा, जैक ने नाल उसके जिस्म

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

से भिड़ा दी और ट्रेगर दबाया। एक बार–दो बार! और फ्रॉग का बदन खुल गया और उसमें से बदबूदार द्रव्य बहने लगा, वो तेजी से फिसलकर एक तरफ हो गया।

जैक ने मां का निशाना लिया, मगर वो तो एक स्प्रिंग की तरह खुली हुई थी। उसने सामने दीवार की तरफ देखा, हिटलर पागलों की तरह एक लोहे की ग्रिल को खींचने की कोशिश कर रहा था। यह झरोखा था, वेंटीलेटर! जैक का दिल जोर से धड़का, कि कहीं यह शैतान वेंटीलेटर में दाखिल हो गया तो! उसने हिटलर की पीठ पर फायर किया।

इधर फायर हुआ और उधर हिटलर ने वेंटीलेटर की सलाख उखाड़ दी, मगर गोली से उसका दायां बाजू उड़ चुका था और उस शैतान का जिस्म दीवार से भिड़ा हुआ था।

फिर उस शैतान का सिर हिला, उसने जैक को देखा। उसकी आंखों में बला की नफरत थी। जैक ने फिर ट्रेगर दबाया, लेकिन अब रिवाल्वर खाली हो चुका था। कोई गोली नहीं बची थी।

हिटलर ने जल्दी से वेंटीलेटर में अपना सिर घुसाया, जैक जोर से चीखा, वो उछला और उसने हाथ फैलाकर उस मनहूस शै को रोकना चाहा, मगर वो दूसरी तरफ जा चुकी थी।

अब जैक सीने के बल फर्श पर पड़ा हुआ था। उसके करीब ही देव की लाश पड़ी हुई थी। सारा वार्ड किसी बूचड़खाने की तरह बदबू दे रहा था।

जैक कुछ आराम चाहता था, मगर हिटलर तो अभी अस्पताल में ही था। वेंटीलेटर के मोटे पाइप के जरिये निचली मंजिल पर जा रहा था। जैक सोच रहा था–

"कोई बात टिम ने कही थी...कोई बात...। ओह...!" उसे याद आ गया। लड़के ने कहा था–"उसे बहुत अफसोस होता है जब कोई नई आत्मा दुनिया में आती है।" यानि कोई बच्चा जन्म लेता है, तब शैतान को बहुत अफसोस होता है। शैतान बच्चों को आजादी दिलाने का कायल था, यानि उन्हें मार देना उसकी नजर में आजाद कर देना था।

और...इस अस्पताल में मैटरनिटी वार्ड भी था।

जैक को अपने कान के पास कुछ सरसराहट-सी महसूस हुई। जख्मी मां उधर पहुंची हुई थी। उसके सिर का आधा हिस्सा गायब था, मगर उसकी जुबान बार-बार लपलपा रही थी। वो ऐसी खौफनाक लग रही थी जिसे शायद जैक कभी न भुला सकता था। जैक ने रिवाल्वर नाल की तरफ से पकड़ा और दस्ता पूरी ताकत से मकड़ी जैसी मां के ऊपर दे मारा!

उसकी भीगी हुई खाल एक आवाज के साथ फटी। कांटेदार तार जैक के पट्टी बंधे हाथों में घुसे। उसने रिवाल्वर उठाकर एक चोट और लगाई, इस बार

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मकड़ी थोड़ा पीछे हट गई। उसके पैर जवाब दे चुके थे, उसकी आंखें गड्ढों में धंस गई थीं, उसके मुंह से एक कराह निकली, उसके दांत किटकिटाए।

जैक ने रिवाल्वर फिर उस पर दे मरा। इस बार मकड़ी बिल्कुल पिचक गई। उसके जिस्म से कोहरे जैसी... कोई शै उभरी और छत तक उछल गई, फिर गायब हो गई।

अब मां का जिस्म किसी चीथड़े की तरह पड़ा हुआ था। जैक ने उसे एक तरफ सरका दिया और रेंगता हुआ लिफ्ट तक गया, लिफ्ट का दरवाजा अभी तक खुलने-बंद होने में लगा हुआ था, क्योंकि गार्ड के मुर्दा पैर उसमें फंसे हुए थे, जिससे जंगला बंद नहीं हो पा रहा था।

जैक ने गार्ड की लाश खिसकाई। उसे मालूम था कि गुजरता हुआ हर पल हिटलर को मैटरनिटी वार्ड में पहुंचने में मदद्गार साबित हो रहा है। वो जल्दी से लिफ्ट में चला गया। बड़ी व्यग्रता से जैक ने लिफ्ट में दाखिल होकर दूसरी मंजिल का बटन दबा दिया।

दरवाजे बंद हुए और लिफ्ट नीचे की तरफ चल दी। जैक खड़ा था, मगर उसके पैर उसका बोझ उठाए रखने से जवाब दे रहे थे। वो फौरन ही बैठ गया। उसकी कमीज का अगला हिस्सा खून से तर था, आधी कमीज सुर्ख हो रही थी, हाथों की पट्टियां खुलकर झूल रही थीं। आंखों के सामने काले-काले पतंगे उड़ रहे थे। उसे अंदाजा हो रहा था कि वो ज्यादा देर चलता-फिरता नहीं रह सकेगा।

लिफ्ट खड़खड़ाती हुई चल रही थी, फिर वो एक जगह रुक गई। जैक ने नम्बर देखा, यह पांचवीं मंजिल थी। दरवाजा खुला और एक सफेद बालों वाला डॉक्टर, जिसने सफेद लैब कोट पहन रखा था, एक कदम बढ़ाकर अंदर आया, उसकी निगाहें जैक पर पड़ीं, जो फर्श पर पड़ा हुआ था, स्तब्ध, निश्चल!

"निकलो इसमें से।" जैक चीखा। डॉक्टर ने जल्दी से पैर पीछे हटा लिया।

जैक ने फिर दूसरी मंजिल का बटन दबाया। जिस वक्त लिफ्ट तीसरी मंजिल पर थी, जैक ने सोचा–'उसके पास कोई गन नहीं है, कोई हथियार नहीं है, वो उस शैतान के बच्चे हिटलर को कैसे रोक सकेगा?' फिर बॉबी तक पहुंचने का वक्त भी नहीं था। हिटलर मैटरनिटी वार्ड तक पहुंच गया होगा और कौन जाने वो कितने बच्चों को मौत की नींद भी सुला चुका हो। वक्त बिल्कुल नहीं था।

जैक सारी ताकत बटोर कर किसी तरह अपने पैरों पर उठ खड़ा हुआ, उसने दूसरी मंजिल के नम्बर को चमकते हुए देखा, लिफ्ट ठहरी, दरवाजे खुले।

सैकिन्ड फ्लोर पर किसी किस्म की अफरा-तफरी नहीं थी। ज्योंहि जैक लिफ्ट से बाहर निकला, ड्रेसिंग रूम में मौजूद दोनों नर्सों की सांसें उसे देखकर फंस गईं। एक के हाथ में कॉफी का कप छलक गया।

जैक इससे पहले कभी मैटरनिटी वार्ड में नहीं आया था। यहां का कॉरीडोर हर तरफ कट रहा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"तुम लोग बच्चों को किधर रखती हो?" जैक ने नर्सों से पूछा।

"सिक्योरिटी बुलाओ, फौरन!" एक नर्स ने जल्दी से दूसरी से कहा।

दूसरी ने फुर्ती से रिसीवर उठाया और एक बटन दबाकर चीखी।

"जल्दी कुमुक भेजो, सैकिन्ड फ्लोर!"

"सुनो!" जैक ने कहा उसे मालूम था कि रोजाली और दूसरे लोग इन्हें बता गए होंगे, मगर किसी को भी समझाना बड़ा मुश्किल काम था–"सुनो, मैं डॉक्टर शॉन हूं, जैक शॉन। मैं आठवीं मंजिल से यहां आया हूं। तुम लोग फौरन यहां से बच्चों को हटाओ, वजह बाद में बता दूंगा।"

'लोथर।" एक नर्स ने किसी को पुकारा–"लोथर, जल्दी आओ।"

साफ महसूस हो रहा था कि ये नर्सें उसे पागल समझ रही थीं।

"अरे, मैं कोई पागल नहीं हूं।" उसने फिर कोशिश की मगर उसे फौरन अहसास हो गया कि इस तरह की...सफाई पेश करने से तो स्थिति और भी बिगड़ जाएगी।"

जैक ने इधर-उधर देखा, बायीं तरफ एक वेटिंग रूम था और वहां से लोग उसे खौफभरी निगाहों से देख रहे थे। दायीं तरफ दीवार पर एक बोर्ड लगा था, जिस पर लिखा हुआ था–

मैटरनिटी। एक तीर का निशान कॉरीडोर की तरफ था। जैक हॉल की तरफ चला, एक नर्स ने चीखकर उसे रोकने की कोशिश की लेकिन वो कमरों के दरम्यान चलता रहा। खून के कतरे फर्श पर छोड़ता हुआ। मरीजों ने उसे छोड़ कर रास्ता छोड़ दिया। एक नर्स ने हिम्मत करके उसकी आस्तीन पकड़ ली, जैक ने धक्का देकर उसे रास्ते से हटाया और चलता रहा।

कहीं अलार्म वाली घंटी ने बजना शुरू कर दिया था, सुरक्षा कार्रवाईयां शुरू हो चुकी थीं। यह अच्छी बात है, जैक ने सोचा। उसने एक मोड़ काटा तो सामने ही शीशे का एक पार्टीशन था, फर्श से छत तक एक शीशे की दीवार थी, वहां बच्चे लेटे हुए थे। लड़कियां नीले कपड़ों में थीं और लड़के सफेद लिबासों में।

वहां दीवार के इस तरफ खड़े बहुत-से रिश्तेदार दीवार के पार अपने-अपने बच्चों को देख रहे थे। अंदर कई नर्सें घूम रही थीं।

एक मुलाकाती ने जैक की तरफ देखा, औरतों के चेहरों पर खौफ और दहशत फैल गई। फिर सभी जैक को देखने लगे। जो खून में तर उधर पहुंच गया था।

फिर कोई औरत चीखी, एक शख्स उसकी राह में अड़ गया, जैक ने उसे धक्का दिया, अंदर की नर्स उछली?

"इन्हें यहां से बाहर करो।" जैक ने चीख कर कहा। मगर शीशे के पार उसकी आवाज नहीं जा सकी थी। वो फिर चीखा–"हटाओ इन्हें यहां से।"

अचानक पीछे से दो हाथों ने उसे अपनी पकड़ में ले लिया।

"पकड़े रहना, गार्ड बस पहुंचने की वाले हैं।" किसी ने हांक लगाई।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

शायद यही लोथर था, एक चपरासी, लेकिन काफी सेहतमंद था यह शख्स। उसने जैक को दबोचे-दबोचे फर्श से उठा लिया था किसी बच्चे की तरह।

"सुनो!" जैक चीखा।

मगर लोथर उसे उठाकर चल पड़ा था, जैक की एड़ियां फर्श से रगड़ खा रही थीं। तभी उसने एक ऐसी आवाज सुनी जो सामने दीवार के ऊपर से आई थी। यह आवाज एक वेन्टिलेटर-ग्रिल को उखाड़े जाने से पैदा हुई थी, उसे कोई बाहर से धक्का दे रहा था।

फिर ग्रिल एक जोरदार आवाज के साथ खुल गई। जैक ने खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष किया, लोथर ने उसे और भी सख्ती से दबोचा, खून जैक की कनपटियों में बज रहा था।

ग्रिल खुलने की आवाज पर जैक ने उधर देखा, एक हाथ सुराख से निकला, एक छोटा-सा हाथ, फिर एक साया-सा उभरा, और फिर वो सुराख में से नीचे कूद पड़ा।

यह एक बाजू वाला हिटलर था, जिसकी आंखें अंगारों की तरह सुलग रही थीं। हिटलर ने आतंकित मुलाकातियों की तरफ देखा, फिर उसने जैक और लोथर पर निगाह डाली, उसके मुंह से गुर्राहट निकली।

लोथर घबरा गया था, मगर उसने जैक को नहीं छोड़ा। हिटलर पलट कर शीशे की तरफ उछला। वो इतने जोरों से शीशे के साथ टकराया कि खिड़की लरज गई। मगर शीशा नहीं टूटा। हिटलर फर्श पर गिरा।

औरत निरंतर चीखें जा रही थी, मगर उसके साथी मर्द के होश जवाब दे रहे थे। शीशे के अंदर एक नर्स कमरे के सामने आ चुकी थी। वो बच्चों को बचाने पहुंची थी। शीशा टूटते ही हिटलर अंदर होता और यह नर्स उसके लिए कुछ सैकेण्ड की खुराक थी।

"छोड़ो मुझे बेवकूफ!" जैक चीखा, और लोथर ने उसे छोड़ दिया।

हिटलर ने उसे अपनी खूनी आंखों से घूरा, उसने फिर खिड़की पर छलांग लगाई। उसने शीशे पर अपने कांटेदार कंधे से टक्कर मारी। शीशा खनका और उसका एक टुकड़ा टूट गया। हिटलर ने उस सुराख में खुद को डाल दिया। मगर जगह कम थी। वो पलटा और दोबारा फर्श पर गिर गया। गिरते ही वो उठा था और दोबारा शीशे की तरफ उछला था।

अब राहदारी में कयामत हो चुकी थी जैसे, बच्चे रो रहे थे और बड़े चीख रहे थे। जैक ने उछल कर शैतान के पैर दबोच लिए, फिर उसने हिटलर को झटका देकर सुराख से बाहर खींचा। शैतान के जिस्म के साथ शीशे और चौखट का एक हिस्सा भी टूट कर बाहर आ गया। शीशे खनखनाते हुए फर्श पर गिरे और टुकड़े बिखर गए। दूसरी तरफ नर्स ने लपक कर बच्चों के पालनों पर खुद को ढाल की तरह बिछा दिया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

वो खबीस जैक की गिरफ्त में किसी बंदर की तरह मचल रहा था। जैक ने उसे खींच कर दीवार पर दे मारा। शैतान का सिर जोर से दीवार के साथ टकराया, उसके सिर का एक हिस्सा बुरी तरह चटख गया था और वहां से उसके भेजे का एक हिस्सा बाहर आ गया था।

हिटलर ने अपने जिस्म को सीधा किया और पलट कर जैक की तरफ आया, उसके दांत खुले हुए थे। फिर वो दांत जैक की उंगली में धंस गए, दर्द की तेज लहर ने जैक को दबोच लिया, मगर उसने शैतान की टांग को पकड़े रखा।

फिर शैतान के दांत उंगली के आखिरी सिरे तक उतर गए, उसका सिर पीछे गया, वो जैक की उंगली का एक हिस्सा भी अपने साथ ले गया।

जैक का जिस्म दर्द से दहक उठा था, उसकी बकाया चारों उंगलियां खुल गईं और शैतान छूट कर नीचे गिरा। जैक दीवार के साथ टिक गया, वो शैतान की सभ्यता। तभी जैक को अपनी पीट पर लोहे की किसी चीज की चुभन महसूस हुई।

उधर उस शैतानी शै ने अपने बचे हुए पंजे से जैक के पैरों पर छाप लगाई और उसकी पतलून का बहुत-सा हिस्सा उधेड़ दियां, फिर वो घूमा और एक बार फिर खिड़की की तरफ उछला। उसने टूटे शीशे के एक हिस्से को थामा और नर्सरी में उतरने लगा।

जैक ने लोथर की तरफ देखा, जो सहम कर काफी दूर हट गया था। नर्स, जो अंदर थी, वो अब भी पहली कतार के बच्चों पर ढाल बनी हुई थी और इस शैतान को भगाने के लिए जोर-जोर से हाथ हिला रही थी।

वो शैतान शीशे पार कर चुका था। बेशक वो जख्मी था, लेकिन उसमें दमखम की कमी नहीं थी। किसी भी पल वो नर्सरी में पहुंचकर अफरा-तफरी पैदा करने वाला था। उसका सिर जैक की तरफ झुका हुआ था और उसके मनहूस होठों पर विजेता की सी मुस्कुराहट थी, जिसे देखकर जैक सुलग उठा था।

जैक की पीठ से जो चीज चुभी थी, वो एक आग बुझाने वाला गैस का सिलेंडर था। तभी हिटलर ने शीशे पर से नीचे छलांग लगाई, वो सीधे नर्स पर गिरा था, उसने नर्स की पीठ पर अपना खड़ा पंजा मारा। नर्स के कपड़ों के साथ उसकी खाल भी उधड़ती चली गई।

आग बुझाने वाला सिलेंडर अब जैक के हाथ में था, उसने अपनी दूसरी सावुत उंगली से उसका बटन दबाया। सरसराहट की आवाज उभरी और सिलेंडर... जैक को ठंडक महसूस हुई।

नर्स अब चीख रही थी, मगर बड़ी हिम्मत से शैतान को भगाने की कोशिश भी कर रही थी। फिर वो फर्श पर गिर गई। उधर उस शैतान ने पहले पालने पर हमला किया, उसने उसे अपने पंजे से अपनी तरफ खींचा। उसके छुरी जैसे दांत खुले हुए थे। उसने उस बच्चे के सिर के लिए बाजू फैलाया, जो उस पालने में लेटा हुआ था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"यह ले हरामजादे।" जैक जोर से चीखा।

शैतान का बिगड़ा हुआ सिर जैक की तरफ घूमा, उसके दांत बच्चे से सिर्फ तीन इंच की दूरी पर थे।

जैक ने सिलेंडर का लीवर दबाया, और सिलेंडर की नोजल से ठंडा रासायनिक झाग निकटकर शैतान के मुंह पर पड़ा। बच्चा चीखा।

झाग ने शैतान को कुछ देर के लिए अंधा कर दिया था, वो उलट कर फर्श पर गिरा, उसका पंजा हवा में लहराया। जैक ने टूटे हुए शीशे के रास्ते फौरन उस पर गैस की दूसरी धार मारी। उठता हुआ शैतान फिर गिर गया। झाग का कुछ हिस्सा बच्चे की तरफ भी जाकर गिरा।

"उसे रख दो।" जैक ने किसी की तेज आवाज सुनी, दो सिक्योरिटी गार्ड आ पहुंचे थे। एक ने पिस्टल का बट पकड़ रखा था। जैक ने दीवार के बाकी हिस्से को भी तोड़ दिया। फिर वो खुद भी नर्सरी में दाखिल हो गया। उसने गार्ड की बात सुनी-अनसुनी कर दी थी।

उसने फिर हिटलर का निशाना लिया और उस पर गैस की धार मारी–"मर जा हरामी के पिल्ले।" वो जोर से दांत किचकिचाते हुए बोला और हाथ में दबे हुए सिलेंडर से शैतान पर वार किया। कई बार उसके हाथ चले–"मर जा...मर जा...मर जा।"

हर वार के साथ जैक के बदन से कड़कड़ाहटें उठीं। फिर जैक को लगा, कोई उसे घसीट रहा है। नर्स निरंतर चीख रही थी। जैक ने गार्ड को झटका देकर खुद को आजाद किया और सिलेंडर उसने एक बार फिर अपने पैरों के पास खड़े शैतान पर दे मारा! उसी वक्त किसी हाथ ने उससे सिलेंडर छीन लिया। एक और हाथ उसके गले पर आ जमा।

हिटलर का सिर, जिसकी एक आंख किसी कोयले की तरह काली हो चुकी थी और चेहरा पिचक गया था, उसकी इकलौती, जलती हुई आंख ने जैक को देखा, मुंह के दांत निकले, फिर उसका पंजा जैक की पिंडली पर जम गया। उसके दांत पिंडली में धंस गए।

जैक ने दूसरे पैर से उसके मुंह पर ठोकर रसीद की, यह जोरदार ठोकर थी, उस शै का भेजा पूरा तरह खुल गया। जैक ने उसके बाद भी कई ठोकरें रसीद कीं। फिर वो शै निश्चल हो गई। इसके साथ ही खुद जैक भी लड़खड़ाया और वहीं बैठ गया। धीरे-धीरे वो फर्श पर ढेर हो गया। उसके दिमाग में एकदम अंधेरा फैल गया था।

❑❑❑

❑❑❑

जब जैक जागा तो वो एक रूम में पड़ा था। उसके हाथों में टांके थे और वो पट्टियों में लिपटे हुए थे। उसकी एक तर्जनी आधी से ज्यादा गायब थी। बायीं पिंडली भी पट्टियों में बंधी थी और पिंडली समेत पूरा पैर सुन्न हो रहा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कलाई पर नहीं थी। उसके मुंह में दवाइयों का जायका घुला हुआ था और खिड़की पर बारिश की बूंदों का संगीत सुनाई दे रहा था।

दरवाजा खुला और एक नर्स अंदर आई। जवान और ताजा चेहरा था उसका। दरवाजा बंद होने से पहले जैक ने बाहर एक पुलिस वाले की झलक देखी। नर्स उसे जागता देखकर रुक गई।

"हाय...।" जैक ने मुश्किल से कहा–"क्या वक्त हुआ है?"

"साढ़े सात! क्या हाल है?"

"जिंदा हूं।" वो कराहा।

नर्स ने दरवाजे की तरफ मुंह करके कहा–

"मरीज साहब जाग गए हैं।" वो शायद पुलिस वाले से कह रही थी।

उसके बाद वो फिर जैक के बिस्तर की तरफ आई, उसने जैक का टेम्प्रेचर लिया, नब्ज देखी, उसकी आंखों का मुआयना किया। जैक ने देखा, कमरे में कोई फोन नहीं है। उसने कहा–

"मैं चाहता हूं कि कोई मेरी बीवी को फोन कर दे।"

"तुम लेफ्टिनेंट से बात कर लो।"

"बच्चे...? " जैक ने पूछा–"वो तो ठीक हैं न?"

नर्स ने कोई जवाब नहीं दिया।

"मुझे मालूम था, वो बच्चों वाले वार्ड की तरफ ही जाएगा। यह बात मुझे टिम कालाजन की एक बात से पता चली थी। उसने कहा था कि शैतान...।"

फिर वो एकदम चुप हो गया। उसने देख लिया था कि नर्स उसे इस तरह मुंह खोले देख रही थी जैसे वो किसी पागल को देख रही हो, बल्कि वो घबरा कर एक कदम पीछे भी हट गई थी। जैक ने आंखें मूंद लीं।

'शायद इसे कुछ भी नहीं मालूम।' जैक ने सोचा।

खून साफ किया जा चुका था, लाशों को प्लास्टिक के बैगों में बंद करके मुर्दाघर भेज दिया गया था। चश्मदीद गवाहों को सावधान रहने की हिदायतें दी गई थीं। जैक को खुशी थी कि वो मारवरी अस्पताल का डायरेक्टर नहीं था वर्ना इस वक्त की जिम्मेदारी संभालना उसके लिए मुश्किल हो जाता।

"सॉरी।" वो बड़बड़ाया।

नर्स ने उससे खाने के बारे में पूछा तो उसने अपनी पसंद बता दी। नर्स चली गई। जैक लेटकर सोचने लगा–

'सात घंटे पहले वो तीन शैतानी चीजों से संघर्ष कर रहा था, जो एक अर्धपागल लड़के के सिर से निकले थे और अब वो भुने गोश्त की डिश मंगवा रहा था। वो हँसा, उसे महसूस हुआ कि कोई नींद की दवा उसे दी गई है जो काफ़ी पॉवरफुल है।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

थोड़ी देर बाद दरवाजा खुला। आने वाला पैंतालीस साल का एक ऐसा शख्स था जिसके बाल घुंघराले थे और चेहरा सख्त तथा खुरदुरा। उसने एक नीला सूट पहन रखा था और वो कोई सरकारी आदमी लगता था। यह शायद कोई पुलिसिया है। जैक ने अंदाजा लगाया।

"डॉक्टर शॉन!" आने वाले ने कहा–"मेरा नाम लेफ्टिनेंट वायड है, फ्रॉम बरबिंघम पुलिस!" उसने अपना बैज निकालकर दिखाया–"कहो तो मैं बैठ जाऊं?"

"जरूर लेफ्टिनेंट।"

लेफ्टिनेंट वायड ने कुर्सी खिसकाकर जैक के करीब कर ली, उसकी भूरी आंखें लगातार जैक पर ही जमी हुई थीं।

"कुछ सवाल पूछने थे मुझे मिस्टर जैक शॉन!"

"जरूर।" जैक ने कहा। उसने तकिये के सहारे बैठने की कोशिश की मगर उसे चक्कर आ गया–"मैं अपनी बीवी को सूचना देना चाहता हूं।" उसने कहा।

"उसे मालूम है, हमने तीसरे पहर सूचना दे दी थी। मगर तुम्हें मालूम है, हम पूरी कहानी उसे नहीं सुना सकते थे, हम खुद अभी इस मामले को पूरी तरह नहीं समझ सके हैं।"

उसने एक नोट बुक निकाली और बोला–

"हमने जिम के डगलस के बयान नोट किए हैं। मैटरनिटी वार्ड के स्टाफ का बयान भी लिया है। तुम खुद समझ सकते हो कि जो कुछ भी यहां हुआ है, वो एक समझ में न आने वाला मामला है।"

जैक धीरे से हँस दिया। वायद बोला–

"हम समझते हैं कि तुमने अस्पताल के बहुत–से नवजात बच्चों की जान बचाई है। बेशक मैं कुछ नहीं समझ सका। हमारे पास सिर्फ मिस के डगलस का बयान है जिससे पता चलता है कि डॉक्टर कैथरोन के साथ क्या हुआ था और गुल वगैरह के साथ क्या गुजरी थी? ये सारे बयान बेहद खौफ और हैरानी के दर्पण हैं। उनमें स्वीकार्य चीजें नहीं पायी जातीं।"

"ऐसा बिल्कुल नहीं है लेफ्टिनेंट! मिस के कैसी हैं?"

"ठीक हो जाएंगी वो। फिलहाल वो यहीं, इसी अस्पताल में थोड़ी दूरी पर हैं और उनका इलाज हो रहा है।" लेफ्टिनेंट वायड ने बताया।

"और रोजाली?"

"मिस रोजाली एक मजबूत औरत हैं। दूसरे तो लगभग सनकी हुए बैठे हैं।" वायड ने कहा।

जैक ने हाथ हिलाना चाहा तो उसे अहसास हुआ कि उसका हाथ सुन्न पड़ा है। थकान उसकी रगों, पुट्ठों में रची-बसी थी और वो सो जाना चाहता था।

शायद लेफ्टिनेंट वायड ने उसकी मनोस्थिति का अंदाजा लगा लिया था,

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

वो बोला–

"मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा डॉक्टर शॉन! मैं यह जानना चाहता हूं कि जब रोजाली तुम्हें और मिस्टर देव चैम्बर को आठवीं मंजिल पर छोड़कर चली गई थीं तो उसके बाद वहां क्या हुआ था?"

जैक ने उसे तफ्सील बताई। बोलना मुश्किल था... उसका गला दुख रहा था, कई बार बोलते-बोलते कई बार उसे ऊंघ भी आई। वायड नोट बुक में हर बात नोट करता जा रहा था।

"मुझे मालूम था हिटलर कहां जाएगा।" जैक ने कहा–"यह बात मुझे एक बात से मालूम हुई थी, इसलिए मैं सीधा मैटरनिटी वार्ड में पहुंचा था।" बोलते-बोलते उसे चक्कर आ गया। उसे आंखों के सामने अंधेरा-सा महसूस हुआ। उसे खुशी थी। इस बात की खुशी कि मामला सुलझ गया था।

"मैं किस फ्लोर पर हूं?" उसने वायड ने पूछा।

"थर्ड फ्लोर पर।" लेफ्टिनेंट ने बताया... फिर जैक की तरफ झुक गया–"तो वे पिशाच थे, जिन्होंने उस लड़के पर कब्जा कर लिया था?"

जैक को ऊंघ महसूस हुई। बाहर बारिश हो रही थी और जैक सो जाना चाहता था।

"डॉक्टर!" लेफ्टिनेंट बोला–"मगर हमें वहां दो ही लाशें मिली हैं। एक नर्सरी में और दूसरी, जो मकड़ी जैसी थी। सवाल यह है तीसरी क्यों नहीं मिली, वही, जिसे तुम फ्रॉग कहत हो?"

"उस पर दो गोलियां मारी गई थीं। उसका बदन दो हिस्सों में खुल गया था।" जैक ने नींदभरी आवाज में कहा–"खत्म कर दिया था मैंने उसको।"

जैक ने बोलना चाहा, मगर उसकी आवाज न निकल सकी। वो आंखें झपका-कर रह गया।

"मैं देख रहा हूं कि कि तुम थके हुए हो। बहुत बुरा दिन था यह तुम्हारे लिए।"

जैक ने फिर कुर्सी खिसकने की आवाज सुनी, लेफ्टिनेंट उठ गया था–"मैं सुबह फिर आऊंगा।"

जैक कोई जवाब नहीं दे सका।

"अब तुम सो जाओ।" उसने दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज सुनी। नींद में डूबने से पहले उसने महसूस किया कि वो ताजातरीन चेहरे वाली नर्स दोबारा कमरे में आई है, क्योंकि कमरा भुने हुए मांस की खुशबू से भर गया था जो जैक का मनपसंद खाना था।

□□□

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ऑस्कर वाईल्ड

बूढ़ा भूत

विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार ऑस्कर वाईल्ड की एकमात्र भुतहा कहानी

उस भूत ने सबको परेशान कर रखा था और तीन सौ बरस से उस महल में किसी को आबाद नहीं होने दिया था। मगर कोई क्या जानता था कि उस भूत की अपनी भी एक व्यथा कथा है। वो एक खूबसूरत लड़की का इंतजार कर रहा था, तीन सौ साल से।

मिस्टर ओरिस ने कंट्रोल महल खरीदने का इरादा किया तो उनका कोई भी रिश्तेदार या दोस्त खुश नहीं हुआ। सबने उसे समझाने की कोशिश की कि यह इमारत भुतहा है और बरसों से वीरान पड़ी है। उसे जिसने भी आबाद करना चाहा, उसी को नुकसान उठाना पड़ा।

लेकिन वो किसी की बात मानने को तैयार नहीं था, कि प्रेतग्रस्त वो इमारत वह जरूर खरीदेगा। वो प्रेतों-आत्माओं पर विश्वास ही नहीं रखता। इसीलिए वो महल खरीदने पर कोई खतरा महसूस नहीं करता।

महल का मालिक लार्ड कंट्रोल एक रहमदिल और शरीफ आदमी था, वो महल बेचकर किसी को भी मुसीबत में नहीं डालना चाहता था, इसलिए उसने भी ओरिस को समझाते हुए कहा था–

"एक बार हमने भी इस महल को आबाद करने की कोशिश की थी। एक बार मेरी दादी किचेन से निकल रही थी तो दो मजबूत हाथों ने, जो नरकंकाल के थे, उसके कंधों को झिंझोड़ कर रख दिया था। एक दिन किंग्ज कॉलेज ऑफ कैम्ब्रिज के डायरेक्टर मिस्टर जस्टिस चाय पर आमंत्रित थे। जैसे ही उन्होंने चाय का कप होठों से लगाया, उन्हीं हाथों ने इतनी जोर से उनकी नाक दबाई कि उनके दिमाग की नसों से खून बहने लगा था। उसके बाद तो हम किसी भी रात आराम से नहीं सो सके थे। कमरों और बरामदों से खौफनाक आवाजें आती थीं और निहायत वीभत्स चेहरे हमें इर्द-गिर्द घूमते दिखाई देते थे।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

लेकिन ओरिस पर इस कहानी का कोई असर न हुआ। मजबूरन कंट्रोल ने ओरिस को कंट्रोल महल की चाबियां दे दीं।

"भूत नहीं, वो एक ऐसी मुसीबत है जो जिस पर टूट पड़ती है, उसको तबाह कर देती है, जब भूत आपका जीना हराम कर देगा तो आपको मेरी नसीहत जरूर याद आएगी। लेकिन उस वक्त आप पूरी तरह उसके शिकंजे में होंगे और आपको भागने के लिए भी कोई रास्ता नहीं मिलेगा।"

कंट्रोल महल करीबी रेलवे स्टेशन स्कॉट से सात मील दूर था। ओरिस और उसके बीवी-बच्चे जब ट्रेन से उतरकर जीप पर सवार हुए तो मौसम बड़ा सुहाना था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी, पेड़ों पर पक्षी चहचहा रहे थे और पश्चिम में डूबते हुए सूरज की किरणें कंट्रोल महल की ऊंची-ऊंची दीवारों को अलविदा कह रही थीं। ज्योंही जीप महल के दरवाजे पर पहुंची, तेज तूफानी हवाएं चलने लगी थीं।

आसमान पर अचानक ही सुर्ख आंधी प्रकट हुई, जैसे आसमान की आंखों में खून उतर आया हो। हवा में अचानक बड़े-बड़े चमगादड़ मंडराने लगे थे।

महल की सीढ़ियों पर एक बुढ़िया नौकरानी ने उनका स्वागत किया, उसने काली कमीज पर सफेद स्प्रन बांध रखा था। वो चालीस साल से यहां काम कर रही थी, जब उसकी शादी हुई थी तो वह बाईस साल की खूबसूरत लड़की थी और उसका पति तीस साल का सजीला जवान था।

शादी के दूसरे ही महीने वो नौकरी करने महल में आ गए थे और यहां आने के तीसरी ही रात भूत के जानलेवा हाथों ने उसके पति का गला घोंट कर उसे मार डाला था। नौजवान नौकरानी भरी जवानी में ही विधवा हो गई थी। उसने सारी उम्र अपने प्रेमी पति की याद में, इसी महल में गुजार दी।

जब ओरिस ने यह महल खरीदा था, तब लार्ड कंट्रोल ने उससे यह शर्त रखी थी कि इस नौकरानी को नौकरी से अलग नहीं करेगा, न उसे महल से अलग रहने को कहेगा।

महल के नए मालिक बूढ़ी नौकरानी की अगुवाई में अंदर दाखिल हुए और लम्बे बरामदे में से होते हुए एक कमरे में पहुंचे, जिसकी दीवारों पर तारकोल पोत कर उन्हें काली किया गया था।

यहां इतनी वहशत टपक रही थी कि ओरिस की नौजवान लड़की ने खौफ से आंखें बंद कर लीं। उस कमरे से गुजर कर वो लाइब्रेरी में पहुंचे, सामने दीवार पर आदमकद आईना लटक रहा था जिस पर मकड़ी के जाले बन गए थे। वो इतना धुंधला हो चुका था कि उसके सामने खड़े होकर भी अपना चेहरा साफ नजर नहीं आया। दरम्यान में एक मेज पर चाय रखी हुई थी और आसपास कुछ कुर्सियां, जिनका रंग बरसों पहले उनसे विदा हो चुका था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

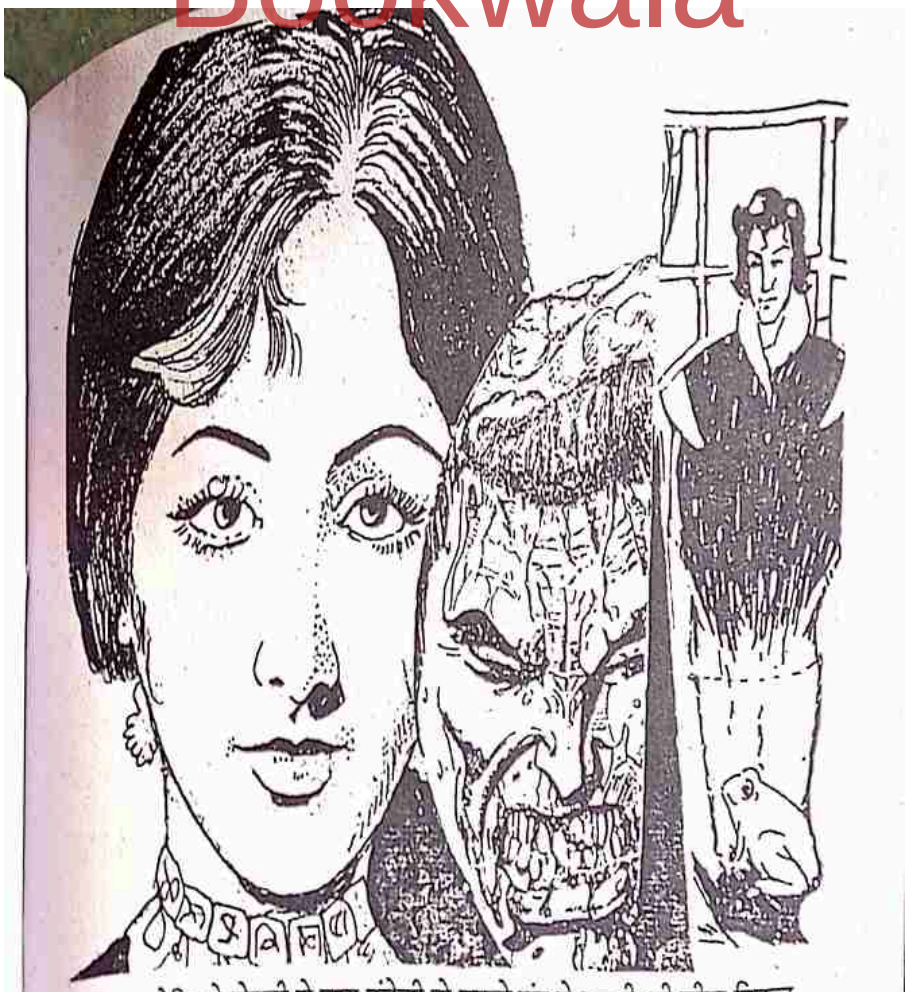

ओरिस ने केतली से चाय उंडेली तो उसके मुंह से हल्की-सी चीख निकल गई। उसे दरअसल आतिशदान के पास खून का बड़ा-सा धब्बा दिखाई दिया था जो कि पुराना होने के बावजूद ताजा दिखाई दे रहा था। बूढ़ी नौकरानी ने कहा–

"यह धब्बा बरसों से यहां मौजूद है और इसे आज तक कोई मिटा नहीं सका।"

"लेकिन मैं किसी खून के धब्बे को कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता।" ओरिस ने हैरत और खौफ के मिले-जुले भाव से प्रभावित होकर कहा। बुढ़िया हँसकर बोली–

"यह लेडी एलनेजर का खून है, जिसे 1575 में उसके शौहर सेमन डी कंट्रोल ने कत्ल कर दिया था। उसके बाद वो नौ बरस तक इसी महल में जिंदा रहा, फिर एक रात वो अचानक गायब हो गया। यह भूत उसी का है जो सदियों से इस महल में भटक रही है। खून के इस धब्बे को देखने के लिए हजारों टूरिस्ट आ चुके हैं, इसे मिटाना आसान काम नहीं है।"

मिस्टर ओरिस के नौजवान लड़के ने झुंझलाते हुए कहा–

"मेरे पास ऐसी दवाएं हैं जिनसे इस धब्बे को आसानी से मिटाया जा सकता है।" कहकर उसने बैग में से एक शीशी निकाली और उसमें से कोई दवा खून के धब्बे पर उंडेल दी। फिर छड़ी से उसे कुरेदने लगा।

बुढ़िया खौफ से कांपने लगी और उसने बड़े विनीत भाव से नौजवान

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

वाशिंगटन को रोकने की कोशिश की। दो ही मिनट में खून का धब्बा मिट गया।

वाशिंगटन ने कहा–"मैं कहता था न कि यह सिर्फ वहम है और इसे आसानी से मिटाया...।"

वाशिंगटन अपना जुमला पूरा भी न कर पाया था कि कमरे में एक बिजली-सी कौंधी, जैसे किसी ने हजारों वोल्ट के बल्ब रोशन कर दिए हों। साथ ही एक खौफनाक आवाज गूंजी।

वरजीना, ओरिस और मिसेज ओरिस, वाशिंगटन औंधे मुंह फर्श पर गिरे। बुढ़िया खौफ से चीखती हुई कमरे से बाहर निकल गई...उन्होंने बाहर निकल कर देखा, नौकरानी बरामदे में बेहोश पड़ी थी।

आंधी के झक्खड़ चल रहे थे और मूसलाधार बारिश शुरू हो गई थी। उन्होंने बुढ़िया के मुंह पर पानी के छींटें मारे और उसे होश में लाते हुए कहा–

"डरो नहीं, यह तूफान है जो थोड़ी देर में गुजर जाएगा। आत्मा हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। यह महज संयोग ही है कि खून का धब्बा मिटते ही तूफान शुरू हो गया।

"जब तुम आए थे तो मौसम सुहाना था, लेकिन अचानक ही उसके तेवर बदल गए।" बुढ़िया ने आंखें खोलते हुए व्यंग से कहा–"क्या यह भी संयोग है?"

फिर बुढ़िया उठी और तेज-तेज कदम उठाती हुई अपने कमरे में चली गई।

रात भर बारिश होती रही। सुबह के वक्त तूफान थम गया। बुढ़िया ने नाश्ता तैयार किया और मेज पर लगा दिया। ज्यों ही वो नाश्ते की मेज पर बैठे, वाशिंगटन की निगाहें वहीं जम कर रह गईं जहां से उसने खून का धब्बा साफ किया था, वहां ताजा खून का एक और धब्बा मौजूद था, जो पहले से बड़ा था।

ओरिस ने भी यह धब्बा देखा और उसके चेहरे का रंग उड़ गया। ओरिस खामोश बैठा रहा और वरजीना हैरत से उसकी सूरत तकती रही। वाशिंगटन ने छड़ी उठाई और एक बार फिर खून के धब्बे को मिटा दिया। नौकरानी खौफ से कांपने लगी।

लेकिन इस बार न बिजली चमकी, न बादल गरजा। वातावरण में गहरी खामोशी छाई रही। वाशिंगटन ने खुशी से नारा लगाया और गर्व से बोला–

"मैंने तीस बरस पुरानी यादगार को मिटा दिया, जो वहम बनकर लोगों की जिंदगी तबाह कर रही थी। वरजीना ने अपने भाई के इस कारनामे की तारीफ में जुबान खोलनी ही चाही थी कि किसी अदृश्य शक्ति ने उसे कुर्सी से गिरा दिया। गिरते ही उसके माथे से खून का फव्वारा उबल पड़ा।

ओरिस ने बेटी के माथे से खून साफ करने के लिए रूमाल निकाला कि हवा में दो पत्थर के हाथ लहराने लगे और मांस-मज्जा के बगैर वो कंकाल इस तरह उनकी तरफ बढ़ने लगा जैसे ओरिस का गला दबा देगा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अगर वाशिंगटन हिम्मत करके उन हाथों पर कुर्सी न उठाकर मारता तो यकीनन ओरिस की जान ले लेते। कुर्सी जब उन हाथों से टकराई तो खड़खड़ाहट-सी पैदा हुई और एक जोरदार कहकहा गूंजा।

ओरिस ने जल्दी से सबको कमरे से बाहर निकालकर ताला लगा दिया। उस दिन उस घटना के बाद और कुछ नहीं हुआ। लेकिन जब रात का एक बजा तो एक खौफनाक आवाज ने ओरिस को जगा दिया। बाहर बरामदे में हजारों घंटियां बज रही थीं और उनकी आवाजें पल-पल तेज होती जा रही थीं।

ओरिस ने अपनी बायीं कलाई की नब्ज टटोली, वो तेज-तेज चल रही थी। फिर उसने दरवाजे की दरार से बाहर झांकने की कोशिश की, कुछ भी नजर नहीं आया।

तभी उसे वरजीना, वाशिंगटन और पत्नी का ख्याल आया। अनायास उसने दरवाजा खोल दिया... बाहर बरामदे में किसी बूढ़े इंसान का कंकाल खड़ा था। खोपड़ी और नाक के दरम्यान उसकी खौफनाक आंखें अंगारों की तरह दहक रही थीं।

और फिर वही पत्थर के हाथ हवा में लहराए जो सुबह नाश्ते की मेज पर ओरिस का गला दबाने बढ़ रहे थे। ओरिस को यों महसूस हुआ जैसे उसके स्नायु सुन्न हो रहे हों।

लेकिन जल्दी ही उसे अपने वो शब्द याद आ गए जो उसने महल खरीदते हुए लार्ड कंट्रोल से कहे थे–"मेरा भूतों पर विश्वास ही नहीं है, न मैं उनसे डरता हूं। उसने अपने होश ठिकाने रखते हुए भूत से कहा–

"तुम बहुत बूढ़े हो गए हो। इतने कि जिस्म पर न गोश्त बचा है न नसों में खून। मैंने जब यह महल खरीदा था तो मुझे बताया गया था कि तीन सौ बरस से कोई आत्मा या भूत इस महल में रहता है। मैंने उसी वक्त अंदाजा लगा लिया था कि इतना बूढ़ा भूत कमजोर हो गया होगा। इसलिए मैंने एक दवा खरीदी थी जिसकी मालिश से जिस्म ताकतवर और मजबूत हो जाता है। मैं नहीं चाहता था कि हमारा कोई साथी बूढ़ा और कमजोर हो। मैं तुम्हें वो दवा तोहफे में देता हूं।"

कहकर ओरिस ने मोमबत्ती स्टैंड के करीब से एक शीशी उठाई और दरवाजे के बाहर फर्श पर रख दी। आत्मा की सुर्ख-सुर्ख आंखें यह दृश्य देखती रहीं। वो ओरिस और वाशिंगटन की उस असामान्य जुर्रत पर हैरान था। ओरिस ने दरवाजा बंद करते हुए कहा–

"दवा की और जरूरत पड़े तो मुझे बता देना, लंदन से मंगवा दूंगा।"

यह एक ऐसा मजाक था, जो तीन सौ बरसों में पहली बार भूत से किसी ने किया था। वो तिलमिला उठा और गुस्से से उसकी आंखें आग बरसाने लगीं।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उसने शीशी उठाई और दरवाजे पर दे मारी जिसके पीछे ओरिस आराम से बिस्तर पर लेटा था। उसने अपने निहायत खौफनाक हाथों को दरवाजे की तरफ बढ़ाया ताकि एक ही झटके से दरवाजा उखाड़ फेंके और बूढ़ी औरत के पति की तरह अपने फौलादी हाथों की अंगुलियां ओरिस की गर्दन में गाड़ दे।

लेकिन एक अदृश्य शक्ति ने उस भूत की ताकत को सुन्न कर दिया और वो अपने इंतकाम की आग को ठंडा किए बगैर ही पीछे हटने पर मजबूर हो गई। वो तेजी से बबूल की लकड़ी से बनी सीढ़ी पर चढ़ने लगा। इस वक्त गुस्से और जोश की वजह से उसके मुंह से ऐसी खौफनाक आवाजें निकल रही थीं कि पूरा महल लरज रहा था। बूढ़ी नौकरानी बिस्तर पर यही दुआएं मांग रही थी और कांप रही थी। ओरिस का परिवार हैरत और खौफ से आइंदा घटने वाली किसी घटना का इंतजार कर रहा था।

महल के पूर्वी किनारे पर रुककर भूत ने एक बार फिर अपनी तोहीन का बदला लेने का इरादा किया।

वो अब तक इस महल में बासठ इंसानी जानें ले चुका था, उसने इस महल को तब से अब तक कभी भी आबाद नहीं होने दिया था और यह शख्स खौफजदा होने के बजाय मजाक पर उतर आया था।

यह सोचते हुए बूढ़े भूत की हड्डियां जैसे गुस्से की आग में चटखने लगीं। उसका बस चलता तो वह पूरे महल को आग लगाकर खाक कर देता। मगर वो सोच में पड़ गया था।

सुबह को ओरिस ने दरवाजा खोला तो नौकरानी बरामदे में उसका इंतजार कर रही थी। उसकी धंसी हुई बेरौनक आंखों से खौफ टपक रहा था।

ओरिस ने दरवाजा खोला, ताकि नौकरानी नाश्ता लगा सके। वो यह देखकर हैरान रह गया कि खून का धब्बा अब भी वहां मौजूद है और पहले के बजाय ज्यादा चमकदार!

नाश्ता करते हुए वो रात की घटना पर गौर करते रहे। ओरिस और वाशिंगटन तो बात-बात पर कहकहे लगाते और भूत का मजाक उड़ाते रहे। मिसेज ओरिस भी कभी-कभार उस मजाक में शामिल हो जाती थी।

एक हफ्ता यों ही गुजर गया। वो हर रात दरवाजे पर ताला लगाते और सुबह खोलकर देखते तो खून का नया और ताजा धब्बा मौजूद होता था।

लेकिन इतवार की रात एक अजीब घटना ने सबको परेशान कर दिया। रात के ग्यारह बजे थे, ओरिस मोमबत्ती की रोशनी में बाइबिल पढ़ रहा था कि हॉल कमरे में जोर का धमाका हुआ, जैसे कोई भारी चीज गिरकर टूट गई हो। धमाका सुनकर वाशिंगटन, वरजीना और मिसेज ओरिस भी आ गए, सभी हॉल कमरे में जा पहुंचे। वहां उन्होंने एक अजीब और खौफनाक मंजर देखा...।

एक पुराना फौजी हैलमेट और फौजी वर्दी हैंगर से गिरकर फर्श पर पड़े

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

थे और सामने कुर्सी पर वही हड्डियों का ढांचा बैठा हुआ था। उसकी दोनों टांगें आपस में टकरा रही थीं, जैसे वो गुस्से में तिलमिला रहा हो। ओरिस और उसके परिवार वाले पहले तो उस खौफनाक मंजर को देखकर ठिठक गए, लेकिन जब भूत ने अपने मुंह से झुलसा देने वाली भाप निकालनी शुरू की तो ओरिस ने रिवाल्वर निकाल लिया।

कमरे में एक खौफनाक धमाका हुआ। बिजली की सी चमक के साथ कमरा रोशन हुआ, और फिर चारों तरफ अंधेरा छा गया।

भूत गरजता हुआ भाग गया। ओरिस ने फौरन अपना रिवाल्वर देखा, गोली चली ही नहीं थी। वो धमाका और रोशनी भूत के खौफनाक गुस्से की निशानियां थे।

सब हैरान थे कि भूत इससे पहले कई लोगों को मौत के घाट उतार चुका है, तो फिर वो ओरिस के परिवार को कोई नुकसान क्यों नहीं पहुंचा रहा?

उधर भूत भी परेशान था कि ये लोग मुझसे खौफ खाने के बजाय निडरता से मेरे मुकाबले पर खड़े हैं और वक्त-बेवक्त मेरा मजाक भी उड़ा लेते हैं और जब मैं इन पर हमला करने की कोशिश करता हूं तो कोई अंजानी ताकत मुझे जकड़ क्यों लेती है? मेरी शक्ति क्यों शिथिल हो जाती है?

भूत ने पूर्वी कोने के एक कमरे में अपना निवास बना रखा था, यह खुफिया कमरा ऊंचे-ऊंचे पेड़ों के झुंड में छुपा हुआ था। बूढ़ी नौकरानी भूत के इस निवास के बारे में जानती थी, लेकिन उसने आगंतुक मेहमानों की जुर्रत और भूत की व्याकुलता और गुस्से को देखते हुए इन्हें उस खुफिया कमरे के बारे में कुछ नहीं बताया था। उसे आशंका थी कि इस तरह वो परिवार भूत को हर वक्त अपने मजाक का निशाना बनाता रहेगा और सबकी जानें खतरे में पड़ जाएंगी।

लेकिन मिसेज ओरिस की निगाहों ने भूत का पीछा करके उस जगह को देख लिया था। सुबह-सुबह मिसेज ओरिस बाग में से गुजर कर पूर्वी किनारे में पहुंच गई, जहां रात की घटना के बाद भूत नई योजनाएं बनाने में दिमाग खपा रहा था।

उस वक्त मिसेज ओरिस ने आसमानी रंग का लिबास पहना हुआ था और असाधारण जुर्रत और निश्चय ने उसके चेहरे पर सुर्खी फैला रखी थी। उसने आहिस्ता से दरवाजा खोला। भूत ने बोझिल आंखों को ऊपर उठाया और मिसेज ओरिस को यहां देखकर हैरान रह गया। इससे पहले कि भूत अपनी जगह से उठता, मिसेज ओरिस ने एक शीशी फर्श पर रखते हुए कहा–

"मैं महसूस कर रही हूं कि तुम्हारी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि महल का कोई भी वासी बीमार हो और दवा भी न मिले। यह दवा अपनी तासीर में लाजवाब है। इसे इस्तेमाल कर लो और फिर देखो तुम किस कद्र चुस्त और मुस्तैद हो जाते हो।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मिसेज ओरिस ने जवाब का इंतजार किए बगैर ही दरवाजा बंद किया और आहिस्ता-आहिस्ता कदम उठाती हुई वहां से चली आई।

भूत ने शीशी को उठाकर बाहर बाग में फेंक दिया। उसे महसूस होने लगा जैसे वो दुनिया की सबसे कमजोर शै है और उस पर यह परिवार दया खाकर इनायतों की बारिश करना चाहता है। इससे ज्यादा और क्या तौहीन हो सकती है? भूत ने सोचा और फैसला किया कि वो भी हार नहीं मानेगा और इस महल को हमेशा की तरह वीरान ही रहने देगा। चाहे इसके लिए उसे इस पूरे परिवार का खात्मा ही क्यों न करना पड़े।

19 अगस्त शुक्रवार की शाम थी। भूत ने खुद को और ज्यादा दहशतनाक बनाने के लिए अपने बाजुओं और रानों पर चमकते हुए खंजर लटकाए और सिर पर हैट की जगह दरियाई घोड़े की खोपड़ी रखी।

उस वक्त बाहर तेज बारिश हो रही थी। बारिश का पानी खिड़कियों और दरवाजों से बहकर कमरों के अंदर जा रहा था, हवाओं के तेज झक्खड़ चल रहे थे और वातावरण में सांय-सांय की आवाजें गूंज रही थीं। भूत ने सोचा, 'ज्योंही ये सब लोग कमरों में जाएंगे, मैं वाशिंगटन पर सोते में हमला कर दूंगा। वो मेरा सबसे बड़ा दुश्मन है। रोजाना खून के धब्बे को वही खुरचता है। बारिश के शोर में उसकी चीखें कोई नहीं सुन सकेगा और उसका काम तमाम हो जाएगा।

उसके बाद...उसके बाद।' उसने सोचा–'ओरिस और मिसेज ओरिस की बारी आएगी। मैं मिसेज ओरिस के सीने पर बैठ जाऊंगा और एक हाथ से उसका गला दबाते हुए दूसरे हाथ से उसके पति ओरिस की गर्दन में खंजर घोंप दूंगा। वरजीना ने मुझे कभी नहीं सताया और न मेरा मजाक उड़ाया है, उसके लिए यही सजा काफी है कि उसको इस महल से निकाल दिया जाये या वो खुद ही चली जाए।

रात को बारह बजे बारिश और तेज हो गई। पेड़ों के झुंडों में से तेज सरसराती हवाएं गुजरने से रहस्यमय और खौफनाक माहौल पैदा हो रहा था। चारों तरफ गहरा अंधेरा छाया हुआ था। ओरिस और उसके बीवी-बच्चे इन सारी बातों से बेखबर इत्मीनान से सोए पड़े थे।

उन बेचारों को क्या मालूम था कि आज भूत ने इंतकाम लेने की प्लानिंग की है? ज्योंही एक बजा, भूत ने अपने हथियार संभाले और बाग से निकलकर बरामदे में पहुंच गया। आज वो निहायत खौफनाक और रहस्यमय बना हुआ था।

पहले वो घंटियों की आवाज और भयानक गूंज के साथ हर जगह घूमा करता था, लेकिन अब उसका हर कदम चोरों की तरह पड़ रहा था। उसे यकीन था कि अगर उनमें से कोई जाग गया तो कोई अंजानी शक्ति उसे जकड़ लेगी और उसकी स्कीम नाकाम होकर रह जाएगी।

वाशिंगटन के कमरे के दरवाजे पर पहुंचकर उसने अपनी सुर्ख आंखें उठाईं

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

तो पथरा-सा गया। वहां एक और भूत खड़ा था जो उससे भी दहशतनाक और डरावना था। उसकी आंखें और मुंह, दोनों जगह से आग बरस रही थी। देखने में वो भी हड्डियों का एक ढांचा नजर आ रहा था। लेकिन वो उसकी अपेक्षा ज्यादा चौड़ा था।

पहले भूत ने उसे देखकर पहले तो हड्डियों के बाजुओं से अपना मुंह छुपाया। लेकिन फिर इस खौफ से कि कहीं यह नया भूत उस पर हमला न कर दे, उलटे कदमों वापस आ गया।

वो सख्त परेशान था कि तीन सौ बरसों में पहली बार इस महल में कोई दूसरा भूत देखा गया है और यह आ कहां से गया?

उसकी सारी रात इसी कशमकश में गुजर गई। उसने फैसला किया कि सुबह होते ही वो दोबारा वहां जाएगा...और उस दूसरे भूत को भी अपना दोस्त बना लेगा ताकि दोनों मिलकर इस परिवार को महल से भगा सकें या इन्हें मौत के घाट उतार दें।

मुर्गे ने बांग दी, तब तक बारिश धीमी पड़ चुकी थी। पहले भूत ने संभलते हुए कदम उठाए और दोबारा कमरे में आ गया। बरामदे में उसने नए भूत को देखा। जब वो सामने आया तो पुराना भूत हैरान रह गया। उसकी आंखें बुझ चुकी थीं, न उनसे शोले बरस रहे थे, न वो चमक रही थीं। बाजू बेजान होकर एक तरफ लटके हुए थे...और उसका जिस्म दीवार के सहारे अटका हुआ था।

भूत ने उसके और करीब होकर उसे छूकर देखा। उसका सिर हाथ लगते ही एक तरफ ढलक गया। उसके गले में एक छोटी-सी तख्ती लटकी हुई थी, जिसे भूत ने पढ़ा। लिखा था–

"मैं ओरिस का भूत हूं। इस महल में हर भूत धोखा और फेरब है।"

भूत का यह पुतला दरअसल ओरिस ने ही बनाया था। उसने उसके मुंह और आंखों के सुराखों में मोमबत्तियां जलाकर रख दी थीं। ढांचा बनाने के लिए घर के और किचेन के सामान को बड़ी अक्लमंदी से इस्तेमाल किया गया था। यह भूत के साथ एक और मजाक था।

बूढ़ी नौकरानी दांत पीसकर रह गई। भूत को यकीन हो गया कि यह परिवार बहुत ताकतवर है और वो यानि भूत उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।

वो बोझिल कदमों से अपने कमरे में लौट आया। वो इतना निराश और थका हुआ था कि उसे अपनी हड्डियां चटकती हुई महसूस हो रही थीं। उसने फैसला कर लिया कि अब वो उन्हें डराने या नुकसान पहुंचाने के लिए कोई भी हरकत नहीं करेगा।

उसके बाद उसने लाइब्रेरी के कमरे में खून टपकाना भी छोड़ दिया। एक हफ्ते तक वो यों ही अपने कमरे में बंद रहा। उसके बाद वो हर रात महल के बरामदे में जाता था, मगर इस तरह कि किसी किस्म की आहट न पैदा हो। उसने

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अपने ढांचे को भी काले गाऊन से ढांप लिया था, ताकि रात के अंधेरे में वो किसी को भी नजर न आए... पिछले एक महीने में ओरिस और वाशिंगटन ने उसे हर मोर्चे पर शिकस्त दी थी, इसलिए उसने टूटे दिल से खामोश जिंदगी गुजारने का फैसला कर लिया था। लेकिन इस बार उसकी पुरानी यादें जाग उठीं।

महल में एक नौजवान ड्यूक और चरियाअर मेहमान था। वो लार्ड फोनसायज स्टलटन का पोता था, जिसे कर्नल कारवरी ने महल से भूत को निकालने के लिए भेजा था। लेकिन जब भूत रात को उसके बैडरूम में पहुंचा था तो वह उसे देखते ही बेहोश हो गया था।

उसके बाद उसने घुल-घुल कर पागलों की तरह जिंदगी गुजारी थी। भूत नहीं चाहता था कि उसके पोते पर भूत की जो दहशत छाई है, वो किसी तरह भी कम हो। इसलिए उसने कम-से-कम एक बार और नए मेहमानों को डराने का फैसला किया था। वो शख्स वहां आया हुआ था।

वो आधी रात को उसके कमरे में दाखिल हुआ था। उस वक्त उसने खुद को और भी खौफनाक बनाया हुआ था... उसके एक हाथ में मोमबत्ती और दूसरे हाथ में चमकता हुआ खंजर था।

इससे पहले कि वो ड्यूक को आतंकित करता, पीछे से दरवाजा खुला और वाशिंगटन नजर आया। उसे देखते ही भूत का आत्मबल कमजोर पड़ गया और वो आतिशदान की चिमनी के रास्ते वहां से भाग खड़ा हुआ था।

उसके बाद एक साल तक किसी ने उसे महल में नहीं देखा था। एक दिन वरजीना टहलते-टहलते पेड़ों के उस झुंड के करीब चली गई, जहां भूत का निवास था।

शाम का वक्त था, ठंडी-ठंडी हवा चल रही थी। झुंड से कोयल के कूकने की आवाज आई और वरजीना कोयल देखने के शौक में झुंड के अंदर दाखिल हो गई थी।

उसने जब वहां टूटा-सा एक पुराना कमरा देखा तो हैरान रह गई थी। वो सवा साल से इसी महल में रहती थी... लेकिन किसी ने उसे इस कमरे के बारे में कभी नहीं बताया था।

वरजीना ने आहिस्ता से दरवाजा खोला था, सामने सीढ़ियां थीं जो नीचे तहखाने में जा रही थीं। ये सीढ़ियां बबूल की लकड़ी से बनाई गई थीं। पहले तो वह घबराई, लेकिन जिज्ञासा ने उसे सीढ़ियां उतरने पर मजबूर कर दिया। जहां सीढ़ियां खत्म होती थीं, वहां एक और दरवाजा था।

कुछ सोचकर वरजीना ने वो दरवाजा खोला और देखकर स्तब्ध रह गई कि सामने बूढ़ा भूत सिर झुकाए बैठा था। उसने अपना चेहरा दोनों बाजुओं में छुपा रखा था, कदमों की आहट सुनकर भूत ने सिर उठाया।

खूबसूरत वरजीना अपनी नीली आंखों से उसे देख रही थीं। इससे पहले

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कि भूत अपनी जगह से उठता, वरजीना ने हाथ से उसे बैठे रहने का इशारा किया और फिर उसके करीब आकर घुटनों के बल बैठ गई।

"तुम्हें हमारे व्यवहार से बहुत दु:ख पहुंचा है, इसीलिए तुम बहुत कमजोर और उदास नजर आते हो।" वरजीना ने हमदर्दीभरे लहजे में कहा।

"हां, यह सही है। लेकिन यह दिन मेरे आराम करने के हैं। उसके बाद मैं तुम सबसे पूरा इंतकाम लूंगा।" भूत ने सख्त लहजे में जवाब दिया था।

"तुम बेहद जालिम इंसान थे। तुमने अपनी बीवी को कत्ल क्यों कर दिया था?" वरजीना ने पूछा।

"यह मेरा जाती मामला है।" भूत ने तिलमिलाकर कहा–"तुम क्यों पूछ रही हो? मेरी बीवी फूहड़ थी और बदतमीज, गुस्ताख भी। जब उसका चरित्र भी संदिग्ध हो गया, तो मैंने उसे...कत्ल कर दिया।"

"और...तुम इस तरह क्यों भटक रहे हो?" वरजीना ने दूसरा सवाल पूछा।

"बीवी के कत्ल के बाद मेरी जिंदगी वीरान हो गई। मुझे हर औरत और मर्द से नफरत हो गई। मैंने फैसला किया कि मैं हर औरत और मर्द से इंतकाम लूंगा। मैंने खुदकुसी कर ली, और अब भूत के रूप में जिंदा हूं। लेकिन तुम देख रही हो कि मैं कितना बूढ़ा हो गया हूं। मेरे जिस्म पर हड्डियों के सिवा कुछ नहीं रहा। मैं तीन सौ बरसों से सोया नहीं हूं, तीन सदियों से भूखा हूं, क्योंकि भूत कुछ नहीं खा सकते और भूत सो भी नहीं सकते। अब मैं सुकून चाहता हूं और यह सुकून मुझे मौत ही दे सकती है। तुमने अपनी लाइब्रेरी के दरवाजे पर लगी वो तख्ती तो पढ़ी होगी जिसमें मेरे सुकून का राज छिपा हुआ है।"

भूत ने दर्दभरे लहजे में अपनी दास्तान सुनाई। वरजीना ने सुनकर कहा–

"मैंने अभी उस तख्ती को नहीं पढ़ा, उस पर सदियों से धूल अटी पड़ी है। बेहतर हो कि तुम मुझे बताओ उस तख्ती पर क्या लिखा हुआ है?"

भूत ने बताना शुरू किया–

"तख्ती पर लिखा हुआ है कि एक खूबसूरत, सुनहरे बालों व नीली आंखों वाली लड़की इस महल में आएगी। वो हिम्मत और मोहब्बत का लाजवाब नमूना होगी, उसके आते ही सूखे पेड़ों पर फल-फूल आने शुरू हो जाएंगे। और जब वो अपनी मीठी-मीठी बोली से हर किसी को मोह लेगी, तो इस महल को सुकून नसीब हो जाएगा।"

भूत की आंखों की नमी वरजीना को बेचैन किए जा रही थी। तीन सदियों में पहली बार भूत की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने बड़ी व्याकुलता से विनती की–

"वो खूबसूरत, नीली आंखों वाली लड़की तुम हो। तुम मेरी मुक्ति के लिए प्रार्थना करो। खुदा के हुजूर में मेरे स्थायी सुकून के लिए गिड़गिड़ाओ। मैं अब मुक्ति चाहता हूं।" भूत फूट-फूट कर रोने लगा और रोते-रोते ही कहने लगा–"मैं

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

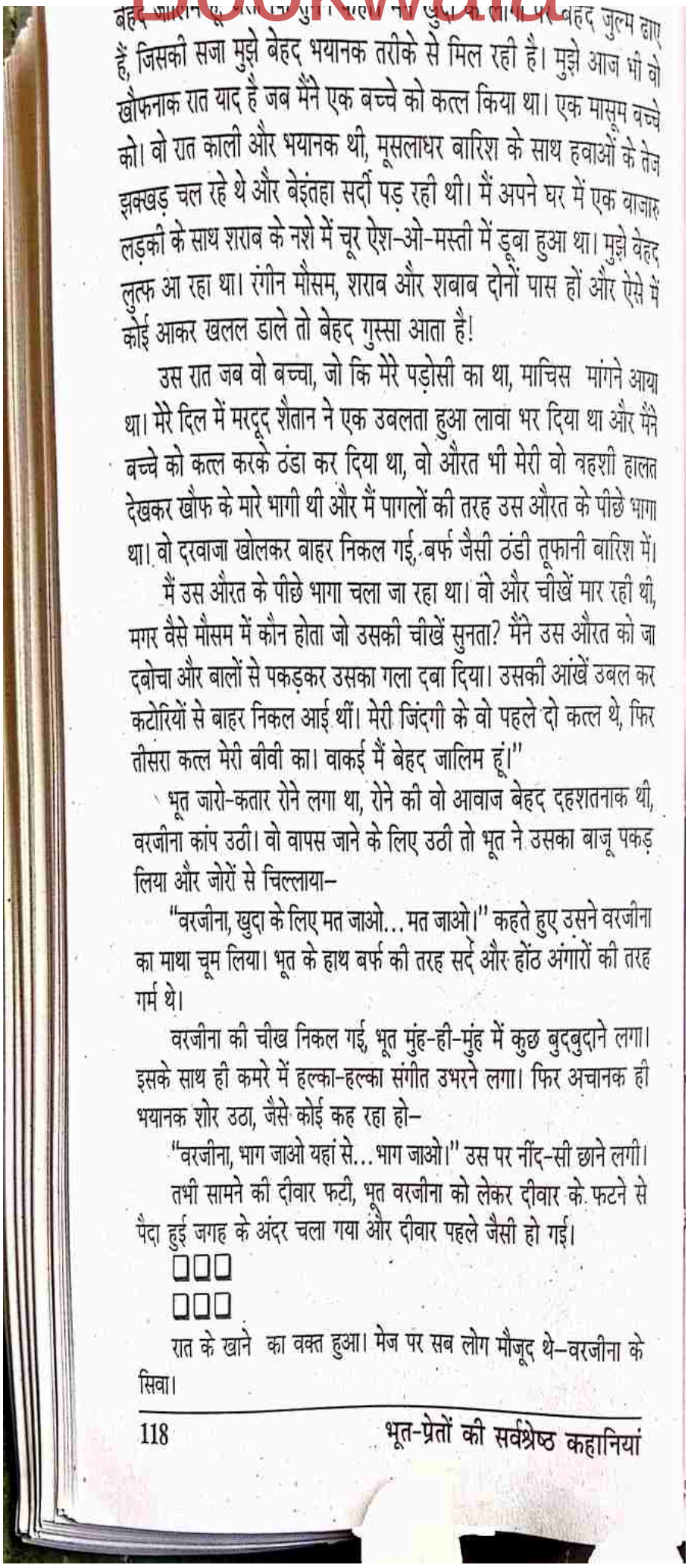

बेहद [illegible] पर बेहद जुल्म ढाए हैं, जिसकी सजा मुझे बेहद भयानक तरीके से मिल रही है। मुझे आज भी वो खौफनाक रात याद है जब मैंने एक बच्चे को कत्ल किया था। एक मासूम बच्चे को। वो रात काली और भयानक थी, मूसलाधर बारिश के साथ हवाओं के तेज झक्खड़ चल रहे थे और बेइंतहा सर्दी पड़ रही थी। मैं अपने घर में एक बाजारू लड़की के साथ शराब के नशे में चूर ऐश-ओ-मस्ती में डूबा हुआ था। मुझे बेहद लुत्फ आ रहा था। रंगीन मौसम, शराब और शबाब दोनों पास हों और ऐसे में कोई आकर खलल डाले तो बेहद गुस्सा आता है!

उस रात जब वो बच्चा, जो कि मेरे पड़ोसी का था, माचिस मांगने आया था। मेरे दिल में मरदूद शैतान ने एक उबलता हुआ लावा भर दिया था और मैंने बच्चे को कत्ल करके ठंडा कर दिया था, वो औरत भी मेरी वो वहशी हालत देखकर खौफ के मारे भागी थी और मैं पागलों की तरह उस औरत के पीछे भागा था। वो दरवाजा खोलकर बाहर निकल गई, बर्फ जैसी ठंडी तूफानी बारिश में।

मैं उस औरत के पीछे भागा चला जा रहा था। वो और चीखें मार रही थी, मगर वैसे मौसम में कौन होता जो उसकी चीखें सुनता? मैंने उस औरत को जा दबोचा और बालों से पकड़कर उसका गला दबा दिया। उसकी आंखें उबल कर कटोरियों से बाहर निकल आई थीं। मेरी जिंदगी के वो पहले दो कत्ल थे, फिर तीसरा कत्ल मेरी बीवी का। वाकई मैं बेहद जालिम हूं।"

भूत जारो-कतार रोने लगा था, रोने की वो आवाज बेहद दहशतनाक थी, वरजीना कांप उठी। वो वापस जाने के लिए उठी तो भूत ने उसका बाजू पकड़ लिया और जोरों से चिल्लाया–

"वरजीना, खुदा के लिए मत जाओ... मत जाओ।" कहते हुए उसने वरजीना का माथा चूम लिया। भूत के हाथ बर्फ की तरह सर्द और होंठ अंगारों की तरह गर्म थे।

वरजीना की चीख निकल गई, भूत मुंह-ही-मुंह में कुछ बुदबुदाने लगा। इसके साथ ही कमरे में हल्का-हल्का संगीत उभरने लगा। फिर अचानक ही भयानक शोर उठा, जैसे कोई कह रहा हो–

"वरजीना, भाग जाओ यहां से... भाग जाओ।" उस पर नींद-सी छाने लगी।

तभी सामने की दीवार फटी, भूत वरजीना को लेकर दीवार के फटने से पैदा हुई जगह के अंदर चला गया और दीवार पहले जैसी हो गई।

❑❑❑

❑❑❑

रात के खाने का वक्त हुआ। मेज पर सब लोग मौजूद थे–वरजीना के सिवा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

महल का कोना-कोना छान मारा गया, मगर वरजीना का कहीं नामो-निशान नहीं मिला। ओरिस और नौकरों ने दूर-दूर तक जंगल भी छान मारा, लेकिन वरजीना कहीं नहीं मिली।

सात मील दूर रेलवे स्टेशन था, ओरिस वहां पहुंचा और उसने स्टेशन मास्टर से पूछा...लेकिन वो भी वरजीना के बारे में कुछ न बता सका। पुलिस स्टेशन और दूसरे अहम स्थानों पर टेलीग्राम दिए गए, लेकिन वरजीना का कहीं से भी अता-पता नहीं चला।

सब अंदर-ही-अंदर परेशान थे कि वरजीना अचानक कहां चली गई? एक साल से तो भूत भी नजर नहीं आया था। फिर पेड़ों के झुंड में वो कमरा भी देख लिया गया जहां भूत रहता था। वहां वीरानी छाई हुई थी। रात के बारह बज गए। मिसेज ओरिस बेटी के गम में बिस्तर में मुंह धंसाकर रोने लगी, भाई परेशान होकर कोनों-खुदरों में झांकने लगा और बाप, जो भूत से डरने के बजाय उसका मजाक उड़ाया करता था, बेटी के गम में एकदम बुझ-सा गया।

इतने में वातावरण में घंटियां बजने लगीं जैसी कि ओरिस के कमरे के बाहर पहली बार बजी थीं। हवा का एक सर्द झोंका अंदर आया और एक धमाके के साथ दरवाजा खुल गया।

वरजीना सामने खड़ी मुस्कुरा रही थी। उसके हाथ में एक खूबसूरत राजसी ढंग का संदूकचा था जिसमें हीरे-जवाहरात और जेवर भरे हुए थे। वरजीना ने बताया कि वो अब तक भूत के साथ थी। यह सुनते ही सबके मुंह से चीखें निकल गई थीं। बाप ने हैरान होकर पूछा–

"क्या भूत अभी तक यहां मौजूद है?"

वरजीना ने हीरे-जवाहरात और जेवरात वाला संदूकचा मां के हाथों में देते हुए कहा–

"हां, उसी ने मुझे यह संदूकचा दिया है। तोहफा! लेकिन अब वो जिंदा नहीं है। वो तीन सौ बरस से न सोया था, न उसने कुछ खाया था। उसे सुकून की जरूरत थी और यह सुकून उसे भूत योनि से मुक्ति ही दिला सकती थी।"

वरजीना ने इससे ज्यादा और कुछ बताने से इंकार कर दिया। उसने कहा–

"भूत ने मुक्ति से पहले मुझसे कसम ले ली थी कि मैं किसी को भी कुछ नहीं बताऊंगी। उसने मुझसे सिर्फ एक सवाल पूछा था कि हमारे परिवार में ऐसी कौन-सी शक्ति है जो भूत-प्रेतों को हमें नुकसान नहीं पहुंचाने देती? मैंने उसे जवाब दिया था कि वो ताकत आत्मबल, साहस और सबसे बढ़कर प्यार की ताकत है।"

□□□

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

अमेरिकन कहानी

गद्दार

बदनीयती और बदमाशी के बदअंजाम की कहानी।

काले-काले दिलों में पैदा होने वाली काली-काली भावनाओं की स्याह दास्तान, जिसने आखिरकार काले स्याह अंजाम को ही पहुंचना था–और पहुंची।

लॉसन और अनेस्टे बचपन के दोस्त थे। दोनों ने प्राईमरी स्कूल एक साथ पास किया था और हाईस्कूल में भी दोनों इकट्ठे ही रहे थे और स्कॉलरशिप पायी थी। इस कामयाबी के बाद अनेस्टे ने और दिल लगाकर पढ़ना शुरू कर दिया था। मगर लॉसन को स्कॉलरशिप रास न आई। वो बददिमाग हो गया और पहले-सी बात भी उसमें नहीं रही थी।

हाईस्कूल के बाद अनेस्टे शहर चला गया और एक कॉलेज में दाखिल हो गया। मगर लॉसन का घमंड आड़े आ गया, वो बहुत कम नम्बर लेकर पास हुआ था, इसलिए उसे किसी टैक्नीकल कॉलेज में दाखिला मिलना बहुत मुश्किल था।

फिर लॉसन के बाप का देहांत हो गया और वो अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए अपने स्वर्गवासी बाप के बागों की देख-रेख करने लगा। अढ़ाई बरस बाद उसकी मां भी उसे छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। अब लॉसन इस भरी दुनिया में अकेला रह गया था। खाने-पीने और ऐशो-आराम की लॉसन को कोई कमी नहीं थी। मगर उसके अंदर तो कुछ ऐसे जज्बे सिर उठा रहे थे जो किसी भोली-भाली लड़की की मासूम मुस्कुराहटों से ही संतुष्ट हो सकते थे।

लवीना उसकी क्लासफेलो रह चुकी थी, भोली-भाली सूरत, झुकी-झुकी निगाहें और मोहक मुस्कुराहट! कुछ ऐसी खूबियां थीं उसमें कि लॉसन स्कूल के दिनों में ही लवीना पर लट्टू हो गया था। मगर कुछ स्वाभाविक हिचक और कुछ अनेस्टे के साथ लवीना की दोस्ती की वजह से वो अपने दिल की बात लवीना से कहने की जुर्रत ही नहीं कर सकता था।

मगर अब... जबकि लॉसन मां-बाप की निगरानी से आजाद और तन्हाई का शिकार हो गया था, उसे लवीना से मिलने की ख्वाहिश सताने लगी थी।

एक दिन सुबह-ही-सुबह लॉसन बन-संवर कर लवीना के कस्बे की तरफ चल पड़ा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

इत्तेफाक से लॉसन को लवीना की तलाश में ज्यादा नहीं भटकना पड़ा। जैसे ही उत्तरी सिरे वाले बाग में पहुंचा, उसे लवीना दिखाई दी जो सफेद गुलाब के फूलों के पास खड़ी एक मोटी-सी किताब पढ़ रही थी।

"लवीना डार्लिंग!" लॉसन ने करीब पहुंचकर बगैर सोचे-समझे लवीना का बाजू पकड़कर कहा।

लवीना इस अनपेक्षित स्थिति के लिए बिल्कुल तैयार नहीं थी, वो ताज्जुब से उछली और उसने रूखाई से लॉसन का हाथ झटक दिया–

"बेशर्म... कमीने... क्या चाहते हो मुझसे?" लवीना गुस्से से कांप रही थी।

"इतनी भी नाराजगी क्या लवीना, क्या मुझे नहीं पहचाना? मैं लॉसन हूं, तुम्हारा क्लासफेलो।"

"बस... बस, मैं सब जानती हूं। तुम्हारे लच्छन किसी से छुपे...!"

"लवीना, प्लीज।" लॉसन ने बड़ी ढिठाई से एक बार फिर लवीना की कलाई पकड़ ली।

लवीना ने विरोध किया, लॉसन की पकड़ मजबूत होती गई। इस पर लवीना ने उलटे हाथ के दो-तीन थप्पड़ लॉसन के गाल पर जड़ दिए।

अब लॉसन बिलबिला उठा। वो लवीना से ऐसी बेरूखी की उम्मीद लेकर नहीं आया था। वो गाल सहलाते हुए पीछे हटा। कुछ देर इस पराजय से परेशान वहीं खड़ा रहा, फिर कुछ बड़बड़ाता हुआ अपने बागों की तरफ चला गया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

'आखिर लवीना ने उसके साथ इस बेरूखी का व्यवहार क्यों किया था? उसमें कौन-सी कमी है जो...?'

फिर उसे स्कूल के दिनों की लवीना और अनेस्टे की दोस्ती की घटनाएं याद आ गईं, जब लवीना अनेस्टे के सिवा किसी लड़के से बात करना भी पसंद नहीं करती थी। क्या आज भी उसने अनेस्टे के मुकाबले में मुझे दुत्कारा है? उसने सोचा–'अगर ऐसा ही है तो मैं भी कसम खाता हूं कि मैं भी कभी अनेस्टे को लवीना के सामीप्य में नहीं जाने दूंगा।'

वो इन्हीं सोचों में डूबा हुआ था कि सूरज डूब गया और तब लॉसन अपने घर चला गया। अनेस्टे इर्द-गिर्द के इलाके में पहला एग्रीकल्चर ग्रेजुएट था, मिस्टर गोगल ने, जो इस इलाके के एक मॉडर्न विचारों वाले जागीरदार गिने जाते थे, उन्होंने अनेस्टे से सम्पर्क किया और उसे अपनी जमीनों का प्रबंध संभालने का प्रस्ताव पेश किया।

अनेस्टे को और क्या चाहिए था, वो फौरन रजामंद हो गया। जागीर का प्रबंध संभालने के फौरन बाद अनेस्टे के परिवार के हालात सुधरने लगे। अनेस्टे की तनख्वाह अच्छी और सेवा वगैरह के लिए कई नौकर मौजूद थे। कुछ महीने बाद उसने जागीरदार की माली मदद से एक कार भी खरीद ली, और उससे कुछ ही महीने बाद उसकी शादी भी लवीना से हो गई।

लॉसन इस मौके पर आंसू पीकर रह गया। वो सोच भी नहीं सकता था कि उसक एक पूर्व क्लासफेलो उसके सपनों की रानी को ब्याह कर ले जाएगा, वो हर वक्त ईर्ष्या और गम की आग में जलता रहता इसीलिए वो शादी के समारोह में भी शामिल नहीं हुआ था। हालांकि अनेस्टे खुद शादी का कार्ड लेकर उसके पास आया था।

दिन गुजरने लगे, लॉसन हर वक्त कुढ़ता रहता था जिससे उसके आम मामले भी बुरी तरह प्रभावित हो रहे थे। जो दिन चढ़े बिस्तर से उठता था और बड़ी बेदिली से बागों में जाता था।

तीसरे पहर के फौरन बाद वो इस रास्ते पर आकर खड़ा हो जाता था जहां से अनेस्टे और लवीना कार पर सैर के लिए निकलते थे। उनके खिलखिलाते चेहरे देखकर लॉसन पर पहाड़-से टूट पड़े थे। दोनों के कहकहे उसके कानों में पिघले सीसे की तरह पड़ते थे। वो दोनों हाथों से अपना सिर थाम लेता और धूल के बादलों में आहें भरता हुआ वापस कस्बे की तरफ लौट जाता था।

कस्बे में लौटकर लॉसन किसी बाजारी जगह बैठकर शराब पीता था और रात गए गिरता-पड़ता घर पहुंचता था।

अगली सुबह वो निहायत बोझिल तबीयत लिए जागता था और अपने दुश्मन के खात्मे की तरकीबें सोचता रहता था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उसने कहीं से एक मजबूत-सा डंडा हासिल किया और कस्बे में चला गया और लौहार से डंडे के एक सिरे पर लोहे का खोल चढ़वाया और दूसरे सिरे पर दस्ता, ताकि इस्तेमाल करते हुए डंडे पर पकड़ मजबूत रहे। अब वो एक खास मौके की तलाश में रहने लगा।

एक दिन अनेस्टे और उसकी बीवी लवीना किसी काम से किसी दूर-दराज कस्बे में गए हुए थे और शाम से पहले उनकी वापसी मुमकिन नहीं थी।

लॉसन फौरन अपना खास डंडा लेकर मिस्टर लॉसन की जागीर के उत्तरी हिस्से की तरफ रवाना हो गया। यह हिस्सा नदी के समान्तर था और काम के दौरान अनेस्टे भी आराम करने की जगह के तौर इस्तेमाल होता था।

अनेस्टे का नियम था कि वो रोजाना जागीर के मुआयने के लिए जाते हुए अपना खतरनाक बुलडॉग साथ रखता था। लॉसन ने सोचा, अपनी योजना की सफलता के लिए पहले जरूरी है कि अनेस्टे के उस साथी को खत्म कर दिया जाए, बुलडॉग को! अत: उसने बुलडॉग को मारकर नदी में बहा दिया।

दूसरी सुबह लॉसन जल्दी ही जाग गया था। उसने खिड़की में से देखा, दूर खेतों में से कोई उसके मकान की तरफ ही चला आ रहा था। जल्दी ही खुला मैदान आ गया और लॉसन ने आने वाले को पहचान लिया, यह अनेस्टे ही था। उसने ओवरकोट पहन रखा था और सर्दी से बचने के लिए कॉलर खड़े कर रखे थे।

लॉसन ने इस स्थिति से निपटने के लिए एक-दो पल जेहन पर जोर दिया, फिर चुटकी बजाते हुए अपनी जगह से उठ गया, उछलकर उसने कोट पहना और दरवाजा खोलकर बाहर आ गया। अब अनेस्टे उससे कुछ गज की दूरी पर ही रह गया था।

"गुड मॉर्निंग मिस्टर अनेस्टे!" लॉसन ने अपनी तरफ से पहल की-"इतनी सुबह इस गरीबखाने पर पधारने का कष्ट कैसे किया?"

"लॉसन, कल रात से मेरा बुलडॉग जिप गायब है। मैं रात गए शहर से लौटा तो थकान से निढाल था इसलिए नौकरों से पूछ नहीं सका। सुबह एक नौकर ने बताया कि कल शाम को उसने जिप को घर लाने के लिए हर जगह ढूंढा, मगर वो कहीं न मिला। नौकर ने सोचा कि हम उसे अपने साथ ले गए हैं। तुम्हें जिप के बारे में कुछ मालूम हो तो...?"

"मुझे उसके गायब होने के बारे में तो कुछ पता नहीं, अलबत्ता कल शाम से जरा पहले मुझे एक खरगोश की जरूरत थी। मैं जागीर में पहुंचा तो तुम्हारा जिप जमीन पर रेंगने वाले कीड़ों-मकोड़ों की पकड़-धकड़ में व्यस्त था। कुछ देर बाद मैंने देखा कि जिप नदी की तरफ भाग रहा था। फिर वो पेड़ों की ओट में ऐसा गुम हुआ कि दोबारा नजर नहीं आया। मुझे जल्दी एक खरगोश मिल

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

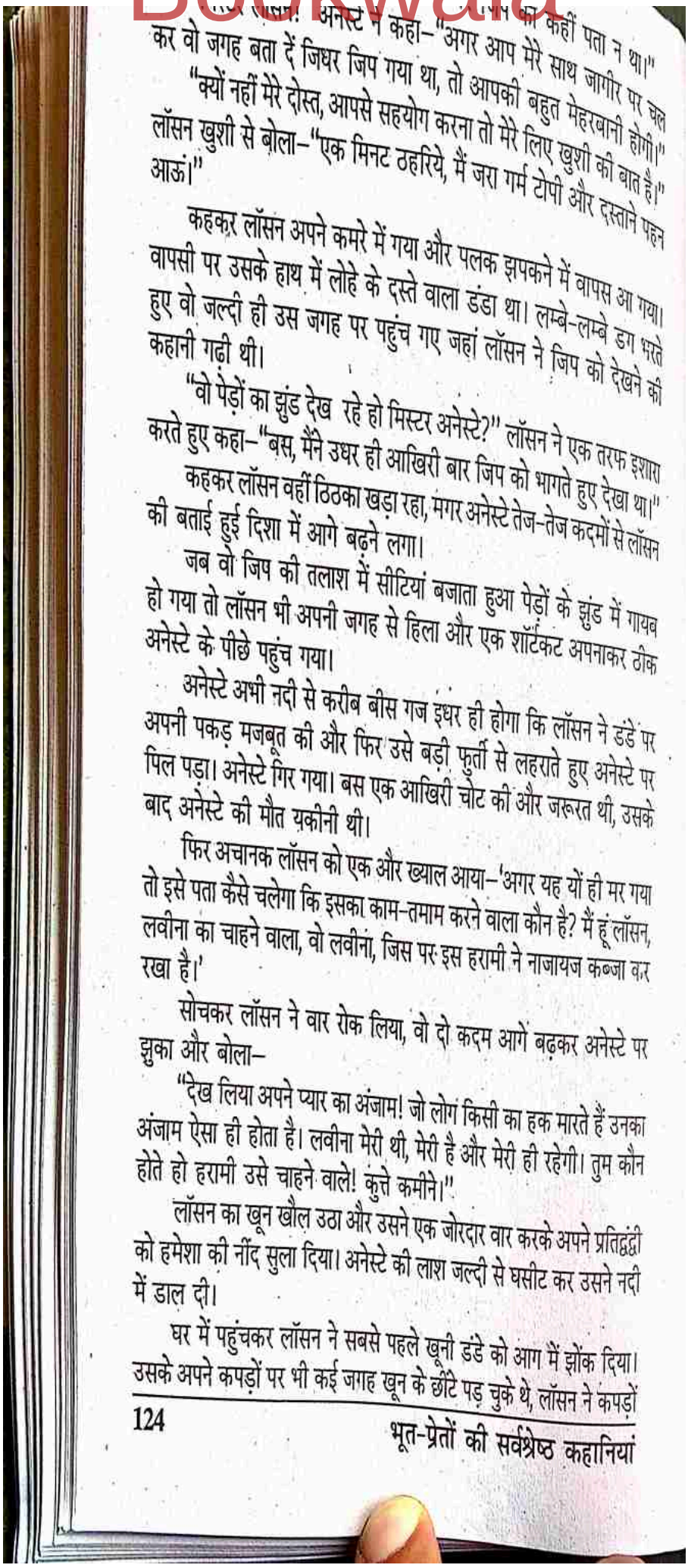

...जिप का कहीं पता न था।"

...लॉसन!" अनेस्टे ने कहा–"अगर आप मेरे साथ जागीर पर चल कर वो जगह बता दें जिधर जिप गया था, तो आपकी बहुत मेहरबानी होगी।"

"क्यों नहीं मेरे दोस्त, आपसे सहयोग करना तो मेरे लिए खुशी की बात है।" लॉसन खुशी से बोला–"एक मिनट ठहरिये, मैं जरा गर्म टोपी और दस्ताने पहन आऊं।"

कहकर लॉसन अपने कमरे में गया और पलक झपकने में वापस आ गया। वापसी पर उसके हाथ में लोहे के दस्ते वाला डंडा था। लम्बे-लम्बे डग भरते हुए वो जल्दी ही उस जगह पर पहुंच गए जहां लॉसन ने जिप को देखने की कहानी गढ़ी थी।

"वो पेड़ों का झुंड देख रहे हो मिस्टर अनेस्टे?" लॉसन ने एक तरफ इशारा करते हुए कहा–"बस, मैंने उधर ही आखिरी बार जिप को भागते हुए देखा था।"

कहकर लॉसन वहीं ठिठका खड़ा रहा, मगर अनेस्टे तेज-तेज कदमों से लॉसन की बताई हुई दिशा में आगे बढ़ने लगा।

जब वो जिप की तलाश में सीटियां बजाता हुआ पेड़ों के झुंड में गायब हो गया तो लॉसन भी अपनी जगह से हिला और एक शॉर्टकट अपनाकर ठीक अनेस्टे के पीछे पहुंच गया।

अनेस्टे अभी नदी से करीब बीस गज इधर ही होगा कि लॉसन ने डंडे पर अपनी पकड़ मजबूत की और फिर उसे बड़ी फुर्ती से लहराते हुए अनेस्टे पर पिल पड़ा। अनेस्टे गिर गया। बस एक आखिरी चोट की और जरूरत थी, उसके बाद अनेस्टे की मौत यकीनी थी।

फिर अचानक लॉसन को एक और ख्याल आया–'अगर यह यों ही मर गया तो इसे पता कैसे चलेगा कि इसका काम-तमाम करने वाला कौन है? मैं हूं लॉसन, लवीना का चाहने वाला, वो लवीना, जिस पर इस हरामी ने नाजायज कब्जा कर रखा है।'

सोचकर लॉसन ने वार रोक लिया, वो दो कदम आगे बढ़कर अनेस्टे पर झुका और बोला–

"देख लिया अपने प्यार का अंजाम! जो लोग किसी का हक मारते हैं उनका अंजाम ऐसा ही होता है। लवीना मेरी थी, मेरी है और मेरी ही रहेगी। तुम कौन होते हो हरामी उसे चाहने वाले! कुत्ते कमीने।"

लॉसन का खून खौल उठा और उसने एक जोरदार वार करके अपने प्रतिद्वंद्वी को हमेशा की नींद सुला दिया। अनेस्टे की लाश जल्दी से घसीट कर उसने नदी में डाल दी।

घर में पहुंचकर लॉसन ने सबसे पहले खूनी डंडे को आग में झोंक दिया। उसके अपने कपड़ों पर भी कई जगह खून के छींटे पड़ चुके थे, लॉसन ने कपड़ों

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

को भी जला दिया।

इस सारे काम से फारिग होकर लॉसन ने इत्मीनान की सांस ली। तमाम काम उसके प्रोग्राम के मुताबिक ही निपट गए थे। शुरूआत में लॉसन के लिए किसी ऐसी जगह का चुनाव ही असल समस्या था जहां आसानी के साथ वो अनेस्टे का काम तमाम कर सके। यह संयोग ही था कि अनेस्टे जिप के बारे में पूछने खुद ही उसके घर चला आया था और लॉसन ने निहायत मक्कारी से उसे पेड़ों के पार ले जाकर उसे खत्म कर डाला था।

अपनी कायमाबी से प्रफुल्ल लॉसन अपने बाग में चला आया। आज अर्से बाद उसका जी चाह रहा था कि वो बाग का सारा काम खुद अपने हाथों से करे।

❑❑❑
❑❑❑

अनेस्टे कुत्ते जिप की तलाश में दोपहर तक भी जब घर से बाहर रहा तो लवीना को सख्त परेशानी होने लगी थी। उसने दो-तीन नौकर इधर-उधर दौड़ाए, जब वो भी बहुत देर तक न लौटे तो लवीना कार में सवार होकर खुद निकल पड़ी। उसने सारी एस्टेट देख डाली, कई लोगों से अनेस्टे के बारे में पूछताछ की, मगर कुछ पता न चला।

"या खुदा, खैर हो।" वो बड़बड़ाई–"अनेस्टे तो कभी भी इतनी देर घर से बाहर नहीं रहा।"

लवीना सोच में पड़ गई–'कस्बे वो जा नहीं सकता क्योंकि कार मेरे पास है, एस्टेट में वो मौजूद नहीं है क्योंकि वहां के कारिन्दों ने वहां का चप्पा-चप्पा छान मारा है। उसके दोस्तों, जानकारों और इर्द-गिर्द के लोगों को उसके बारे में कुछ पता नहीं। मगर...मगर...लॉसन से तो मैंने पूछा ही नहीं।'

लॉसन का ख्याल आते ही लवीना ने कार लॉसन के घर की तरफ घुमा दी। लॉसन के घर पहुंचकर वो कार से उतरी और उसने दरवाजे पर दस्तक दी। मगर कोई जवाब नहीं मिला। अचानक उसकी निगाह नीचे गई और...खौफ तथा अंदेशे से वो कांप उठी–

"अयं...लासन भी गायब है। कुंडी पर ताला पड़ा हुआ है।" फिर वो बड़बड़ाई–"मुमकिन है वो अपने बागों में हो, मुझे वहीं चलना चाहिए।"

लवीना बागों में पहुंची तो उसने वहां लॉसन को पौधों की कतर-ब्यौंत करते हुए देखा–

"लॉसन, तुमने कहीं अनेस्टे को देखा है?" लवीना ने कांपती हुई आवाज में पूछा।

"घबराइए नहीं मिसेज लवीना! आपके पति मिस्टर अनेस्टे जरूर खैरियत से होंगे।" लॉसन ने करीब जाकर लवीना को दिलासा देते हुए कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"म...मगर सुबह से उनका कुछ पता नहीं है।" लवीना सिसक उठी।

"मगर सुबह तो अनेस्टे मुझे मिला था।" यह फिकरा लॉसन के मुंह से यों ही फिसल गया।

"आपसे अनेस्टे मिला था...फिर वो कहां गया?"

"मेरा मतलब है...वो सुबह मुझसे मिला था...फिर वो...।" लॉसन के जेहन पर खौफ की तह चढ़ने लगी–"फिर वो...।"

"फिर वो कहां गया?" लवीना ने लॉसन की बात काटकर जल्दी से पूछा।

"उसने मुझसे जिप के बारे में पूछा, मैंने बताया कि कल शाम मैं एस्टेट यानि जागीर में खरगोश पकड़ने गया था तो जिप को मैंने पेड़ों के एक झुंड की तरफ दौड़ते हुए देखा था। अनेस्टे ने कहा था कि मैं उस जगह की पहचान करवाने उसके साथ एस्टेट चलूं। मैं उसकी इच्छा पर उसके साथ चल दिया था। नदी के पास पहुंचकर मैं खुद तो वापस चला आया था, अनेस्टे जिप की तलाश में एक तरफ निकल गया था।"

लवीना ने फौरन ही बहुत-से कारिन्दे नदी की तरफ रवाना कर दिए थे, लेकिन रातभर तक अनेस्टे का कुछ भी पता नहीं चला। उस दौरान लवीना एक पल के लिए भी चैन से नहीं बैठ सकी थी, न उसने कुछ खाया न पिया, वो बेचैनी से कमरों और बरामदों में टहलती रही थी।

अगले दिन अनेस्टे के लापता होने की सूचना पुलिस स्टेशन में भी दर्ज करवा दी गई और पुलिस का एक दस्ता वारदात की जगह पहुंच गया। आम लोगों के बयानों से एक बात तय थी कि अनेस्टे से मिलने वाला आखिरी आदमी लॉसन ही था और उसके कहे मुताबिक वो अनेस्टे को नदी किनारे छोड़कर चला आया था। तफ्शीली दस्ते के इंचार्ज ने तफ्तीश के अगले कदम की शुरूआत एक अनुमान के आधार पर की। उसका अनुमान था कि अनेस्टे नदी में कूद गया है। इसलिए बहुत-से गोताखोर अनेस्टे की लाश की तलाश में नदी में उतार दिए गए, साथ ही नदी के बहावा पर दसवें मील पर मौजूद मछेरों की बस्ती में भी सूचना भेज दी गई कि वो नदी के बीच में कुछ रुकावटें खड़ी कर दें ताकि अनेस्टे अगर नदी में डूबा हो तो उसकी लाश हासिल की जाए।

पुलिस ऑफिसर का अनुमान बिल्कुल सही निकला। बहुत कोशिश और कड़ी मेहनत के बाद अनेस्टे की लाश तलाश कर ली गई।

करीब दो दिन तक पानी में रहने की वजह से लाश पहचानी न जा सकी। सारी त्वचा गल गई थी और कई जगह तो ऐसी बड़ी दरारें पड़ गई थीं कि हड्डियों की सफेदी दिखाई देने लगी थी।

अनेस्टे की मौत की खबर सुनकर हर शख्स को बहुत दुःख हुआ। लवीना की हालत देखी नहीं जाती थी। किसी को भी यकीन नहीं था कि उसने खुदकुशी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

की होगी, क्योंकि वो अपनी जिंदगी से बहुत संतुष्ट था। फिर वो एक जिंदादिल जवान था। उसे किसी ने कत्ल कर दिया होगा यह बात भी अविश्वसनीय थी क्योंकि लोगों को इस दुनिया में उसका कोई दुश्मन दिखाई नहीं देता था। अनेस्टे निहायत हँसमुख और मिलनसार शख्स था किसी को उसकी जान से क्या बैर हो सकता था?

इस दृष्टिकोण से पुलिस के लिए अनेस्टे की मौत एक काफी मुश्किल पहेली बन गई थी। लाश के ऊपरी धड़ में से खाल और गोश्त की काफी मात्रा गायब हो गई थी, इसलिए किसी चोट वगैरह का निशान भी नहीं था। अलबत्ता सिर का पिछला हिस्सा पिचका हुआ था जिससे अंदाजा होता था कि उससे मारपीट की गई थी।

जांच अधिकारी ने लॉसन का नाम संदिग्धों में शामिल कर लिया था। उसके घर की तलाशी हुई। पुलिस ने कोना-कोना छान मारा, मगर कहीं से कोई हथियार नहीं मिला! न कोई कपड़ा वगैरह जिस पर खून के या किसी प्रकार के दूसरे निशान मौजूद हों।

कुछ दिन और छानबीन हुई मगर कोई सुराग न मिला, आखिरकार पुलिस ने तफ्तीश बंद कर दी।

पति के बिछड़ने के बाद लवीना के लिए वक्त गुजारना दूभर हो गया था, अब उसका एस्टेट वाले मकान में और ठहरना बेकार था।

उसने जागीदार मिस्टर गोगल से इस बात का जिक्र किया तो उन्होंने लवीना के इस फैसले का विरोध किया और आखिर में उसे एक फार्म की सुपरवाइजर नियुक्त कर दिया गया। लवीना भी राजी हो गई।

एक दिन लवीना कार में सवार फार्म की तरफ जा रही थी कि अचानक झाड़ियों में से लॉसन प्रकट हुआ और कूद कर रास्ते के बीचो-बीच आ खड़ा हुआ।

"लवीना-लॉसन।" लॉसन मुंह में बोला-"जो कभी लवीना अनेस्टे थी।"

"क्या बात है लॉसन?" लवीना ने रुष्ट लहजे में पूछा।

"कुछ नहीं मिसेज लवीना...लासन।" वो कंधे झटकता हुआ लवीना की तरफ बढ़ा-"दरअसल मैं आपसे एक जरूरी बात करना चाहता हूं।"

"कहो, क्या माजरा है?"

"कोई ऐसी बात नहीं मिसेज लॉस...अनेस्टे।" वो हकलाने लगा-"ब...बस यों ही आपसे बातें करने को जी चाहा। देखिये न, आप अकेली हैं, सारा दिन गुजारना कितना मुश्किल होगा आपके लिए लवीना डियर...मैं तुमसे...।"

"शटअप यू इडियट।" और लवीना ने कार स्टार्ट कर दी।

"हूं...। तो अभी सबक नहीं सीखा तुमने?" लॉसन धुआं और धूल उड़ाती

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कार के पीछे चीख कर कहने लगा। लॉसन का आखिरी फिकरा लवीना के दिल में नश्तर बनकर घुसा। उसका दिमाग तेजी से काम करने लगा।

'तो क्या अनेस्टे के कत्ल के पीछे मुझे कोई सबक सिखाने की मंशा थी? क्या लॉसन ने ही अनेस्टे को कत्ल किया है?' लवीना ने सोचा।

और फिर उसके जेहन में अतीत की कई घटनाएं घूम गईं। उसे याद आया कि स्कूल के जमाने में भी लॉसन उसकी और अनेस्टे की दोस्ती से कितना जला करता था। फिर उसे याद आया कि शादी के मौके पर दावत दिए जाने पर भी लॉसन किसी भी रस्म में नहीं आया था। जब वो कार में सवार कस्बे की तरफ जाते थे तो कार के रियर-व्यू-मिरर में से लॉसन पीछे गुस्से से कुछ बड़बड़ाता नजर आता था।

सबसे अहम बात जो लवीना को याद आई थी कि वो यह कि अनेस्टे की मौत के दिन लॉसन वो आखिरी आदमी था जो अनेस्टे को मिला था और लॉसन के कहने पर ही वो नदी की तरफ गया था।

'यकीनन लॉसन ही मेरे सुहाग का कातिल है।" लवीना के मुंह से निकला–"अब यह सोचना होगा कि अनेस्टे की मौत के बाद लवीना पर आसानी से कब्जा किया जा सकता है। हूं...।' लवीना ने सिर झटक दिया।

उस दिन लवीना फार्म में दिल लगाकर काम नहीं कर सकी, वो दोपहर के वक्त वापस चली आई। जब उसकी कार लॉसन के बागों के सामने से गुजर रही थी, तब फिर वही सुबह वाला हादसा पेश आया।

अब लवीना ने सोचा कि लॉसन के साथ दो-दो हाथ कर ही लेने चाहिएं वर्ना यह फटे जूते की तरह फैलता ही चला जाएगा।

"लॉसन डियर!" लवीना सोच-समझ कर बड़े रोमांटिक अंदाज में बोली–"तुम यों मेरा रास्ता क्यों रोक लेते हो?" लॉसन लवीना की तरफ से इतने अपनेपन वाले अंदाज से स्तब्ध रह गया। यह अंदाज उसके लिए अनपेक्षित था। उसने सोचा भी नहीं था कि लवीना इतनी जल्दी उसकी तरफ आकर्षित हो जाएगी। वो जज्बात की रो में बगैर सोचे-समझे बोल उठा–

"डार्लिंग लवीना, उस कमीने अनेस्टे ने तो तुम्हें मुझसे नाजायज तौर पर छीन लिया...तुम मेरी हो।" लवीना आगे कुछ न सुन सकी, उसमें ताव ही कहां था! अब सारा मामला खुल गया और असलियत सामने आ गई थी।

"बंद करो यह बकवास।" वो बिगड़ते हुए बोली–"मुझे पहले से ही शक था, तुम्हारी बातों से वो शक यकीन में बदल गया है।" कहते हुए लवीना कार से उतरी और लॉसन का गिरेबान पकड़कर बिफरी हुई शेरनी की तरह गरजी–

"बता, तूने ही मेरा सुहाग उजाड़ा है? खामोश क्यों खड़ा है कमीने, बुजदिल? तू ही मेरे अनेस्टे का कातिल है। तुझे शुरू से ही उससे चिढ़ थी। वो सारी जिंदगी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

तुम्हें हटाता रहा। खेलों में, पढ़ाई में... नौकरी में और सबसे बढ़कर यह कि उसने मुझसे शादी कर ली। तुम यह हकीकत बर्दाश्त न कर सके, तुम इर्ष्या की आग में जलते रहे।" यहां तक कि लवीना कुछ आगे न बोल सकी... उसकी आवाज ने उसका साथ छोड़ दिया। इसके साथ ही लॉसन के गिरेबान पर उसकी पकड़ भी ढीली पड़ गई।

लॉसन का जिस्म थर-थर कांप रहा था, उसने कुछ कहने के लिए होंठ खोले ही थे कि लवीना ने उसे सख्ती से डांट दिया–

"चुप रह कमीने, मैं तेरी जुबान से सफाई का एक शब्द भी नहीं सुनना चाहती। तुमने पहले अनेस्टे के कुत्ते को मार डाला, ताकि अनेस्टे को सुनसान जगह ले जाते हुए तुम्हें कुत्ते की तरफ से कोई खतरा न रहे। अब तुम समझते हो कि तुम कानून की पकड़ से बच निकले हो, मगर तुम मुझसे बचकर कहां जाओगे? जानते हो मेरे खानदान में काले जादू और तंत्र-मंत्र की परम्परा चली आ रही है। मैं भी अपनी दादी से यह विद्या सीख चुकी हूं। मैं सब जान गई हूं। अब इंतजार करो उस दिन का जब वही खूनी डंडा तुम्हारी खोपड़ी के टुकड़े-टुकड़े कर देगा और तुम्हें मौत के घाट उतार देगा।"

लवीना लॉसन को मानसिक यंत्रणा के खतरनाक दोराहे पर खड़ा छोड़कर वापस चली गई।

रातभर लॉसन एक पल के लिए भी नहीं सो सका था। यों लगता था कि जैसे उसके सुख-चैन की सारी लगामें लवीना ने खींच ली हों और उसे कटे सिर वाले मुर्गे की तरह तड़पने के लिए अकेला छोड़ दिया गया हो।

अगले दिन शाम लॉसन घर में ही बंद रहा। सूरज डूबने केसे कुछ देर पहले वो अपने बागों की तरफ गया और नौकरों को कुछ हिदायतें देकर वापस आ गया।

उसका जेहन अंधेरे रास्ते की तरह उलझ चुका था और परेशान कर देने वाली सोचों का बोझ हर पल बढ़ता जा रहा था।

अचानक उसकी निगाह सरकंडों की झाड़ियों पर पड़ी, किसी के सरकने की आहट सुनाई देने लगी। उसने गौर से देखा तो उसके मुंह से चीख निकल गई।

झाड़ियों के बीच अनेस्टे खड़ा था।

वही चौड़ा-चकला सीना, तन पर सूट, सिर पर हैट, आंखें अधखुली और अजीब-सी हालत में! लॉसन कांप गया–

"ओह मेरे खुदा, यह जिंदा लाश यहां कैसे आ गई?"

उसने पीछे मुड़कर अपने बागों की तरफ देखा, मगर उसे यों लगा जैसे बाग बीसियों मील की दूरी पर हों। घर इतनी दूर कि अगर उड़कर भी जाए तो इस शैतानी जगह से बच न सके।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

करीब था कि वो बेहोश होकर गिर जाता, कि तभी सरकण्डों पर किसी कार की हैडलाइट की रोशनी पड़ी। यह कार करीब से गुजर रही थी। लॉसन वहशत में जोर से उछला! मगर अगले ही पल उसकी बेचैनी दूर हो गई-

"अरे...यह तो पुतला है। विजूका। एक ऐसा डंडा, जिसे कपड़े पहनाकर खेतों में परिंदों को भगाने के लिए खड़ा कर दिया जाता है।"

"हूं...। तो क्या यही वो कलाा जादू था जिसका नाम लेकर लवीना मुझे धमका रही थी? उसकी ऐसी-तैसी...मगर ऐसा क्यों लग रहा है जैसे कोई बाहरी ताकत मुझे तबाह करने पर तुली हुई है?" दहशत से एक बार फिर लॉसन का रोम-रोम कांपने लगा।-

उसके बाद दो दिन तक लॉसन को घर से बाहर निकलने की जुर्रत न हो सकी। तीसरे दिन सुबह सवेरे वो अपने बागों का जायजा लेने बाहर निकला। उसने बहुत कोशिश की कि बीती रात की घटना उसके जेहन में न आने पाए। मगर ज्यों-ज्यों वो सरकंडे करीब आते जा रहे थे, उसके इरादे ढीले पड़ते जा रहे थे।

वो अभी तम्बाकू के खेतों के पास था कि अचानक उसकी आंखों के सामने एक साया-सा नाचने लगा और फिर वही हुआ जिससे उसका दो रात पहले वास्ता पड़ा था।

खेत के किनारे पर खड़े एक पेड़ की शाख से अनेस्टे का पुतला लटक रहा था और अपनी पहली जगह से खिसक कर लॉसन के मकान की तरफ करीब पचास गज आगे आ चुका था।

लॉसन ने होश संभाले और हिम्मत करके आगे बढ़ा। पुतला उसी रात वाला लिबास पहने हुए था अलबत्ता कोट के सामने एक काले रंग की धातु की प्लेट लटकी हुई थी। जिस पर-

"मुझे कत्ल किया गया है।" ये शब्द साफ लिखे गए थे।

लॉसन ने जल्दी से अपने पैरों पर उछल कर पुतले की हुक पकड़ ली और उसे खींच लिया। पुतला धम्म से जमीन पर गिर पड़ा।

लॉसन ने पुतला तो गिरा दिया था, मगर अब उसे यह खौफ खाए जा रहा था कि उसने पुतला क्यों गिरा दिया? मुमकिन है लवीना ने उसे फांसने के लिए यह तरीका अपनाया हो। मगर यह तो अनेस्टे की आत्मा है वो दिन-प्रतिदिन उसके मकान की तरफ सरक रही है।

लॉसन किस्मत के हाथों मजबूर होकर एक ऐसी जगह पहुंच गया था जहां इंसानी बेहद शिकस्त और नाकामी के कारण जिंदगी से पलायन के सिवा कुछ नहीं सोच पाता। उसने दूसरे-तीसरे दिन भी घर से निकलना छोड़ दिया।

एक दिन तीसरे पहर उसने अपने मकान के पिछवाड़े की खिड़की खोली,

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

आसमान पर बादल छाए हुए थे, सर्द हवाओं ने इर्द-गिर्द के माहौल को सुहावना बना दिया था। उसका दिल चाहा कि कमरे की घुटन से निकलकर कुछ देर के लिए बाहर घूम आए।

खरामा-खरामा चलता हुआ लॉसन घर से बाहर निकल गया। माहौल के असर ने उसकी तबीयत का बोझिलपन कुछ दूर कर दिया और वो एक लोकगीत गुनगुनाने लगा। मगर इसे क्या कहिए कि वो कुदरत की दयालुता से ज्यादा आनंद नहीं उठा सका। बागों की तरफ वाले पहले ही खेत में खड़ा अनेस्टे का पुतला उसे घूर रहा था।

"उफ... यह कमबख्त यहां तक पहुंच गया है, मेरे घर के इतने करीब...।"

लॉसन झुंझलाहट में सरपट भागा और अगले ही पल पुतले के सिर पर जा पहुंचा। वो डंडे को जमीन से उखाड़ने के लिए जरा-सा झुका हुआ ही था कि उसे पीछे से ललकार सुनाई दी–

"रुक जा बुजदिल लॉसन!" यह लवीना की आवाज थी–"तुम अनेस्टे की आत्मा से छुटकारा पाना चाहते हो... मगर याद रखो, कभी कामयाब न हो सकोगे। तुम्हारा अंजाम करीब है... सिर्फ चालीस गज के फासले पर।"

लॉसन के जिस्म में खौफ की एक सर्द लहर दौड़ गई और उसके हाथ-पांव शिथिल होने लगे... वो हिम्मत करके पीछे मुड़ा, मगर वहां कोई नहीं था।

रात को वो बगैर कुछ खाए-पिए ही सो गया। उसने ख्वाब में देखा, अनेस्टे के सैकड़ों पुतले कहकहे लगाते खौफनाक अंदाज में उसकी तरफ बढ़ रहे हैं और उनके पीछे बैकग्राउंड में लवीना के कहे फिकरों की गूंज है जो माहौल को और भी वहशतनाक बना रही है।

कुछ देर यह मंजर बरकरार रहा। फिर अनेस्टे के पुतले बैकग्राउंड में चले गए और लवीना का चेहरा खौफनाक तरीके से फैलने लगा। अब वो एक खूबसूरत औरत की बजाय चुड़ैल नजर आ रही थी।

सामने एक काली मेज पड़ी थी जिस पर पीतल के दो कटोरे रखे हुए थे और उनमें से अगर-लोबान की खुशबू फूट रही थी, करीब ही किस्म-किस्म की जड़ी-बूटियां पड़ी हुई थीं उनके बीच में एक खौफनाक पुतला रखा हुआ था, बिल्कुल अनेस्टे की शक्ल का।

ज्योंहि लवीना की नजर लॉसन पर पड़ी, उसने उंगली से पुतले को इशारा किया। लॉसन ने देखा कि लवीना का इशारा पाते ही पुतला धीरे-धीरे उसके मकान की तरफ सरकने लगा है।

उसने सोचा–'यह खौफनाक पुतला कुछ ही देर में मेरे मकान तक पहुंच जाएगा और फिर...।"

लॉसन जोर से चीखा और लवीना की मिन्नत-सलामत करने लगा–

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"म...मुझे...माफ कर दो लवीना...म...मैं तुम्हारे सुहाग की बर्बादी का जिम्मे...दार हूं...मगर...मगर इसका मतलब यह तो नहीं कि तुम मुझे भी खत्म...खत्म कर डालो...म...मैं तुमसे...।"

शब्द लॉसन का साथ न दे सके, और लवीना ने जोरदार कहकहा लगाया और बोली–

"बस डर गए बुजदिल लॉसन? अभी तो अनेस्टे का पुतला तुम्हारे मकान की दहलीज तक ही। पहुंचा है...उस वक्त के बारे में सोचो जब तुम्हारी गर्दन उसके पंजों में होगी?"

"नहीं...नहीं, मैं इस कागजी पुतले से डर नहीं सकता...मैं...।"

"बुजदिल, कमीने। यह कागजी पुतला नहीं, इसमें अनेस्टे की आत्मा समा गई है और कुछ ही क्षण में तुम्हारी गर्दन पर पहुंचकर वो अपने इंतकाम की आग बुझाएगी, सिर्फ कुछ क्षण इंतजार करो, तुम्हारा अंजाम बेहद करीब आ चुका है।"

और फिर लॉसन को यों महसूस हुआ जैसे कमरे की चारों दीवारें सिकुड़ रही हैं और उसका दम घुट रहा है। वो चीखें मारता हुआ जाग उठा और दहलीज पर खड़ी अनेस्टे की आत्मा से बचने के लिए वो तेजी से मकान के पिछले दरवाजे की तरफ़ भागा।

जैसे ही उसने दरवाजा खोला, एक खौफनाक चीख उसके मुंह से निकल गई और वो निढाल होकर वहीं गिर पड़ा–

"अनेस्टे...अनेस्टे...इतना गला न दबाओ...गला न दबाओ...मेरी...मेरी सांस रुक रही है...मैं...मैं मर रहा हूं...मर रहा हूं...मैं...।"

सुबह के वक्त लोगों ने देखा कि लॉसन की लाश उसके मकान के सामने पड़ी है और कुत्ते उसे नोच रहे हैं। अनेस्टे की आत्मा ने अपने शरीर के कातिल से बदला ले लिया था।

□□□

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

साउथ अफ्रीकन कहानी

गोदने

कमरे की दहलीज में एक बुढ़िया बैठी हुई थी। उसकी नाक के नथुने बंद थे और उनमें पिघली हुई मोम जमी हुई थी, उसके होंठ भी किसी तार से सिले हुए थे और आंखें भी, कान भी सी दिए थे किसी ने।

"अंदर आकर कमरे में बैठ जाओ, मैं यहां अकेली हूं।"

बुढ़िया के बंद होठों से साफ आवाज निकली थी, जैसे ही फिल वहां पहुंचा था। जबकि वो न देख सकती थी, न सुन सकती थी।

सीटी जोर से बजी, और विलयिम फिलिप्स ने अपना प्लेटफार्म संभाल लिया। वो दोनों हाथ सीने पर बांधे खड़ा था और इर्द-गिर्द गर्मियों की रात फैली हुई थी। वो अकेला ही किसी भीड़ से कम नहीं था। उसका सीना देश की उत्तर-पूर्वी सभ्यता का जीता-जागता नमूना था। जहां रहस्यमय साये घूमते थे, अजगर फुंफकारते हुए रेंगते थे। उसके मांसल सीने में हजारों जंगल थे, उसकी ठोढ़ी का गढ़ा शैतानी आत्माओं का निवास था। जहां खौफनाक चेहरे वाली चीजें अपनी तमाम खौफनामी के साथ देखी जा सकती थीं, घनी झाड़ियों से लाखों झांकती आंखें अजीब-सा मंजर पेश करती थीं।

उसने अपने खतरनाक प्लेटफार्म से नीचे की तरफ देखा, बुराई से भरी हुई हरियाली के बाद उसे अपनी पत्नी लिजा दिखाई दी, जो कि ईसाई थी। वो वहां से काफी फासले पर टिकेट फाड़ने में व्यस्त थी। उसकी निगाहें गुजरने वाले आदमियों को देख रही थीं।

आज से सालभर पहले जब वो मैरिज रजिस्ट्रार के ऑफिस में अपनी शादी रजिस्टर्ड करवाने गया था तो उसकी त्वचा बेदाग और सफेद थी। उसने अपने जिस्म पर एक निगाह डाली और लरज कर रह गया...वो बिल्कुल किसी रंगे हुए कैनवेस की तरह था, रात की हवाओं से कांपता हुआ।

यह सब कुछ कैसे हुआ था? इसकी शुरूआत कब और कैसे हुई थी? इसकी शुरूआत पहले बहस से हुई थी। फिर उसका मोटापा आड़े आया था, उसके बाद तस्वीरें बनी थीं। वो गर्मियों की रातों में लड़ने-झगड़ने लगे थे, वो हर वक्त चिल्लाती रहती थी।

उसकी खुराक थी कि बढ़ती ही जा रही थी। वो हर वक्त भूख महसूस

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

करता था और फिर बहुत ज्यादा खाने ने ही यह हालत कर दी थी कि उसका वजन बहुत ज्यादा बढ़ गया था। जिस्म पर चर्बी की तहें चढ़ गई थीं।

फिर शादी के ग्यारहवें महीने लिजा ने एक दिन उसे साफ-साफ शब्दों में कहा था–

"तुम आटे के बोरे की तरह मोटे और थुलथुल हो गए हो।"

यह उसी दिन की बात है कि सर्कस के मालिक ने उसे बुलाकर एक महीने की तनख्वाह उसके हाथ पर रखी थी और कहा था–

"मुझे बेहद अफसोस है फिलिप्स! तुम बेहद मोटे हो गए हो और मेरे लिए बेकार हो गए हो।"

"तुम मुझे अपनी नुमाइश का मोटा आदमी बनाकर तो पेश कर ही सकते हो।"

"हमारे पास मोटा जोकर पहले से ही है। फिर ऐसे लोग सैकड़ों की तादाद में सस्ते दामों में मिल जाते हैं।" बॉस ने उसे ऊपर से नीचे की तरफ देखते हुए कहा था–"वैसे हमारे पास तस्वीरी आदमी नहीं है। स्मिथ के मरने के बाद यह जगह खाली हो गई थी और अभी तक खाली ही है।"

ये बातें महीना भर पहले की थीं। सिर्फ चार हफ्ते गुजरे थे। उसे बताया गया था कि देश के एक पिछड़े हुए इलाके में एक औरत रहती है जो जिस्म पर तस्वीरें बनाने में अपना सानी नहीं रखती। उसने यह भी सुना कि उस औरत तक पहुंचने के लिए उसे कच्चे रास्ते पर चलना होगा। नदी के किनारे से फिर बायीं तरफ मुड़ना होगा। एक मील चलने के फिर बाईं तरफ जाने वाली पगडंडी उसे...।

□□□
□□□

बुढ़िया अपनी जगह से नहीं हिली थी, उसके दोनों हाथ एक-दूसरे पर यों रखे हुए थे जैसे धातु की कोई शै हो, जंग खाई हुई। उसके पैर नंगे थे, खुश्क और वीभत्स भी।

बुढ़िया के नजदीक गोदने के दूध के कटोरे रखे हुए थे, कई रंगों से भरे हुए। लाल, हल्के आसमानी, हरे, पीले और भूरे रंग के कटोरे। वो बुढ़िया किसी दुष्टात्मा की तरह बैठी हुई थी। सिर्फ उसका मुंह ऐसी चीज था जो सिला हुआ नहीं था। फिर वो मुंह हिला था–

"अंदर आकर बैठ जाओ। मैं यहां अकेली हूं।"

मगर वो खड़ा रहा था।

"तुम तस्वीरों के लिए आए हो।" बुढ़िया ने बुलंद आवाज में कहा था–"मेरे पास तस्वीरें हैं, मैं पहले तुमको वो दिखाऊंगी।" उसने अपना एक हाथ खोल कर उंगली से इशारा किया और चीखी थी–

"लो, यह देखो।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

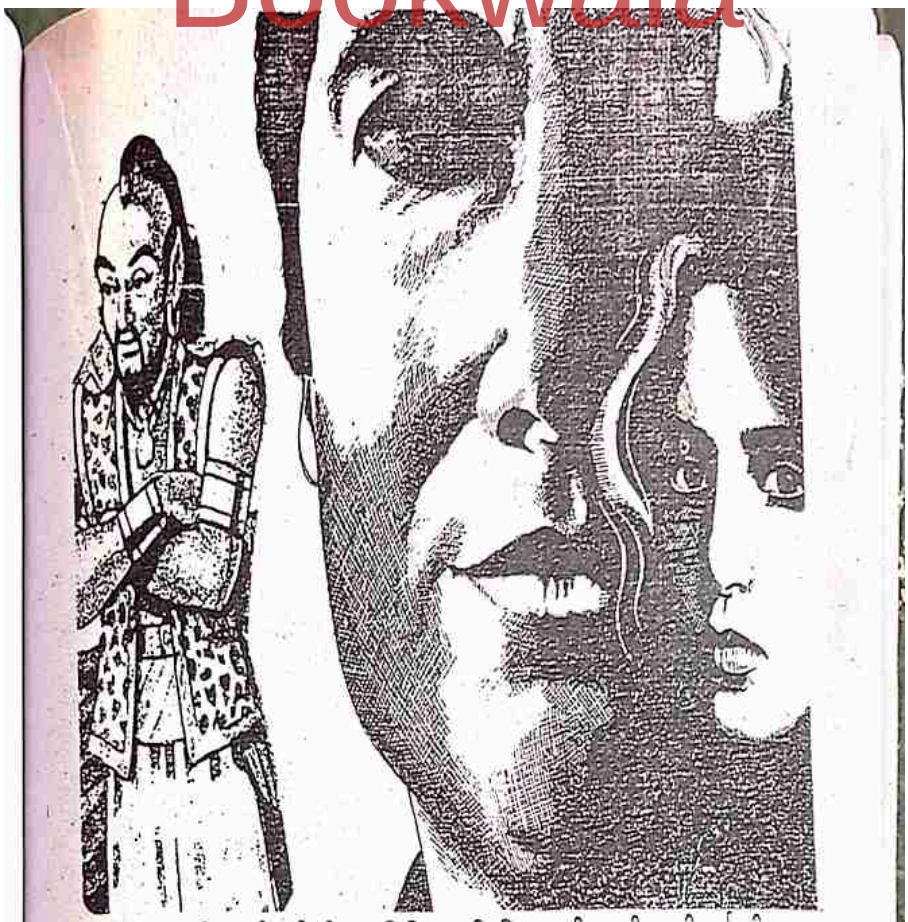

उसकी खुली हथेली पर विलियम फिलिप्स की तस्वीर गुदी हुई थी।

"यह तो मैं हूं।" कहकर वह भागने लगा।

"भागो नहीं।" बुढ़िया ने उसके कदमों की चाप सुनकर आवाज दी और उसे दरवाजे पर ही रुक जाना पड़ा था, ठिठक कर। उसकी पीठ बुढ़िया की तरफ थी और हाथ दरवाजे पर।

"तुम्हारे हाथ पर मेरी तस्वीर है।"

"यह पचास साल से इस पर गुदी हुई है।" बुढ़िया ने उंगली से हथेली पर गुदे नक्श सहलाते हुए धीरे से कहा था।

"अच्छा!" विलियम दोबारा उसके करीब चला आया। उसने झुक कर तस्वीर देखी–"वाकई बहुत पुराना गोदना है, मगर कैसे?" वो हैरान लहजे में बोला था–"न तुम मुझे जानती हो, न मैं तुम्हें। फिर तुम्हारी तो आंखें भी सिली हुई हैं।"

"मुझे तुम्हारा इंतजार था।" बुढ़िया उसकी बात नजरअंदाज करते हुए बोली–"और कई दूसरों का भी।" फिर उसने अपने बाजू और पिंडलियां दिखाई थीं–"ये हैं उन सबकी तस्वीरें। इनमें से कई मेरे पास आ चुके हैं और कईयों को अभी आना है, अगले सौ सालों में–और तुम आ ही गए हो।"

"तुम्हें कैसे पता चला कि आने वाला मैं ही हूं? तुम तो देख भी नहीं सकतीं!"

"मैं तुम्हें महसूस कर रही हूं। अपनी कमीज को खोल दो, तुम्हें मेरी जरूरत है। डरो मत। मेरी सुईयां साफ-सुथरी हैं। जब मैं तुम्हारी चमड़ी पर तस्वीरें उभारूंगी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

तो उसके बाद मुझे इंतजार होगा... दूसरे आने वालों का, जब तक कि वो मेरा पता न पा लें।" उसने थोड़ा रुक कर कहा था–"और फिर शायद सौ सालों बाद मैं उन जंगलों में चली जाऊं जो करीब ही हैं। फिर मैं किसी से नहीं मिलूंगी।"

विलियम ने अपनी कमीज उतार दी।

"मैं अतीत से वाकिफ हूं। मुझे वर्तमान का भी पता है और मैं भविष्य के अंधेरों को चीरकर देखने में भी सक्षम हूं।" उसकी सरगोशी उभरी थी और उसकी सिली हुई आंखें सामने खड़े शख्स पर जम गई थीं–"यह सब कुछ मेरे गोश्त पर मौजूद है, मैं उसे तुम्हारे जिस्म पर गोद दूंगी। पूरी दुनिया में तुम इकलौते आदमी होगे, जिसे हकीकी तौर पर तस्वीरों वाला आदमी कहलाने का गौरव हासिल होगा। मैं तुम्हारे भविष्य की तस्वीरें बखशूंगी। तुम्हारा भविष्य तुम्हारी चमड़ी पर होगा।"

और फिर गोदने की सुईयों ने अपना काम करना शुरू कर दिया था।

□□□

□□□

और उसके बाद विलयम दोबारा मेले की तरफ लौट पड़ा था। उस पर एक नशा-सा छाया हुआ था और वो रह-रह कर एक खौफ-सा महसूस कर रहा था।

वो सोच-सोच कर हैरान हो रहा था कि उस बुढ़िया ने कितनी तेजी से उसके जिस्म की सारी त्वचा को रंग-बिरंगी तस्वीरों से भर दिया था। वो यों महसूस कर रहा था जैसे वो किसी ऑफसेट प्रेस के रोलरों तले से गुजरा हो।

"मुझे देखो।" उसने लिजा से मिलते ही चीख कर कहा था और अपनी कमीज उतार दी थी। लिजा ने अपनी ड्रेसिंग टेबल पर से पलट कर विलियम को देखा था। उस वक्त वो हल्के नीले रंग के बल्ब के नीचे खड़ा था, जो कारवां में लगे तम्बू में जल रहा था।

फिर विलियम ने अपना भारी सीना फुलाकर दिखाया था जहां जलपरियां, इंसानी चौपाए, चुड़ैलें सीना फूलने से यों चमकी थीं जैसे जिंदा हो गई हों। उसके जिस्म पर नये गोश्त पर बिच्छू, केकड़े, भंवरे और न जाने कौन-कौन-से रेंगने वाले कीड़े बने हुए थे। वो सब उसके थुलथुले बदन के जरा-सी हरकत के साथ ही इस तरह हिलने लगते थे जैसे अचानक जिंदा हो गए हों! प्रकट हो रहे हों, छुप रहे हों, झांक रहे हों, बिदक रहे हों।

"ओह मेरे खुदा!" लिजा की चीख निकल गई थी–"तुम एक खौफनाक चीज बन गये हो विलियम।" फिर वो घबराकर तम्बू से निकल भागी थी।

एकांत में उसने आइने के सामने रुक कर खुद को देखा था और सोचा था–

'आखिर मैंने ऐसा क्यों किया? क्या नौकरी के लिए? हां शायद इसीलिए, या फिर उस गोश्त के इस्तेमाल के लिए जो मुझ पर मनों के हिसाब से लदा हुआ है।' वो इस हकीकत को रगों, चेहरों और आकारों की मदद से छुपा देना चाहता था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"तुम इन दो गोदनों को खुद कभी न देखना।" बुढ़िया ने चेतावनी दी थी।

"क्यों?"

"इन तस्वीरों में भविष्य छुपा हुआ है। अगर तुमने इन्हें कभी देख लिया तो ये बिगड़ जाएंगी, अभी अधूरी हैं ये।" बुढ़िया ने कहा था–"मैंने तुम्हारे जिस्म पर रंग बिखेर दिए हैं, तुम्हारा... पसीना आहिस्ता-आहिस्ता डिजाइन उभार देगा, यानि भविष्य को तुम्हारा पसीना और तुम्हारे विचार उन्हें जन्म देंगे।"

बुढ़िया का खाली मुंह मुस्कुराया था–"अगले हफ्ते तुम इश्तहार दे देना। आओ-आओ देखो, दुनिया का इकलौता तस्वीरों वाला इंसान! इसके जरिये तुम काफी दौलत कमा सकोगे। अपनी प्रदर्शनी के लिए तुम टिकेट लगा देना, तुम इस वक्त किसी आर्ट गैलरी की तरह हो रहे हो। लोगों से कहना कि तुम्हारे गोश्त पर ऐसी तस्वीरें बनी हुई हैं जो आज तक किसी ने नहीं देखी होंगी। एक ऐसी तस्वीर जो आज तक किसी ने न बनाई होंगी, ये तस्वीरें बिल्कुल जिंदा ही लगेंगी और यह भविष्य पर से पर्दा हटाने वाली भी हैं। जाओ और जाकर ढोल बजा दो कि अब तुम खुद पर से पर्दा हटाने जा रहे हो।"

"यह अच्छा ख्याल है।"

"मगर देखो, पहले वही तस्वीरें दिखाना जो तुम्हारे सीने पर हैं। पीठ वाली तस्वीरें बचाकर रखना। उस पर मैंने कपड़ा चिपका दिया है।" बुढ़िया ने कहा था–"वे दूसरे हफ्ते के लिए हैं। समझ गए न?"

"बिल्कुल, मैं तुम्हारा बेहद अहसानमंद हूं। बताओ तुम्हारी सेवा में क्या पेश करूं?"

"कुछ नहीं।" बुढ़िया ने कहा था–"मेरी कला ही मेरा मुआवजा है। अब जाओ और देखो, आइंदा कभी इधर नहीं आना, गुडबाई।"

□□□

□□□

और अब यह प्रदर्शन की घड़ी थी। हवा में रंगीन बैनर लहरा रहा था–

दुनिया का इकलौता तस्वीरों वाला आदमी, आज रात स्तब्ध कर देने वाला प्रदर्शन।

टिकट सिर्फ एक शिलिंग!

यह शनिवार की रात थी, टैंट के इर्द-गिर्द रोशनियां बिखरी हुई थीं, भीड़ बेचैनी से इंतजार कर रही थी।

"सिर्फ कुछ...कुछ सैकेण्ड बाद।" बॉस ने मेगाफोन में बोलते हुए कहा–"खेमे के अंदर, बिल्कुल मेरे पीछे, हम उस तस्वीर का प्रदर्शन करेंगे जो तस्वीरों वाले आदमी के सीने पर बनी हुई हैं। दूसरे शनिचर की रात ठीक इसी जगह...इसी वक्त हम उस तस्वीर से नकाब उतारेंगे जो तस्वीर वाले आदमी की पीठ पर बनी हुई हैं। खुद देखिए, अपने दोस्तों को दिखाइए...बीवी-बच्चों को लाइये।" फिर वातावरण में ढोल की आवाजें गूंजने लगी थीं, जोर-जोर से।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

विलियम फिलिप्स जल्दी से जाकर छुप गया था। जिस वक्त टैंट में दर्शकों का रेला आया, वो अपने प्लेटफार्म पर खड़ा हो गया था। मन-ही-मन वो संतुष्ट था। वातावरण में अब जॉज संगीत बिखर रहा था। लोगों में उसने अपनी बीवी को देखने की कोशिश की, और वो उसे नजर आ गई। वो भी औरों की तरह उसे देखने आई थी।

उसकी आंखों में अजनबीपन था और चेहरे पर उत्सकुता और तनाव के भाव थे। कुछ भी हो, वो बहरहाल उसकी बीवी थी। वो यह देखकर बहुत खुश हुआ कि वो इस वक्त इतने सारे लोगों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

उसके चारों तरफ और भी टैंट थे जहां जादूगर के खेल दिखा रहे थे, जलपरियां मौजूद थीं। मगर विलियम के टैंट की तो बात ही कुछ और थी, यहां तिल धरने की जगह नहीं थी।

"भाइयों और बहनों! होशियार।" ढोल जोर से बजा, विलियम ने अपना लबादा जमीन पर गिरा दिया। अचानक भिनभिनाहटें एकदम खामोश हो गईं, तेज रोशनी में उनकी आंखें तस्वीरों वाले आदमी पर जा टिकी थीं जहां कई दरिंदों के गोल चल रहे थे, कहीं सुर्ख आग और नीली आग जल रही थी। ढोल की आवाज यों लग रही थी जैसे दरिन्दों के मुंह से चिंघाड़ें निकल रही हों।

ऐसा लग रहा था जैसे कोई जीता-जागता अजायबघर विलियम फिलिप्स की शक्ल में सामने आ खड़ा हुआ हो। बिजली की नीली रोशनी में वहां मछलियां तैर रही थीं, झरने बह रहे थे, पुरानी इमारतें सिर उठाए खड़ी थीं। उसकी सांसों की रफ्तार तस्वीरों में ऐसी तब्दीलियां पैदा कर रही थीं कि देखने वाली आंखें देखती ही रह जाती थीं।

यों लग रहा था कि जैसे विलियम आग के शोलों में घिरा हुआ हो और तरह-तरह के प्राणी धुएं में से निकल रहे हों।

अभी तक उसने अपने हाथ, बाजुओं और पिंडलियों की तस्वीरें ही दिखाई थीं। फिर बॉस ने अपनी एक उंगली उसके सीने पर चिपकी टेप पर रख दी। भीड़ में अचानक गहमा-गहमी शुरू हो गई।

"आप लोगों ने जो कुछ अभी तक देखा, वो कुछ भी नहीं था।" वो जोर से चीखा, फिर उसने टेप को चुटकी से पकड़कर खींच दिया। पल भर के लिए तो ऐसा लगा, जैसे कुछ भी न हुआ हो। खुद तस्वीरों वाले आदमी ने भी यही समझा था कि शायद ये तस्वीरें नाकाम साबित हुई हैं और फिर भीड़ उसे पथरा कर रह गई। भीड़ में मौजूद एक औरत ने जोर-जोर से रोना शुरू कर दिया और रोती ही चली गई।

फिर बहुत आहिस्ता से तस्वीरों वाले आदमी ने अपना सिर नीचा किया और उसकी नजर अपने नंगे सीने और पेट पर पड़ी और वहीं जम कर रह गई।

उसकी निगाहों ने जो कुछ देखा, वो उसके बाजुओं पर बने गुलाबों को कुम्हला देने के लिए काफी था। उसे यों लगा जैसे जिस्म पर उभरे हुए नक्श और निगाह

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

एकदम बेरंग और जर्जर हो गए थे। उसके हाथ अनायास बढ़े और उसकी उंगलियों ने उन तस्वीरों को टटोलना शुरू कर दिया।

विलियम किसी सूखे पत्ते की तरह कांप उठा था। उसे यों लगा जैसे वो तस्वीरें न देख रहा हो, बल्कि उसकी नजरों के सामने एक छोटा-सा कमरा है। जिसमें वो किसी और की जिंदगी का मंजर देख रहा हो। उसने लरज कर आंखें उन पर से हटा लीं। वो उन्हें देखने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

यह तस्वीर उसकी बीवी लिजा की और उसकी अपनी थी, तस्वीर में वो लिजा को कत्ल करने का काम निवटाता दिखाई दे रहा था।

एक काले, सुनसान कमरे में, हजारों आंखों के सामने एक दूर-दराज के जंगल में अपनी बीवी को कत्ल कर रहा था।

उसके मोटे मांसल हाथ लिजा की गर्दन पर जमे हुए थे, लिजा का चेहरा काला हो रहा था। यह ऐसा मंजर था कि हकीकी लगता था। भीड़ की आंखों के सामने ही वो मौत के मुंह में चली गई थी।

विलियम को टेंट घूमता हुआ महसूस हो रहा था। फिर जो आखिरी आवाज उसने सुनी, वो किसी औरत की सिसकी थी जो टेंट के एक कोने से उभरी थी और यह सिसकी जिस औरत के मुंह से निकली थी, उसका नाम लिजा था, उसकी बीवी!

❑❑❑
❑❑❑

रात को वो बिस्तर पर लेटा करवटें बदल रहा था। पसीने में नहाया हुआ। मेले की रौनकें दम तोड़ चुकी थीं, उसके करीब ही दूसरे बिस्तर पर लिजा लेटी हुई थी। वो अब खामोश थी। उसने लेटे-लेटे अपने सीने को छुआ। वहां चिपकी टेप उसे महसूस हुई, लोगों ने उस तस्वीर को दोबारा ढांप दिया था।

विलियम फिर बेहोश हो गया था। जब उसे होश आया तो उसने अपने बॉस की आवाज सुनी जो चीख रहा था–

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया कि यह तस्वीर कैसी है?"

"मुझे खुद कुछ नहीं मालूम था।" तस्वीरों वाले आदमी ने कहा।

"कमाल के आदमी हो तुम?" उसके बॉस ने कहा–"तुमने लिजा की हालत खराब कर दी है। पूरा मजमा सन्नाटे में था। आखिर तुमने यह गोदना गुदवाया किससे था?"

उसने लिजा को अपने सिर पर खड़े पाया!

"मुझे अफसोस है लिजा, मुझे यह पता नहीं था।" वो धीरे से बोला।

"तुमने यह तस्वीर जानबूझकर गुदवाई है, मुझे डराये रखने के लिए।"

"यह बात नहीं है लिजा, मुझे पता नहीं था।"

"कुछ भी हो। अब या तो वो तस्वीर रहेगी, या मैं।" लिजा ने सख्त लहजे में कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"लिजा...।"

"तुमने सुन लिया न? ये तस्वीरें खत्म करवा दो, या मुझे छोड़ दो।"

"हां फिल! तुम्हें ऐसा ही करना होगा।" उसके बॉस ने कहा।

"क्या तुम्हें नुकसान पहुंचा है? क्या लोग टिकेट के पैसे वापस मांग रहे थे?"

"यह बात नहीं है।" बॉस ने कहा–"लोग तो दूर-दूर से अब खिंचे चले आ रहे हैं। मगर मैं लालची आदमी नहीं हूं। ये तस्वीरें खत्म होनी ही चाहिएं। मुझे ऐसे भद्दे मजाक पसंद नहीं हैं।"

'मजाक... मगर यह मजाक कहां था?' वो बिस्तर पर करवटें बदल-बदल कर सोचता रहा–'वो बूढ़ी जो सौ साल से जिंदा थी और उसे सौ साल और जिंदा रहना था, ये सब कुछ उसी का कियाधरा था। लेकिन उसने आखिर ये तस्वीरें बनाईं क्योंकर? वो तो कह रही थी कि ये तस्वीरें अधूरी हैं। उसने कहा था कि इन्हें मेरे विचार और मेरा पसीना मिलकर पूरा करेंगे। तो क्या तस्वीरें अधूरी हैं? उसने कहा था कि...।'

'लेकिन...।' उसने सोचा–'मैं तो किसी को कत्ल नहीं करना चाहता, फिर यह मूर्खताभरी तस्वीरें मेरे गोश्त पर क्यों उभर आई हैं?'

विलियम ने दोबारा सीने पर हाथ फेरा, टेप तले उसे तेज गर्मी का अहसास हुआ। वो तस्वीर की आंख से खुद को लिजा को कत्ल करते देख रहा था।

'मैं उसे कत्ल नहीं करना चाहता।' उसने लिजा के बिस्तर की तरफ देख कर सोचा। कुछ पल बाद उसने खुद से पूछा–"मैं वाकई उसे मार डालना चाहता हूं?"

"क्या?" लिजा ने बिस्तर पर उछलते हुए पूछा।

"कुछ नहीं।" विलियम जल्दी से बोला–"सो जाओ।"

□□□

□□□

आदमी ने उस पर झुकते हुए एक खरखराते हुए औजार को देखा जो उसके हाथ में दबा हुआ था। फिर बोला–

"एक इंच की सफाई के दो पौंड लगेंगे। जानते हो, गोदना गोदने का मुआवजा कम होता है और गोदना खत्म करने का ज्यादा होता है।" फिर वो रुक कर बोला–"यह टेप तो हटाओ।"

तस्वीरों वाले आदमी ने आज्ञा का पालन किया। गोदना गोदने वाला पीछे हट गया।

"कमाल है, तुमने ठीक सोचा। यह सीन ऐसा ही है कि इसे मिटा दिया जाए। मैं तो उसे देख भी नहीं सकता खुदा की पनाह।" उसने अपनी मशीन संभालते हुए कहा–"तैयार हो जाओ, वैसे तुम्हें दर्द नहीं होगा।"

मेले का मालिक, यानि बॉस करीब ही खड़ा देख रहा था। पांच मिनट बाद

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उसने अपनी मशीन की सुई बदली और कुछ बड़बड़ाया। दस मिनट बाद वो सीधा हुआ और सिर खुजाने लगा।

आधे घंटे बाद वो उठ गया और उसने रोजर से कहा कि वो कमीज पहन ले। फिर उसने औजार संभाले।

"जरा रुकना।" बॉस ने कहा–"तुमने काम तो किया ही नहीं।"

"यह मुझसे नहीं होगा।" गोदने वाले ने कहा।

"क्यों? मैं तुम्हें पूरा मुआवजा दूंगा।"

"ये तस्वीरें मिटने वाली नहीं हैं। ऐसा लगता है जैसे ये इसकी हड्डियों तक उतर गई हैं।"

"मैं समझा नहीं भाई?"

"मिस्टर, मैं इस पेशे में बीस साल से हूं, मैंने ऐसा गोदना आज से पहले कभी नहीं देखा।"

"मगर यार, हम इससे छुटकारा पाना चाहते हैं!"

गोदने वाले ने मायूसी से सिर हिलाया–

"इसका सिर्फ एक ही तरीका है।"

"और वो तरीका क्या है?" बॉस ने पूछा।

"चाकू लो और सीने की पूरी खाल उतार दो।" उसके बाद वो वहां नहीं रुका और चला गया। सोमवार के दिन शो देखने वालों का शोर उनके कानों में पड़ रहा था।

"यह बड़ा भारी मजमा है।" तस्वीरों वाले आदमी यानि विलियम फिलिप्स ने कहा।

"मगर वो जो कुछ देखने आए हैं, उन्हें नहीं दिखाया जाएगा।" बॉस ने कहा–"तुम इस टेप के बगैर उनके सामने नहीं जाओगे। मैं तो उस तस्वीर की तरफ से भी फिक्रमंद हूं जो तुम्हारी पीठ पर प्लास्टर टेप से छुपी हुई है। क्यों न आज उसी को दिखाया जाए?"

"बुढ़िया ने मना किया था। वो तस्वीर हफ्ते से पहले पूरी नहीं होगी।"

तभी बॉस ने बढ़कर उसकी पीठ पर से चौड़ी टेप खींच ली।

"क्या है?" विलियम ने पूछा।

और फिर बॉस ने टेप को दोबारा चिपका दिया और बोला–

"फिल, बुढ़िया पक्की फ्रॉड थी, तुम उसके पास गए ही क्यों थे?"

"मुझे पता नहीं था कि वो कौन चुड़ैल है?"

"उसने तुम्हारे साथ धोखा किया है। तुम्हारी पीठ पर कोई तस्वीर नहीं है।"

"मगर यह तस्वीर बाद में उभरेगी।"

"ठीक है।" बॉस हँसने लगा–"आओ, दर्शकों की भीड़ तुम्हारा इंतजार कर रही है।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

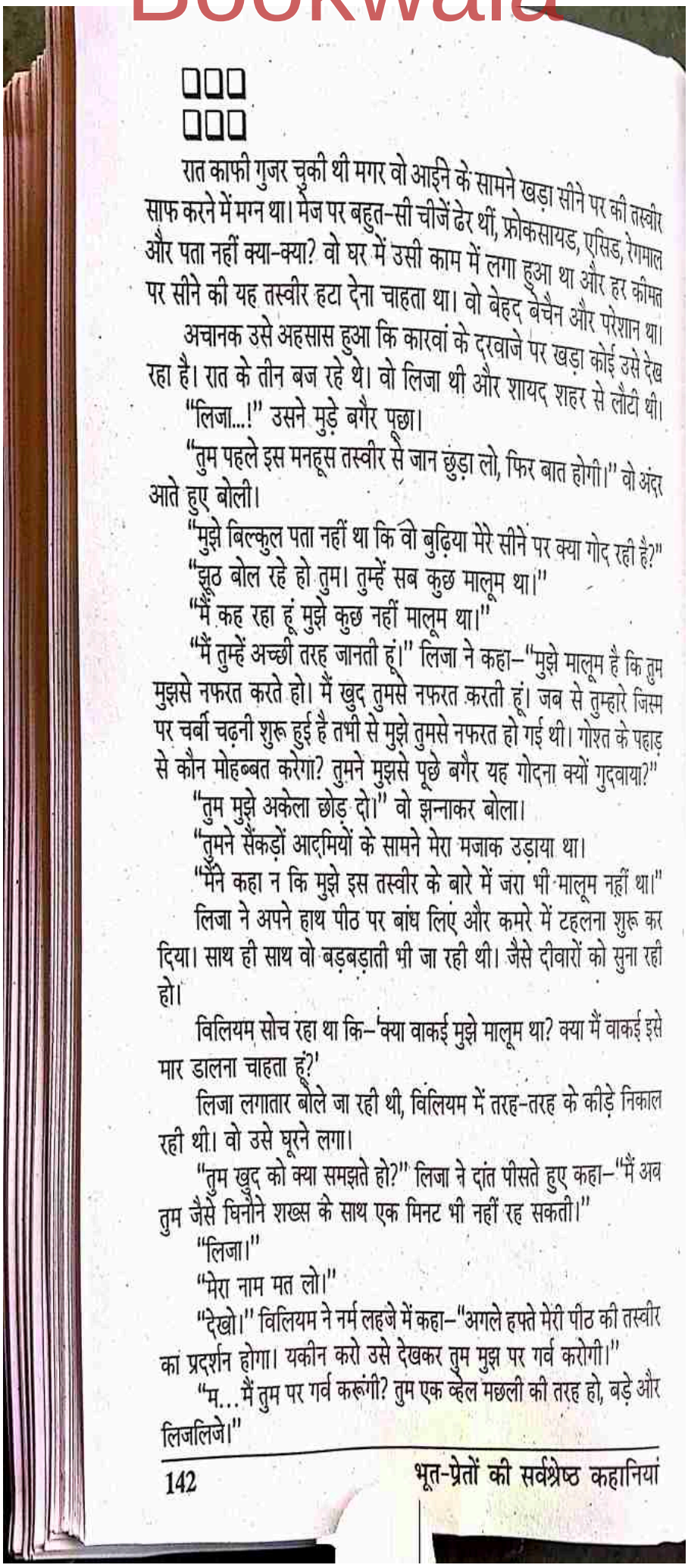

□□□
□□□

रात काफी गुजर चुकी थी मगर वो आइने के सामने खड़ा सीने पर की तस्वीर साफ करने में मग्न था। मेज पर बहुत-सी चीजें ढेर थीं, फ्रोकसायड, एसिड, रेगमाल और पता नहीं क्या-क्या? वो घर में उसी काम में लगा हुआ था और हर कीमत पर सीने की यह तस्वीर हटा देना चाहता था। वो बेहद बेचैन और परेशान था।

अचानक उसे अहसास हुआ कि कारवां के दरवाजे पर खड़ा कोई उसे देख रहा है। रात के तीन बज रहे थे। वो लिजा थी और शायद शहर से लौटी थी।

"लिजा...!" उसने मुड़े बगैर पूछा।

"तुम पहले इस मनहूस तस्वीर से जान छुड़ा लो, फिर बात होगी।" वो अंदर आते हुए बोली।

"मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि वो बुढ़िया मेरे सीने पर क्या गोद रही है?"

"झूठ बोल रहे हो तुम। तुम्हें सब कुछ मालूम था।"

"मैं कह रहा हूं मुझे कुछ नहीं मालूम था।"

"मैं तुम्हें अच्छी तरह जानती हूं।" लिजा ने कहा–"मुझे मालूम है कि तुम मुझसे नफरत करते हो। मैं खुद तुमसे नफरत करती हूं। जब से तुम्हारे जिस्म पर चर्बी चढ़नी शुरू हुई है तभी से मुझे तुमसे नफरत हो गई थी। गोश्त के पहाड़ से कौन मोहब्बत करेगा? तुमने मुझसे पूछे बगैर यह गोदना क्यों गुदवाया?"

"तुम मुझे अकेला छोड़ दो।" वो झन्नाकर बोला।

"तुमने सैंकड़ों आदमियों के सामने मेरा मजाक उड़ाया था।

"मैंने कहा न कि मुझे इस तस्वीर के बारे में जरा भी मालूम नहीं था।"

लिजा ने अपने हाथ पीठ पर बांध लिए और कमरे में टहलना शुरू कर दिया। साथ ही साथ वो बड़बड़ाती भी जा रही थी। जैसे दीवारों को सुना रही हो।

विलियम सोच रहा था कि–'क्या वाकई मुझे मालूम था? क्या मैं वाकई इसे मार डालना चाहता हूं?'

लिजा लगातार बोले जा रही थी, विलियम में तरह-तरह के कीड़े निकाल रही थी। वो उसे घूरने लगा।

"तुम खुद को क्या समझते हो?" लिजा ने दांत पीसते हुए कहा–"मैं अब तुम जैसे घिनौने शख्स के साथ एक मिनट भी नहीं रह सकती।"

"लिजा।"

"मेरा नाम मत लो।"

"देखो।" विलियम ने नर्म लहजे में कहा–"अगले हफ्ते मेरी पीठ की तस्वीर का प्रदर्शन होगा। यकीन करो उसे देखकर तुम मुझ पर गर्व करोगी।"

"म...मैं तुम पर गर्व करूंगी? तुम एक व्हेल मछली की तरह हो, बड़े और लिजलिजे।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"लिजा।" विलियम ने उसे झिड़का।

"मैं तलाक चाहती हूं।" वो चीख कर बोली–"मुझे गोश्त का पहाड़ नहीं, मर्द चाहिए, मर्द।"

"तुम मुझे नहीं छोड़ सकतीं।" विलियम दहाड़ा।

"मैं जरूर छोड़ूंगी।" वो चीखी।

"चुप रहो लिजा।" वो गरजकर बोला।

यों लगा जैसे उसके बदन पर गुदी सारी तस्वीरें कबूतर के खून की तरह सुर्ख हो गई हों। जैसे उसके बदन पर सारे सांप, बिच्छू गुस्से में आकर फुंकारने लगे हों। वो लिजा की तरफ लपका। एक इकलौते आदमी की तरह नहीं एक पूरी भीड़ की तरह।

उसके पहाड़ जैसे बदन के अंदर फेफड़े धौंकनी की तरह हरकत करने लगे थे। उसने उसे अपने मजबूत मांसल बाजुओं में किसी नन्हीं चिड़िया की तरह दबोच लिया। वो उसे मारना नहीं चाहता था, प्यार करना चाहता था। लिजा ने दोनों हाथों से उसके सीने पर मुक्के मारने शुरू कर दिए।

"मुझे छोड़ दो।" उसने नाखूनों से उसका सीना खुरचते हुए कहा।

"लिजा...लिजा! मैं तुम्हें प्यार करना चाहता हूं, डरो मत।" विलियम ने समझाते हुए कहा।

"मदद...बचाओ, मदद।" लिजा जोर से चीखी।

अचानक विलियम को गुस्सा आ गया, खून उसकी कनपटियों के अंदर ठोकरें मारने लगा। उसने दोनों हाथों से लिजा की गर्दन दबा दी। लिजा की मौत अब कुछ क्षण की ही बात थी।

❑❑❑

❑❑❑

बाहर दौड़ते हुए कदमों की चापें उभर रही थीं, विलियम ने ईंटों का पर्दा हटाया–"वहां मेले के सारे आदमी उसके प्रतीक्षक थे। उन सबके चेहरे डरावने हो रहे थे।

वो उनकी तरफ बढ़ा, उनसे बचकर निकल जाना चाहता था वो। उसे यकीन नहीं था कि ये लोग उसकी बात नहीं समझेंगे, चूंकि वो भागा नहीं था, इसलिए उन्होंने हैरत से उसे अपनी तरफ आने दिया। वो स्तब्ध खड़े थे लेकिन उनकी निगाहें विलियम पर ही जमी हुई थीं।

विलियम उनके दरम्यान से गुजरकर टेंट वाली जगह की तरफ बढ़ा। उसे कुछ पता नहीं कि कहां जा रहा है। बस वो चले जा रहा था। वो उसे देखते रहे। जब विलियम नजरों से ओझल हो गया तो उनमें हलचल पैदा हुई। उन्होंने लपक कर टेंट का पर्दा हटाया और अंदर झांका।

विलियम चला जा रहा था घास के मैदान में।

"वो उधर गया है।" किसी ने चीखकर इशारा किया।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पहाड़ी पर टार्चों और लालटेनों का एक पूरा काफिला दौड़ रहा था। दौड़ते हुए साये साथ थे। विलियम थक रहा था। वो बेहद थक चुका था, वो अब चाहता था कि उसे पकड़ ही लिया जाए।

"वो रहा।" टार्च की रोशनी सामने की तरफ फैली और किसी ने बुलंद आवाज में कहा–"आगे बढ़ो, उस कमबख्त को निकलने नहीं देना।"

तस्वीरों वाला आदमी फिर दौड़ने लगा। वो दो बार गिरा, जानबूझकर, क्योंकि वो अब बहुत थक गया था। उसका पीछा करने वालों के हाथों में लाठियां और बर्छियां भी थीं।

भयभीत होकर वो उस चौराहे की तरफ भागा, जिसमें एक स्ट्रीट लाइट जल रही थी। उस जगह रात का तमाम अंधेरा खत्म होकर रह गया था। हर तरफ पतंगे उड़ रहे थे ओर आस-पास से झींगुरों की सीटियां गूंज रही थी। यों लग रहा था जैसे हर चीज लाइट की तरफ दौड़ रही हो।

ठीक उसी तरह तस्वीरों वाला आदमी भी उधर ही दौड़ रहा था। उसके पीछे सायों की एक भीड़ भी उसी तरफ दौड़ी चली आ रही थी। रोशनी के करीब पहुंचकर वो बेदम होकर लुढ़क गया। इसे मुड़कर देखने की भी जरूरत नहीं थी।

फिर उसे यों लगा जैसे कुछ टेंटों की नोकदार लाठियां ऊपर उठ रही हों और नीचे गिर रही हों–वो लाठियां जो टेंट को सहारा देने के लिए जमीन में गाड़ी जाती हैं। शहर से दूर इस सड़क पर झींगुरों की सीटियां कुछ ओर तेज हो गई थीं।

खौफनाक चेहरों वाले साये तस्वीरों वाले आदमी विलियम के सिर पर खड़े हुए थे और उनके हाथों में खेमों के नोकीले खूटे दबे हुए थे। फिर उन्होंने सड़क पर पड़ी हुई भारी-भरकम लाश को पलट दिया और जमीन खून से तर होने लगी। किसी ने हाथ बढ़ाकर लाश की पीठ पर चिपकी टेप को उखाड़ दिया।

अचानक उस भीड़ में भिनभिनाहट उभरी। एक शख्स घबराकर पीछे हटा। कई निगाहें अभी तक उस तस्वीर पर जमी हुई थीं। धीरे-धीरे उनकी हैरत उभरती जा रही थी, उनके मुंह खुले हुए थे और वो हौले-हौले कांप रहे थे, क्योंकि मुर्दे की पीठ पर उन्होंने जिस तस्वीर को देखा था, वो थी ही ऐसी।

स्ट्रीट लैंप की रोशनी में लाश की पीठ पर तस्वीर साफ दिखाई दे रही थी। यह तस्वीर एक ऐसी भीड़ की थी जो एक सुनसान सड़क पर स्ट्रीट लाइट की रोशनी में पड़ी एक मोटे की लाश की पीठ पर बनी तस्वीर को फटी-फटी आंखों से देख रही थी।

लिजा और विलियम फिलिप्स के बाद अब इस भीड़ के लोगों की बारी थी।

□□□

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पैशाचिक मशीन

ये चीखें वहम नहीं बल्कि हकीकत थीं, क्योंकि ये चीखें चौकीदार टोनी ब्राण्डो के मुंह से निकल रही थीं, फिर खौफ से पथराए जो ने देखा, जैसे कुछ अदृश्य हाथ टोनी की गर्दन पकड़कर उसे लोहे के कबाड़ की गहराइयों में ले जा रहे थे। टार्च टोनी के हाथ से निकलकर कबाड़ में कहीं फंस गई थी, लेकिन निरंतर जल रही थी।

जो मसारिया अपने कबाड़खाने के उस खोखे के बाहर खड़ा था जो उसका ऑफिस कहलाता था। वो एक फोर्ट से क्रेटिना कार के जंग लगे भारी ढांचे से टेक लगाए खड़ा था। एंडी के पेट में भारी मात्रा में बियर भरी हुई थी।

वो वहां कोई आधे घंटे से खड़ा था और सस्ती किस्म का सिगार पिये जा रहा था। इन सिगारों की बुरी-सी गंध हर वक्त उसके कपड़ों से उठती रहती थी और मुंह से फूटती थी।

इस जगह से वह अपना जंक यार्ड (कबाड़खाना) लगभग पूरा ही देख सकता था जिसके जरिये वो अपनी रोजी-रोटी कमाता था। इस वक्त वो टॉम लुसियानो को क्रेन ऑपरेट करते देख रहा था। क्रेन का मशीनी पंजा भारी वजन के साथ एक पिचकी हुई आस्टिन कार की छत पर पड़ रहा था। उस पंजे ने कार की छत इस तरह पिचका दी जैसे वो कोई गत्ते का डिब्बा रही हो।

कार को इस तरह पिचकाए जाते देखकर जो मसारिया को एक अजीब तरह का संतोष हुआ। सिर्फ एक हफ्ता पहले एक काली, मोटी बिल्ली इस कार के स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठी थी और वो शायद किसी अहम मीटिंग में जा रही थी। उसके जेहन में शराब और कबाब के नक्शे घूम रहे थे और उसके रहमो-गुमान में भी नहीं था कि उसके सामने जाता एक बड़ा-सा ट्रक सड़क पर फैले तेल पर फिसलने वाला है और उसकी यह प्यारी-प्यारी आस्टिन उससे बुरी तरह टकराने वाली है।

फिर यह आस्टिन वहां से उठा ली गई थी और कबाड़खाने (मांद) के बाहर बने क्रेशर तक पहुंचा दी गई थी, जहां उसे कुचला जाना था। कुछ मिनट में ही उसे धातु की एक चौकोर मोटी चादर में तब्दील हो जाना था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जो मसारिया ने मुंह से अपना सिगार निकाला और उसे यों मसल दिया जैसे क्रेन के पंजे ने कार को मसला था।

"मेरा ख्याल है कि तुम ही इस जगह के मालिक हो।" वो आवाज जो मसारिया के कानों में पड़ी थी, वो इतनी अचानक पड़ी थी कि जो उछल पड़ा।

"यह कोई तरीका है इस तरह खामोशी से आने का?" जो ने बिगड़ कर उसे खड़े-खड़े नक्शों वाले शख्स से कहा जो लम्बे कद का था और बढ़िया लिबास पहने हुआ था। उसने उसके सिर पर एक चौड़े किनारों वाला हैट था।

"माफी चाहता हूं।" वो बोला–"तुम शायद किसी गहरे सोच में गुम थे।" अजनबी के चेहरे पर आनंद उठाने वाले भाव थे।

"खैर छोड़ो, तुम्हें चाहिए क्या?" जो ने पूछा और सोचा, 'ऐसे हैट आमतौर पर यहूदी पहनते हैं। मगर यह यहूदी नहीं लगता...और इसका लहजा...यह शायद हंगरी या बुखारिया वगैरह का रहने वाला है।'

"मैं दरअसल...कुछ टूटे टुकड़ों की तलाश में हूं।"

"टूटे टुकड़े तो इस यार्ड में हर तरफ बिखरे पड़े हैं। मिस्टर, तुम यह बताओ कि तुम्हें चाहिए क्या?" जो ने शुष्क लहजे में कहा।

"कहो तो मैं जरा इधर-उधर घूम-फिर कर देख लूं?"

"यह कोई किताबों की दुकान नहीं है। मुझे बताओ कि तुम्हें क्या चाहिए?"

"बहुत कारोबारी हो तुम।" अजनबी ने कहा और यह टिप्पणी जो मसारिया को जरा भी पसंद नहीं आई। उसे लगा था यह शख्स उसका मजाक उड़ा रहा है।

"तुम फौरन सौदेबाजी चाहते हो? खैर चलो, यों ही सही। मुझे उन्नीस सौ चालीस मॉडल की फोर्ट कोरटीना का ट्रांसमिशन चाहिए।"

"चीज का तो पता चल गया। मगर मेरे पास ऐसा कोई ट्रांसमिशन नहीं जो चालू हालत में हो।" जो ने कपड़े से हाथ साफ करते हुए कहा।

जो ने महसूस किया कि कभी-कभी अजनबी की आंखें अंगारों जैसी हो जाती हैं। यह अजनबी किसी समारोह में घुसने वाले घुसपैठिये की तरह लग रहा था जो को।

"यह जरूरी भी नहीं कि वो चालू हालत में हो।" अजनबी ने कहा।

यार्ड के दूसरे सिरे पर जो ने क्रशर की गुर्राहटें सुनीं, जिसने फौलादी ढांचे को पिचकाने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी।

"और यह भी जान लो कि ट्रांसमिशन की कंडीशन की भी कोई अहमियत नहीं है।" अजनबी कह रहा था और उसकी आंखें धूप की प्रतिछाया से बराबर रंग बदल रही थीं। उधर लोहा चीख रहा था जोरों से!

"अलबत्ता, इस बात की जरूर अहमियत है कि ट्रांसमिशन उन्नीस सौ चालीस की फोर्ट कोरटीना कार का ही हो।" अजनबी ने कहा–"और वो ऐसी कार हो

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

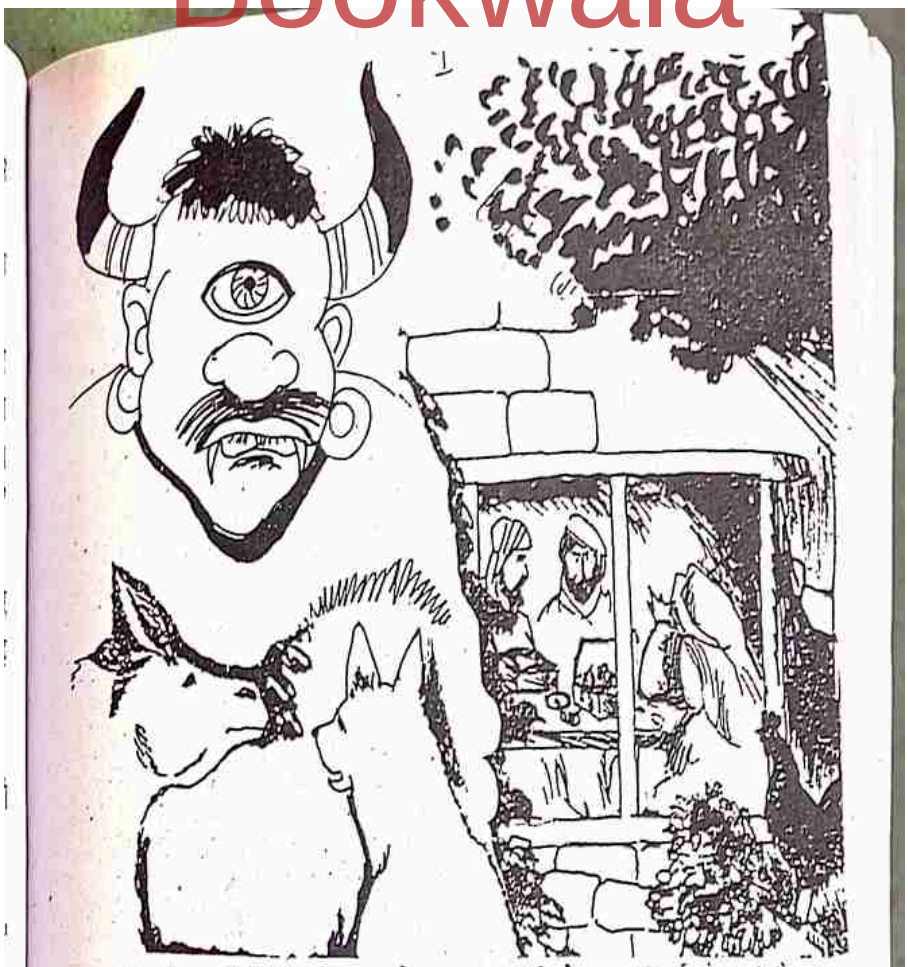

जो किसी एक्सीडेंट का शिकार होकर यहां पहुंची हो। बात सिर्फ मौत की है जो उस एक्सीडेंट में हुई है। औरत हो या मर्द, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मुझे यकीन है कि कल शाम तक किसी भी तरह वो ट्रांसमिशन मुझे उपलब्ध करवा दोगे। जो मेरी बताई हुई बातों पर पूरा उतरेगा। समझ गए मेरी बात?"

जो स्तब्ध होकर रह गया था, खौफ ने उस पर कब्जा कर लिया था।

"क्यों, समझ गए न?" धूर्त चेहरे वाले अजनबी ने फिर पूछा।

"हां।" जो के मुंह से निकला।

"ठीक है मिस्टर मसारिया, अब कल मुलाकात होगी।"

जो मसारिया उस भयानक चेहरे की तरफ बिल्कुल नहीं देखना चाहता था, मगर उसे खौफ था कि अगर उसने निगाहें हटाईं तो अजनबी के सफेद दांत उसका नरखरा उधेड़ देंगे।

और इसके बाद अजनबी चला गया। वो बड़े इत्मीनान से मुड़ा था और कबाड़खाने के गेट की तरफ बढ़ गया था। जो को कुत्ते एक्स के भौंकने की हल्की-सी आवाज आई, जिसमें जोर नहीं था। जो ने कुत्ते की तरफ देखा जो शेड में ही जंगले में था।

फिर जो ने मुड़कर जाते हुए अजनबी पर निगाह डाली तो वह उसे कहीं नजर नहीं आया। वो पलक झपकते ही गायब हो गया था। हालांकि गेट तक

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पहुंचने के लिए उसे दो-तीन मिनट तक चलना तो जरूरी था ही।

मगर अजनबी गायब था।

उसने खिड़की को खोला, यहां से वो जगह नजर आती थी जहां वो कुछ देर पहले अजनबी के साथ खड़ा हुआ था। फिर उसे याद आया कि अजनबी ने जाते-जाते कोई चीज उसकी जेब में डाली थी और वहां से सौ-सौ डॉलर के ढेर-सारे नोट निकाले।

'इतने नोट... एक बेकार ट्रांसमिशन के लिए।' उसने हैरानी से सोचा।

"उन्नीस सौ चालीस मॉडल की फोर्ट कोटरीना, वो किसी एक्सीडेंट का शिकार होकर यहां पहुंचा दी।" उसके कानों में कोई आवाज गूंजी–"बात सिर्फ मौत की है, आदमी या औरत से कोई फर्क नहीं पड़ता।"

❑❑❑

❑❑❑

उस रात जो ने उन नोटों में से दो सौ शराबखाने में खर्च कर दिए। नए-नए कड़कड़ाते दो सौ डॉलर! जो एक बड़ी रकम थी पीने के हिसाब से। काफी शराब जब उसके पेट में पहुंच गई और वो साथ लाने के लिए भी खरीद चुका तो उसका वो खौफ भी दूर हो गया, जिसने उसे दोपहर से दबोच रखा था।

वो आदमी उसके ख्याल में एक खब्ती था और ऐसी चीजें जमा करने का शौकीन था जो किसी भी तरह किसी यादगार की हैसियत रखती हो।

ऐसी बहुत-सी कबाड़ चीजों के महंगे दामों बिकने की खबरें पहले भी उसके सामने से गुजरती रही थीं, उसे क्या लेना-देना कि वो शख्स आधा खिसका हुआ था या पूरा! उसने कम-से-कम सौ गुना ज्यादा रकम एडवांस में ही दे दी थी और जो कुछ उसे चाहिए था उसके काम का होने की भी कोई शर्त नहीं थी। फिर जो को यह भी मालूम था कि एक कोटरीना कार का मुड़ा-तुड़ा ढांचा उसके कम्पाउंड में मौजूद है, जिसका ट्रांसमिटर खराब था और कबाड़ भी था।

इस कार ने रोड पर दो लड़कों को बुरी तरह जख्मी किया था जिनमें से एक मौके पर ही मारा गया था। जो, जो कुछ भी खरीदता था उसके बारे में जानकारी जरूर हासिल कर लेता था। उसकी इस आदत से उसे आज फायदा हो रहा था।

दूसरे दिन जब उसका नशा उतरा था तो अजनबी के बारे में जो राय उसने रात को कायम की थी वो ढीली पड़ती महसूस हुई थी और वो दोबारा फिक्र में डूब गया था।

जिस वक्त कोटरीना से ट्रांसमिशन निकाला जा रहा था जो कुछ बेचैन-सा हो रहा था। फिर जब टॉम ने उससे पूछा था कि इस फिजूल काम की क्या जरूरत थी उसे, तो जो का तनाव कुछ और ज्यादा बढ़ गया था।

उस दिन जैसे-जैसे तीसरा पहर गुजर रहा था और अजनबी के आने का वक्त करीब आ रहा था... जो का मिजाज फिर बिगड़ने लगा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

चार बजे तक सेफ में से निकाली स्कॉच की बोतल खत्म हो चुकी थी। ऐक्स को शायद अपने मालिक के खौफ का अहसास हो गया था, इसलिए वो मेज के नीचे ही दुबका हुआ था।

पांच बजकर एक मिनट पर कुत्ते ने थूथनी उठाकर हवा में कुछ सूंघा, आहिस्ता से गुर्राया और मेज के नीचे से निकलकर ऑफिस से बाहर निकल गया।

खिड़की से बाहर देखे बिना ही जो को मालूम हो गया था कि कल की तरह आज भी वो अजनबी ठीक उसी जगह खड़ा होगा, हाथ सीने पर बांधे हुए और वो ऑफिस की तरफ देख रहा होगा।

जो उसकी तरफ चला। उसकी कोशिश थी कि अजनबी के चेहरे की तरफ न देखे, उस धूर्त चेहरे वाले...अजनबी चेहरे वाले अजनबी की आंखें काली भौंहों के नीचे अलाव की तरह दहकती थीं।

जो के और अजनबी के दरम्यान अभी बारह फुट का फासला था कि वो रुक गया। ट्रांसमिशन उस मशीन के ढांचे पर रखा हुआ था जिससे इस वक्त जो ने टेक लगाई थी।

"यही वो ट्रांसमिशन है?"

"हां।"

"खूब...बहुत खूब! मेरा ख्याल है कि यह मेरे मकसद के लिए ठीक रहेगा।" जो अपनी बेचैनी को छुपाए सुनता रहा।

"मैं चाहता हूं कि तुम इसे यहीं, अपने यार्ड में ही किसी जगह हिफाजत से रख लो।" अजनबी उस बिल्ली की तरह खुश था जिसने अभी-अभी किसी चूहे को शिकार किया हो।

"अच्छा!"

"बेशक मैं इसके लिए भी मुआवजा अदा करूंगा।" अजनबी ने कहा, उसके अंगूठे हिले और उसके पिचके हुए ट्रांसमिशन का फिर जायजा लिया।

"इसे कितनी देर रखना होगा?" चेहरे का पसीना पोंछते हुए जो ने किसी तरह पूछ ही लिया। फिर उसने नजरें घुमाकर दूसरी तरफ देखा।

"ज्यादा देर नहीं। मुझे काफी चीजें और भी चाहिएं, जो मेरा ख्याल है तुम्हारे यहां मिल जाएंगी।"

'यह शख्स यहां से दफा क्यों नहीं हो जाता? मेरी जान क्यों नहीं छोड़ देता?' जो ने सोचा।

"कैसी चीजें?" उसने पूछा।

"मसलन किसी उन्नीस सौ इकहत्तर मॉडल की मौरिस कार का रोटर एक्सल जो तबाह न हुआ हो और जिसमें ड्राइवर के पैरों पर जख्म जरूर आए हों। हादसे में उसके जीने-मरने की अहमियत नहीं, बस पैरों की टूट-फूट जरूरी है।" अजनबी ने कहा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जो को पांच सौ डॉलर और मिल गए और पांच मिनट बाद वो दोबारा अपने ऑफिस की तरफ जा रहा था। उसे अहसास हो रहा था कि उसके हाथ फिर कांपने लगे हैं। वो मुड़कर नहीं देखना चाहता था कि अजनबी जा रहा है या हवा में घुल रहा है? उस रात उसने सेफ में चार बोतलें स्कॉच की लाकर रखीं और एक ऑफिस टेबल पर।

फिर एक दिन एक-दूसरे में गड़मड़ होने लगे। जो मसखिरा बहुत आतंकित था और वो अपने मन के खौफ को शराब में घोल देना चाहता था। नशे में उसने इस समस्या के कई समाधान सोचे थे। जैसे कि उसे अजनबी को जिस्मानी नुकसान पहुंचाने की धमकी। वो उस पर अपना कुत्ता छोड़ सकता था और कह सकता था कि वो अब दोबारा इधर नजर न आए।

मगर फिर उसने सोचा कि कुत्ता भी उसके सामने भीगी बिल्ली बन जाता था। यह एक दूसरी समस्या थी। एक हल यह भी था कि वो कुछ गुंडों को रकम देकर अजनबी की मरम्मत करवा देता। वो इस मामले में पुलिस की भी मदद ले सकता था।

मगर हर शाम अपने फिक्स टाइम पर अजनबी आ जाता था और जो को उसका सामना करना पड़ता था। वो कबाड़खाने में आने वाली नई चीजों के बारे में अजनबी को बताता था।

जो मसारिया अब तेजी से मालदार होने लगा था, मगर अजीब बात थी कि मिलने वाली रकमों से उसे कोई खुशी नहीं महसूस हो रही थी। हर बार वो सोचता था कि शायद आज का सौदा आखिरी होगा। मगर उसकी उम्मीद दूसरे दिन दम तोड़ देती थी।

एक इम्पाला कार की पिछली सीट, जिसका मुसाफिर हादसे में जिंदा न बचा हो और एक फोकस वैगन के अगले पहिए, चाहे किसी भी हालत में हों मगर हादसे में दो लोग जरूर मरे हों। एक डॉटसन का पेट्रोल टैंक जो हादसे में फटने से बच गया हो, मगर हादसे में किसी बच्चे की मौत लाजिमी शर्त थी। अजीब-अजीब शर्तें थीं, मगर जो में कभी इतनी हिम्मत पैदा नहीं हो सकी थी कि वो अजनबी से कुछ पूछ सकता। हालांकि अजनबी की शर्तें दिन-ब-दिन कड़ी और अजीब-अजीब होती जा रही थीं और उन शर्तों पर पूरी उतरने वाली चीजों को उपलब्ध करना जो के लिए कठिन-से-कठिनतम होता जाता था। वो इतना डरा हुआ था कि अब वो उसके लिए दूसरे कबाड़ियों से भी सम्पर्क कर रहा था।

वो लोग, जो कभी उसके दोस्त थे, अब सिर्फ पैसों के लिए उसमें दिलचस्पी ले रहे थे और अजीब-सी नजरों से उसकी तरफ देखने लगे थे, जैसे वो उसे पागल समझ रहे हों।

मगर यह बात भी जरूर थी कि अब तक वो किसी-न-किसी तरह अजनबी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

द्वारा मांगी गई सभी चीजें हासिल करने में सफल होता आ रहा था।

और फिर एक दिन अजनबी ने जो से कहा कि उसे किसी ऐसी कार की विंडस्क्रीन चाहिए जिसका ड्राइवर हादसे में अपनी आंखें खो बैठा हो। इसमें न मॉडल की शर्त थी, न मेक की; बस सारा जोर ड्राइवर की आंखें खोने पर था।

जो को फौरन ख्याल आया कि इस बार उसे ऐसी विंडस्क्रीन नहीं मिल सकेगी। यह करीब-करीब नामुमकिन-सी बात थी। वो उसे लाएगा कहां से?

दूसरे दिन जब वो अजनबी प्रकट हुआ तो जो ने यह बात उससे कह दी। मगर उसे दुःख हुआ कि उसने क्यों कह दिया है? अजनबी ने उसकी तरफ नागवारी से देखा था और उसकी आंखों के शोले कुछ और ज्यादा सुर्ख हो गए थे।

फिर वो मुस्कुराया था। मगर वो मुस्कुराहट ऐसी थी जैसे कोई बरसों पुराना मुर्दा मुस्कुरा उठा हो और जो ने व्याकुलता से वादा कर लिया था कि वो कल रात तक किसी-न-किसी तरह उसे हासिल कर लेगा।

अजनबी के जाने के बाद जो ने अपने जंक यार्ड पर एक मरी हुई सी निगाह डाली। उसकी ढीली-सी मुट्ठी में तीन सौ डॉलर के नोट थे जो उसने अभी-अभी हासिल किए थे।

यार्ड में भरा हुआ कबाड़ उसे बेकार-सा लगा, साला सही मायनों में कबाड़ा। जब वो अपने ऑफिस की तरफ जा रहा था उसे महसूस हुआ कि उसके हाथ से स्लिप करके नोट गिर गए थे और जमीन पर पड़े फड़फड़ा रहे थे।

❑❑❑
❑❑❑

जो का दूसरा दिन बड़ी तकलीफ में गुजरा था, हालांकि उसने काफी शराब पी ली थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे मालूम होगा कि हादसे में सिर्फ ड्राइवर की आंखें चली गई थीं। लोग कबाड़ खरीदते हुए इस किस्म की इंक्वायरी तो करते नहीं, इसकी जानकारी तो सिर्फ पुलिस को हो ही सकती थी। बहरहाल, उसने बहुत कोशिश की।

हद यह हुई कि उसके एक हमपेशा कबाड़ी ने उसकी मांग सुनते-ही-सुनते उसे सख्ती से कहा था कि वो दोबारा उसके पास न आए इस किस्म की खरीददारी के लिए।

उस वक्त दिन के साढ़े तीन बजे थे और जो शराब से गम गलत कर रहा था। नशे ने काम दिखाना शुरू कर दिया था मगर जो को मालूम था कि उसे अपनी योजना पर अमल करने के लिए नशे की कितनी सख्त जरूरत है, जो उसने अपनी समस्या के हल के लिए तैयार की थी।

उसके पास अब कुछ दूसरा विकल्प नहीं था। अगर वो अजनबी के खौफ के जादू में जकड़ा रहता तो वह उस योजना पर अमल नहीं कर सकता था।

सबसे पहले उसने अपने जंक यार्ड का बड़ी तेजी से मुआयना किया था

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

और आखिरकार उसने एक सीडॉन कार की विंडस्क्रीन ढूंढ निकाली।

उसके बाद उसने टॉम को आवाज देकर बुलाया और समझाया कि वो उसे बहुत सावधानी से बाहर निकाले। उसने अपने नौकर की अप्रसन्नता को नजरअंदाज कर दिया जो उसके चेहरे से झलक रही थी।

'बुरा लग रहा होगा तो लगता रहे, यह समझ रहा होगा कि मैं नशे में हूं।' उसने सोचा।

फिर वो विंडस्क्रीन भी अजनबी के खरीदे हुए बाकी सामान के साथ रख दी गई। उस वक्त तक सूरज डूबने की तैयारी कर चुका था।

"बुरा न मानों तो एक बात पूछूं?" टॉम ने उसे मुखातिब किया।

जो ने सिर्फ सिर हिला दिया। जिसके दोनों ही मतलब हो सकते थे, कहो भी, और न कहो भी।

"आखिर यह कबाड़ किस मकसद के लिए जमा किया जा रहा है?" टॉम ने पूछा।

"टॉम तुम्हें यहां काम करने की तनख्वाह दी जाती है, अपने काम से काम रखो।" जो ने बड़ी रूखाई से बात खत्म कर दी।

"जो तुम हमेशा से खर दिमाग रहे हो।" टॉम ने एक सिगरेट सुलगाने के बाद कहा–"अभी तक मैं चुप था क्योंकि मुझे काम की जरूरत थी। मगर अब नहीं है। तुम आज से अपना काम खुद संभालो और मेरी तरफ से भाड़ में जाकर मरो।"

यह बड़ा सख्त जवाब था, जो की खोपड़ी घूम गई। वो शायद उसे एकाध हाथ जमा देता, मगर टॉम ने उसे सख्ती से रोक दिया–

"होश में रहो जो मसारिया!" उसने कहा–"मैं जा रहा हूं। मगर जाते-जाते तुम्हें एक मशविरा भी दूंगा वो भी फ्री में, दूं क्या?"

जो मसारिया ने सवालिया निगाहों से टॉम की तरफ देखा।

"किसी दिमागी कोणों के बढ़िया से डॉक्टर के पास जरूर जाना। तुम्हारे स्क्रू ढीले हो गए हैं।"

टॉम ने बुरा-सा मुंह बनाकर एक नजर अजनबी के जमा किए हुए सामान पर डाली, फिर गेट की तरफ बढ़ता गया।

'क्या कहने!' जो ने सोचा–'बेटे अगर तुम मेरी जगह होते तो इतना बड़ा मुंह कभी न खोलते, अगर तुमने उन अंगारा आंखों को देखा होता तो तुम्हारी हवा खराब हो गई होती।'

वो ये सारी बातें टॉम से कहना चाहता था, मगर उसके होठों से सिर्फ एक ही बात निकली–

"सुअर का बच्चा, हरामी!"

टॉम ने जवाब में कुछ नहीं कहा, वो चला गया। जो ने अपने ऑफिस में

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पहुंचकर एक बार फिर बोतल और गिलास से सम्पर्क साधा। इस दौरान एरिक्स ने गुरनि के बजाय कराहना शुरू कर दिया था। अजनबी के आने का वक्त हो गया था।

दरअसल वो अजनबी अपनी जगह आकर खड़ा हो चुका था, उसका लम्बा साया जंक यार्ड में मौजूद चीजों के सायों में गड़मड़ हो रहा था।

जिस वक्त जो एक खास इरादे के साथ उठा, उसके हाथों में कोई कम्पन नहीं था। झटके से उसकी कुर्सी जरूरी उलट गई थी। कुत्ते ने कीं-कीं की और रेंगता हुआ वो बेंच की तरफ बढ़ा और वहां से उसने अपने काम की चीज उठा ली और उसे बेल्ट के साथ पीठ के पीछे उड़स लिया।

फिर वहां से अजनबी तक पहुंचने का सफर उसके लिए नींद में चलने जैसा था। ऐसा लग रहा था जैसे वो चल तो रहा है, मगर पहुंच कहीं नहीं रहा।

अजनबी मुस्कुरा रहा था या दांत निकोस रहा था, जो की समझ में नहीं आया। मगर जो यह जरूर चाहता था कि अजनबी उसके इरादे को न भांप सके।

अजनबी का मुंह खुला, होंठ उसके चमकते हुए दांतों से टच हुए जो मसारिया अब उसके सामने था।

"तुम्हें मेरी बताई हुई चीज मिल गई?"

"हां! वो उधर...तुम्हारे पीछे रखी हुई है।" जो ने कहा और सोचा–'इतनी पी रखी है मैंने, मगर फिर भी मेरा खौफ बाकी है। कहीं इसे कुछ अंदाजा तो नहीं हो गया?'

"खूब।" अजनबी बोला–"अगर एतराज न हो तो जरा मैं भी देखूं?"

"उधर चलो।" जो ने इशारा किया।

अजनबी ने गर्दन घुमाकर कबाड़े के ढेर की तरफ देखा। विंडस्क्रीन को ट्रांसमिशन के साथ खड़ा कर दिया गया था, उसमें अजनबी को हल्का-सा प्रतिबिम्ब नजर आ रहा था। उसने झुककर उसे छुआ।

अजनबी ज्यों ही झुका, जो भी उसके पीछे बढ़ा और तब जो ने लम्बी खांक खींचे जाने की तेज आवाज सुनी।

यह किसी कटखने सांप की सी आवाज थी जो वो किसी को काटने से पहले निकालता है। अजनबी ने उठने के लिए सिर उठाया। उसके होठों पर एक भयानक-सी मुस्कुराहट थी। उसकी अंगारा आंखें जो की तरफ उठीं।

"मगर यह वो नहीं...।"

अजनबी ने अभी कुछ कहना शुरू ही किया था कि जो का हाथ उसकी कमर के पीछे गया और दूसरे ही क्षण उसके हाथ में दबा हुआ लोहे का भारी पाना अजनबी की खोपड़ी पर किसी भारी हथौड़े की तरह पड़ा। इस चोट ने अजनबी की खोपड़ी किसी तरबूज की तरह खोल दी थी।

अजनबी के होंठ सिकुड़े, पुतलियां ऊपर चढ़ गईं और वो जमीन पर औंधा

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

हो गया। पाना उसके भेजे में अभी तक धंसा हुआ था। उसके हाथ-पैर कांपे, और फिर वो निश्चल हो गया।

जो भी अपनी जगह पथरा-सा गया था और वो फटी-फटी आंखों से सामने पड़े जिस्म को घूर रहा था। उसे यकीन ही नहीं आ रहा था कि यह सब कुछ इतनी आसानी से हो गया है। सिर्फ एक ही वार, और वो खौफनाक अजनबी खत्म!

अचानक जो झटके से आगे की तरफ झुका और उसने ऊंची 'आ-होय' की आवाज के साथ कै कर दी। ढेर-सी शराब उसके पेट से निकलकर जमीन पर फैल गई। फिर उसने कई बार शराब उगली, यहां तक कि उसके पेट में कुछ नहीं रहा।

वो अजनबी टेढ़ा-तिरछा जमीन पर पड़ा हुआ था। उसकी आंखों से सफेद दीदे झांक रहे थे। जो उसकी तरफ बढ़ा, वह उसकी आंखों की तरफ नहीं देखना चाहता था। उसने अजनबी के सामान के पास पड़ी प्लास्टिक बॉडी को उठाया और सामने पड़ी लाश को ढांप दिया। वो इस वक्त बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद हो रहा था। लगता था उसके जिस्म में खून ही न रहा हो। फिर उसने किसी तरह वो लाश प्लास्टिक की बोरी में डाल दी। इस काम से फारिग होकर उसने बेचैनी से अपने ऑफिस की तरफ नजर डाली।

रात के वक्त पहरेदारी करने वाला टोनी ब्रांडो किसी भी वक्त पहुंचने वाला था, वक्त कम था। जो ने बोरी को एक तरफ से पकड़ा और उसे घसीटते हुए जंक यार्ड पार करने लगा। सूरज अब क्षितिज को पार कर चुका था। वो इस वक्त कोर्टीना के ढांचे के पास था।

उधर नीले-काले आसमान की बैकग्राउंड में पुरानी मशीनों और कारों के ढांचे सायों की तरह दिखाई दे रहे थे। पूरा दृश्य किसी अजीब-से कब्रिस्तान जैसा था।

जिस वक्त जो ने फोर्ड का दरवाजा खोला, उसके कहकहों से गुर्राहटें बुलंद हुईं। उधर एल्विस भी एक बार जोर से भौंका। वो ऑफिस में था।

अब बहरहाल, जो को अपने हाथ इस्तेमाल करने ही पड़ने थे। जिस वक्त उसने लाश वाला बंडल ड्राइविंग सीट पर रखा उसे बहुत घिन महसूस हुई। वो टोनी के आगमन की तरफ से भी फिक्रमंद था। बंडल अंदर रखकर उसने अनावश्यक ताकत लगाकर धड़ाम से दरवाजा बंद किया। उसके माथे पर पसीने के मोटे-मोटे कतरे उभर आए थे।

सैकेण्डों के अंदर ही वो क्रेन ड्राइविंग में था। टॉम उसकी चाबियां इग्नीशन में ही छोड़ गया था। कुछ सैकेण्डों बाद ही इंजन घरघराकर जाग उठा और क्रेन के पंजे ने उस तरफ उतरना शुरू कर दिया, जिधर वो कार खड़ी थी, जिसमें जो ने लाश रखी थी।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

फिर क्रेन का भारी पंजा उस कार पर गिरा और उसने पुरानी कार की छत को पिचका दिया। फिर पंजे ने उस पर अपनी पकड़ मजबूत की। इस मलगजे अंधेरे में मंजर ऐसा ही था जैसे किसी बहुत बड़े बाज ने अपनी शिकार किसी चिड़िया को दबोच लिया हो और अब अपने ठिकाने की तरफ उड़ रहा हो।

इधर क्रशर का मुंह कार को निगलने के लिए खुला हुआ था। क्रेन धीरे-धीरे कार को नीचे ला रही थी। पांच-छः सैकेण्ड तक शिकार पंजे में दबा रहा। फिर वो पंजे की पकड़ से छूटा और क्रशर में जा गिरा।

पांच मिनट बाद जो क्रशर के कंट्रोल पर था, मगर इसकी आंखें खौफ से इधर-उधर देख रही थीं। अब उसके माथे से पसीना बकायदा टपक ही रहा था।

फिर उसने क्रशर चला दिया। लोहे के दबने, पिचकने की प्रक्रिया उसके लिए काफी बेचैन कर देने वाली थी।

उसने क्रशर की तरफ पीठ मोड़ दी, कानों में उंगलियां ठूंस लीं और कोशिश की कि लाश का विचार भी उसके जेहन में न उभरे, जो इस वक्त कार के ढांचे के साथ ही कुचली जा रही थी। बहरहाल, यह काम जल्दी ही खत्म होने वाला था। लेकिन जब क्रशर ने कार के ढांचे को धातु की चादर में बदलने की प्रतिक्रिया शुरू की तो आवाजें असाधारण रूप से बदलने लगी थीं। ऐसा लग रहा था कि जैसे आवाजों के साथ किसी की चीखें भी शामिल हो गई हों।

'नहीं, यह कैसे हो सकता है?' जो ने सोचा। उसने अपने कान और ज्यादा सख्ती से बंद कर लिए–"वो मर चुका था...बिल्कुल मर चुका था।"

फिर वो आवाजें और चीखें धीरे-धीरे धीमी होने लगीं। यहां तक कि क्रशर की अपनी भिनभिनाहटें ही रह गईं। अब वो कन्वेयर बेल्ट चालू हो गई थी जो ढली हुई लोहे की चादर को बाहर लाती थी।

जो क्रशर से हटकर एक तरफ खड़ा हो गया और सारस की तरह गर्दन बढ़ाकर कार के अवशेषों को देखने की कोशिश करने लगा। पिचकाए हुए मैटल की एक चार फुट लम्बी और चार फुट चौड़ी चादर क्रशर के मुंह से बाहर आ रही थी।

जो ने उसे घूम-फिरकर चारों तरफ से देखा, उस पर जरा-सा भी खून का धब्बा नहीं दिखाई दिया था उसे। वो क्रेन की तरफ पलटा और उसके केबिन में सवार हो गया।

पंजा फिर नीचे चला, उसने उस चौकोर छोटी टुकड़े को पकड़ में कसा और दोबारा ऊपर उठा, जो ने उसे काफी ऊंचा उठाया और फिर उसे ऐसी जगह गिराया, जहां काठ-कबाड़ और ढांचों को पार करके पहुंचना किसी के लिए भी आसान काम नहीं था। वहां बहुत-सी चीजें नीचे-ऊपर ढेर थीं। वो टुकड़ा उसी ढेर पर गिरा था।

"चलो छुट्टी हुई।" जो ने गहरी सांस ली। वो धातु का टुकड़ा उस ढेर में

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

गड़मड़ होकर गायब हो गया था उसे अलग से पहचानना मुश्किल था।

"मिस्टर मंसारिया, आज क्या काम कुछ ज्यादा था?"

यह आवाज क्रेन के कैब डोर के बिल्कुल करीब से उभरी थी और इतनी अचानक उभरी थी कि जो दहल कर रह गया। टोनी ब्रांडो कैब में चढ़ आया था। उसने जो को धातु की चादर कवाड़ में गिराते देख लिया था। जो हड़बड़ा-कर बोला–

"ओ...हो...हां।" उसके मुंह से निकला–"फिजूल चीज थी, बिना वजह जगह घेरे हुए थी।"

"मगर यह काम तो टॉम का है न?" टोनी ने यों ही कह दिया।

"हां, उसी का था। मगर उस हरामी को आज मैंने काम से निकाल दिया है।"

"टॉम को...अच्छा!"

जो ने कैब के बटन ऑफ किए तो चौकीदार उतर गया, फिर वो जो के पीछे चल पड़ा। जो को चलते हुए महसूस हो रहा था जैसे उसकी टांगें भारी बोझ उठाए हुए हों। वो बोला–

"कई दिनों से मुझे ऐसा लग रहा था वो काम में जी नहीं लगा रहा था।"

दोबारा ऑफिस में पहुंचकर जो ने देखा कि कुत्ते पर भौंकने का दौरा पड़ा हुआ है, मगर अब उसकी आवाज पहले जैसी मरी-मरी-सी नहीं थी। उसमें खौफ नहीं था। खुद जो को भी यह महसूस हो रहा था कि उस पर छाया जबरदस्त तनाव हट गया हो।

"कुछ पियोगे?" उसने चौकीदार से पूछा।

टोनी ने उसे ताज्जुब से देखा। जो का सलूक नौकरों के साथ बड़ा शुष्क रहता था। उसके लिए यह प्रस्ताव वाकई अस्वाभाविक और अनपेक्षित था। जवाब में वो सिर्फ सिर हिलाकर रह गया। मगर दिल में उसने सोचा–'बड़ा सावधान रहने की जरूरत है। यह शख्स पहले ही एक कर्मचारी को काम से निकाल चुका है, कहीं अगला नम्बर मेरा न लगा दे।'

जो ने प्रसन्न चित्त से टोनी की पीठ पर एक धौल जमाई और उस बेचारे के नकली दांत उसके मुंह से गिरते-गिरते बचे।

"क्या कोई खुशी की बात है मिस्टर जो?" टोनी ने पूछा।

"कह सकते हो, ऐसा भी कह सकते हो। आज एक समस्या हल हो गई है।"

एक हफ्ते बाद यह डरावना ख्वाब शुरू हुआ था। जो को महसूस होता था कि उसने अजनबी के सामान का ढेर जिस जगह रखा था, उस जगह जाने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही। जब भी वो उस तरफ से गुजरता, यही सोचता, कि वो उस ढेर को फौरन हटवा देगा।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मगर यह 'फौरन' कभी फौरन नहीं बना था। मगर फिर एक हफ्ते बाद उसने देखा कि सामान हटा दिया गया है और जगह साफ हो चुकी है।

पहले तो उसे बड़ा संतोष हुआ। उसने अपने किसी आदमी को उसे हटाने के लिए नहीं कहा था। आम हालात में अगर यह घटना घटी होती तो वह हंगामा खड़ा कर देता, मगर इस बार नहीं। उसने अपने आदमियों से खुशदिली के साथ पूछा था कि यह काम किसने किया था?

गाईडो, डॉन और चार्ल्स, उसने टोनी से भी पूछा था। फिर एक किस्म की बेचैनी ने उसके अंदर सिर उठाना शुरू कर दिया था क्योंकि उसके सभी नौकरों ने इंकार कर दिया था कि उन्होंने यह काम नहीं किया है।

यह अचम्भे की बात थी। सामान तो हटा ही था, सवाल यह था कि आखिर हटा कैसे और हटाया किसने? मगर जिसने हटाया था, वो बता नहीं रहा था, न जाने क्यों? वजह जो भी रही हो। उसने भी ज्यादा आग्रह नहीं किया था। कबाड़ हट गया था, यही बात उसके लिए अहम थी।

शुक्रवार की सुबह जो अपने मेन कम्पाउंड में पहुंचा और अपने ऑफिस की तरफ चलता हुआ ऑफिस के करीब पहुंचा तो उसे फौरन महसूस हुआ कि कोई गड़बड़ है। टोनी दरवाजे पर ही खड़ा बार-बार कसमसा रहा था। शायद वो जो का बेचैनी से इंतजार कर रहा था।

"क्या मामला है टोनी?" जो ने पूछा।

"चोर आए थे मिस्टर जो, रात कोई तीन बजे के करीब।"

"पकड़ा किसी को?" जो ने दरवाजे में दाखिल होते हुए पूछा।

"कोई नजर नहीं आया था। बस आवाजें ही सुनी थीं मैंने।" टोनी ने कहा, फिर थोड़ा सोचकर बोला–

"शायद एरिक्स की वजह से उनकी आमद छुप नहीं सकी थी।"

"किधर थे?"

"कम्पाउंड की दूसरी तरफ मिस्टर जो! मेरा ख्याल है वो पेशेवर चोर नहीं थे, उन्होंने काफी शोर मचा दिया था। वो कबाड़ के ढेर को इधर-उधर उठाकर फेंक रहे थे। मैंने पहले एरिक्स को उन पर छोड़ा था, फिर खुद लपका था। मेरा ख्याल है, कुत्ते की आवाज से वो भाग गए थे। मगर वो बड़ी तेजी से गायब हुए थे। मुझे तो कोई भी नजर नहीं आ सका था। हालांकि रोशनी काफी तेज थी।"

"बच्चे होंगे।" जो ने कहा और मन में सोचा कि–'फिर मैं इतना फिक्रमंद क्यों हो रहा हूं? आखिर मेरे साथ यह क्या मामला है?'

"तुमने जंगले का जायजा लिया?" उसने कुछ क्षण रुक कर पूछा।

"लिया था। वो कहीं से भी नहीं टूटा-फूटा, वो उसे फलांग कर आए होंगे। हालांकि उसे फलांगना मुश्किल ही नहीं बहुत खतरनाक भी है। उसके नोकीले

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

काटे जानलेवा भी साबित हो सकते हैं। उन्हें सख्त जरूरत ही रही हो जो उन्होंने इतना रिस्क उठाया है।" टोनी ने कहा–"क्या इसकी रिपोर्ट लिखवानी होगी?"

"नहीं।" जो ने कहा। फिर उसने ताजा बनाई हुई चाय का घूंट भरा–"इसकी जरूरत नहीं है। बस, जरा रातों को चौकस रहा करो।"

जो सोच रहा था–'आखिर मेरे यार्ड में यह हो क्या रहा है?'

जो चाय पीता रहा और सोचता रहा। वो बेचैनी, जो अजनबी के खात्मे के बाद खत्म हो गई थी, जैसे फिर से उस पर छाने लगी थी।

❑❑❑
❑❑❑

यह दिन उसके लिए लम्बा और परेशान कर देने वाला साबित हुआ था, जो अभी तक खुद को थका हुआ महसूस कर रहा था। उसने दिन के दो घंटे क्रेन और लीवर के साथ गुजारे थे। घर पहुंचकर उसने कुछ शराब पी थी, फिर वो टी०वी० के सामने ही पड़कर सो गया था।

उसके ख्वाब बेतुके और परेशान कर देने वाले थे। जो आकृतियां उसने देखी थीं वो बगैर चेहरे की थीं और डरावनी थीं। कभी उसे रात के अंधेरे में लिपटा कबाड़खाना नजर आता, कभी क्रशर, कभी क्रेन, कभी ऊंचे कद की एक परछाई कम्पाउंड में खड़ी दिखाई देती जंगले के पास और कभी सुर्ख अंगारों जैसी दो आंखें नजर आती रही थीं, उसको घूरती हुईं।

उसे ख्वाबों में वो चीखें भी सुनाई दी थीं जिन्हें उसने उस वक्त क्रशर की आवाजों के साथ सुना था जब वो लाश को कार के ढांचे के साथ क्रशर में डाल कर उसे धातु की चादर में बदल रहा था और ये आवाजें बुलंद होती जा रही थीं...उसके करीब होती जा रही थीं।

फिर वो एक चीख के साथ जाग गया था। उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। उसे यही उम्मीद थी कि उसकी आंख जंक यार्ड में ही खुलेगी। मगर फिर उसकी आंखों ने उसे यकीन दिला दिया कि वो अपने घर के कमरे में है। वो संतुष्ट होकर लम्बा लेट गया।

कमरे में इस वक्त सिर्फ चलते टी०वी० की रोशनी हो रही थी और वो सोच रहा था–

'मगर फिर उसे चीखें क्यों सुनाई दे रही थीं?' वो एकदम से बौखला गया–'मगर नहीं...वो चीखें नहीं थीं, वो फोन की घंटी थी।'

कराहते हुए जो अपनी जगह से उठा, उसका पैर बियर के खाली डिब्बे पर पड़ा, और वो मुंह के बल गिर गया। खुद पर लानत-मलामत करते हुए वो उठा और उसने बढ़कर फोन उठा लिया।

दूसरी तरफ से टोनी ब्राण्डो बोल रहा था–

"नींद में खलल डालने के लिए माफी चाहता हूं मिस्टर जो! मगर मेरा ख्याल है कि तुम इसी वक्त यहां आ जाओ तो बेहतर है।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जो ने अपनी घड़ी देखी, रात का डेढ़ बज रहा था।

"आखिर मुसीबत क्या है?" जो चीखा।

"एरिक्स बुरी तरह जख्मी हो गया है।"

"कैसे? मगर ठहरो...मैं आ ही रहा हूं।"

हमेशा की तरह पूरा जंक यार्ड तेज रोशनी में जगमगा रहा था मगर जगह-जगह पड़े कबाड़ के ढेर लम्बे-लम्बे साये बना रहे थे जिन्होंने जो के अंदर सोए पड़े खौफ को जगा दिया था। वो इस वक्त नशे में भी नहीं था, वो खुद को रूखा-रूखा और खाली-खाली महसूस कर रहा था।

इस खोखलेपन में खौफ तेजी से जगह बना रहा था। यार्ड का गेट खुला हुआ था। शायद टोनी ने उसके लिए खोल दिया था।

जो की कार तेजी से अंदर घुसी, उसने धूल उड़ाई, फिर वो चीख कर रुक गई। जो कूदकर नीचे उतरा ओर टोनी के पास से गुजरता हुआ ऑफिस में पहुंच गया। उसने टोनी की तेज बड़बड़ाहट भी नहीं सुनी। उसे पहली बार यह अहसास हो रहा था कि उसे अपने कुत्ते से बहुत प्यार है। वो उसे गंवाना नहीं चाहता था। मगर उसे यकीन था कि मामला खराब हो गया है।

एरिक्स मेज के पास एक कम्बल पर पड़ा हुआ था और उसके मुंह से लम्बी-लम्बी कराहें निकल रही थीं। जो को देखकर उसने कुछ टीं-टीं की।

जो आगे बढ़ा तो उसे खून नजर आया। कुत्ते का बदन खून और पसीने से तर-बतर नजर आ रहा था। उसके अगले दोनों पैर घुटनों के पास से लगभग कटे हुए थे। टोनी ने लकड़ी और टेप की मदद से उन्हें बांध तो दिया था, मगर यह कोशिश फिजूल ही थी। उसके पैर बदन का हिस्सा नहीं रहे थे।

"ओह मेरे खुदा...मेरा एरिक्स!" कुत्ते के करीब घुटनों के बल बैठते हुए उसके मुंह से बस इतना ही निकल सका था। कुत्ते का बहुत-सारा खून निकल चुका था और वो बस कुछ देर का ही मेहमान था। उसने जो के हाथों को चाटा। जो मसारिया बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोक सका।

'क्या हुआ था यहां?" उसने टोनी से पूछा।

"मिस्टर जो, इस जगह कोई बहुत गहरा रहस्यमय मामला जच रहा है। मैं तो अब इस जगह नौकरी नहीं कर सकूंगा, साफ बात है।"

"यह तुमने एरिक्स के साथ क्या कर दिया?" जो कराहा।

"मिस्टर जो, हम सारी रात शोर सुनते रहे थे।" टोनी अपनी आवाज पर काबू रखने की कोशिश करते हुए बोला–"यहां, कबाड़ के अंदर कोई है जो तमाम सामान को उलट-पुलट करता रहता है। हम जब भी उस जगह पहुंचते हैं जहां से शोर उठता था, तो वहां फौरन खामोशी छा जाती थी और फिर कहीं और से आवाजें उभरनी शुरू हो जाती थीं। एरिक्स उस ढेर के पास, जो यार्ड के सैंटर में है, कुछ सूंघ रहा था, शायद उसे वहां किसी की मौजूदगी का अहसास हुआ

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

था। उसके बाद इसने मुंह से आवाजें निकालनी शुरू कर दी थीं। जब मैं इसके पास पहुंचा था तो मैंने देखा था, यह तारों के दरम्यान फंसा हुआ था। मैं इसे किसी भी तरह आजाद नहीं करा सका था, वो कबाड़ में और अंदर फंसता जा रहा था। यह इतना तकलीफ में था कि मैं तो इसे छुड़ा रहा था कि इसने मुझे काट लिया था। यह देखिए।"

टोनी ने जो को कुत्ते के काटने का वो निशान दिखाया, जो कुत्ते के दांतों से टोनी के हाथ पर बन गया था। जो अब टोनी के पीछे खुले दरवाजे में से जंक यार्ड की तरफ देख रहा था।

"चलो, मुझे दिखाओ, यह घटना किस जगह घटी थी?" जो ने व्याकुलता से कहा, वैसे उसे अंदाजा हो गया था कि वो कौन-सी जगह होगी, मगर वो तस्दीक चाहता था–"चलो, जल्दी करो।" वो बोला।

"मगर यह...यह कुत्ता...?"

"इसे अब मरा ही समझो। चलो।" फिर वो चौकीदार के पीछे चल पड़ा।

"मुझे अफसोस है मिस्टर जो! तमाम कोशिश के बाद भी हम पता नहीं लगा पाए कि वो शोर कहां और क्यों हो रहा है? एरिक्स के जख्मी होने के बाद वो शोर भी खत्म हो गया था।"

"चलो, जगह दिखाओ।"

वो दोनों फ्लड लाइटों की रोशनियों से रोशन और टूटी-फूटी कारों के ढांचों के दरम्यान उस तरफ चले जहां एक-के-ऊपर-एक धातु की लाशें ठुंसी हुई थीं।

एक तरफ क्रेन खड़ी थी। जो के अंदाजे के मुताबिक टोनी यार्ड के बीचो-बीच उसी हिस्से की तरफ बढ़ रहा था जहां जो ने उस अजनबी को एक चार बाई चार फुट के लोहे के ताबूत में दफन किया था। जो को अपने सिर में भनभनाहटें-सी उठती महसूस हुईं। उसने उन्हें नजरअंदाज करने की कोशिश की मगर फिर उसे महसूस हुआ कि वो भनभनाहटें वहां लगीं आर्क लाइटों में से एक में निकल रही थीं। टोनी ने वहां लगे कबाड़ के निचले हिस्से की तरफ इशारा किया–

"यह है वो जगह मिस्टर जो।"

वहां करीब ही खून फैला हुआ था, जो यकीनन कुत्ते एरिक्स का खून था।

'अब मैं क्या कर सकता हूं?' जो ने बेबसी से सोचा।

"मेरा ख्याल है, अब हमें पुलिस को बुला लेना चाहिए।" टोनी ने सुझाव दिया।

"नहीं।" जो ने फौरन कहा–"पुलिस की जरूरत नहीं है।" दरअसल वो डरा हुआ था भीतर से कि पुलिस यहां से न जाने क्या खोद निकाले?

और फिर अचानक रोशनियां बुझने लगीं और फिर अचानक खामोशी छा गई। उसी वक्त, वे रोशनियां जो ऑफिस के पास जल रही थीं, एकदम बुझ गईं।

दोनों आदमी देखने के लिए मुड़े, क्योंकि वो रोशनियां कम्पाउंड के आखिरी

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

सिरे पर बुझी थीं। उनके मुड़ते ही एक रोशनी और बुझी, फिर एक और! एक-के-बाद-एक कबाड़खाने में विभिन्न जगहों पर लगी रोशनियों ने बुझना शुरू कर दिया था। पूरा कबाड़खाना अंधेरे में डूबता जा रहा था।

"पॉवर फेलियर।" टोनी ने कहा और फिर आखिरी रोशनी भी बुझ गई।

जो के दिल में तुरंत अपनी हिफाजत का ख्याल उभरा था। उसे मालूम था कि यह कोई ख्वाब नहीं है कि वो जागने के बाद खुद को अपने घर में पाएगा, वो इस वक्त वाकई अपने जंक यार्ड में था। उसने अंधेरे में हाथ बढ़ाकर टोनी का सहारा लेना चाहा। उसका हाथ टोनी से टकराया, तो वह बुरी तरह उछला।

"फ्लेश लाईट जलाओ।"

तब टोनी ने कमर से लटकी टार्च निकाली, फिर टार्च की रोशनी सामने धरे ढेर पर चमकी।

"हम अब ऑफिस की तरफ चलेंगे।" जो ने कहा–"जरा सावधान रहना, किसी तार-वार में फंस न जाना।" उनके मुड़ते ही पीछे वाले ढेर में कोई खटका हुआ। टोनी ने टार्च की रोशनी उधर डाली।

"चलते रहो।" जो ने उसे ठेला।

"उधर कोई है।" टोनी बोला–"मैंने देखा था उधर रोशनी थी। कोई शोला या...।"

"मैंने कहा न, चलते रहो।"

"नहीं, जरा रुकिये।" टोनी ने टार्च बुझा दी, उन्हें अंधेरे ने घेर लिया। जो के दिल ने बुरी तरह धड़कना शुरू कर दिया था। न चाहते हुए भी उसने मुड़कर देखा।

कबाड़ के ढेर की गहराइयों में, जहां धातु के असंख्य छोटे-बड़े टूटे-फूटे टुकड़े, टूटे-फंसे पड़े थे। वहां जो को एक चमक-सी दिखाई दी। मद्धिम-सी चमक, जैसे अंदर कहीं नन्हीं-नन्हीं-सी चिंगारियां उड़ रही हों। या कोई पतली-सी टार्च इधर-उधर रोशनी डाल रही हो।

"टोनी, यहां से फौरन भागो।"

कबाड़ में कुछ हलचल हुई, कुछ शोले और उभरे।

"नहीं मिस्टर जो, जरा ठहरिये, मैं कोई चीज देख रहा हूं।" टोनी थोड़ा-सा आगे बढ़ा। उसने खुद को जो की पकड़ से छुड़ा लिया था।

"टोनी, मैं पुलिस को बुलाने जा रहा हूं।" जो ने कहा–"आओ, खुदा जाने वहां कौन है?"

जो पीछे हटा, मगर टोनी एक ढांचे पर चढ़कर उसके अंदर देखने के लिए झुका। उसने फिर टार्च जलाई और अंदर रोशनी फेंकी–

"टोनी चलो यहां से।"

"जरा ठहरिये, मैं कुछ देख रहा हूं।" उसने टार्च की रोशनी में अपने जिस्म को और आगे बढ़ाया और कबाड़ की गहराई में झांकने की कोशिश की।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जो को ऐसा लगा, वो दोबारा उसी वक्त में पहुंच गया है जब उसने क्रशर चलाया था और क्रशर की खनखनाहटों के साथ उसे इंसानी चीखें भी सुनाई दी थीं। मगर इस बार कोई क्रशर नहीं चल रहा था और चीखें उभर रही थीं।

ये चीखें वहम नहीं हकीकत थी। क्योंकि ये चीखें चौकीदार टोनी ब्राण्डो के मुंह से निकल रही थीं। फिर खौफ से पथराए हुए जो ने देखा, जैसे कुछ अदृश्य हाथ टोनी की झुकी हुई गर्दन को दबोच कर कबाड़ के ढेर की गहराइयों में खींच कर ले जा रहे हों। टार्च उसके हाथ से छूटकर कबाड़ में किसी जगह फंस गई थी। लेकिन अब तक जल रही थी।

टार्च की मद्धिम रोशनी में वो टोनी ब्राण्डो के जिस्म को देख रहा था जो हाथ-पैर मार रहा था, मगर अदृश्य पकड़ के जोर से झुकता ही जा रहा था। फिर कबाड़ सरका और एक लम्बी दहशतभरी चीख के साथ टोनी का बदन कबाड़ की गहराइयों में चला गया। अंधेरे में चिंगारियां फिर उड़ने लगीं।

जो के गले से भी खौफभरी चीख़ निकली और वो बुरी तरह भागा, मगर शायद उसे देर हो गई थी। अंधेरा होने के बावजूद उसे महसूस हुआ कि कोई उसके आगे मौजूद है।

फिर कोई चीज उसके माथे से आ टकराई, उसकी आंखों के सामने तारे नाच गए। वो कराहा और जमीन पर गिर गया। उसने हाथ से अपने सिर को छुआ तो उसे खून की चिपचिपाहट महसूस हुई। दरअसल वो एक पुरानी ब्यूक कार के गार्डर से भिड़ गया था।

मगर उसके लिए खौफनाक परेशानी की बात यह थी कि पहले यह गार्डर कार की खिड़की से बाहर नहीं था, जब वो यहां पहुंचे थे।

वो तेजी से उछला। उसके कान अपने पीछे कबाड़े में उलटने-पलटने की आवाजें साफ सुने रहे थे। जो फिर अंधेरे में दौड़ा। उसकी कोशिश थी कि वो दिशा से भटके नहीं और अपने ऑफिस पहुंच जाए।

मगर इस वक्त उसका अपना जंक यार्ड अजनबी और पराया-पराया लग रहा था और उसके लिए दिशा निर्धारण बहुत मुश्किल हो गया था। उसे जगह-जगह पड़े धातु के ढेर अजनबी-से लग रहे थे, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो कहां जा रहा है और किस जगह पहुंचेगा?

उसे यों लग रहा था जैसे चीजों के ढेरों को उठा-उठा कर कोई दूसरी जगहों पर रखे जा रहा है ताकि वो रास्ता न समझ सके। कुछ ऐसे ही ख्याल उसे आ रहे थे। वो किसी जानवर की तरह हांफता, कराहता, बस भागा ही जा रहा था।

बार-बार कभी वो किसी लोहे के बड़े टुकड़े से टकरा रहा था, किसी तार या सलाख से उलझ रहा था। उसके कपड़े फटकर झूल रहे थे और वो किसी अंधे की तरह दौड़ रहा था।

फिर कोई शै उसके पीछे अंधेरे में चरचराई।

"मेरे खुदा... मुझे बचाना!"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

उसी वक्त उसका पैर किसी रेडियो सेट से उलझा और वो एक बार फिर धूल चाटने लगा। दर्द से बेहाल होते हुए उसने करवट ली और पास ही खड़ी कार के ढांचे तले खिसकने लगा।

फिर अचानक बीच वाले ढेर में उभरती आवाजें खामोश हो गईं, जो ने अपनी फूली हुई सांसों को दबाने की नाकाम कोशिश की। बीच वाला ढेर अब उसे नजर नहीं आ रहा था, दरम्यान में दूसरे अम्बार बाधा बन रहे थे, अब कोई आवाज थी, न हरकत।

जो ने अंदाजा लगाने की कोशिश की कि वो इस वक्त यार्ड में कहां है? मगर वो अंदाजा नहीं लगा सका...आस-पास पड़े कबाड़ के ढेर उसे अजनबी लग रहे थे। उसने आंखें फाड़-फाड़ कर सिचुएशन समझने की कोशिश की। उसने अंदाजा लगाने की कोशिश की कि वो बीच वाले ढेर से कितनी दूर दौड़ा है? वो इसी सोच में था कि घोर खामोशी में उसे पहली आवाज सुनाई दी... उसकी दायीं तरफ कोई खनाका-सा हुआ था और यह आवाज बहरहाल बीच वाले ढेर से नहीं आई थी।

जो के जेहन में उम्मीद ने सिर उभारा, हो सकता है उसके नौकरों, गाईडों या चार्ल्स में से कोई आ रहा है। कोई ग्राउंड के खुले हिस्से में चल रहा था। कोई लम्बा-सा, कुछ झुका हुआ सा, वो उछलता हुआ लग रहा था।

वो कभी-कभी रुकता हुआ आगे बढ़ रहा था। उसकी हरकत से ही खनाके की आवाजें पैदा हो रही थीं। फिर जो ने एक कार बैट्री को यार्ड में एक तरफ तेजी से ढलकते देखा, उसका रुख भी बीच वाले ढेर की तरफ था।

कबाड़ अपने आप से हरकत नहीं करता, टायर खुद-ब-खुद उठकर नहीं चलते। हैडलाइट्स, सीटें और एकसतज रात को चलते-फिरते नहीं हैं। जहां तक कि उसने एक एयर-व्यू (शीशे) को भी फुदकते हुए देखा। जो का दिमाग उड़ा जा रहा था। चीजें उसके बिल्कुल करीब से गुजरी थीं। मगर यह कोई यकीन करने की बात थी?

ऐसी बातें सिर्फ किसी डरावने ख्वाब का ही हिस्सा हो सकती थीं। वो सोच रहा था कि इस बात की संभावना है कि वो जाग जाएगा।

अब बीच वाले ढेर से फिर चरचर्राहटें, खनाके और खटर-पटर की आवाजें उठने लगी थीं। जो ने कार के ढांचे तले पहुंचकर खुद को और भी सिकोड़ लिया था और सोच रहा था कि यह हकीकत नहीं। जरूर वो कोई ख्वाब देख रहा है।

वो दो घंटे तक वहीं पड़ा रहा। उसके कान धातु की चीजों के टकराव, उनके खींचे जाने, फंसने वगैरह की आवाजें सुनते रहे थे। अक्सर वहां से चिंगारियां उठती भी दिखाई देती रही थीं। इन दो घंटों में वो लगातार यही समझ रहा था कि वो ख्याल देख रहा है और जाग जाएगा।

फिर न जाने कब आवाजें बंद हो गईं। जो ने अपनी आंखें भींचीं। अब जाग

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जाना चाहिए, ख्वाब अब खत्म हो चुका है। जागो, कोई बड़ी-सी शै खांसी अंधेरे में। और उसके गले से खरखराहटें निकलने लगीं। उस आवाज में धमकी थी और गुस्सा था, शायद यह शै भूखी थी। उसे किसी की तलाश थी, शायद खुद जो मसारिया की। फिर वो शै जो की तरफ बढ़ी।

जो जल्दी से कार के नीचे से निकला। उस शै की गरज अब वातावरण में गूंज रही थी और अंधेरे में कबाड़ से टकराकर हर तरफ फैल रही थी। उसने उधर छलांग लगाई जिधर का कुछ अंदाजा उसने इस दौरान लगा लिया था।

'काश... मैं यहां से निकल जाऊं।'

जो ने एक मोड़ काटा, वो ऑफिस पहुंचने की कोशिश कर रहा था। मगर फिजूल, हर चीज अलग तरह की हो रही थी। उसके पीछे कोई भारी चीज मलबे को फलांगती उसकी तरफ लपकी, बिल्कुल किसी राक्षस की तरह। जो भाग रहा था, भागता जा रहा था।

उसका अपना कबाड़खाना इस वक्त उसके लिए भूल-भुलैया बन गया था। जिसमें वो भटक कर रह गया था और उसके पीछे कोई अजनबी शै लपकी आ रही थी।

जो ने सामने आने वाले एक इंजन को फलांगा और एक अजनबी-सी गली में घुस गया। उसके पीछे उभरती आवाजें अब फुंकार जैसी हो गई थीं। ऐसा लगता था जैसे कोई जानवर हांफ रहा हो। जो ने सांस रोक ली और रुक कर एक तरफ बैठ गया। यहां तक कि वो गुर्राहटें अंधेरे में एक तरफ बढ़ती हुई खत्म हो गईं। जब खामोशी छा गई तो जो ने एक जोरदार सांस खींची और कबाड़ में कुलबुलाता हुआ एक तरफ चला। वो निरंतर अपने अहाते में अपने ही ऑफिस की खोज में भटक रहा था।

उसकी बायीं तरफ उसे एक आर्क लाइट का आकार आकाश की तरफ सिर उठाए नजर आया और उसने उसी को अपने रास्ते की निशानी बनाकर उस तरफ बढ़ना शुरू कर दिया।

वो एक-के-बाद-एक कई आर्क लाइटों से गुजरने लगा। फिर उसने एक टूटे हुए गार्डर को देखा, इसका मतलब था कि वो ऑफिस के पास ही था। वो उस आर्क लाइट से गुजरता, झाड़-झंखाड़ में रास्ता तलाश करता आगे बढ़ता रहा।

अपने होश कायम रखते हुए उसने बेशुमार कबाड़ को फलांगा जो रास्ते में जगह-जगह बाधक था। जब वो एक लॉन मूवर से टकराया तो मूवर एक तरफ ढलक गया और जो उसकी आवाज सुनकर ठिठक गया। उसे खौफ हो गया था कि यह आवाज उस अदृश्य राक्षस को उसका पता देकर फिर उसके पीछे लगा सकती है। मगर उसके बाद उसने कोई दूसरी आवाज फिर न सुनी।

जो जरा सुकून से चलने लगा। फिर उसके अंदर स्फूर्ति की लहर दौड़ गई, क्योंकि उसे अपने ऑफिस जैसा एक आकार नजर आने लगा। उसने कम्पाउंड के जंगले को देखा, वहां उसकी कार खड़ी उसकी प्रतीक्षक थी और उसके पीछे

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

यार्ड का दरवाजा खुला हुआ था। अब बस मिनट भर की बात थी, उसने सोचा... वो बस फरटिं भरता हुआ कार में वहां से निकलने वाला था।

जो आगे की तरफ दौड़ा, कार की तरफ। उसने उतावली में इधर-उधर देखा और किसी धातु की शै ने उसकी ठोड़ी पर खोंचा लगाया। उसने मन-ही-मन गाली बककर हाथ से दबाकर दर्द कम करने की कोशिश की। फिर किसी-न-किसी तरह कूदता-फांदता उस परछाई तक पहुंचा, जो उसकी कार थी। उसे मालूम था कि उसकी चाबियां उसने डेशबोर्ड में ही छोड़ रखी थीं और उसके दरवाजे भी लॉक्ड नहीं थे। वो बस कुछ सैकेण्डों में ही जाने वाला था।

बिजली की सी तेजी से उसने दरवाजे को पूरी ताकत से खोला और ड्राइविंग सीट पर छलांग लगा दी। उसने धड़कते दिल से दरवाजा बंद किया और चाबी पर हाथ डाला, मगर...!

वहां चाबियां नहीं थीं।

जो ने झुक कर फर्श पर टटोला कि शायद चाबियां नीचे गिर गई होंगी। मगर वो नीचे नहीं गिरी थीं। नीचे गिरतीं तो उसे जरूर मिल जातीं।

एक छोटी-सी दुआ पढ़ते हुए उसने लाइट जलाने के लिए स्विच की तरफ हाथ बढ़ाया। मगर स्विच को जहां होना चाहिए था वहां मौजूद नहीं था। अलबत्ता, उसके हाथों को एक स्विच जरूर मिला जो उसके लिए अनजाना था। जो ने उसी स्विच को दबा दिया। उसके सिर पर एक हल्का-सा बल्ब जल उठा। कमजोर-सी रोशनी थी।

और तब जो को पता चला कि कार ही उसकी नहीं है। वो किसी दूसरी गाड़ी में था। जो इस वक्त वायरिंग और मुड़ी-तुड़ी धातु के एक डरावने ख्वाब में बैठा हुआ था। यह शायद हड़बड़ी में बनाई गई कोई शै थी, ताजा कबाड़! उस पर जंग खाए पाइप थरथरा रहे थे। एक मुड़ी-तुड़ी रेडियेटर ग्रिल, जिसे अपनी याददाश्त के मुताबिक जो ने उस अजनबी के लिए खरीदा था, उफनती हुई भाप पैदा कर रही थी।

और बढ़ती हुई दहशत और खौफ में उसने यह भी देख लिया था कि यह पूरी-की-पूरी कार ही उन चीजों से बनाई गई थी जिसे उसने उस अजनबी के लिए खरीदा था और यार्ड में जमा कर रखा था।

सब चीजों को आपस में किसी अनोखे तरीके से वैल्ड कर दिया गया था। सारा डिजाइन ही निराला और नया था। वो इस वक्त एक ऐसी मशीन में बैठा हुआ था जो देखने में किसी प्रेत जैसी थी और बेशक किसी कार से मिलती-जुलती शक्ल थी उसकी।

उसे लगा जैसे यह भेद खुल गया है कि यार्ड में वो कौन-सी शै थी जो उसके पीछे-पीछे आई थी काफी दूर तक? फिर डेशबोर्ड तले कोई चीज थिरकी। जो उसे नहीं देखना चाहता था, मगर उसने देखा। वहां चौकीदार टोनी का कटा हुआ सिर उसे घूर रहा था। आंखों के घेरों में तार घुसे हुए थे।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

मगर फिर वो चीख उसके मुंह से निकली उसकी वजह यह सिर नहीं था बल्कि वो शै थी जिस पर वो सिर धरा हुआ था। उसी के अंदर वो सारे तार चले गए थे जो उसने टोनी की आंखों के घेरे में घुसे हुए देखे थे।

यह बड़ी शै वो धातु का टुकड़ा था जिसे जो ने कबाड़ के बहुत बड़े ढेर की तह में पहुंचा दिया था। यह वही टुकड़ा था जिसमें अजनबी की लाश भी पैक थी।

अब यह कार उसके सामने थी। अचानक आंखों के घेरे की वायरिंग पटपटाई, फिर टोनी के कटे हुए जबड़े फड़के और जो ने देखा कि इस मशीन की हैडलाइटें जंगलगी विंडस्क्रीन के नीचे जल उठी हैं। अब यह शै जैसे आंखों वाली हो गई थी, देख सकती थी। जो ने बाहर निकलने के लिए दरवाजे के हैंडिल पर हाथ डाला–

मगर वहां कोई हैंडिल नहीं था। खौफ के मारे वो कांप उठा।

"मेरे खुदा...मुझे बचा ले।" उसके मुंह से कराह निकली।

कुछ लच्छेदार तार लपके...और जो को महसूस हुआ जैसे उसे कार की सीट के साथ कसा जा रहा हो। बांधा जा रहा हो। यह कोई अजीब-सी सीट बैल्ट जैसी चीज थी जिसने जो मसारिया को लपेट लिया था। जो ने बड़ी बेचैनी के साथ उससे पीछा छुड़ाने के लिए हाथ मारे, जोर लगाया, मगर वो तार बहुत मजबूत थे।

इस कोशिश में जो न देख सका कि डेशबोर्ड धीरे-धीरे खुल रहा है और उसमें से भाप निकलने लगी है, धीरे-धीरे।

ज्योंही उस कार का इंजन खांसा, जिसके सारे पार्ट्स अपने अंदर एक-एक खूनी इतिहास छुपाए हुए थे...साथ ही नीली रोशनी झिलमिलाई।

"नहीं...न...हीं...।"

एक जंगलगा पाईप जो तेल में तर था, डेशबोर्ड में से निकला और जो मसारिया के सीने में किसी पूरी तरकत से फेंके हुए भाले की तरह घुस गया।

सब कुछ इस तरह हुआ था कि जो मसारिया को हैरान होने का मौका नहीं मिला था। पाईप फिर जैसे उसके दिल पर जाकर रुक गया और उसने जो के दिल को भूखों की तरह चूसना शुरू कर दिया। वो मशीन उसके खून को पेट्रोल की तरह चूस रही थी और इस्तेमाल करने वाली थी।

ईंधन मिल जाने के बाद उस पैशाचिक मशीन ने फरफराहट की आवाज निकाली और रास्ते में बिखरे कबाड़ को कुचलती हुई तूफानी रफ्तार से चल पड़ी। उसके अंदर से बरामद होने वाली गरज, खनक और शोर को फिर जल्दी ही चारों तरफ फैली हुई रात के अंधेरे ने निगल लिया था।

अब हर तरफ सन्नाटा था, और बस!

❑❑❑

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

पाकिस्तानी कहानी

नाजायज कब्जा

एक सीधे-सादे शख्स की दर्दनाक कहानी

उसने शहर के बाहर एक मकान किराये पर लिया था जो सस्ते किराये पर उपलब्ध था। मगर उस मकान में उसके साथ कुछ ऐसी घटनाएं घटीं, जिन्हें वो कोशिश के बावजूद समझ नहीं पाया और अंत में खुद ही वो बेचारा खाली मकान बनकर रह गया।

रात के बारह बजने वाले थे। इस वक्त रेलवे स्टेशन के वेटिंगरूम में मेरे समेत कुल पांच आदमी मौजूद थे और बोर हो रहे थे। सब-के-सब इलैक्ट्रिक हीटर के सामने रखी कुर्सियों पर बैठे हुए थे। हममें से दो नौजवान लड़के थे जो एक-दूसरे की तरफ झुक कर न जाने कौन-सी गुप्त बात धीरे-धीरे एक-दूसरे के कानों में कह रहे थे।

तीसरा आदमी अधेड़ उम्र था, उसकी उम्र पचास के करीब होगी, उसने एक ओवरकोट पहन रखा था। सिर के बाल गिर रहे थे, होंठ पतले-पतले थे और उसके चेहरे पर एक लकीर की तरह मालूम होते थे। वो शख्स उसके करीब बैठा हुआ करीब तीस साल का था, उसने जिस्म पर एक सफेद शॉल ओढ़ रखी थी। उन दोनों जवानों के सिवा हम तीनों ही चुप थे और अपनी-अपनी सोचों में मग्न थे।

हम सभी ट्रेन के प्रतीक्षक थे, जो करीब डेढ़ घंटा लेट थी।

"कल रात मैंने इसमें एक ऐसी कहानी पढ़ी कि उसके बाद मैं सारी रात सो ही नहीं सका।" नौजवानों में से एक ने अपने हाथ में पकड़ी मैगजीन अपने साथी को दिखाते हुए कहा।

मैंने कनखियों से उसकी तरफ देखा था। वो किसी मैगजीन का तंत्र-मंत्र विशेषांक था। मैगजीन के कवर पर एक बड़ी-सी इंसानी खोपड़ी बनी हुई थी।

"तुम्हें इस किस्म की खौफनाक कहानियां पसंद हैं?" लड़के के साथी ने पूछा, फिर बोला–"मुझे तो ये सब कोरी बकवास लगती है। आज के मॉडर्न और साइंसी दौर में जिन्नों और भूतों की बातें महज मजाक ही लगती हैं।"

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

"यानि तुम्हें रहस्यमय और गुप्त शक्तियों पर विश्वास नहीं है?" अचानक उनकी बातों में उस शख्स ने दखल दिया, जिसने काला ओवरकोट पहना हुआ था। वो पहली बार बोला था और उसकी आवाज भारी और मजबूत थी।

"बिलकुल नहीं है।" लड़के ने कंधे उचकाकर जवाब दिया था।

"तुम अभी बच्चे हो।" ओवरकोट वाले आदमी ने कहा–"मुझे देखो, मैं तुम्हें पचास साल का आदमी नजर आ रहा हूंगा। लेकिन मैं अगर तुमसे कहूं कि मेरी उम्र भी मुश्किल से तीस साल है, तो क्या तुम यकीन करोगे?"

लड़के की समझ में नहीं आया कि वो जवाब में क्या कहे?

"जिन हालात से मैं गुजरा हूं।" काले ओवरकोट वाले ने कहा–"उसके बाद मेरा जिंदा रहना भी किसी चमत्कार से कम नहीं है।"

अचानक उसका लहजा उदासी से भर गया था। वो गहरी सांस लेकर बोला–

"मुझ जैसा दिलेर आदमी इस हाल में कैसे पहुंचा, यह एक जरा लम्बी कहानी है और मैं तुम्हें इसलिए सुना रहा हूं ताकि तुम्हारे दिमाग से यह ख्याल निकल जाए कि इस दुनिया में अब रहस्यमय घटनाएं नहीं घटतीं... क्योंकि जमाना मॉडर्न और साइंसी हो गया है।"

"अगर आप उचित समझें तो जरा हमें भी बताएं कि वो क्या हालात थे, जिनका आपने जिक्र किया?" आखिर उस नौजवान ने कहा, जिसने मैगजीन पकड़ रखी थी।

"अच्छी बात है।" आखिर ओवरकोट वाले ने कहा। उसने जेब से सिगरेट और माचिस निकाली और सिगरेट सुलगाकर उसने दो-तीन लम्बे-लम्बे काश लिए, धुआं उड़ाया और फिर उसने अपनी दास्तान शुरू की–

"यह आज से पांच साल पहले का जिक्र है जब उन रहस्यमय घटनाओं की शुरुआत हुई थी जिनके नक्श आज भी आप मेरे चेहरे पर पढ़ रहे हैं। मैं उन दिनों नया-नया कॉलेज से निकला था। मां-बाप का साया बचपन में ही मेरे सिर से उठ गया था, मेरी परवरिश मेरे चाचा ने की थी...।

फिर जब चाचा भी चल बसे तो मेरे लिए जरूरी हो गया था कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो जाता। मैंने नौकरी के लिए अर्जियां दीं और आखिरकार एक कम्पनी में मुझे जगह मिल गई और उन्होंने मेरी पोस्टिंग एक-दूसरे शहर में कर दी। यह नया शहर था, कुछ शुरुआती दिनों में तो मैं होटल में रहा, मुझे मकान की तलाश थी जो आखिरकार मुझे मिल ही गया–

वो मकान शहर के एक सिरे पर था और कई तंग गलियों के दरम्यान बना हुआ था। मकान में सिर्फ एक कमरा था, कमरे के सामने आंगन था, साइड में छोटा-सा किचेन था और दूसरी साइड में बाथरूम था। कमरे में एक वार्डरोब भी थी, काफी गहरी-सी। उस घर का किराया कम था और मैं उसे आसानी से

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

किराये पर ले सकता था और मैंने उसे फौरन ले भी लिया था। आप यकीन करें, मेरी सारी मुसीबतों की शुरूआत बस उसी दिन से हो गई थी। मैं आज भी कभी-कभी सोचता हूं कि काश मैंने वो मकान किराये पर न लिया होता तो कितना अच्छा होता!"

वो रुका और उसने सिगरेट के दो-तीन गहरे-गहरे कश लेकर कहा–

"आह... मगर भाग्य तो अटल होता है न! उस मकान में शुरू के छः-सात दिन तो बड़े सुख-शांति से गुजर गए, मगर उसके बाद वहां अनहोनी घटनाएं घटने का चक्कर शुरू हो गया था...।

वो वहां गए हुए मेरी आठवीं रात थी और मैं उस दिन दस बजे के करीब घर लौटा था। करीब एक घंटे रात के वक्त पढ़ना मेरी पुरानी आदत थी। उसके बाद मैंने बत्ती बुझा दी थी और अपने बिस्तर पर सोने के लिए लेट गया था। यह दिसंबर का महीना था और रात काफी सर्द थी, मैं लिहाफ में लेटा हुआ था। उस वक्त शायद रात के दो बजे होंगे जब मुझे यों लगा था जैसे किसी तरफ कोई खड़का हुआ है। आवाज बहुत साफ-साफ थी, मैंने लिहाफ से सिर निकाल कर देखा–

मेरे चारों तरफ अंधेरा था, सिर्फ कमरे में बने रोशनदान से चांदनी की कुछ रोशनी अंदर आ रही थी। पहली नजर में मुझे कमरे में कोई खास बात महसूस नहीं हुई थी। चांदनी की मद्धिम रोशनी में मुझे हर चीज अब साफ नजर आ रही थी, सब कुछ ज्यों-का-त्यों ही था। फिर भी दूसरी नजर में मुझे अहसास हुआ कि तब्दीली क्या थी? कमरे की बड़ी-सी वार्डरोब का पट आधा खुला हुआ था।

लेटे-लेटे मैंने सोचा, हो सकता है मुझसे ही खुला रह गया होगा। कोई खास जरूरत तो नहीं थी, मगर मैं बिस्तर से निकल आया था। पहले मैंने कमरे की लाइट जलाई थी, फिर इधर-उधर देखा। सोने से पहले मैंने कमरे को भी अंदर से बंद कर लिया था, दरवाजे की कुंडी लगी हुई थी। फिर मैंने बढ़कर वार्डरोब का खुला हुआ पट बंद कर दिया था। उससे फारिग होकर मैंने लाइट बुझाई और दोबारा बिस्तर में घुस गया, लेटते ही मुझे नींद ने आ दाबोचा था। सुबह जब मेरी आंख खुली थी तो मैं चौंक गया था। वार्डरोब का दरवाजा फिर खुला पड़ा था।

मैं चौंका इसलिए था क्योंकि उसे खुला नहीं होना चाहिए था, मैंने हैंडिल घुमाकर उसे अच्छी तरह बंद किया था और यह इतना भी ढीला नहीं था कि अपने आप ही खुल जाता। मेरे बंद करने के बाद वो तभी खुल सकता था, जब कोई उसे खोलता।

मेरी समझ में नहीं आया कि वो किस तरह खुल गया था। मैं बिस्तर पर

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

बैठा उसी तरह सोचता रहा, फिर मैं सिर झटक कर उठ गया था। मैंने वार्डरोब के सामने जाकर दरवाजे को काफी जोर लगाकर धमाके से बंद किया था और हैंडिल को सख्ती से जमा दिया था, उसके बाद मैं ऑफिस जाने की तैयारी करने लगा था। टाइम ज्यादा हो गया था।"

ओवरकोट वाला अजनबी रुका, उसने जेब से सिगरेट का पैकेट निकाला और मेरी तरफ देखकर बोला–

"आलमारी का पट खुल जाना कोई ऐसी अहम बात नहीं थी जिस पर ज्यादा सोच-विचार किया जाए। खुलने की बेशुमार वजहें हो सकती थीं। दिन के कामों में उसका ख्याल जेहन से निकल गया था। मैं दिन ढले घर वापस लौटा...आदत के मुताबिक मैं पढ़ाई से फारिग होकर करीब ग्यारह बजे सोने के लिए बिस्तर पर लेट गया था। इस बार मैंने सावधानी से दरवाजा बंद किया था और संतुष्ट हो गया था। मेरी नींद अभी ज्यादा गहरी नहीं हुई थी कि मैं चौंक कर जाग गया था...कोई खटका हुआ था, काफी जोर की आवाज थी उसकी। मैंने चौंककर आलमारी की तरफ देखा...।

आलमारी का पट खुला हुआ था। मेरी हैरानी का पहला दौर अभी खत्म भी नहीं हुआ था कि मुझे एक और झटका लगा था। कमरे के मलगजे अंधेरे में मुझे कोई साया-सा नजर आ रहा था। फ़िर मैंने देखा कि हाथ उठाकर वो अपनी टाई ढीली कर रहा है। फिर वो झुका, उसने अपने जूते खोले और अपना कोट उतारकर उसने अलमारी के अंदर हैंगर पर टांग दिया। उससे फारिग होकर उसने वहां से कुछ कपड़े निकाले, फिर वो उन्हें पहनने लगा। मैं बिस्तर पर पड़ा खुली आंखों से यह सब देख रहा था।

मैं बिलकुल स्तब्ध हो गया था, मेरी सांस भी बेहद धीमी हो गई थी और उस वक्त मैं सोचने-समझने की सारी क्षमताएं खो चुका था, बस सामने का मंजर देखे जा रहा था। दरवाजा अंदर से बंद था...किसी के अंदर आने का सवाल ही पैदा नहीं होता था...।

फिर इससे पहले कि मैं कुछ करने की सोचता, वो साया मेरे बिस्तर की तरफ बढ़ा था, उसने इत्मीनान से कम्बल का कोना उठाया था और बिस्तर में इस तरह घुसा था जैसे वो बिस्तर उसके लिए बिल्कुल खाली ही रहा हो। उसके जिस्म का गर्म-गर्म स्पर्श मुझे बिजली के करंट जैसा लग रहा था। मैं एकदम उछला था और सीधा वहां रुका था जहां दीवार पर स्विचबोर्ड लगा हुआ था। मैंने बेचैनी से बटन दबाया, दूसरे ही पल कमरा रोशनी से भर गया था...।

और तब मुझ पर हैरत के पहाड़ टूट पड़े थे...मेरा बिस्तर बिल्कुल खाली था। उसमें कोई नहीं था।

'आखिर यह सब क्या हो रहा है?' मैंने दोनों हाथों से अपनी कनपटियां दबाते

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

हुए सोचा था–'क्या मैं किसी मानसिक रोग का शिकार हो गया हूं?' ये बातें यकीनन मतिभ्रम के दायरे में ही आती थीं। उसके बाद मैंने कमरे को बहुत अच्छी तरह चेक किया था, मगर वहां था ही क्या जो नजर आता? कमरा अंदर से अभी भी लॉक्ड था। थक हार-कर और चिंताग्रस्त, मैं दोबारा बिस्तर पर चला गया था।

जिस वक्त मुझे नींद आई, मेरे कमरे की लाइट जल रही थी। मैंने रात को स्विच ऑफ़ नहीं किया था। सुबह को जब मेरी आंख खुली थी तो जिस चीज ने मेरे जेहन को ठोकर मारी थी वो बिजली का बल्ब था, जो बुझा हुआ था।

मैंने बटन बंद नहीं किया था, क्योंकि जब मैं सोया था तो कमरे की बत्ती जल रही थी। मैंने उसे बुझाया नहीं था। वो सारी घटनाएं मेरे लिए एक रहस्यमय समस्या का रूप लेती जा रही थीं।

फिर मैंने सारे मामले को अक्ल की रोशनी में परखने की कोशिश की, समझने का जतन किया और आखिरकार इस नतीजे पर पहुंचा कि रात को मैंने बौखलाहट में खुद ही लाइट बंद की होगी और भूल गया हूंगा।"

यहां तक पहुंचकर अजनबी रुका और उसने हमारी तरफ नजरें दौड़ाई थीं। हम सब वाकई उसके किस्से में डूबे हुए थे और हमारे चेहरों पर भी वैसे ही उलझनों के भाव थे जो उन हालात में उस ओवरकोट वाले अजनबी ने महसूस की होंगी।

"भाइयों!" अजनबी ने किस्सा आगे बढ़ाते हुए कहा–"मुमकिन है आप सबको ये बातें छोटी और मामूली महसूस हो रही हों, लेकिन जल्दी ही आपको अंदाजा हो जाएगा कि वो सब किस तरह के खतरनाक मामले की शुरूआती निशानियां थीं–

इस सिलसिले में तीसरी रात पहली दो रातों से भी बढ़-चढ़कर साबित हुई थी। उस रात पहली बार मैंने सोचा था कि यह जो कुछ हो रहा है उसे अक्ल की कसौटी पर परखना मूर्खता ही थी। उस रात मुझे यह भी यकीन हो गया कि यह सारा मामला मेरे वहमों की उपज नहीं है...।

उस वक्त रात के दो-ढ़ाई बजे होंगे जब पहले की तरह ही मेरी नींद तोड़ दी थी। उस बार भी मैंने देखा था कि आलमारी का एक पट खुला हुआ है। एक और चीज भी मुझे नजर आई थी, बिल्कुल नई। इस बार कमरे का दरवाजा भी बिलकुल चौपट खुला हुआ था। वहां से आंगन की चांदनी की रोशनी अंदर आ रही थी। अचानक खुले दरवाजे में कोई इंसानी परछाईं-सी अड़ गई...।

फिर वो परछाईं कमरे के अंदर आई और वार्डरोब के सामने जा रुकी। उसके चलने का ढंग बिल्कुल वही था जो मेरा अपना था, उसकी हाइट भी मेरी जितनी ही थी। उसने वार्डरोब के अंदर से मेरा कोट निकाला...टाई निकाली और लिबास बदलने लगा। कुछ ही देर बाद वो मेरे नीले सूट में था। फिर उसने मेरी तरफ

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

ध्यान दिए बगैर ही दरवाजे का रुख किया। जरा देर बाद मैंने बाहर के दरवाजे बंद होने की आवाज सुनी, तब मुझे होश आया।

मैं जल्दी से बिस्तर छोड़कर उठा। दरवाजे की साइड में एक डंडा रखा हुआ था उसे मैंने उठाया, और मैं भी उसी साये के पीछे-पीछे लपका।

दरवाजा खुला हुआ था और वहां से गली दूर तक नजर आ रही थी। मैंने देखा कि वो साया तेज-तेज चलता हुआ गली के अंत तक पहुंच गया था। मैंने दरवाजा बंद किया...।

ज्यों ही वो साया गली के मोड़ पर गुम हुआ, मैंने गली में दौड़ लगा दी। वो चोर है कोई, बात साफ थी। मैं उसे बेखबरी में पकड़ लेना चाहता था। लेकिन ज्योंही मैं गली के मोड़ पर पहुंचा, मेरा दिल उछल कर गले में आ फंसा था...।

किसी भयानक ढंग से हाऊ का नारा लगाया था, बिल्कुल बच्चों की तरह जो एक-दूसरे को इसी तरह डराते हैं। पल भर के लिए मेरे होश उड़ गए थे। जब मैंने उस घबराहट से निकल कर देखा तो मुझ पर हैरत ने हमला कर दिया था। वहां मेरे सामने कोई भी नहीं था।

लड़खड़ाते हुए मैं वहीं रुका रहा था और फिर मुड़कर घर की तरफ चल दिया था। घर पहुंचकर मैंने लाइट जलाकर अलमारी देखी थी ताकि जान सकूं कि इसमें से और क्या गायब है?

और एक बार फिर मैं भौंचक्का रह गया था। वार्डरोब में सब कपड़े ज्यों के त्यों लटके हुए थे। मेरा नीला सूट भी मौजूद था और टाई भी, कमीज भी कुछ भी तो गायब नहीं था।"

अचानक अजनबी बोलते-बोलते रुका। उसने हम सबकी तरफ नजर डाली और सवाल किया–

"क्यों साहेबान, क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि उस वक्त मेरी हालत क्या हुई होगी? मुझे यकीन है कि उन घटनाओं के बाद आपमें से कोई भी उस मकान में ठहरना पसंद न करता। मगर मैं पहले ही बता चुका हूं कि मैं बुजदिल आदमी नहीं था उस वक्त। हां, अब मैं अपने बारे में कुछ नहीं कह सकता। अब मेरा दिल बहुत कमजोर हो चुका है और मुझ पर हर वक्त एक खौफ छाया रहता है।"

मैंने देखा कि बोलते-बोलते अजनबी की आवाज रूहांसी होने लगी थी। उसने हीटर पर निगाहें जमाते हुए धीरे से कहा–

"चौथी रात बहुत ही बुरी थी और सबसे अजीब भी। मैं रात गए घर लौटा था और थका हुआ था। यकीनन मेरी नींद गहरी रही होगी तभी मैं खटके से नहीं जागा था। फिर भी मैं कसमसाया था और नींद में डूबी आंखों से मैंने देखने की कोशिश की थी। दूसरे ही पल मेरी नींद उड़नछू हो गई थी...।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

कमरे का दरवाजा, जो मैं बंद करके सोया था, खुला हुआ था। फिर मैंने देखा जैसे चौखट में कोई साया खड़ा हुआ हो। वो बाहर जा रहा था।

मुझे बाहर का दरवाजा खुलने और बंद होने की आवाज सुनाई दी थी। न जाने किस जज्बे के तहत मैं बिस्तर से निकला था और खाली हाथ तथा नंगे पैर ही उस साये के पीछे दौड़ पड़ा था। वो तेज चल रहा था, देखते-ही-देखते वो गली के मोड़ पर घूमा था और नजरों से ओझल हो गया था।

मैंने भी तय कर लिया था कि आज इससे जरूर निपटूंगा। मुझे दरअसल उस बात से हौसला मिला था कि वो बहरहाल, कोई जिन्न या भूत नहीं है। इसका मतलब यह भी नहीं था कि मेरी सोची हुई हर बात दुरूस्त थी। वो कोई चोर था और मुझे देखकर भागा था, दिमाग यही कह रहा था। मैंने उसमें खामखा की आशंकाओं से हेर-फेर नहीं करना चाहता था।

इस बार मैं गली की नुक्कड़ पर रुककर सावधानी से मुड़ा था ताकि इस बार वो कोई चालाकी न कर सके। लेकिन अनपेक्षित रूप से कोई बात नहीं हुई। वो उस दौरान दूसरी गली की नुक्कड़ तक पहुंच गया था और मुझे नजर भी आ रहा था, मेरे और उसके दरम्यान कोई डेढ़ सौ गज का फासला रहा होगा...।

वो गली एक सड़क पर खत्म होती थी, उसने सड़क पार करके दूसरी तरफ चलना शुरू कर दिया। वो इस तरह चल रहा था कि उसका वजूद स्ट्रीट लाइटों की रोशनी में रहने के बजाय आसपास की इमारतों के सायों में रहे। रात के सन्नाटे में, जब आसपास कोई नहीं था, मैं उसके पीछे चल रहा था।

उस अर्से में उसने एक बार भी मुड़कर पीछे नहीं देखा था। मुझे उसके पीछे चलते हुए कोई दस मिनट गुजर चुके थे। मैंने तय कर लिया था, कि आज इसकी समस्या हल करके ही लौटूंगा। इस दौरान मुझे पीछे न कोई पुलिस वाला दिखाई दिया था, न ही कोई कुत्ता भौंका था। सड़कें और गलियां चांदनी में नहाई हुई थीं और हर तरफ खामोशी का राज था। सर्द हवा रह-रहकर चल रही थी।

फिर मुझे अहसास हुआ था कि हम आबादी से बाहर आ चुके हैं...अब हम उस सड़क पर थे जिसके आखिरी सिरे पर शहर का कब्रिस्तान था।

कुछ देर के लिए मैं रुक गया था ताकि साया वो मैदान पार कर ले जो दरम्यान में था। मैदान पार करके वो सीधा कब्रिस्तान के गेट में दाखिल हो गया। गेट के दोनों तरफ ऊंचे और घने पेड़ लगे हुए थे। मैंने उसके अंदर जाते ही दौड़ लगाई, मैदान पार किया था और खुद भी गेट में दाखिल हो गया था। वो साया पेड़ों में चलता हुआ, झाड़ियों को फलांगता हुआ, कब्रों से बचता हुआ, आगे बढ़ता रहा...।

रात का सन्नाटा यहां कुछ और गहरा हो रहा था, हालांकि अंधेरा नहीं था, झींगुरों की सीटियों से सारा वातावरण गूंज रहा था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

सर्दी से मेरा बुरा हाल हो रहा था, हवा चलती थी तो मेरा पूरा जिस्म कंपकंपाने लगता था। मैं जोश में बस दो कपड़े पहने बिस्तर से निकल भागा था और अपने मकान को भी खुला ही छोड़ आया था और अब मुझे मकान की भी फिक्र हो रही थी।

"आखिर यह जा कहां रहा है?" मैं सोच रहा था। फिर भी, वहां तक जाने के बाद अब लौटने की बात फिजूल ही थी। जिज्ञासा की भावना जोर पकड़ चुकी थी और मैं इस ड्रामे के ड्राप सीन के बगैर लौटना नहीं चाहता था।

फिर मैंने देखा कि वो एक पेड़ के करीब पहुंचकर रुक गया है। उस वक्त मैंने एक कब्र के कूबड़ की ओट ले रखी थी और उसे देख रहा था। वो मुझसे कोई सौ फुट के फासले पर था और उसके चेहरे से तो नहीं लग रहा था कि वो उस जगह मेरी मौजूदगी से अवगत है।

उसने फिर इधर-उधर नजरें दौड़ाईं और जैसे संतुष्ट होकर वो उसी जगह बैठ गया। वो यकीनन कोई कब्र थी और ताजा भी, क्योंकि उसने अपने हाथों से मिट्टी हटानी शुरू कर दी थी। मिट्टी यकीनन नर्म होगी जब ही वो अपनी खुदाई में कामयाब हो रहा था। वो इस तरह तेजी से जमीन खोद रहा था कि मैं हैरान रह गया था, जैसे बिज्जू मिट्टी खोदते हैं, वो उसी तरह धड़ाधड़ जुटा हुआ था। कोई बारह-पंद्रह मिनट में ही उसने कब्र के सिरहाने एक चौड़ा-सा सुराख बना दिया था।

मैं मंत्रमुग्ध इंसान की तरह उसकी कार्रवाई देखे जा रहा था। उस वक्त मुझे न सर्दी की परवाह थी न कब्रिस्तान का डर! आखिर उसकी घंटेभर की मेहनत के बाद मैंने देखा कि वो झुक कर किसी चीज को खींच रहा है। थोड़ी-सी खींचातानी के बाद उसने उस शै का थोड़ा-सा हिस्सा बाहर निकाल ही लिया जिसे वो ऊपर खींचने की कोशिश कर रहा था।

और यह शै, कब्र के अंदर मौजूद लाश थी। लाश ताजा थी, उसके कफन का सफेद कपड़ा दूर से ही दिखाई दे रहा था। उसने जल्दी से मुर्दे का कफन नोंच डाला था! हे मेरे खुदा...!

फिर वो झुका था और उसने अपने दांत लाश की गर्दन में गाड़ दिए थे और वो उसे किसी कुत्ते की तरह उधेड़ रहा था। बोटियां उतारकर वो उन्हें यों खा रहा था जैसे कुत्ते रातब खाते हैं, वो कोई गोश्त खाते हैं। वो कोई गोल था शायद। आप जानते हैं गोल वो चीज होती है जो सिर्फ मुर्दों के गोश्त खाती है और उसी पर जिंदा रहती है। मुर्दा...इंसानों का गोश्त, यह कोई गोल ही था।

वो लरजा देने वाला मंजर जो मेरे सामने था, उसे देखकर मेरे पसीने छूट निकले थे। फिर मेरे अंदर इतनी हिम्मत न रही कि मैं वहां ठहर सकता। मैं तेजी से मुड़ा था और किसी तरह छुपता-छुपाता भाग निकला था।

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

जब मैं घर पहुंचा था तो मेरा सारा जिस्म तप रहा था। मैंने दरवाजे अच्छी तरह बंद किए थे और बिस्तर पर लेटने के बावजूद सारी रात जगता रहा था।

उसी दौरान मैंने फैसला कर लिया था कि सुबह होते ही सबसे पहले काम यह करूंगा कि यह भुतहा मकान छोड़ दूंगा। फिर सुबह मैंने यही किया था। मकान मालिक का हिसाब साफ किया था। वो मेरे इस तरह जाने से कोई ज्यादा हैरान नहीं था। यह बात मुझे जरा अजीब-सी लगी थी, मगर मैंने पूछा नहीं था। हो सकता है कि इस मकान से कुछ पहले किरायेदार भी इसी तरह भागे हों। मगर मुझे अब इन बातों से क्या लेना-देना था? मैं तो वहां रुकना नहीं चाहता था, न ही मुझे किसी को अपनी कथा ही सुनानी थी। मैंने उसी दिन शहर के उसी होटल में बंदोबस्त कर लिया था जहां से उस मकान में गया था।"

ठहरकर उस ओवरकोट वाले अजनबी ने एक बार फिर अपनी जेबें टटोलीं और सिगरेट का पैकेट और माचिस बरामद की।

जितनी देर वो उन कामों में लगा रहा, हम बेचैनी से उसे देखते रहे। साफ जाहिर था कि सिगरेट के सहारे अपने जेहन को समेटने की कोशिश कर रहा है। बहरहाल, उसकी खामोशी का अंतराल हमें अच्छा नहीं लग रहा था।

अपने सिगरेट को सुलगाकर उसने पहले की तरह ही दो-तीन गहरे-गहरे कश लिए। फिर उसने हम सब पर एक निगाह डालकर बोलना शुरू कर दिया-

"लेकिन मेरी दास्तान यहीं पर खत्म नहीं हो जाती। मैं कुछ दिन तक तो होटल में ही रहा लेकिन उस जगह का किराया मैं अफोर्ड नहीं कर सकता था। मैंने एक-दूसरा मकान ले लिया और उसमें शिफ्ट हो गया था। उस नये मकान में मैं करीब हफ्ताभर आराम से रहा था और मेरे जेहन से पुरानी बातें निकलने लगी थीं। तभी आठवीं रात मुझे यों लगा था जैसे किसी तरफ कोई वजनी चीज फर्श पर गिरी है। मेरी नींद एकदम खुल गई थी...।

मेरा दिल अचानक जोर से धड़का था, पुराना खौफ अंगड़ाई लेकर जाग उठा था। शायद इस जगह भी कोई चक्कर चलने वाला था। खतरे की इस निशानी पर दूसरी सुबह मैंने वो मकान भी छोड़ दिया और अपने एक साथी के साथ अस्थायी रूप से रहने लगा था।

लेकिन जाहिर है कि उसके साथ मैं हमेशा नहीं रह सकता था। मैंने एक और मकान तलाश किया, मगर जल्दी ही मुझे अहसास हो गया कि मैं किसी शैतानी चक्कर की लपेट में आ गया हूं। कोई शै मेरे साथ लग गई थी। मैंने एक जानकार से बात की, उसने एक ताबीज मुझे कहीं से ला दिया, मगर उससे मुझे कोई फायदा नहीं हुआ था। वो शै जैसे मेरे साथ चिपक कर रह गई थी। या यों कहिए कि मेरे अंदर घुस गई थी।

अकेले मकान में रहना अब मेरे बस की बात नहीं रही थी और होटलों में

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

रहना मेरी औकात से बाहर था। मैं इधर-से-उधर फिरता रहा। कई रातें मैंने पार्कों में, रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्मों पर गुजारीं, मगर वो हर जगह मेरे साथ ही चिपटा रहा।

और फिर... कुछ अर्से बाद वो बात सामने आई, जो मेरे लिए बेहद हैरतभरी साबित हुई। उस रहस्योद्घाटन ने मुझे तीस साल के जवान से पचास साल के बूढ़े में तब्दील कर दिया। जरा मेरे बालों की सफेदी तो देखिए।" वो मुड़कर कराहा।

"मैं जिंदा हूं, मगर मुर्दों की तरह। मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि मैं सिर्फ तीस-बत्तीस साल का मर्द हूं... मेरी यह ऊपरी हालत उस अहसास की वजह से है जिसने मुझे अजीब मुसीबत में डाल रखा है। मेरे हौसले पस्त हो चुके हैं। कोई इलाज, कोई जादू-मंत्र कामयाब नहीं हुआ। मुझ पर हर वक्त एक खौफ सवार रहता है। हर वक्त वो मेरे साथ रहता है। मैं उस रहस्यमय हस्ती का एक चलता-फिरता निवास बना हुआ हूं। वो इस वक्त भी मेरे साथ है, बस आप साहेबान उसे नहीं देख सकते। मैं कसम खाकर कहता हूं कि वो इस वक्त भी मेरे साथ है। चिपटा हुआ है मुझसे।"

बोलते-बोलते वो अचानक चुप हो गया था। हम सब उस अंत को सुनकर उपहासजनक ढंग से मुस्कुराने लगे थे। उसने भी यह बात महसूस कर ली थी, वो उदास लहजे में बोला था-

"मैं जानता हूं कि आपमें से किसी को भी मेरी बातों का यकीन नहीं आया है।"

फिर वो कड़वी मुस्कुराहट मुस्कुराया और उठकर रूम के दरवाजे की तरफ चल पड़ा।

"दो साये...।" मैं तेज आवाज सुनकर चौंका।

यह मैगजीन वाले का साथी था जिसने शुरू में कहा था कि वो भूत-प्रेतों पर यकीन नहीं रखता। मैंने भी उसकी बेतुकी कहानी पर कहकहा लगाना चाहा था, मगर लड़के की आवाज सुनकर चौंका था। मैंने उसी तरफ देखा था जिधर वो लड़का इशारा कर रहा था। उसका हाथ अब कांप रहा था और चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं।

मैंने देखा कि दरवाजे की तरफ बढ़ते हुए ओवरकोट वाले अजनबी के साथ-साथ वेटिंगरूम की दीवार पर दो साये उसके साथ-साथ चल रहे थे, जिनमें से एक तो उसका था, और दूसरा... दूसरा किसका था...?

समाप्त

More Books - www.The-Gyan.in

Bookwala

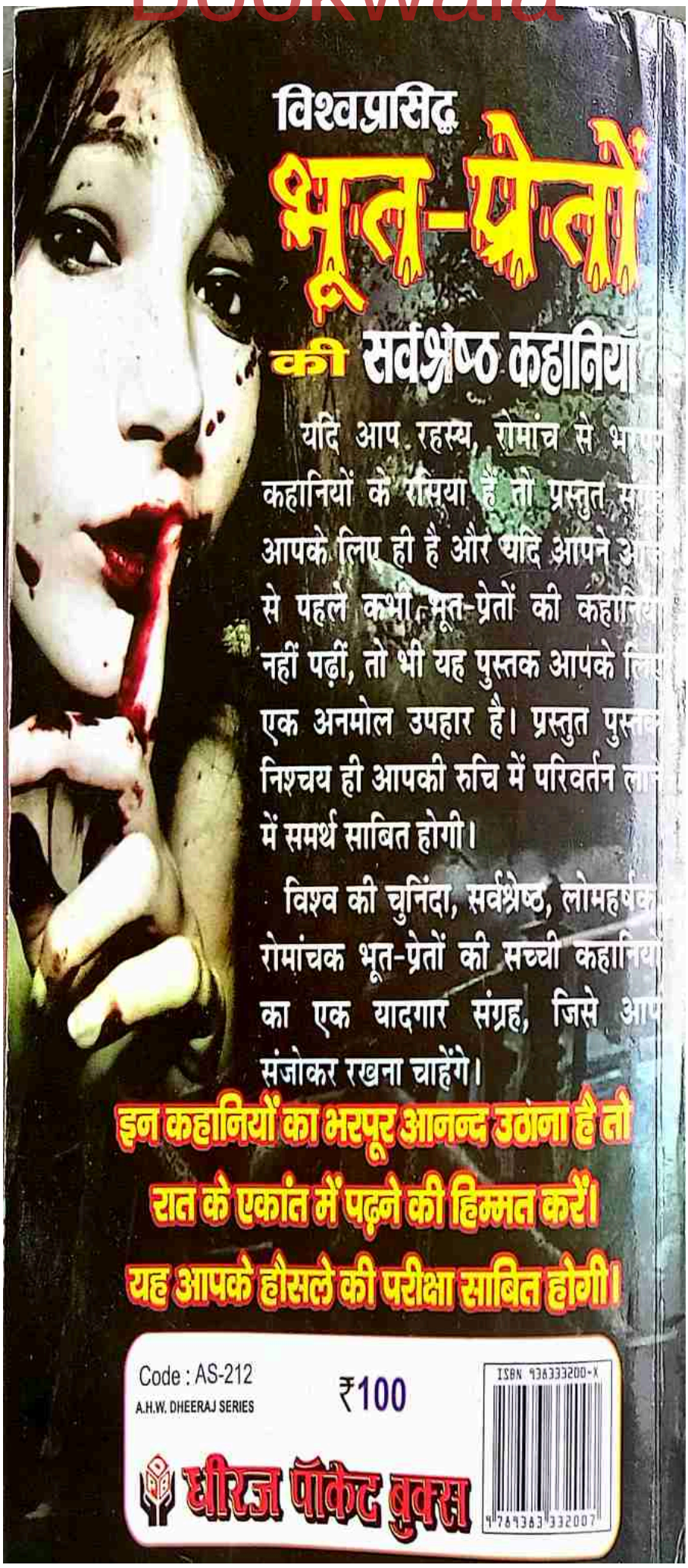

More Books - www.The-Gyan.in